

ফটোগ্রাফী শিক্ষা ।

প্রথম খণ্ড ।



শ্রীআদীশ্বর ঘটক প্রণীত ।



পরিবর্তিত নূতন সংস্করণ ।



কলিকাতা ।

৮ম সাগর দত্তের লেনসিত মল্লিক আর্ট প্রেস ।

শ্রীঔমাদ দাম মল্লিক কর্তৃক মুদ্রিত এবং এস্কাব কর্তৃক ৪ম কালিঘাট
ভূতীয লেন ইইতে প্রকাশিত ।

একমাত্র এজেন্ট ;—

শ্রী যোগেন্দ্রনাথ মল্লিক, ২৫ নং সোয়ালো লেন ।

[মূল্য দুই খণ্ড একজে ২১০ টাকা ।]

Out-of-Print

ବିଜ୍ଞାନ ।

ଫଟୋଗ୍ରେ ଫୀ ଶିଳ୍ପୀ ପ୍ରଥମ ଓ ଦ୍ୱିତୀୟ ଖଣ୍ଡ ଏକବେ ପ୍ରକାଶିତ ହିଁଲେ ପ୍ରଥମ ସଂସ୍କରଣରେ ପୁନ୍ତ୍ରକ ଏକବେ ପୁନର୍ବାବ ମୁଦ୍ରିତ କରା ଅନ ବଶ୍ୟକ ବିବେଚନା କରିଯା, ଏହି ପରିବର୍ଦ୍ଧିତ ସଂସ୍କରଣ ପ୍ରଚାବ କବିଲାମ ପ୍ରଥମ ପୁନ୍ତ୍ରକେର ସକଳ ବଥ ଇହାତେ ଆଛେ, ତାହା ଛାଡ଼ା ଅନେକ ଆବଶ୍ୟକ ବିଷୟ ଏହି ସଂସ୍କରଣେ ଲିଖିଯାଛି ଏହି ସଂସ୍କରଣ ପ୍ରକ୍ଷୁପ କରିବେ ପୁନ୍ନେ ପ୍ରାନ୍ତରେ ବିଚିତ୍ର ଜଗନ୍ୟାଳ୍ମ ଅବ୍ୟକ୍ତିଗ୍ରାଫୀ ହିଁଲେ ତୁହି ଚାରିଟି ତାଲିକା ଲାଇଯାଛି, ଦ୍ୱିତୀୟ ଖଣ୍ଡ ଲିଖିବାର କାଳେ ସ୍ଥାବ୍ ଉତ୍ତିଷ୍ଠାନ ଏବନ୍ତି କୃତ ଫଟୋଗ୍ରେ ଫୀର ପୁନ୍ତ୍ରକ ହିଁଲେ କଲୋଡିୟନ ଫଟୋ ପକ୍ଷତିର ଅନୁସରଣ କରିଯାଛି ଉତ୍କ୍ରମ ମହୋଦୟେ ମତ ଅବଲମ୍ବନେ ଡେଭେଲପମେଣ୍ଟ ପକ୍ଷତି ଲିଖିଯାଛି । ତାହା ଛାଡ଼ା ବବଟନ୍, ରବିନନ୍, ଇମାବସନ୍ ପ୍ରଭୃତି ପ୍ରାଚ୍ୟକାର ଦିଗେର ଲିଖିତ ପୁନ୍ତ୍ରକାଦି ହିଁଲେ ଓ କିନ୍ତୁ କିନ୍ତୁ ସାହାଯ୍ୟ ହିଁଲେ ହିଁଯାତେ ଏଜନ୍ୟ ଆମି ଏଇ ସକଳ ପ୍ରାଚ୍ୟକ ରେର ନିକଟ ଥାଣୀ । ମେଂ ମେରିଯନ କୋମ୍ପାନିଓ ଅନେକ ବିଷୟେ ପୂର୍ବେ ଆମାକେ ଅନୁଯାତ ପ୍ରଦାନ କରିଯା ଛିଲେମ, ଏହି ଦ୍ୱିତୀୟ ସଂସ୍କରଣେ ମେହି ପ୍ରାଣ ଲୌଗତ ସର୍ବଦିଵିଷ୍ୟ ଲିଖିତ ହିଁଥ ଛେ ଆମି ଉତ୍କ୍ରମ ସକଳେର ନିକଟ ବିଶେଷ କୃତ୍ୟତା ରହିଲାମ ତ ହାଦେର ସାହାଯ୍ୟ ବ୍ୟାତିରେକେ ଏ ପ୍ରକାର ପୁନ୍ତ୍ରକ ପ୍ରାକ୍ରିଯା କଣ୍ଠା ଅମ୍ବନ୍ତରେ

ଏହି ପ୍ରାଣେ ନାନା ସ୍ଥାନେ ଓ ଧାରା ବିକୃତି ଏବଂ ଅନେକ ବର୍ଣ୍ଣନାକୁ ରାହିଯା ଗେଲା । ସାଧାରଣେ ନିକଟ ସବିନ୍ୟ ପ୍ରାର୍ଥନି, ତାହାରା ଏ ପୁନ୍ତ୍ରକେର ଏଇ ସକଳ ଫ୍ରେଟ ମାର୍ଜନ୍‌ମା ପୂର୍ବିକ ଏହି ପରିବର୍ଦ୍ଧିତ ସଂସ୍କରଣ ଥାନି ପୂର୍ବିବେ ମେହେର ଚକ୍ରେ ଦେଖେ ମେହେର ମେହେର କେହିକି ମାତ୍ର ମାତ୍ର ବୁଝା ତଥ ଛି, ତ ଯାବ ଉତ୍କର୍ଷେ ଦିକେ ଆଧିକ ଲମ୍ବା ରାହି ନାହିଁ—ତ ହାତେ ଶିଳ୍ପାର୍ଥିର ଅନୁବିଧା ହିଁଲେ ପାରେ, ଏହି ଆ ଶକ୍ତି ଯ ଅନେକ ପ୍ରାଣେ ଶକ୍ତି ସବଳ ଭାବ୍ୟ ପ୍ରଯୋଗ କରିଯାଛି । ଦ୍ୱିତୀୟ ଖଣ୍ଡର ପରିଶିଳ୍ପେ ଦୁରକ୍ଷଳ ଶଦେର ଅର୍ଗ ଦିଯାଛି ବର୍ଣ୍ଣନ୍ତୁ କ୍ରାମିକ ସୂଚିର ନାରା ଶିଳ୍ପାର୍ଥିଗାନେର ଶିଳ୍ପାର ଶୁଣିଥାଇବେ, ଏହି କାରଣ ସାଧାରଣ ସୂଚିପଦ୍ଧ ଦିଇ ନାହିଁ ଇତି

ପ୍ରାଚ୍ୟକାନ୍ତି ।

কন্টেন্টার শিল্প।

প্রথম খণ্ডের নির্ণয়।

| অ | অবশ্যিক চূড়া দিব + ক। |
|---|------------------------|
| অভিজাইজ্ঞায় | ১৭ ৮০ |
| অগ্নিদেশন | ৫২ |
| অতিবিত্র এক্সপোজ ব | ৩০, ৫৫ |
| অধিক এক্সপোজার সংশোধন | ১৭ |
| অধিক বৃহদাকার কেসেরাব অন্তর্বিধি | ০৫ |
| অধিক গুলোব সেপ্সেস শুণ | ২৮ |
| অধিকফণ ছাপিব ব হেতু | ১১ |
| অধ্যাবসায় ও দৃচ্ছপ্রতিজ্ঞ মহাপুরুষগণ | ৫ |
| অঙ্ককীর গৃহ এবং গৃহসজ্জা | ০০ |
| অঙ্ককীর গৃহে চেবাব টেবিল | ০১ |
| অঙ্ককীর গৃহে জলেব বাল্দাবন্ত | ০০ |
| অঙ্ককীর গৃহেব ডেপিটেট | ০০ |
| অঙ্ককীর গৃহ সম্পূর্ণভাবে আলোক শূন্য | ২৮ |
| কবিবাব উপায | |
| অঘ এক্সপোজার | ৩৬, ৫৫, ৮৯ |
| অঘ গুলোব কেসেরা | ১৫ |
| অর্টিল | ৭১, ৭৪ |
| অষ্টম অধ্যায় | ৩১ |
| অসংশোধিত মিনিস্কস লেন | ৫০ |
| অসংশোধিত লেন্সে আলোকেব বিবৃতি | ৫১ |
| আ | |
| আইবিস ডায়াবেগ | ২৮ |
| আকাশেব বালুসাবে এক্সপোজার তাৎক্ষন্য | ৫৮ |
| আচারাসেব জ্বরেব পথ | ৫৫ |
| আলুকেগিট | ২ |
| আলোক দ্বাৰা বৌগ্য ঘটত জ্বরেব পৰিবৰ্তন | ৬৫ |
| আলোক লাগা প্রেটেন উপর পৰদেৱ বাল্প | ১১ |
| আলোকেব অদৃশ ও দৃশ্যমান ক্ৰিয়া | ১১ |
| আলোকেব গতিৰ বৰ্ণ | ৪০ |
| আলোকেৱ বৰ্ণ পৰিবৰ্তক + ত্ৰি | ২ |
| আলোকেৱ বাস চৰ্মক শক্তি | ০০ |
| ই | |
| আবশ্যিক চূড়া দিব + ক। | ২ ৫২ |
| আখণা বা এখেব কুঠাৰ ইস | ৮৮ |
| ই | |
| ইন্টারনাম্মেল কেসেরা | ০০ |
| ইন্টেন্সিফিকেসন | ০০ |
| প বদ এবং এমোনিম | ৪০ |
| প বদ এবং সক্ষ ইচ | |
| অন মোৰ | ০০ |
| ইন্টেন্সিফায ব ইন্কহে ভেনকৃত | ৩০, ৪ |
| ইন্টেন্সিফায ব, বে মাইক্র অব কপীব | ৪০ ৪১ |
| ইন্দুল এবং শুষ্যাধিকৰণ সংৰূপণ | ০০ |
| ইমেজেন শলফাইট | ০০ |
| ইল্যুক্রি মার্ক প্রেট | ০০ |
| উ | |
| উৎকৃষ্ট কেসেৱা চিনিব ব পষ্ট লক্ষণ | ১৮ |
| উনচাপিশ ইকিপে পেন্ডুল ব এবং এক্সপোজ | ১০ |
| উপায় মণিকা | ০০ |
| ওঁ মুহূৰ এক্সপোজ র | ০১ |
| উচ্চাধ ফ্রেচ লিপু কারো ভ্যু ম'ট একাত্তৰ | |
| উৎকৃষ্ট | ১১ |
| এ | |
| এক দশ অধ্যায় | ৪৭ |
| এক্সেটিক লেন | ০০ |
| এব মেজেন | ৫০ |
| এক্সেকুটিভ বেব গ'রন্সেৰ | ১৯ |
| এক্সপোজার ব ই হাবে ১৫ বি'ম ৪৫.৫ কে এ | |
| বোৰ্ড বিষয়ে বচা কাৰণ | |
| এক্সপোজাৰ অলিম্প | ০০ |
| ৭১ সেজাৰ প্রে পেন্ডুল | ০০ |
| এক্সপোজাৰ দেখা | ০০ |
| এক্সপোজাৰ বিষয় নান উচ্চাধ | ৫১ ৮২ |
| এক্সপোজাৰ র দানা ডুই টেকু ক'রি গ'র্বত ইধ ৬৪ | |

ପ୍ରଥମ ଖାତେର ପଦାଳ

| | | | | |
|----------------------------------|-----|--------|--|--|
| ଏବି ଡିଲାଇଟ୍ ଏ | .. | ୫୭ ୮୦ | | |
| ଏକୋନୋଡ଼େନ ଦ୍ଵାରା ତ ତ ଏକୋନୋଡ଼େନ | | | | |
| ଡାଇ ପ୍ଲେଟେର ଷ୍ଟାର୍ କ୍ରୀ | ୧୦, | ୧ | | |
| ଗ୍ରାମସ କ୍ରୀ | ୧୮ | | | |
| ଅନ୍ତର୍ଗମ୍ଭୀର ଲେଣା | ୧ | | | |
| ଏହି ଛଳ | ୫୧, | ୩ | | |
| | | | | |
| ଓ | | | | |
| ଓ ଇଞ୍ଜିନ୍ସଲ୍ ପ୍ଲେଟେର ଏକ ଲେଣା | ୧ | | | |
| | | | | |
| କ | | | | |
| କଣିକ ଲ ବେଳୋଜି | .. | ୧୬ | | |
| ବନ୍ଦକେତ | ୪୯ | | | |
| କଣ୍ଡେଟ | ୮୭ | | | |
| କଟିକ ସୋଡ଼ା | ... | ୨ | | |
| କଲୋ ଡିନ ଫଟେ | ୧୨ | ୧୦ | | |
| କଚ ଇହତେ କୁଣି ନୂରି ଏ ଓସ | ୩ | | | |
| କାଟ୍ରିକ୍ | ୨ | | | |
| କାଟି ନିର୍ମିତ ଅବଦ ଏ ଗେଟ | ୨୪, | ୨୨ | | |
| କେମେବା ଆବ୍ସୁକିଆରୋବ ଠନ | ୪ | | | |
| କେମେବା ଓ ଗେଲ୍ ବମାଇବ ଏ ଶ୍ରୀ | ୨୫ | | | |
| କେମେବାର ପାଯ | .. | ୧୧ | | |
| କେମେବାର ପାଯା ବମାଇବାର ନିଯଃ | ୧ | | | |
| କେମେବାର ବୈ ମନ ବରିଯ ଏ ହତ ବମାଇବେ | ୧୦ | | | |
| କେମେବାର କେମେବାର | ୮୨ | | | |
| କେମେବାର ବାବୁ ଏ କି ଏ ଏକାର ଫାର ମ | | | | |
| ପଲ୍‌ପାଇଥ | .. | ୪୨ | | |
| କୁଣି | ୧ | | | |
| କୁଣି ଲାଗେବ କଟିଗ | ୧୨ | | | |
| କୁଣି ବନ୍ଦ ଶ | ୩୭ | | | |
| *କେମେବିକ ଏ ଉପଯୋଗୀ ଜ୍ଞାନ | ୩୧ | | | |
| ପିଲାବିଙ୍ଗିବିଡ ନ | .. | ୩୮, ୫୨ | | |
| କୁଟିପିଲାବିଙ୍ଗି | ୬୧ | | | |
| କୁଣି ଏବିଟ | ... | ୮୭ | | |
| କାଟେବ ଥବ ଅବ ପୁରୁଷ | .. | ୮୮ | | |
| | | | | |
| ଗ | | | | |
| ଗୁହ ମହାବାଲେ ଏ ହରେବ ବସ୍ତବ ଢାବି | ୩ | | | |
| | | | | |
| ଘ | | | | |
| ଘର କାଟେବ ଏ କଟିବ ବୁଝା କଟିବ ଏ କଟିବ | ୧ | | | |
| ପ୍ରଥମ | | ୨୮ | | |

ফটোগ্রাফি শিক্ষা।

| | | | |
|--|--------|--|----------|
| বিত্তীয় মেটের এলাপোজাব | ৩১ | পুস্তকাক ব সুইড | ১০ |
| বিত্তীয় মেটের ডেভেলপ্মেন্ট | ৩৪ ৩৫ | প্রথমাধ্যায় | ১ |
| দূরব ও নিকটের বস্তু ফোকাস ক বৰাব উপায় | ৪৬ | পঞ্চ অধ্যায় | ২০ |
| দৃষ্টি বিজ্ঞান | ৪৫ | অথবাগত ছাই চাবি খালি মেট মষ্ট হইব কথা | ২ |
| দৈখলক ক্রমবিকাশ | ৬, ৭ | অথবাগত কি অকার ফটো উঠানো উচিত | ২ |
| ন | | | |
| নবম অধ্যায় | ৩৫ | অথবাগত সংপ্রবণে সম লোচন | ৮০ |
| নামা সাপেক্ষ ফটোগ্রাফ | ১৫ | পুথিবৌহ ফটোগ্রাফাব দিগ্বে সংখ্যা | ২০ |
| নামাখ আনুসাবে কত এলাপোজাব তাহা | | প্রাসূ ছাব অ গোকের পরিষ্কিত গুট | ৫০ |
| নিকাপ কবিবাব উচাহব | ৫৭ | প্রানো | ৪৯ |
| নিকট ও দূরের বস্তু ফোকাস | ১৮ | প্রেসিপিটেসন | ৬৬ |
| নিপিন জোয়েক নিসিফোবডি | ৩ | প্রিপেটে গুট | ৬২ |
| নিপিস ও কেমেবা অবস কিউব | ৮ | প্রেসিপিটেড | ৭৩ |
| নিপিস ও রয়াল সোসাইটি | ৮ | পঞ্চদশ অধ্যায় | ৫ |
| নিপিস কৃত পিচ স্বারা ফটো | ৪ | প্রিটিং ফ্রেম | ৫ |
| নিপিস ডি মেটভিউর | ১২ | পি ও পি কাখজ | ৮৫ |
| নিকৃষ্ট সেপেক লক্ষণ | ৪৭ | প্রিটিং কবিবাব পক্ষতি | ৬ |
| নেগেটিভ | ৯ | প্রিট ধোত কবিবাব প্রে লৌ | ৭৪ |
| নেগেটিভ অতিরিক্ত ঘন (de 11c) | ৪১ | ফ | |
| নেগেটিভ ঘন হইলে পাতল কবিব ব উপায় | ৪১ | ফল্টে ঘাব্ট ও ক গজেব মটে | ৭ |
| নেগেটিভ পাতলা (de 1) | ৩৯ | ফটকিবির উলে ধ্রিয়াং দে য নির রিত | ৩৭ |
| নেগেটিভ কিচকব | ৩৬ | ফন সী গভর্নেট হইতে পেছ ন .. | ১ |
| নেগেটিভ ধোত কব | ৩৭ | ফাট ফন ত বিধাবে (ঘ না য) ঘৰ | ১ |
| নেগেটিভ বিডিউস ব | ৪১ | ফটে ধৰে থ ব ত্য | ২১ |
| নেগেটিভ কুয়ার্ট (৫০") | ৩৭, ৩৮ | ফটক যা ক প্রক ব অথ চিরগাহ প প্র | ১২ |
| নেগেটিভ ছোট ছোট দ গ হওয়া | ৪১ | ফটে উচাহতে ক ত মধ্য লাভা | ৪৫ |
| নেগেটিভ বার্নিস কব | ৭৫ | ফটে তুলব ন উ/ মুও উচ্য | ৪৭ |
| প | | | |
| পবিক্ষণ জল | ৯ | ফটে তুলব এ এব অকার লো | ৫০ |
| পাজিটিভ | ১০ | ১ ট ১১ ন টাই ১১ ১১ | ৩৬ |
| পাবেন্ডাম | ২ | ফটো সুর্মা বিলে ত ন | ১৪ |
| পার্শ্ব এগোনিয ডেভেল প র | ৩৮ ৬৪ | ফটো সেট | ১১ |
| পরিকাব স্বত্ব দৃশ্য | ৬১ | ফে কন লি বাব বো দ | ২১ ২০ ১২ |
| পাহ বাগালিক এসিডের অয়ধন্ব | ৬৬ | ফোকাস কৃণ সর্বাপ্তি | ১১ |
| পাইরা সোডা ডেভেলপ র | ৬৮ | ফিল্ডিং | ৮০ |
| পুর এ এব তস্ত শাস্ত্রে রূব্র অস্ত প্রাণী | ২ | ফিল্ডিং কবিব ব সমধ ট্রান্স ব্রেব " নিলর্বন | ৮০ |
| পুর্ণ এব আধুনিক কেমেবা প্রেণ্ড কি | ১৬ | ফটোপ্রিট সকল বি ম কবিব , পর উক্ষেব | |
| | | পো কবিবাব অন্ত ত | ৮১ |
| | | ফটে ত উচ্যাট | ৮২ |

ଶ୍ରୀଗୋଟିଏ ନିର୍ମାଣ ।

| | | | | |
|--|----|--|---|----------|
| ক্ষেত্র ব নিয়ো স্পর্শকর ভূমিত | ১৫ | | ব | ১১ |
| ফটোগ্রাফীতে প্রতিমুক্তি প্রস্তুত | ৮ | | | ১২ |
| ফটোগ্রুপ (group) | ৮৯ | | | ১৩ |
| ফটোগ্রাফ তুলিবাব সময় ছুইঁ গি নেগেটিভ ক্রিবিবাব আ শুকতা | ৮ | | | ১৪ |
| | | | | ১৫ |
| | | | | ১৬ |
| | | | | ১৭ |
| | | | | ১৮ |
| | | | | ১৯ |
| | | | | ২০ |
| | | | | ২১ |
| | | | | ২২ |
| | | | | ২৩ |
| | | | | ২৪ |
| | | | | ২৫ |
| | | | | ২৬ |
| | | | | ২৭ |
| | | | | ২৮ |
| | | | | ২৯ |
| | | | | ৩০ |
| | | | | ৩১ |
| | | | | ৩২ |
| | | | | ৩৩ |
| | | | | ৩৪ |
| | | | | ৩৫ |
| | | | | ৩৬ |
| | | | | ৩৭ |
| | | | | ৩৮ |
| | | | | ৩৯ |
| | | | | ৪০ |
| | | | | ৪১ |
| | | | | ৪২ |
| | | | | ৪৩ |
| | | | | ৪৪ |
| | | | | ৪৫ |
| | | | | ৪৬ |
| | | | | ৪৭ |
| | | | | ৪৮ |
| | | | | ৪৯ |
| | | | | ৫০ |
| | | | | ৫১ |
| | | | | ৫২ |
| | | | | ৫৩ |
| | | | | ৫৪ |
| | | | | ৫৫ |
| | | | | ৫৬ |
| | | | | ৫৭ |
| | | | | ৫৮ |
| | | | | ৫৯ |
| | | | | ৬০ |
| | | | | ৬১ |
| | | | | ৬২ |
| | | | | ৬৩ |
| | | | | ৬৪ |
| | | | | ৬৫ |
| | | | | ৬৬ |
| | | | | ৬৭ |
| | | | | ৬৮ |
| | | | | ৬৯ |
| | | | | ৭০ |
| | | | | ৭১ |
| | | | | ৭২ |
| | | | | ৭৩ |
| | | | | ৭৪ |
| | | | | ৭৫ |
| | | | | ৭৬ |
| | | | | ৭৭ |
| | | | | ৭৮ |
| | | | | ৭৯ |
| | | | | ৮০ |
| | | | | ৮১ |
| | | | | ৮২ |
| | | | | ৮৩ |
| | | | | ৮৪ |
| | | | | ৮৫ |
| | | | | ৮৬ |
| | | | | ৮৭ |
| | | | | ৮৮ |
| | | | | ৮৯ |
| | | | | ৯০ |
| | | | | ৯১ |
| | | | | ৯২ |
| | | | | ৯৩ |
| | | | | ৯৪ |
| | | | | ৯৫ |
| | | | | ৯৬ |
| | | | | ৯৭ |
| | | | | ৯৮ |
| | | | | ৯৯ |
| | | | | ১০০ |
| | | | | ১০১ |
| | | | | ১০২ |
| | | | | ১০৩ |
| | | | | ১০৪ |
| | | | | ১০৫ |
| | | | | ১০৬ |
| | | | | ১০৭ |
| | | | | ১০৮ |
| | | | | ১০৯ |
| | | | | ১১০ |
| | | | | ১১১ |
| | | | | ১১২ |
| | | | | ১১৩ |
| | | | | ১১৪ |
| | | | | ১১৫ |
| | | | | ১১৬ |
| | | | | ১১৭ |
| | | | | ১১৮ |
| | | | | ১১৯ |
| | | | | ১২০ |
| | | | | ১২১ |
| | | | | ১২২ |
| | | | | ১২৩ |
| | | | | ১২৪ |
| | | | | ১২৫ |
| | | | | ১২৬ |
| | | | | ১২৭ |
| | | | | ১২৮ |
| | | | | ১২৯ |
| | | | | ১৩০ |
| | | | | ১৩১ |
| | | | | ১৩২ |
| | | | | ১৩৩ |
| | | | | ১৩৪ |
| | | | | ১৩৫ |
| | | | | ১৩৬ |
| | | | | ১৩৭ |
| | | | | ১৩৮ |
| | | | | ১৩৯ |
| | | | | ১৩১০ |
| | | | | ১৩১১ |
| | | | | ১৩১২ |
| | | | | ১৩১৩ |
| | | | | ১৩১৪ |
| | | | | ১৩১৫ |
| | | | | ১৩১৬ |
| | | | | ১৩১৭ |
| | | | | ১৩১৮ |
| | | | | ১৩১৯ |
| | | | | ১৩২০ |
| | | | | ১৩২১ |
| | | | | ১৩২২ |
| | | | | ১৩২৩ |
| | | | | ১৩২৪ |
| | | | | ১৩২৫ |
| | | | | ১৩২৬ |
| | | | | ১৩২৭ |
| | | | | ১৩২৮ |
| | | | | ১৩২৯ |
| | | | | ১৩৩০ |
| | | | | ১৩৩১ |
| | | | | ১৩৩২ |
| | | | | ১৩৩৩ |
| | | | | ১৩৩৪ |
| | | | | ১৩৩৫ |
| | | | | ১৩৩৬ |
| | | | | ১৩৩৭ |
| | | | | ১৩৩৮ |
| | | | | ১৩৩৯ |
| | | | | ১৩৩১০ |
| | | | | ১৩৩১১ |
| | | | | ১৩৩১২ |
| | | | | ১৩৩১৩ |
| | | | | ১৩৩১৪ |
| | | | | ১৩৩১৫ |
| | | | | ১৩৩১৬ |
| | | | | ১৩৩১৭ |
| | | | | ১৩৩১৮ |
| | | | | ১৩৩১৯ |
| | | | | ১৩৩২০ |
| | | | | ১৩৩২১ |
| | | | | ১৩৩২২ |
| | | | | ১৩৩২৩ |
| | | | | ১৩৩২৪ |
| | | | | ১৩৩২৫ |
| | | | | ১৩৩২৬ |
| | | | | ১৩৩২৭ |
| | | | | ১৩৩২৮ |
| | | | | ১৩৩২৯ |
| | | | | ১৩৩২১০ |
| | | | | ১৩৩২১১ |
| | | | | ১৩৩২১২ |
| | | | | ১৩৩২১৩ |
| | | | | ১৩৩২১৪ |
| | | | | ১৩৩২১৫ |
| | | | | ১৩৩২১৬ |
| | | | | ১৩৩২১৭ |
| | | | | ১৩৩২১৮ |
| | | | | ১৩৩২১৯ |
| | | | | ১৩৩২২০ |
| | | | | ১৩৩২২১ |
| | | | | ১৩৩২২২ |
| | | | | ১৩৩২২৩ |
| | | | | ১৩৩২২৪ |
| | | | | ১৩৩২২৫ |
| | | | | ১৩৩২২৬ |
| | | | | ১৩৩২২৭ |
| | | | | ১৩৩২২৮ |
| | | | | ১৩৩২২৯ |
| | | | | ১৩৩২২১০ |
| | | | | ১৩৩২২১১ |
| | | | | ১৩৩২২১২ |
| | | | | ১৩৩২২১৩ |
| | | | | ১৩৩২২১৪ |
| | | | | ১৩৩২২১৫ |
| | | | | ১৩৩২২১৬ |
| | | | | ১৩৩২২১৭ |
| | | | | ১৩৩২২১৮ |
| | | | | ১৩৩২২১৯ |
| | | | | ১৩৩২২২০ |
| | | | | ১৩৩২২২১ |
| | | | | ১৩৩২২২২ |
| | | | | ১৩৩২২২৩ |
| | | | | ১৩৩২২২৪ |
| | | | | ১৩৩২২২৫ |
| | | | | ১৩৩২২২৬ |
| | | | | ১৩৩২২২৭ |
| | | | | ১৩৩২২২৮ |
| | | | | ১৩৩২২২৯ |
| | | | | ১৩৩২২২১০ |
| | | | | ১৩৩২২২১১ |
| | | | | ১৩৩২২২১২ |
| | | | | ১৩৩২২২১৩ |
| | | | | ১৩৩২২২১৪ |
| | | | | ১৩৩২২২১৫ |
| | | | | ১৩৩২২২১৬ |
| | | | | ১৩৩২২২১৭ |
| | | | | ১৩৩২২২১৮ |
| | | | | ১৩৩২ |

ଖଟ୍ ଶଫ୍ରୀ ମିଳ ।

୪

ଧାର୍ଯ୍ୟ ଅଧ୍ୟାୟ
କ୍ଷେତ୍ର ଆଚାର ଏବଂ ହିନ୍ଦୁ ଭାଗ ମଞ୍ଚ
କ୍ଷୟାବ ବେଲୋଡ
ଛିମ ଏଞ୍ଜିନର ସହିତ ତୁଳନ
ଯୋଜନ ଓ ଧ୍ୟ
ଟୁଡିଓ ମଧ୍ୟେ କି କି ଜ୍ଞାନ ପିଣ୍ଡ ହିଁବେ

୫

ଶଟାବ୍ଦୀବ ବ୍ୟାତିବାର ଦୁଃ ଶଙ୍କା ଏବଂ ବ
ସଲ୍ଲଟିଂ
ମଞ୍ଚ ଅଧ୍ୟାୟ
ମଞ୍ଚ ହେ ଏକଦିନ ଛାତ୍ର
ମଞ୍ଚେ ଧିତ ମିନିପ୍ରିସ୍ ଲେନ୍
ମଞ୍ଚବର୍ଷ ଓ ଘଟେ ପ୍ର ମୌ
ମ୍ପଟିଂ
ମ୍ପଟିଂ ବିବାର ବର୍ଣ୍ଣ
ମଞ୍ଚ ବର୍ଷର ମଧ୍ୟଦିନୀ ଜ୍ଞାନକେନର ଗତି
ମଞ୍ଚାବ ଦୃଶ୍ୟର କଠୋକୁ ଆ ମଧ୍ୟ ଏକନାମେ
ଦେଖିତ ପାଇ
ମଞ୍ଚାବ ଦୃଶ୍ୟର ବର୍ଣ୍ଣନା ଓ ଏ ଛିତ୍ରନ
ମଞ୍ଚାବ ଦୃଶ୍ୟର ମରଳ ବେଦ୍ଧ
ମଞ୍ଚେପ ଫଟୋ ନିୟମକ ଜ୍ଞାନ
ମାଟ୍ରାବାଟିଡ୍, ମଲିଟିସର
ମାଧ୍ୟାବଳୀ ଜ୍ଞାନ ଏବଂ ଅତି ଜ୍ଞାନ ମେଟ୍

| | | |
|---|----|----|
| ମାଟ୍ରିକ୍ | .. | ୫ |
| ମାଟ୍ରିକ୍ ଏ ଟେଲିଚ ରଖୀ | .. | ୨୦ |
| ମାଟ୍ରିକ୍ ଏ ଟେଲିଚ ଏବଂ କଟିବ ବିଷ ମାଟ୍ରିକ୍ | .. | ୧ |
| ମିଳ (୮୦ ଟି) ଏବଂ ପ୍ଲଟ୍ (୧୧) ମ ଯାନୀ | .. | ୧ |
| ମିଳିତ ଅ ହେଉଟିଙ୍କ | .. | ୩୪ |
| ମିଲିତ ବାବେ ଟିକ୍ | .. | ୩୬ |
| ମିଲିତ ବାବେ ଟିକ୍ | .. | ୧ |
| ମିଲିତ ବାବେ ଟିକ୍ | .. | ୨ |
| ମିଲିତ ବାବେ ଟିକ୍ | .. | ୨୦ |
| ମିଲିତ ଏମ୍ | .. | ୧ |
| ମିଲିତ କବିବ ବ ପକ୍ଷିତି | .. | ୮୭ |
| ମିଲିତ ଅଧ୍ୟାୟ | .. | ୮ |
| ମିଟ୍ ବୁ | .. | ୮୦ |
| ମଧ୍ୟ ବେ ଗୃହାଭୂତର ହଟାଟିଓ ଉତ୍ତର ଚତୁର୍ଥ ହଟାଟିଓ | .. | ୧୮ |
| ମିଟ୍ ବ୍ୟାକ | .. | ୧୭ |
| ମିଟ୍ ବ୍ୟାକର ବ୍ୟାବହ ବ | .. | ୮୧ |
| ମେଲିଟିଟାଇପିଂ | .. | ୯ |
| ମୋପ ମିଲିଟନ୍ ଏ ନୋ | .. | ୮୫ |
| ମୋପ ମଲିଟନ୍ ଶୁକ ହଇଲେ, ତୁଳା ଫୁଲ ଫଟୋ | .. | ୮ |
| ମ୍ରିଟ୍ ଗୁଲି ମୁଛିଆ ପବିତ୍ର ବ ଧର୍ମ | .. | ୮ |
| ମାମୋମେଟିକ ଫୋଲ | .. | ୫୮ |
| ମାଟ୍ରିକ୍ ଏ ଡ୍ରିମ୍ | .. | ୧୦ |
| ମାଟ୍ରିକ୍ ଏ ଡ୍ରିମ୍ ଏ କର୍ମିତି | .. | ୧ |
| ମାଟ୍ରିକ୍ ଏ ଡ୍ରିମ୍ ଏ କର୍ମିତି | .. | ୧୮ |
| ମାଟ୍ରିକ୍ ବେଷ୍ଟ | .. | ୮୮ |

— — — — —

ফটোগ্রাফী শিক্ষা।

উপকৃতিমণ্ডকা।

কয়েক বৎসর পূর্বে “ফটোগ্রাফী শিক্ষা” নামক একখনি পুস্তক প্রণয়ন করিয়া সাধারণে প্রচার করিয়াছিলাম এই পুস্তক বিক্রয় হইবে কি না, এবং উহাদ্বারা কোনও ব্যক্তি আলোক সাহায্যে চিত্র করিতে শিখিবেন কি ন, ইহা আমার বড় ভাবনা ছিল একেবারে সহিত লিখিতেছি যে, আমার এই সকল ভাবনা দূর হইয়াছে। ফটোগ্রাফী শিক্ষার প্রথম সংস্করণের সমস্ত পুস্তক নিঃশেষিত বঙ্গদেশ, আসাম, এবং উত্তর-পশ্চিম প্রদেশস্থ অনেক ভজনোক আমার পুস্তক দৃষ্টে চেষ্টাকরিয়া ফটো-শিল্প শিক্ষা করিতে সমর্থ হইয়াছেন। আমাকে ‘উপদেষ্টা’ ‘গুরু’ ইত্যাদি সম্মোধন করিয়া আমেকে পত্র লিখিয়াছেন এই শিল্প শিক্ষা করিয় তাহাদের একটি স্বাধীন জীবিকা গাঁও হইয়াছে, এজন্য তাহারা আমায় ধন্যবাদ দিয়াছেন।

সংবাদ এবং সাময়িক পত্রাদিতেও পুস্তক খানির প্রতি কৃপা-কটাক্ষ হইয়াছিল আমি একেবারে এই সকল পত্রের সম্পাদক এবং সমালোচক মহাশয়-গণকে অস্তরের সহিত কৃতজ্ঞতা জানাইতেছি আমার পুস্তকের ক্রেতা এবং শিক্ষার্থিগণের নিকটও আমি কৃতজ্ঞ তাহাদের উৎসাহেই আমি আবীর্ণ এই পুস্তকের নৃতন পরিবর্দ্ধিত সংস্করণ প্রচার করিতে সাহসী হইয়াছি।

এই পুস্তকের প্রথম সংস্করণ প্রকাশিত হইবার পর, এই কয়েক বৎসরে ফটো শিল্পের অনেক নৃতন আবিকার হইয়াছে। নানা প্রকার নৃতন পদ্ধতি, নৃতন রাসায়ণিক দ্রব্যাদি, নৃতন যন্ত্র, এবং নৃতন লেন্সের উৎপত্তি হইয়াছে। এমন কি এই কয়েক বৎসর মধ্যে এই শিল্পের যুগ্মত্বের হইয়াছে বলিলেও অত্যুক্তি হয় না। এই জন্যই, পূর্ব পুস্তকের সংশোধিত সংস্করণ না কবিয়া, এই পুস্তকখানি সম্পূর্ণভাবে নৃতন করিয়া লিখিত হইয়াছে। সাধ্যমত সকল বিষয় বিস্তারিত ও বিশদভাবে বলিয়াছি।

হ্যাণ্ড-কেমেরা, ফিল্ম-ফটো, এন্লার্জেণ্ট, ছুড়িও, রিটচিং, ফিলিসিং, সিনাম্যাটোগ্রাফ, কার্বন-প্রসেস, কলোডিয়ন ফটো পদ্ধতি, এবং অন্যান্য আবশ্যকীয় বিষয় সকল সংজীবিত হইয়াছে। আর পূর্ব পুস্তক সম্বন্ধে শিক্ষার্থিগণ যে সকল বিষয় অপেক্ষাকৃত বিশদভাবে লিখিবার জন্য আমাকে অনুরোধ করিয়াছিলেন, এবার সেই সকল বিষয় আরও বিশদভাবে লিখিয়াছি। এই পুস্তকের প্রথম সংস্করণের প্রতি সাধারণের যে প্রকার মেহ ও ক্লিপার্ডে ছিল, আশাকরি, এই পরিবর্ত্তিতে নৃতন পুস্তকের প্রতি সেই ক্লিপার অভাব হইবে না। যাহারা পূর্ব সংস্করণ অবলম্বনে ফটোর ব্যবহাৰ কৰিতেছেন, তেহে পুস্তক সাহায্যে তাহারা অধিকতর উন্নতি কৰিতে পারিবেন, ইহাও আমি আশা কৰি। ইহা সফল হইলেই আমার শ্রম সার্থক হইবে। শিক্ষার্থিগণ পূর্বের শ্রায় এবারেও যদি আমাকে তাহাদের মতামত সকল জ্ঞাত কৰেন, আমি তাহাতে বড়ই উপকৃত হইব।

শ্রীআদীশ্বর শঙ্কা।

ফটোগ্রাফী শিক্ষা প্রথম সংস্করণের সমালোচনা

Amrita Bazar Patrika, 18th March, 1895. Elocution of Photography in Bengali—By Babu Adiswar Ghatak. This is so far as we are aware, the first attempt in Bengali to explain the art of Photography. In very simple and lucid style the writer has performed his task, and from what we have seen of the book from a cursory view of it, we think he has acquitted his work well. The book will no doubt prove very useful to those who may wish to learn Photography without the help of a teacher.

“বঙ্গনিবাসী” ৩০শে চৈত্র, শুক্রবার, ১৩০১ সাল।

“ফটোগ্রাফী শিক্ষা” শ্রীআদীশ্বর ঘটক প্রণীত। মূল্য ১।০ দেড় টাকা চেঞ্জ, কালীঘাট হইতে প্রকাশিত। ফটোগ্রাফ জিনিষটা কি, তাহা অনেকেই জানেন। অনেকেরই আচে, আমি দেখিতে কেমন, দর্শণে ও তত ভাবে দেখিতে প ইন। পচলিত দর্শণে মুখ খানি মাত্র দেখা যায়, তাহাও ঠিক নহে, তাহি সকলে নিজের চেহারার ফটোগ্রাফ লইয় থাকে। ফটোগ্রাফ সকলেরি আচে, কিন্তু কি করিয়া ঐ ফটো তুলিতে হয়, ছায় ছবি তুলিতে কি কি জিনিয় লাগে, অনেকেই তাহা জানেন না। জানিবার উপায় ও ছিল না। ধাহারা অচ ইংরাজী জানেন, তাহাদের জানিবার উপায়ই ছিল না। বাবু আদীশ্বর ঘটক সে অভাব দূর করিয়াছেন। ঘটক মহাশয় একজন স্বয়ং সিদ্ধ ফটোগ্রাফার, তিনি হাতে হেতেরে এ কর্মের কর্ণ্ণী, সুতরাং তাহার ফটোগ্রাফী শিক্ষা যে সোকের বিশেষ উপকারে আসিবে, তাহাতে সন্দেহ নাই।

“বঙ্গবাসী” ২৪শে জ্যৈষ্ঠ ১৩০২ সাল।

ফটোগ্রাফী শিক্ষা শ্রীআদীশ্বর ঘটক প্রণীত মূল্য ১০ টাকা
য়াহারা ফটোগ্রাফী জানেন, তাহারাই বলিতে পারেন, এ পুস্তক কেমন
হইয়াছে অনেকগুলি চিত্রদ্বারা শিল্পটি বুঝাইবার চেষ্টা করা হইয়াছে

নব্যভাবত ১৫ই কান্তিক, ১৩০২ সাল

ফটোগ্রাফী শিক্ষা শ্রীআদীশ্বর ঘটক প্রণীত, মূল্য ১০ টাকা এরপ
পুস্তক আব আমাদের হাতে পড়ে নাই ফটোগ্রাফী শিক্ষার যাবতীয় কথা
ইহাতে সুন্দর রূপে বিবৃত হইয়াছে। যাহাবা ইংবাজী জানেন না, তাহারা এই
পুস্তক পাঠে অনেক জ্ঞাতব্য বিষয় জানিতে পারিবেন অনেকগুলি চিত্রদ্বারা
বিষয়টি বুঝাইবার জন্য গ্রন্থকার বিশেষ চেষ্টা করিয়াছেন তিনি এ সম্বন্ধে
বিশেষরূপ ফুতকার্য হইয়াছেন

হিতবাদী, ৯ই চৈত্র শুক্ৰবাৰ, ১৩০১ সাল

“ফটোগ্রাফী শিক্ষা”—শ্রীআদীশ্বর ঘটক প্রণীত বঙ্গভাষায় এ শ্রেণীৰ
পুস্তক নাই। সুতৰাং, যাহারা নুতন নুতন বিষয়ে হস্তক্ষেপ করিয়া বঙ্গভাষার
অঙ্গপুষ্টী বিষয়ে সহায়তা করেন, তাহারা সর্বথা প্রশংসাহ, তাহাদিগের গ্রন্থ
ধর্তব্য নহে এই পুস্তকখানিৰ ভাষা আবও একটু সবল ও সহজ বোধ্য
হইলে আমৰা আৱও সুখী হইতাম।

ফটোগ্রাফী শিক্ষা।

প্রথম খণ্ড।

প্রথম অধ্যায়।

ফটোগ্রাফী, অর্থাৎ আলোক সাহায্যে চিত্র করিবার পদ্ধতিৰ আবিষ্কার হইয়া বৈজ্ঞানিক জগতে
যে কিংবৎ যুগান্তৰ হইয়াছে তাহা সুশিক্ষিত ব্যক্তি মাত্রেই ত বগত তাৰেন গ্রাম্য, হোত্তী, দেহতন্ত্র,
শিল্পকলা। প্রথম অতি আবশ্যকীয় বিধ্যেৰ অনুসন্ধান কৰিবাব পক্ষে এখন আমি ফটো পক্ষ
বাতিবেকে কিছুই সন্তুষ্ট নহে যত্নয়েৰ চক্ষুঃ মাহা দেখিবাব তাহ দেখিয়াছে, দেখে: শোণক
সঞ্চালন জনিত প্রদ্বিত হস্তস্বাব চিত্র যতদূৰ হইতে গৱে তাহা হইয়াছে।

ফটোগ্রাফীৰ আবিষ্কার হইলে, মাঝুদেৰ যেন তত্ত্ব ব্যাল পৃষ্ঠ হইল মাঝুদে যত প্রকাৰ
লিখিয়াছে, সুজ্ঞতাধ এবং সামুদ্র্যে কথনই ফটোৰ মত লিখিতে পাৰে নাই এই লিখন পদ্ধতিৰ
লেখনী জ্যোতিঃ, এবং এই ফটোগ্রাফী অতি মনোহৰ শিল্প।

দৰ্শন জল এবং অতি উৎকৃষ্ট পালিস কৰা ধৰ্ত দ্রব্যেৰ উপন যে প্রতিবিম্ব মুক্তি গোচন ইয়,
ঐ প্রকাৰ প্রতিবিম্ব স্থায়ী হয় না ফটোগ্রাফীৰ দ্বাৰা ঐ প্রকাৰ প্রতিবিম্ব স্থায়ী কৰিতে পাৰা যায়।
কোন দেশে, কোন সময়ে, কেমন কৰিয়া, এই শিল্পেৰ আবিষ্কার হইয়াছে, এবং দেৱন ভাগ্যানন্দ
ইহাৰ আবিষ্কার কৰিয়া নাম ও কীভু চিৰশ্঵ৰণীয় কৰিতে পাৰিয়াছেন, শিক্ষার্থীৰ তাহা আনিয়াৰ
ইঙ্গী হইতে পাৰে আমৰা প্ৰথমে সেই ইতিহাসেৰ অবঙ্গারণ কৰিব।

আলোক মাত্ৰেৰই একটা বাসায়নিক শক্তি আছে। আলোক ক্ষণাবে নামা বস্তুৰ পরিবৰ্তন
হইতে দেখা যায় সূর্যৰশিৰ তে কথাই নাই, বৈদ্যুতিক, নাম্বৰিক, বাসায়নিক এবং দৌলেক
আলোকেও ঐ প্রকাৰ শক্তি আছে আলোকেৰ আই শক্তি কি প্রকাৰ, তাহা আমৰা কোনটি
দৃষ্টান্ত দ্বাৰা শিক্ষার্থীগণকে বুবাইব।

[১] আলোক দ্বাৰা বাসায়নিক কৰিয়া হয়। একথা বুবান খুব সহজ। আমাদেৱ মেঁশে
কৰিবলাজেৱা নানা প্রকাৰ ধৰ্তৰ উথক ও তপ্পাদি প্ৰস্তুত কৰিবাৰ কালে সূৰ্যৰশিৰ গত্তৰ্য গৱে

প্রথম অধ্যায় ।

কবেন সৌহেব “জ্ঞানপুরক” এবং নামাবিধি উদ্ভিজ্জ্য বসাদির শোধন ইঙ্গীয়াদি ক্রিয়া সূর্য্যৰ ”
গ্যাতিরেকে হইতে পারে না।

[২] আলোক দ্বারা নান্ত প্রাকার “বর্ণের পরিবর্তন হয়” এ কথাও পুরাণ বিশেখ
কঠিন নহে সুন্দৃশ্য কোনও কাচা বর্ণ দ্বারা বদ্ধাদি বং কবিয়া, যদি ঐ রঞ্জিত বন্দে সূর্য্যবণ্ণি না
গাগিতে পায়, তাহা হইলে উহাব বর্ণ বেশ সুন্দর থাকে। কিন্তু ঐ বন্দে বৌজ লাগিলেই তাহাব
বর্ণ বিকৃত হইয়া যায়। একখণ্ড বন্দে ইবিজ্ঞা বর্ণে বঞ্জিত করিয়া ছায়ায শুক কবিলে, তাহাব
বর্ণের পরিবর্তন হইবে না, কিন্তু ঐ বন্দেখণ্ড কিছুকাল ঘৌড়ে বাখিলেই তাহাব বর্ণের বিকৃতি
হইয়া য য

আলোকেব আৱও অনেক শক্তি আছে কিন্তু তাহা আমাদেৱ বিবেচ্য নহে আলোকেৱ
ৱাসায়নিক এবং ব'বিবর্তক এই দুই গুণেৰ প'হ'য়ে ই ফটোআফ'ব উৎস'তি হইয়াছে

আমাদেৱ ভাবতবর্ধে বৃহ পুৰাতন কাল হইতে ৱসায়ন বিষ্টার সমধিক ৮ৰ্ষা ও উন্নতি ছিল
যে জাতি সুর্ণ, রৌপ্য প্রভৃতি ধাতু, হীৰক প্রভৃতি মণি, খণি হইতে উঠাইয়া পরিকাম্প পরিচ্ছয়
কবিয়া ব্যবহাৰ কবিতে প'বিতেন, তাহাবা বসায়ন বিষ্টায যে অনভিজ্ঞ ছিলেন, তাহা বলা যায
না। পুৰাণ এবং তত্ত্বাদিতে লিখিত আছে যে, পূৰ্বকালে ভাবতবর্ধে কেহ কেহ সুবৰ্ণ প্রস্তুত
কবিতে প'বিতেন শ্রীষ্টি যোড়ন শতকীতেও ঐ ধাৰণা ইউবোপ বাসী দিগেৰও প্রাবল ছিল
যাহাৰ ঐ প্রকাবে সুবৰ্ণ প্রস্তুত কবিবাৰ চেষ্টা কৰিতেন, তাহাদেৱ “আল-কেমিষ্ট” বলা হইত

পূৰ্বকালে প্ৰকৃত পক্ষে কোনও দেশে সুবৰ্ণ প্রস্তুত হইত কি ন, তাহা এখন নিশ্চয় কৰিয়া
বলিতে পারা যায় না কিন্তু পুৰাতন ইতিহাস পৰ্যালোচন কৰিলে দেখা যায় যে, ভাৰতবৰ্ধ,
ব'বিহন, ইঞ্জিন্ট, অ'বৰ্ব, প'বস্য প্রভৃতি সকল দেশ'ব জনগণেৰ বিশ্বাস এই প্রকাৰ ছিল যে,
পাৰদ ধাতু হইতেই সুবৰ্ণ প্রস্তুত হয

সকলৈই ভাবিতেন যে, পাৰদ ধাতু জমিয কঠিন হইলে, উহা তাৰ অথবা রৌপ্যেৰ সহিত
মিশ্রিত হইবে, এবং তাৰ অথবা বৌপ্য সুবৰ্ণ হইবে

ইউবোপ বাসী বাসায়নিক পণ্ডিতদিগকে “আল-কেমিষ্ট” বলা হইত ঐ শব্দটি আৱবিক
ভাষ নিম্পন উহাতেই পুৰা যায যে, ইউবোপেৰ লোকেবা আবৰ্যীয পণ্ডিতদিগেৰ নিকট হইতেই
ৱসায়ন বিদ্যাব আভাস পাইয়াছিলেন পেৰার নামক একজন আৱব বাজ পাৰদকে ভদ্র কৰিবাৰ
চেষ্টা কৰিয়া “গেৰারস আৰ্থ” (Geber's earth) নামক পদাৰ্থ প্রস্তুত কৰিয়াছিলেন উহা এক্ষণে
বেড় অস্থাইড় নামে বিখ্যাত ঐ পদাৰ্থ হইতে ডাক্তাৰ ডালটন অক্সিজেন বাস্প পৃথক কৰিয়া
আধুনিক ৱসায়ন বিষ্টার ভিত্তি সুপন কৱেন

ফটোগ্রাফী শিক্ষা।

৩

১৮০৩ জন্ম ইবন অন্য সাথে বর্ণিত একটা প্রেরণের ধর্মুল আবশ্যিক হয় সৈস, মস্তি, রাই, অথবা বৌপ্য যাহাই হউক, পাবদের সহিত মিশে ই পাবদ পরিমাণ কঠিন হয়, যাহার ও একান চেষ্ট করিতেন, সেই আলু কেমিষ্ট দলভূক্ত কোনও লেক কর্তৃ “শুনা করণ” নথি ১০১০। জনিত লবণ প্রস্তুত হইয়াছিল আধুনিক কালে ও পদার্থের নাম ‘সিলভার সেলাইড’ (Silver chloride)

বেড় অক্টাইড হইতে বসায়ন প্রক্রিয়া উৎপত্তি হয়, আব এই সিলভার ক্লোরাইড পদার্থের উৎপত্তি হইয়াছে

১৭৭৭ খ্রীং আদে সিল [Scheel] নামা যুক্তেন বাসা । সর্বনিক উক শুনা নাম নাম এ লবণ সম্বন্ধে কতকগুলি নূতন তথ্য নির্ণয় করেন তাহার পরে জেনা নগুনায় ১৭৭৮ নামক প্রতিত শিখ করেন যে, সূর্যাবশ্যির প্রবিষ বর্ণে ধোনোল ও ভায়েট বৰ্ষবৎ সিলভার প্রোপ্রেস, অতিশীঘ্ৰ ক্রয়বৰ্ণ প্রাপ্ত হয় তিনিই প্রথমে পারিয়াছিলেন যে, ১৭৭৩ বর্ষে এ ও পদার্থের কোনও পৰিবর্তন হয় ন। ১৮০২ খ্রীং আদে উমাস গুণজীত নামা ১০১০ নথি, প সিলভার নাইট্রেট দ্বাৰা চৰ্য নিয়িত কাগজের উপর আপেক্ষে চিত্ৰ এন্ড এণ্ড এক আকৃত উপাদেব আবিষ্কাৰ কৰেন এই সকল পত্রিতেৰা এপৰ্যন্ত য হা কিছু তথ্য নির্ণয় ন কৰিয়েন, তাহাতে প্রকৃত প্রস্তাৱে ফটোগ্রাফীৰ বিচুই হয় নাই

১৮১৪ খ্রীং আদে জোখেক মিসিকোন ডি নিপিস নামে এবজেন নথি মা ট্রেজারি এ ও অভিনব উপাদেব ফটোগ্রাফ প্রস্তুত কৰিতে পৰিয়াছিলেন এই পূর্বকাৰা হইতে নেকে অনস কিউব নামক ধৰেৰ ওচাৰ ছিল ফৰাসী নিপিস এই মন্ত্ৰ দ্বাৰা সুল মূল্যে একাধি হুৰি ১৭১৮ কৰেন তাৰ বৌপ্যেৰ লবণ সকল পৰিতাপ নথি ১৮ এবং ১৯ বৰ্ষ ধৰি ১৮১০ নথি প্রস্তুত কৰিতে পারিয়াছিলেন ইংলাঞ্জেৰ “বৰ্ণনা মে সাহচি” নথক বিজ্ঞান বভাধ কৰত ন হয় নূতন উপাদেব প্রকাশ কৰিবার জন্য, তিনি ইংলে পৰিয়াছিলেন কিন্তু নানা মোগ কৰণ সভ্যগণ তাহাকে অবজ্ঞা কৰিয় তাহার উন্নাবিত ফটোগ্রাফ বিষয়ে নে ন কথাহ ঝোঁতো চাহিলেন ন, একাৰণ তিনি বিৱৰণ হইয়া ফুলে প্রত্যাগমন কৰেন

দিনেৰ বেলায কোনও গৃহেৰ সকল ধৰণ নানা এব কৰিলো, অনেক সময় দেখা যায়, গৃহ দেওয়ালে, বাহিৱেৰ কোনও বস্তুৰ ছবি অক্ষিত হইয়াছে বাহিৱেৰ গৃহেন স ও কৈৰে মড়িতেছে, দুলিতেছে গৃহগৰ্ভে দেওয়ালেৰ উপরেও তাহার অবিবেগ ছায় সেই কৰ ন দুলিতে পাঠক পাঠিকাদেৰ মধ্যে অনেকেই এই প্রকাৰ ছায় ছবি দেখিয়াছেন, সন্দেহ । এ বাহিৱেৰ আলোক গৃহ মধ্যে আসিবাব থদি খুব ছোট ছিজ থাকে, তাহা হইলেই এই প্রকাৰ প্রতিবিম্ব

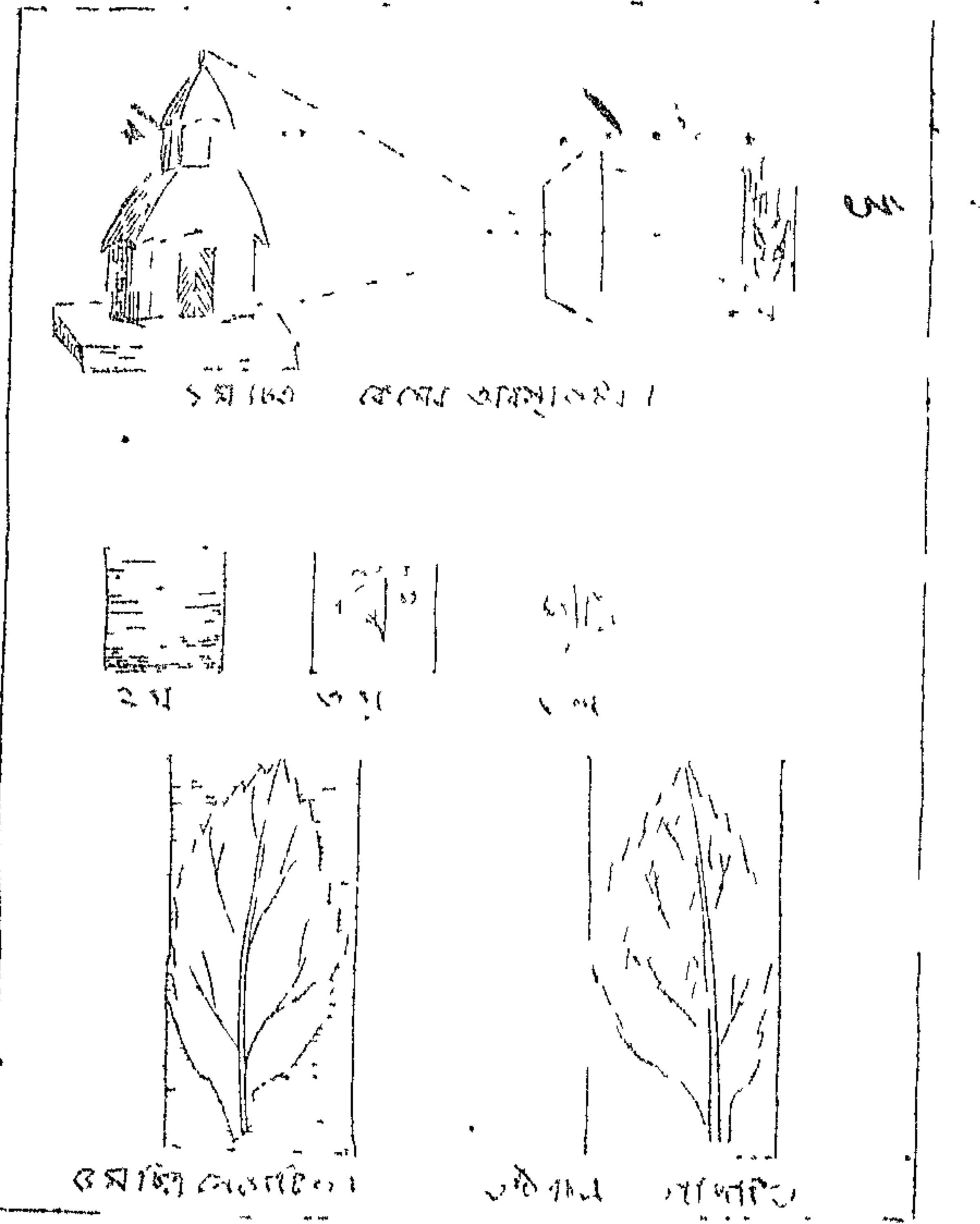
দৃষ্টিগোচর হয় আমরা পূর্বে “কেমেবা অবস্ কিউবা” নামক যে ঘন্টের কথা লিখিয়াছি, তাহাও ঐ প্রকার ছিদ্র যুক্ত অঙ্ককার গৃহের অনুবপ একটী বাস্তু ১ম চিত্র দৃষ্টে পাঠক ও শিক্ষার্থীগণ কেমেবা অবস্ কিউবার গঠন বুবিতে পারিবেন বটিঃহ পদার্থের ছবি ছিদ্র পথে আসিয়া, যে ভাবে অঙ্ককার গৃহমধ্যে পадে, চিত্রে তাহা দেখান হইয়াছে

নিপিস নামক ফরাসী বৈজ্ঞানিক ইংণ্ড হইতে বিফল মনোবস্থ হইয়া ফাল্সে প্রভ্যাগমন করিলেন, এবং তাহার আবিষ্ট ফটোগ্রাফী উন্নতি পাখনে যুবান হইলেন তিনি যে উপায়ে ফটোগ্রাফ করিতেন, তাহা এস্তে একটু না বলিলে, শিক্ষার্থী সকল কথা ডালকপ বুবিতে পারিবেন না, এবং বন পিচ দ্বাবা যে ভাবে ফটো হয়, তাহা লিখিলাম

উৎকৃষ্ট বৰগঙ্গা পিচ টারপিন তৈলে দ্রব করিলে এক প্রকার কাল বর্ণের ভার্নিস প্রস্তুত হয় ঐ ভার্নিস পালিস কৰা বৌপ্য পাতের উপর মাথাইয়া ছায়াতে উহা শুখাইয়া লইতে হয় উহা উজ্জ্বল রূপে শুক হইলে, কেমেবা অবস্ কিউবার ছায়া প্রতিবিস্তৰে নিকট উহা রাখিয়া, পাঁচ মাত্র ঘটাকাল, কি ততোধিক সময় উহাতে ঐ ছবির আলোক লাগাইতে হয় (exposure) পরে ঐ প্রেট খানিব উপর বিশুদ্ধ টারপিন তৈল প্রযোগ করিবে দেখা যায় যে যে সকল স্থানে ছবির আলোক লাগিয়াছিল, তাহা আব টারপিন তৈল দ্বারা উঠাইতে পাবা যায় না যে সকল স্থানে ৩০০ কি না লাগে, তাহাই টারপিন দ্বাবা ধৈৰ হইয় বৈপ্লেব স্বত্ত্বাদিক শ্বেত ব্ৰহ্ম ধাৰণ কৰে এই প্রকাবে বৌপ্য পাতের উপর একটা অস্পষ্ট ছবি অঙ্কিত হয় আমরা এ বিষয়টি আবও বিষদ ভাবে বুৰাইব

[২নং চিত্র] একধানি রৌপ্য পাতের উপর পিচের ভার্নিস মাথাইয়া বাখা হইয়াছে

[৩নং চিত্র] একধানি কাচ খণ্ডের উপর কালী বিষ্ণা রূং দিয়া একটী “ক” অঙ্কুর সেখা অঙ্কণে ভার্নিস মাথান বৌপ্য পাতের উপর ক অঙ্কুর যুক্ত কাচ খণ্ড বাখিয়া ২ ঘণ্টা প্রথম রৌদ্রে দাও পবে বৌদ হইতে উঠাইয়া গৃহ মধ্যে গিয়া উক্ত রৌপ্য পাতের উপর বিশুদ্ধ টারপিন চালিয়া দাও কিছু কাল [১০ মিনিট] পবে জল দ্বাবা প্লেটের উপর হইতে টারপিন ধৌত কৱিয়া দেখিবে যে, প্লেটের উপর ৪নং চিত্রালুয়ায়ী একটী ধৈত বর্ণের উন্টা ক অঙ্কুর অঙ্কিত হইয়াছে যই “ম’ত্ত পবৈশ্বক” দ্বাৰা” যে ফটোগ্রাফ প্রস্তুত হইল, ইহাব এই উন্টা ক অঙ্কুরটি কি প্রকাবে অঙ্কিত হইল, তাহা চিন্তা কৱিয়া দেখিলে, বেশ বুবিতে পারা যায় যে, কাচ খণ্ডের যে স্থানে সেখা ছিল তাহার মধ্য দিয়া বৌদ্রের আলোক যাইতে না পাবায়, উহাব নিমাস্ত পিচ অপিবৰ্বত্তিক ছিল, আৱ অন্ত স্থানে রৌদ্র লাগিয় পিচের জ্বনীয় গুণ নষ্ট কৱিয়া দিয়াছিল সেই কাৰণেই তাহা টারপিন অয়োগে আৱ ধৌত হয় নাই নিপিস এই প্রকাবে যে ফটোগ্রাফ কৰিতেন,



তাহাতে ক্রমাগামী আনেক দিন ধরিয়া আলোক ও গাইতে হইত, প্রতিবাং এই উপায়ে খে বা এক কোন সোকের ফটো প্রস্তুত কৰা এক অকাব অসম্ভব ছিল।

১৮২৪ আন্দে ফরাসী দেশীয ডগিয়াব নামক একজন চিকিৎসক পূর্ণ কার্যত কৰে। অন্য কিটুব লইয়া ছবি ভুলিবাব জন্ম আনেব চেষ্টা কৰিতেছিলেন তিনি মনে ন কিয়াছিলেন যে ১৮০৫ উপায়ে কেমেবাব প্রতিবিষ্ঠ নিশ্চই ধৰা য ইবে এই উদ্দেশ্য কাদ লাল এব এ ব ব বিশ ডগিয়াব অমণঃ দুববস্থায উপনীত হখেন, এবং ক'ৰ্ত আছে, ঝান্দাব জ্ঞ বাহাবে ১৯১০ ইনে কদিয়, একজন স্ববিধ্যাত চিকিৎসকের পথামৰ্শ হইল কার্যতে গিয়াছেন। চিকিৎস ডগিয়াবকে পাশল বলিতে চাহিলেন না, কিন্তু তিনি ছবি বিবৰাব যে চেষ্টা কৰিতেছিলেন, তাহাতে “আশা কিছুই নাই” এই শত দিয়াছিলেন।

সংসাধিক দুববস্থা, পজৌর কলহ, অথবা ঔত্তিবেশি গাবে বিদ্যুত্বাক সহ্যদেশ, মহামাতৃ ডগিয়াবের চিকিৎসিত কৰিতে পাবে নাই তিনি ১০৩ ঘ ছুতে ১১২৫ ফট এবং ১৮ চেষ্টা পবিত্র্যাগ কৰেন।

জগতেব ইতিহাসে দেখিতে পাওয়া যায়, এই অকাব দৃশ্য প্রতিত, এবং অবাসায় চলায় জনগণের দ্বাবা জগতেব উপলভ্য হইয়াছে, এবং এই প্রক র মহাপুরুষ ও কুতু পথে ১৮০৮ মানব ১০ ব লেতা বেলওয়েব জন্মাত প্রিন্সেপল, তাড়িত বিজ্ঞানেব প্রবৃত্তক যাব দৃশ্য, পাবক এবং দৃশ্য, দুববীকৃতেব নির্মাণ গ্যালালিত, এবং প্রাপ্তি জ্যোতির্বিদ কেব দৃশ্য, অথব প্রথ এঞ্জেল, মাধ্যাকর্ত্ত ও অন্যান্য বহুতব বৈজ্ঞানিক ব্যাপ্তিরেব আদি, মহাবিষ কুতু মহামাতৃ নির্মাণ; এই সকল মহাপুরুষগণেব জীবনী দেখ, দেখিবে, একান্ত, আ এ মুক্তি তা দৃশ্য এ প্রিন্স, পুরু এ বুদ্ধি, এই সকল মানবেব উন্নতিৰ মূল ইতোবৃহ এবং পথে জগতে ১১২৫ মানব ১১১৮। ডগিয়াব ও এই সকল মহাপুরুষগণে ন্যায কৰণ প্রতি কাৰ্য কৰি । তেল

প্রথমতঃ ডগিয়াব বি গোকাৰ চেষ্টা কৰিয়াছিলেন, অথবা বি গোকাৰ আ ১০৫৬ ঘ ১১১৮ যে, বৌপ্রেব অ ইতুডিই নামক লখন দ্বাৰা বেমেনাৰ হোঁকিষ অভি এব ক'ৰ্ত ক'ৰ্ত, তাহা ইতিহাসে পাবো যায় ন , কিন্তু তিনি যে পথে স্বতু বহুশা এবং মহুয় মুখ্য ফটোগ্রাফ তুলতে সক্ষম হইয়াছিলেন, এবং, দেৱ এ ক্ষমতেট “ডগারোচাহপ” নামৰ আভাৰ ফটো ও প্রস্তুত কৰণ প্ৰাণীৰ পেটেণ্ট তাহাকেই দিয়াছিলেন, তাৰিখে সন্দেশ নাই।

এই কিম্বে নানা জনে নানাকাৰ বচেন। ১১১৮ ক'ৰ্ত ১০৫৬ মুক্ত এই যে, ১১১৮ ন পুৰু দৃশ্য, এই বিষয়ে অকৃত কাৰ্য্য হইয়া আবশ্যে আণিতে পাৰিবেন, গণিত নামৰ অপুন এব প্ৰাণী বৈজ্ঞানিক এই বিষয়ে কতকটা বৃত্তধাৰ্য্য হইয়াছেন। ১১১৮ ন নামসেৱ শাহু পুৰিচয় এ নথা,

আঁড়চেষ্টার বিবরণ যথা পূর্বৰ প্রকাশ করিলেন নিপিস ও সেই প্রকারে নিজ আবিষ্কৃত ফটো
পদ্ধতি ডগিয়ার কে বুঝাইলেন এইস্থে দুইজনের চেষ্টার ফল একজ হইল। ডগিয়ার নিপিসের
প্রদর্শিত বৌপ্য পাতের উপর ফটোগ্রাফ উঠাইবার চেষ্টা করা শ্রেয়ঃ বিবেচনা কবিয়া, পিচের
পবিবর্তে রৌপ্যের আইওডাইড দ্বারা শীত্র ছবি উঠিতে পাবে, এই প্রকাৰ মত প্রকাশ কৰিলেন
নিপিস ও ডগিয়ার উভয়ে একজ চেষ্টা কৰিবেন, এবং সফলকাম হইলে, উভয়েই এই আবিষ্কাৰে
ফলভূটি হইবেন, এই প্রকাৰ চুক্তি হইল

ডগিয়াবের আশামত ফল লাভ হইল সিলভার-আইওডাইড দ্বারা। শীঘ্র শীঘ্র কেমেবাব ছবি
অঙ্কিত হইতে লাগিল উভয় আবিষ্কর্তার আনন্দের সৌম্য। রহিল না

দৈব ও ভাগ্যবানের সহায় হইয়া থাকে, এই প্রবাদ সকল দেশেই আছে ডগিয়ারেব
জীবনীতে তাহা দেখা যায়। পালিস কবা রোপ্য পাত একখানিতে আইওডিন বাষ্প প্রযোগ করিলে
রোপ্য পাতের উপর “সিভার-আইওডাইড” নামক লবণ প্রস্তুত হয় ; এই রোপ্য ঘটিত লবণ
আলোকে পরিবর্তনশীল এই প্রকার প্লেট একখানি অঙ্ককাব গৃহমধ্যে প্রস্তুত করিয়া কেমেরা
অবস কিউরাব মধ্যে রাখিয়া, তাহাব উপরে কোনও প্রকাব পদার্থের ছায়া অথবা প্রতিবিম্ব ফেলিলে,
অঙ্ক ঘণ্টা কাল মধ্যে ঐ প্লেটের উপর ছবি অঙ্কিত হওয়া সন্তু যদিও এতদূব হইল, কিন্তু
ইহাতেও কোনও লোকের চেহাবা উঠাইবার ১৫ক বিস্তু অস্তুবিধা ছিল, অঙ্কঘণ্টা কাল কোনও
ব্যক্তি স্থিব হইয়া বসিতে পারেন না, কোনও প্রাকৃতিক দৃশ্যের উপর ও অঙ্কঘণ্টা কাল আলোক
এবং ছায়ার সমিবেশ এক প্রকার থাকে না, এই কারণে ডগিয়াব চেষ্ট করিতেছিলেন, কেনন
কবিয়া আরও শীঘ্ৰ ফটোগ্ৰাফ তুলিবেন

কতকগুলি বৌগ্য পাতের উপর অতি অল্পকাল মাত্র আলোক জাগাইয়া ডগিয়াব কোনও
কারণে সেগুলি একটা দেরাজ মধ্যে ফেলিয়া রাখিয়াছিলেন ; সেই দেটা গুলিতে ছবিব চিহ্ন মাত্র
ও ফুটে নাই । সে গুলি খারাপ হইয়াছে, পুনর্বাব তাহা পালিস কবিয়া ছবি তুলিতে হইবে, এই
মনে কবিয়া ডগিয়ার সেই দেটা গুলি সম্বন্ধে এক প্রকাব গিপ্চিত্ত ছিলেন । কিছুদিন পরে, তিনি
সেই দেরাজ খুলিয়া দেখেন যে, সেই সকল প্লেটের উপর ছবি অতি সুন্দর ভাবে প্রকৃতিতে
হইয়াছে । ইহা দেখিয়া ডগিয়ার অভীব বিশ্বিত হয়েন, এবং কোনও দৈব শক্তি তাহাকে
চলনা করিতেছেন এই প্রকাব মনে করিয়াছিলেন

‘পুনর্বার কতকগুলি রোঁয় পাত পূর্বোত্ত ভাবে অতি অল্পকাল মাত্র কেমেরার আলোক
লাগাইয়া সেই দেৱাজে বাধা হইল। পুনবপি ছবি সকল ফুটিয়া উঠিতে লাগিল ইহা দেখিয়া
ডগিয়ার সিন্ধান্ত কবিলেন যে, অবশ্যই ঐ দেৱাজে কোনও বাসায়নিক দ্রব্য আছে, যাহা হইতে ঐ

অন্তৃত ব্যাপার ঘটিতেছে তব তব কবিয়া অনুসন্ধান করায় দেরাজখন্দে কলকট। ৰাম ধাতু
পড়িয়া বহিয়াছে, দেখিতে পাইয়া, ডগিয়ারি বুঝিতে ৰাবিণে যে, পাদদ ধাতুৱ থাপ হইতেই
অদৃশ্য ছায়ামূর্তিৰ গ্ৰন্থিকাশ (Development) হইয়ী ছবিগুলি ফুটিঃ। উঠিতেছিল ডগিয়াৱেৱ
এইটুকু দৈবলক

১২৩৯ অন্তে “ডাঃ রোটাইপ” নাম দিয়া ফরাসী গভর্নমেণ্ট হইতে নিজ নামে এই ফটো পদ্ধতির পেটেণ্ট প্রাপ্ত হইলে, ডগিয়াব এই ফটো পদ্ধতি সাধাবণ্যে ও কাশ কবিলেন। ফরাসী গভর্নমেণ্ট এই নূতন আবিষ্কাবে জন্ম ডগিয়াব এবং নিচিসেব পুঁজেকে [ইতি মধ্যে নিচিসেব মৃত্যু হয়] পেন্সন দিয়া উৎসাহিত কবিয়াছিলেন।

আমৰা কখনো ডাগাৰেটাইপ প্ৰস্তুত কৰি নাই
একবাৰ একখালি বহু পুৰ্বাতন ডাগাৰো-
টাইপ দেখিয়াছি। তাহা দেখিতে অতি শুল্কৰ
একজনে কেহ ডাগাৰেটাইপ প্ৰস্তুত কৰিব
না, কাৰণ উহাৰ ব্যয় অধিক
কিম্বা উহাৰ ওপৰ কৰণ ৩০% বিচু কঢ়িল নহে গাহাৰ
কেমেৰা আছে, তিনি একজনে উহা অন্যায়সেই ওপৰ এবিতে ১% বৈনে। একজনে ডাগাৰেটাইপ
প্ৰস্তুত কৰণ অণালীকৰণ বৰ্ণনা না কৰিবা, ফটোগ্ৰাফীৰ আবিষ্কাৰেৰ পৰ অন্যান্য যে সহজ
উন্নতি হইয়াছে, পৰ অধ্যায়ে আসৱা তাৰাই বিবি

ଦ୍ୱିତୀୟ ଅଧ୍ୟାୟ ।

যে সময়ে ফ্রান্সে ডগিয়াব কেমেবা-অব্স কিউরা এবং মিলতাব-আইওডাইড ধারা
ডাগোবোটাইপ পদ্ধতিব আবিষ্কাব করিতেছিলেন, সেই সময়ে ফ্রান্সে নামক একজন ইংরাজ
সম্পূর্ণ নৃতন এক পদ্ধতিক্রমে ফটোগ্রাফ তুলিতে সক্ষম হইয়াছিলেন

ফল ট্যালিবটের পদ্ধতি অতি সহজ আমরা মনে করি, সকল খিশার্থী ইহ এন্দোশ চেষ্টা
করিবেন, কারণ ইহাতে কেমেরা, সেল্ফি, ইত্যাদির ওয়েজন নাই, অথচ আলোক সাহায্যে তৈরো
বস্তুর চিত্র হইতে পারে রাসায়নিক জ্বর্ণাদি ও যাহা লাগে, তাহার ও মূল্য অধিক নহে

কোন শিল্প বিষয়ক পুস্তক কেবল পাঠকবিলে, যেই শিল্প সম্বৰ্ধীয় কৌতুহল কর্তৃকটি নিয়ন্ত্ৰণ
হইতে পাৱে, কিন্তু পুস্তকে লিখিত কোন কৰ্ম কৰিতে হইলে, কর্তৃকটা অসূৰ্যধা ও স্বামী জো “
আসিয়া উপস্থিত হয় জৰ্ব্যাদিব যোগাড় কৰা, খাটা থাটুনি কয় জনেৰ ভাল লাগে ন গাহারা,

ফটোগ্রাফী শিখিবেন, তাহাদেব ও অকাব কার্য্যে অনিছা হইলে, পিস্তা হইতে পাবে না কেবল পুস্তক পাঠ করিলে ও ফটোগ্রাফী শিখিতে পাব যাব না। এই পুস্তকে যে সকল উপদেশ আছে, তাহ প্রকৃত প্রস্তাবে কার্য্যে পরিণত করিলে, তবে গোই বিষয় বুবিতে পাবা যাইবে

ফক্স ট্যালুবট্ যে উপায়ে ফটে চিত্র করিতে পাবিয়াছিলেন, তাহা আব বিশদ ভাবেই লিখিলাম। ইহাতে সাধাৰণতঃ ৪টি তিনি ভিন্ন কার্য্য দ্বাৰা বাগজেৱ উপৰ ফটোগ্রাফ হইতে পাবে

(১) সাধাৰণ কাগজকে লবণ্ডক কৰ

(২) লবণ্ডক কাগজ শুক হইলে, তাহাকে মাইট্রেট্ অব্ সিলভাৰ দ্রবে ভিজাইয়া কাগজস্থিত লবণ ও মাইট্রেট্ অব্ সিলভাৰ এই দুই পদার্থেৰ মিশ্রণে কাগজেৰ উপৰ ‘সিলভাৰ-ৱোৰাইড্’ নামক লবণ পুনৰুৎক কৰ

(৩) উক্ত কাগজ রৌদ্রে দিবা তাহাব উপৰ কোনও বস্তৱ ছায়া অক্ষিত কৰ

(৪) আবশ্যক মত ছবি আলোক দ্বাৰা প্রস্তুত হইলে, তাহা পুনৰায় আলোক চাগিখ। মষ্ট হইতে ন পাৰে, এই উদ্দেশ্যে ত্ৰি কাগজ হইতে সিলভাৰ-ৱোৰাইড্ সকল ধোত কৰিয়া লওয়া আবৰ পূৰ্বোক্ত চাবিটি ত্ৰিয়াৱ বৰ্ণনা কৰিতেছি, শিখাৰ্থী যদি এই পদ্ধতি মত কাগজ প্রস্তুত কৰিয় দুই চাবিখালি ফটোগ্রাফ পুনৰুৎক কৰিয় দেখেন, তাহা হইলে তাহাব ‘বৰ্বতি অধ্যায় সকল বুবিবাব পক্ষে অনেক সুবিধ হইতে পাৰে।

এন্ধেও শুণ কাগজ প্ৰথমতঃ নিয় শিখিত লবণ দ্রবে অৰ্ক্কুষট ভিজাইয়া রাখিবে, এবং দ্বৈ উহা হইতে ধীবে ধীবে উঠাইয়া লইয়া শুধাইতে দিবে ইহা প্ৰবল আলোকে বাখিলে শুধৰণ হইবেন।

| | | | |
|------------------------|---|-----|-----------|
| সাধাৰণ ব্যবহাৰ্য্য লবণ | . | ... | ২৪০ গ্ৰেণ |
|------------------------|---|-----|-----------|

| | | | | |
|----|---|-----|-----|---------|
| জল | ~ | ... | ... | ৪ আউচ্চ |
|----|---|-----|-----|---------|

উক্ত লবণ দ্রবে আবশ্যক মত এক ব ততোধিক কাগজ ভিজাইয়া শুক কৰিয়া বাখিয়া দেওয়া যায়। এই অকাবে কাগজ লবণাক্ত কৰাকে ‘সলুটিং’ (Soluting) নাম দেওয়া হয়।

যখন কোন ছবি তুলিবাৰ প্ৰয়োজন হইবে, তখন উক্ত লবণাক্ত কাগজেৰ এক পৃষ্ঠে নিম্নলিখিত কাষ্টকীৰ জন গাঢ়াইবাগাঢ়াই ত্ৰি কাগজ আলোকে পৰিবৰ্তনশীল হইবে; অৰ্থাৎ উহাতে আলোক লাগিলেই উহা কালৰবৰ্ণেৰ হইতে থাকিবে একাৰণ এই সময় ত্ৰি কাগজে অধিক আলোক লাগিতে না পায়, সেবিগয়ে বিশেষ সাবধান হইতে হয়।

| | | | |
|----------------|-----|----|----------|
| সিলভাৰ-ৱোৰাইড্ | ... | .. | ৫০ গ্ৰেণ |
|----------------|-----|----|----------|

| | | | |
|-------------------|-----|-----|----------|
| ডিস্টিলড্ ওয়াটাৰ | ... | ... | ১ আউচ্চ। |
|-------------------|-----|-----|----------|

ফটোগ্রাফী শিক্ষা।

৯

সিন্তাম নাইটেটকে অভিলিত কথায় 'কাষ্টকৌ' বলে। একযজ্ঞে জন চুমাইয়া ০ ইলে, ডিস্টিলড ওষাটাৰ হয়। ঐ উভয় জ্বয়ই ভাল ডাক্তারখানায় পাওয়া যায়। বুঠি, জন গোনও পবিক্ষাব পাত্রে বক্ষিত হইলেও এই কার্যেৰ উপরেণ্টী হইতে পাবে সাধারণ জন দোখিতে বেশ স্বচ্ছ ও পবিক্ষাব হইলেও তাহাতে বিষ্ণুৰ অনুশৃঙ্খ পদাৰ্থ থাকে; ঐ সংল আগে ২১ ৫৩ কাষ্টকৌ দিবা মাত্ৰই জলেৰ বৰ্ণ ছুধেৰ মত হইয় যায় যে জনে কাষ্টকৌ জ্ব বৰ্ণিলে, জনেৰ বৰ্ণ ছুধেৰ মত না হইয়া স্বচ্ছ ও নিৰ্মল থাকে, তাহ ই ০ বিং ত জল বণিয় গণ্য কৰিতে পাব যায়।

লবণাক্ত একখানি কাগজ লইয়া, তদপেক্ষা কিঞ্চিৎ বড় এবং খঙ্গ ভাট্টি কাগজেৰ উপৰ বাধ, এবং চাবি কোণে ছোট ছোট কাটা অথব পিণ দ্বাৰা আবক্ষ ব বিধা লও পৰে এবটি পৰিষ্কাৰ ভূলিকা অথবা তদস্তাৰে একটু ধোত বন্ধ খঙ্গ ডিস্টিলড জলে দুই একৰাৰ মুইয়া লইয়া ছোট পুটুলী কৰিয়া তদ্বাৰা কাষ্টকৌ জ্ব লবণাক্ত কাগজেৰ উপৰ সমান কৰিয়া মাথাইবে। কাষ্টকৌ জ্ব হাতে লাগিলে কালো দাগ হয়, এই জন্য তুলি ব্যবহাৰ কৰা উচিত। এই ত্ব খুব অল্প আলোকে কৱিতে হয় লবণাক্ত কাগজে কাষ্টকৌৰ জল দিব মাত্ৰই উহু আলোক দ্বাৰা পৰিবৰ্তিত হইতে থাকে এই জন্ম ঐ কাগজ অক্ষকাৰ গৃহে রাখিয়া শুক কৰিতে হইবে। একগজেন এক কোনে একটু সুতা বাধিয় অপৰ একট রঞ্জুতে বাধিয়া দিলে, অঞ্চলটোৱ মধ্যেই শুকাইয়া যাইবে। ঐ কাগজ শুক হইলেই ছুবি ছাপিবাব উপযুক্ত হয় ০ বণাক্ত কাগজে কাষ্টকৌৰ জল মাথাইয়া শুক কৰাকে 'সেনজিটাইজিং' (Sensitizing) বলে।

ঐ অকারে কাগজ প্ৰস্তুত কৰিয়া কি ছুবি হইতে পাৰে, তাহা পিক্ষাৰ্থিব শুব উচিত প্ৰথমতং নৈ কাগজেৰ একটুকুৰা লইয়া বৌজে দিয়া দেখ, কি হয় দেখিবে, তৎপৰে ০.১ লাগিবামাত্ৰ উহাৰ খেত বণেৰ পৰিষ্কাৰ হইয়া, বাবে হইতে থ বিবে যদি কো বাগজেন কোনও স্থানে একটি ছোট এস্ত রাখিয়া ছায় ব বিধা দাও, তাহা হইলে, ঐ বন্ধৰ দায়া ০ বিমিত স্থান পূৰ্বৰ্বৎ সাদাই থাকিবে। ইহা হইতে শুবিতে পাৱা যায় যে, বৌজেৰ আলোক দ্বাৰা এই পৰিবৰ্তন ঘটিতেছে।

ঐ কাগজেৰ উপৰ কোনও ক্ষুজ বন্ধ (ছোট বন্ধপত্ৰ, পাঁকু, মেসু ইত্যাদি) রাখি, ছুই দিকে দুই খানি কাচ দিয় রৌজে দাও যতক্ষণ উহা বৌজে থ কিবে, উহা নাড়াচাঢ় কাৰ্যে না ষতমূৰ কালো বণেৰ হইতে পাবে, রৌজে রাখিয় উহাকে কালো কৰিবে পৱে ০.৭ ০.১তে উঠাইয়া শীঁ আলোকে লইয় দেখ, কি অকাৰ চিৰ হইল ৫, ৬, ৮ টিতে ঐ দুটি ক্ষুজ তাহাস সদৃশ লেগেটত ছুবি দেখান হইয়াছে সুক্ষ প্ৰট কাগজেৰ উৎস যেমন ভীতে মুঝ বৌজে দেওয়া হইবে, ঠিক তদনুসৰ ছায়া কাগজে অক্ষিত হইবে ইহাকে লেগেটত চিত বলে।

যে কাগজখানি এই প্রকারে বৌদ্ধে দিয় ছবি হইল, তাহাতে আবও একটু বাঁচ্য বাবী আছে

ঐ কাগজ খানিতে প্রবল আলোক লাগিলে উহাব ছবি খাবাপ হইবে, এই কাবণ নিম্নলিখিত
“হাইপে-সলফাইট সোডা” দ্ববে কাগজখানি ১০ মিনিটকাল ভিজাইয়া, পরে সাধাবণ জনে
বাবন্দাব ধোত কবিবে অর্ক্ষণ্টা ধোত কবিয়া শুক্ষ কবিবে এইকপ কবিলে উহা আব
আলোকে পরিবর্তিত হইবে না।

| | | |
|----------------------|-----|-------------|
| হাইপে-সলফাইট অব সোডা | ... | ... ২ ড্রাম |
| সাধাবণ পরিষ্কাব জল | ... | ১ আউন্স |

উপরোক্ত প্রণালীতে যে ছবি হইল, তাহ “নেগেটিভ” অর্থাৎ উন্টা ছবি ঐ নেগেটিভ
ছবিখানি অপব এবটি সেনজিটাইজ কবা কাগজের উপর বাধিয়া, কাগজ হুইখানি পূর্বেব মত
হুইখানি কাচস্বাবা চাপিয়া বৌদ্ধে দিলে, নৃতন ছবিখ নি বৃক্ষপত্রেব “পজিটিভ” ছবি হইবে

নেগেটিভ ছবি হইতে ছাপিয়া পজিটিভ ছবি হয়, আবাৰ পজিটিভ হইতে ছাপিয়া নেগেটিভ
ছবি পাওৰা যায়

শিক্ষার্থী উপরোক্ত রাসায়নিক দ্রব্যাদি লইয়া সাধাবণ কাগজ সেনজিটাইজ কবিয়া ছোট
ছোট স্বাভাবিক বস্তুৰ সুন্দৰ ফটোগ্রাফ কবিতে পাবেন এই প্রকাৰ ছোট ছোট ফটোগ্রাফ
কবিতে কোনও ঘৰানিব আবশ্যক নাই; কিন্তু শিক্ষার্থীৰ পক্ষে ঐ প্রকাৰ চেষ্ট মহসুপকাৰী
হইবে উহাৰ দ্বাৰা প্ৰথম হইতেই আলোকেৱ রাসায়নিক ও বৰ্ণপৰিবৰ্তক গুণেৰ পৰীক্ষ হইবে,
এবং শিক্ষার্থীৰ মনে উহাৰ অত্যক্ষ জ্ঞান জনিবে নেগেটিভ এবং পজিটিভেৰ অভেদ কি,
তাৰ ও বেশ পৰিষ্কাৰ হিলে বুবিতে পাৰা যাইবে তাৰপৰ, সেনজিটাইজিং, প্ৰাপ্টিৎ, ফিল্ট্ৰিং, এল-
স্পোজাৰ, প্ৰত্বতি ক্ৰিয়াৰ মোটামুটী জ্ঞান জনিবে যিনি এই অধ্যায়ে বৰ্ণিত দ্রব্যাদি লইয়া
যন্ত্ৰাদি ব্যতিবেকে স্বাভাবিক সুজ সুস্থ দ্রব্যাদিৰ ফটে কবিতে পাবিবেন, তিনি পৰে এই
পুস্তকেৰ সাহায্যে ফটোগ্রাফী শিল্প উওমন্ত্ব শিখিতে পারিবেন, ইহ আৰু সাহস কবিয়া
বলিতে পাৰি

কবাসী ডগিয়াৰ এবং ইংৰাজ ফল ট্য ঘৰট যাহাৰ কবিয়া ছিলো, তাহাৰ উপব নাম জনে
নাম প্রকাৰ চেষ্ট কৰিয়া, আধুনিক ফটো পক্ষতিকে বিশেষজ্ঞপে সমৃত কৰিবাছেন আগবা
ক্ৰমে ক্ৰমে সেই সকল কথা শিক্ষার্থীকে বুৰাইব

তৃতীয় অধ্যায়।

ক্ষমাপী নেপিস্ ও ডগিয়াব ফটোগ্রাফীর আবিষ্মাব বনেন তৃতীয় উপর ৩০৫
হইয়াছেন ইহার পৰে ফটো শিখেব যাই ১২ টাঃ তি হইতে, তাহার খাই ১২ ইং ৮
বেজোনক মহাশূভ্রবগণেব দ্বাৰা হইয়াছে

পূৰ্বে ইহ অধ্যায় পাঠ, এবং দ্বিতীয় অধ্যায়ে ব'ল ফটো স্কুলৰ ১০৭ ক।, ১৭ম
যাহ বোধ হওয়া উচিত, তাহা আমৰা সংক্ষেপে এই স্থানে পুনৰুক্ষেত্রে কৰিব

[১] আলোকেব রাসায়নিক ও বৰ্ণবিবৰ্তক ক্ৰিয়

[২] পিচ দ্বাৰা ভাজিম প্ৰস্তুত কৰিলে সেই ভাজিমে আলোকেৰ ক্ৰিয়, —যে স্থানে
আলোক লাগে, তাহা আৱ টাবপিন দ্বাৰা দ্বাৰা হয ন ;

[৩] পিচ অপেক্ষা আইডডাইড অব-সিলভাৰ নামক ০ বণেব ১০৮ তাৰেবেৰ ১।
তৌৰতব সেই কাবণে ডগিয়াব পিচেৰ ০ বিবৰ্তে আওহডডাইড অব শিল্প ১। ৮
টাইপ প্ৰস্তুত কৱিতে পাবিযাছিলেন

[৪] যে সকল পদাৰ্থ আলোকে পবিবৰ্তনশীল, সেই সকল পদাৰ্থ দ্বাৰা কে নও ন ৰোন
প্ৰকাৰ ফটোগ্রাফ প্ৰস্তুত কৱা যায়

[৫] আলোকেৰ ক্ৰিয় দ্বিবিধ দৃশ্য এবং অদৃশ্য কেমেৰ অবস নিতৰান ছনি দৰা
ক্ৰগশং ডাগারোটাইপ প্ৰস্তুত হইতেছে, তাৰেশং ছবি প্রষ্ঠ অক্ষিত হইতেছে, ইহ দৃশ্যমাৰ্গ বিধাৰ
উদাহৰণ। লবণাক্ত পেন্জিটাইজ কৱা কাঁজে সুৰ্যোৰ উভাবে তাৰেশং দৃশ্যমান ১। ১ ৫
হইতেছে, ইহাও দৃশ্যমান ত্ৰিধাৰ উদাহৰণ।

[৬] ক্ষীণ আলোক লাগ, দেনাজ মধ্যস্থিত ডাগারোটাইপ, পানদেৱ নামপাৰি, অথবা
হওয়, এই বিধাটি ভাবিবো, আলোকেৰ অদৃশ্য ত্ৰিধাৰ তন্তুভূতি হইতে পৰে ১। ১। ৮।
বুৰী যায এই যে, উক্ত ঘোটগুলিতে যে অপ আলোক লাগিবাছিব, তাৰেহ ১। ১। ১। ৮।
অব-সিলভাৰে কিছু পবিবৰ্তন অবগুহী হইবাছিব। সেই পবিবৰ্তন আমাৰে ১। ১। ৮। ৮।
না পারদেৱ বাস্প দ্বাৰা সেই পবিবৰ্তন দুবিতে ০। ১। ১। ১। ১।
লাগিযাছে, ঠিক সেই সেই স্থলে পানদেৱ বাস্প আশেব কৰিবে, তেন্ত খাই ১। ১। ১।
আৰাৰ চানি বৌপো পৰিণত হইয়া যাইবে ইহ ডগিয়াব ব তুক তাৰিখ ১। ১। ১।
নদৰাঙ বুবিতে পাবিযাছিলেন ইহতে এই দুবিতে ইউবে যে, ১। ১। ১। ১। ১।
আলোক লাগিব যাত্র সেই ক্ৰিয়াৰ আনন্দ হয

ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଆଲୋକ ଦ୍ୱାରା ଓ ସେ ପରିବର୍ତ୍ତନ ହ୍ୟ, ତାହାର ଏମ୍ବିକାଶ କରିଲେ, ଆଲୋକେର କ୍ରିୟା ଦୃଷ୍ଟିଗୋଚର କରି ଯାଇ ଇହାକେ “ଡେଭେଲପମେଣ୍ଟ” ବଲେ ଏହି ଡେଭେଲପମେଣ୍ଟ ପଦ୍ଧତି ହିଁଯାଇ ଏକଥାବା ସିନିମେଟୋଗ୍ରାଫ୍ ଦ୍ୱାରା ଗତିଶୀଳ ଚିତ୍ର ସକଳ ପ୍ରାଦଶିତ ହିଁତେଛେ ଶିକ୍ଷାର୍ଥିର ଏହି ବିଷୟଟିତେ ପରେ ବିଶେଷ ଘନୋଯୋଗେ ପ୍ରୋଜେକ୍ଟ ହିଁବେ

ଏକଶେ ଦେଖା ଧାଟିକ, ପରେ ଫଟୋଶିଲ୍‌ଲେ, ଆବ କି ଉନ୍ନତି ହିଁଲ ଡାଗିଯାଇ ଯେ ଫଟୋ କବିତେନ, ତାହା ପାରଦ ସାହାଯ୍ୟ ଏମ୍ବିକାଶିତ [Developed] କବ ହିଁତ, ଏକାବଣ ଆମରା ତାହାକେ ପରିଚିତ ଛବି ବଣିତେ ଚାହିଁ ତାହା ଏକବାବ ଉଠାଇଲେ ଏକ ଥାନି ମାତ୍ର ପ୍ରସ୍ତୁତ କବ ଯାଇତ ସହି ଏକ ଥାନିର ଅଧିକ ଛବିର ପ୍ରୋଜେକ୍ଟ ହ୍ୟ, ତାହା ହିଁଲେ ପ୍ରତିବାରଇ ଏକ ଏକଥାନି ମୈଟ୍ କେମେବା ମଧ୍ୟେ ସାଇୟା ଏକ ଏକ ଥାନି ଫଟୋଗ୍ରାଫ୍ କବିତେ ହିଁବେ

ସହି ଫଟୋ ଥାନି ପରିଚିତ ନା ହେଇ ନେଗେଟିଭ୍ ହ୍ୟ, ଏବଂ ସହି କାଚ ପାଇଁ ପଦାର୍ଥର ଉପର ଏକ ପରିଚାର ନେଗେଟିଭ୍ ଫଟେ ତୁଳିତେ ପାରା ଯାଏ, ତାହା ହିଁଲେ ସେଇ ନେଗେଟିଭ୍ ହିଁତେ ସତ ଇଚ୍ଛା ପରିଚିତ ଛବି ଛାପି ତେ ପାବା ଯାଇବେ । ଇହା ଏକଟା କମ ସ୍ଵବିଧାର କଥା ନହେ । ସ୍ଵତରାଂ ସେଇ ସମୟେ ବୈଜ୍ଞାନିକ ପଣ୍ଡିତଗଣଙ୍କ ଏବିଯମେ ଉଦ୍‌ଦୀନୀନ ଛିଲେନ ନା । ୧୮୪୩ ଅନ୍ଦେ ସ୍ଵପ୍ରସିଦ୍ଧ ଜ୍ୟୋତିର୍ବିଦ୍ୟାରୁ ଜନ ହାରେଲ ତାହାର ୪୦ ଫୁଟ ଦୀର୍ଘ ଦୂରବୀକ୍ଷଣ ସନ୍ଦେଶ ଏକଥାନି ଫଟୋଗ୍ରାଫ୍ କାଚେର ଉପର ତୁଳିତେ ସମ୍ପଦ ହହ୍ୟାଛିଲେନ । ଅତଏବ, କାଚେର ଉପର ଫଟୋଗ୍ରାଫେର ତିନିଟି ପ୍ରଥମ ଆବିକ୍ଷାବ କରିଯାଛେନ

ପରେ ନିପିସ୍ ଡି ସେନ୍ଟ୍ ଭିକ୍ଟର୍ ନାମକ ଫରାସୀ ପ୍ରକାଶ କରେନ ଯେ, କାଚେର ଉପର ଏଲୁମେନ୍^{*} ମାଧ୍ୟାଇୟ ତାହାର ଉପର ସହଜେଇ ବୌପ୍ରେସ ଲବଣ ସକଳ ଡିପଜିଟ୍ ହିଁତେ ପାରେ

ପରେ ଲିଗ୍ରେ ନାମକ ଏକଜନ ଫରାସୀ ବଲେନ ଯେ, ଡିବଲାଲା ଅପେକ୍ଷା କଲୋଡିଯନ ଦ୍ୱାରା ଆବଶ୍ୟକ ସହଜେ କାଚେର ଉପର ଫଟୋଗ୍ରାଫ ହିଁତେ ପାରେ ଇହାରା ଦ୍ୱାରା ଜନେ ଯେ ଯତ ପ୍ରକାଶ କରିଯାଛେନ, ସେଇ ମତେ ଉହାରା କାର୍ଯ୍ୟ କିନ୍ତୁ କରିତେ ପାରିଯାଛିଲେନ କିନା ତାହ ଆମାଦେବ ଜାନା ନାହିଁ

୧୮୫୧ ଅନ୍ଦେ ସ୍କଟ ଆର୍ଚିର ଓ ଡାଙ୍କାର ହିଟ୍ଟଜ ଡାଯମଣ୍ଡ ଏହି ଦ୍ୱାରା ଜନ ଇଂବାଜ କଲୋଡିଯନ ଫଟୋଗ୍ରାଫୀର ପଦ୍ଧତି ପ୍ରକାଶ କବେନ ଇହାଦେବ ପ୍ରକାଶିତ ପଦ୍ଧତି ଏତଇ ସ୍ଵର୍ଦ୍ଧ, ଯେ ଅଢାବଧି ଉହା ଅପରିବିତ୍ତି ଭାବେ ଚଲିଯା ଆସିଥେଛେ । ପରିବର୍ତ୍ତି ଫଟୋଗ୍ରାଫାରଗଣ ଏହି ପଦ୍ଧତିର ଆବ ଉନ୍ନତି କବିବାର ଆବଶ୍ୟକ ବୋଧ କରେନ ନାହିଁ ।

ପ୍ରଥମତଃ ଏକଥାନ୍ ପରିଚିତ କାଚେର ଉପର କଲୋଡିଯନ ନାମକ ତରଳ ପଦାର୍ଥ ମାଧ୍ୟାଇୟା, ତାହା ଆଦ୍ର୍ଯୁ ଥାକିତେ ଥାକିତେ, ନାଇଟ୍ରୋଟ ସିଲଭାର ଜ୍ଵବେ ତାହା ନିର୍ମିତ କରିତେ ହ୍ୟ ଏହି ପ୍ରକାଶ କ୍ରିଯାଦୀରା କାଚେର ଉପରିଷ୍ଟ କଲୋଡିଯନର ଉପର ବ୍ରୋମୋ-ଆଇ-ଟୋଇଡ୍ ଅବ ସିଲଭାର ନାମକ

*ଡିଲାଲା [Albumen]

পদার্থের স্থিতি হয় পরে কাচ আজ অবস্থায় কেমেরাব মধ্যে স্থায়ি ছবি উঠাইলে, সেই কাচের উপর অতি সুন্দর এবং স্বচ্ছ নেগেটিভ ফটোগ্রাফ প্রস্তুত হয় ; বলা বাহ্যিক, এই প্রকার, কলোডিয়ন নেগেটিভ ক্রমবিকাশ ক্রিয়া [Development] দ্বারা প্রস্তুত হইয়া থাকে । (১) ও শিক্ষার্থিগণ দেখিয়াছেন, পারদ সাহায্যে অনুশৃঙ্খ ছাধামুর্তিৰ বিকাশ করিয়া তাহ ১০১৬ প্রস্তুত হইত, কলোডিয়ন নেগেটিভে ক্রমবিকাশ কালে পারদেৰ পৰিবর্তে হীণাণ্ড মালা [of Iron] ব্যবহৃত হইয়া থাকে ঐ প্রকার কলোডিয়ন নেগেটিভ হইতে ছাধ্য কাচ ফটো সকল প্রস্তুত হইয়া থাকে

ডাগারোটাইপের পর ঘর্থন এই কলোডিয়ন ফটোগ্রাফী সর্বজ্যোতি প্রচারিত হইল, ১৮৪৮ সকলেই কলোডিয়ন ফটোগ্রাফীৰ সুবিধা এক বাক্যে স্বীকাৰ কৱিলেন ডাগারোটা পদ্ধতি ক্রমশঃই পুৰাতন হইয়া পড়িল কলোডিয়ন পদ্ধতিৰ দ্বাৰা অৰ্ক্ষ সেকেন্ড মধ্যে ১০০ উঠান সন্তুষ্ট বলিয়া আৱৰ্ণ মনে কৱি নদীৰ উপরিস্থ জলেৰ তরঙ্গ, বালক বালিনাম্বী, লাবণ্যময়ী মুখেৰ ছবি, ইত্যাদিৰ ফটোগ্রাফ লাইতে হইলে, অৰ্ক্ষ সেকেন্ড অথবা সিকি মে. ও. মধ্যেই উঠাইতে হইবে। ডাগাবোটাইপ পদ্ধতিৰ দ্বাৰা ঐ প্রকাৰ ছবি উঠানো অসমুৰো কলোডিয়ন পদ্ধতিতে ঐ প্রকাৰ ছবি উঠাইয়া সেই সময়ে তুই একজন ফটোগ্রাফাৰ খুব বাহুণ কৱিয়াছিলেন এই কলোডিয়ন পদ্ধতিৰ সুবিস্তৃত বৰ্ণনা এই পুস্তকেৰ বিত্ত য খণ্ডে কৱিয়াছি

ঝাহার ঐ পদ্ধতি শিখিবাৰ ইচ্ছ হইবে, তিনি বিত্তীয় খণ্ড দৃষ্টে তাহ সম্যক অবগত হইবেন। কলোডিয়ন পদ্ধতিতে যে প্রকাৰ সুন্দৰ নেগেটিভ প্রস্তুত কৱিতে পাৰা যায়, আনুনিক ড্রাইভেট দ্বাৰা সে প্রকাৰ নেগেটিভ হইতেই পাৰেন বিশেষতঃ ফটো লিথোগ্রাফী, কলোটাইপ, ও ধৃতি শিল্পে কলোডিয়ন নেগেটিভে উৎকৰ্ষ বিশেষ নক্ষত হয় ঝাহারা ভবিষ্যতে উত্তীৰ্ণ আশ কৰেন, ঝাহারা' ফটো-লিথোগ্রাফী, ফটো-এনক্রেতিং, কলোটাইপ, অভৃতি উচ্চাঞ্চল ফটোশিল্পেৰ অস্থুশীলন কৱিতে চাহেন, তাহাদেৱ ? কলোডিয়ন পদ্ধতি অবশ্য বিশেষ।

১৮৭০ অন্তে জেলেটিন নামক পদার্থ কলোডিং নেৱে পৰিবৰ্তে ব্যবহৃত হইতে আৱস্থ তথ্য উপবে কলোডিয়ন পদ্ধতিৰ সংক্ষিপ্ত বৰ্ণনা দেখিয় শিক্ষার্থী অবশ্যই বুবিয়াছেন যে, তাৰ অবস্থ ধাকিতে ধাকিতে ঐ নেগেটিভ খানি প্রস্তুত কৱিয়া লাইতে হইবে শুধুহাই গোণে কলোডিয়ন প্রেট নষ্ট হইয়া যায় ; উহাতে ফটো হয় না এজন্ত উহাকে "ও/ন" পথ" (Wet Process) বলা হয়

জেলেটিন নামক পদার্থেৰ প্ৰণ এই যে, ইহাৰ সহিত রোপ্য ঘটিত লবণ প্ৰণি [Iumide, Iodide and Chloride of Silver] মিশ্ৰিত হইলে শুক অবস্থায় ও ফটোগ্রাফীৰ কাৰ্য্যে ১০ ঘো'।

ଥାକେ ଅଧିକଷ୍ଠ ଜେଣେଟିନ ପ୍ରେଟେ ଅତି ଅନ୍ଧକାଳ ମଧ୍ୟେଇ ଫଟେ ଏକ ଉଠାଇତେ ପାଇ ସବୁ ଏହି ଜେଣେଟିନ ୧୯୮ ଶୁଭ ଅବହ୍ୟ ସ୍ୱର୍ଗତ ହ୍ୟ ବନ୍ଦିଯ, ଏହି ଡାକ୍ କେବିଏ “ଡ୍ରାଇଵ୍” D, P [] ନାମ ଦେଖ୍ୟା ହ୍ୟ ଇହା ଏକାବ୍ ଆବ୍ ଫଟୋଫାବ ଦିଗବେ ଅନ୍ତର୍ଭବ କବିଯ ଲାଇତେ ହ୍ୟ ନ, ଏହି ଆଜକାଳ ସଭ୍ୟ ଜଗତେର ଅତି ଆବଶ୍ୟକୀୟ ସାମଣୀ ହେଇଛେ ହୁବ ବିଳାତ ଅଭୂତ ଦେଶେ ଅତି ସବେବ ସହିତ ପ୍ରସ୍ତତ କବ ହ୍ୟ, ଏବଂ ଆଲୋକ ଲାଗିତେ ନ ପାଇ, ଏହି ଭାବେ ମୋଡ଼କ ଏକ ତଇୟା, ଅନ୍ତାତ୍ ଜ୍ଞାନେର ତ୍ରୟୀ ସଭ୍ୟ ଜଗତେର ସର୍ବତ୍ର ବିକ୍ରିତ ହ୍ୟ ଏହି ଜେଣେଟିନ ଡ୍ରାଇଵ୍ ଟେବ ବିଶେଷ ଶୁଭ ଏହି ଯେ, ଇହାଦାରୀ ଅତି ଅନ୍ନ ସମୟେଇ ଫଟୋଫାବ ହେଇତେ ପାବେ

ଏକ ମେକଣ୍ଡ, ଅର୍ଦ୍ଦ ମେକଣ୍ଡ, ସିକି ମେକଣ୍ଡ, ଅଭୂତି ମମ୍ୟ କାତୁରୁ ? ଶିଦ୍ଧାର୍ଥୀ ଭାବିଯ ଦେଖୁଣ ଏବ ସେବ୍ୟ ମମ୍ୟରେ ସହଞ୍ଚଭାଗେବ ଏକ ଭାଗ ମମ୍ୟ କାତୁରୁ ? ଶିଦ୍ଧାର୍ଥୀ ତାହା ଭାବିଯ ସ୍ତିବ କବିତେ ପାବେନ ? କିଜେନେଟିନ ଡ୍ରାଇଵ୍ ଦ୍ୱାବା ୨୦୯୮ ସେବ୍ୟ ମଧ୍ୟେ ଫଟେ ଉଠାନ ଏଥିନ ସହଜ କଥା ଜେନେଟିନ ଦ୍ୱାବା ଏହି ଥାକାବ ଦ୍ୱାବ ଫଟେ ଉଠାଇତେ ପାବ ଯାଏ ବଲିଯା, ଇହାଦାବ ଗତିଶୀଳ ପଦାର୍ଥେର ଫଟା କବା ହ୍ୟ ଦ୍ୱାତ ଗାମୀ ବେଳେଓୟେ, ଧାବମାଣ ଅଧି, ଉଡ଼ିଧାଇମାନ ପକ୍ଷୀବଦଳ, ବିଦ୍ୟୁତ ଅଭୂତ ଗତିଶୀଳ ପଦାର୍ଥେର ଛବି ଏଥିନ ସହଜେଇ କବିତେ ପାବ୍ ଯାଏ ବଲୋଡ଼ିଙ୍ ପର୍ଦାତ ଅପେକ୍ଷା ଡ୍ରାଇଵ୍ ପର୍ଦାତ ସହଜ ଏକାବଣ ଅର୍ଥମ ଶିକ୍ଷାବ କାଲେ ଡ୍ରାଇପେଟ ପର୍ଦାତ ଶିକ୍ଷା କବ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ

ଚତୁର୍ଥ ଅଧ୍ୟାୟ ।

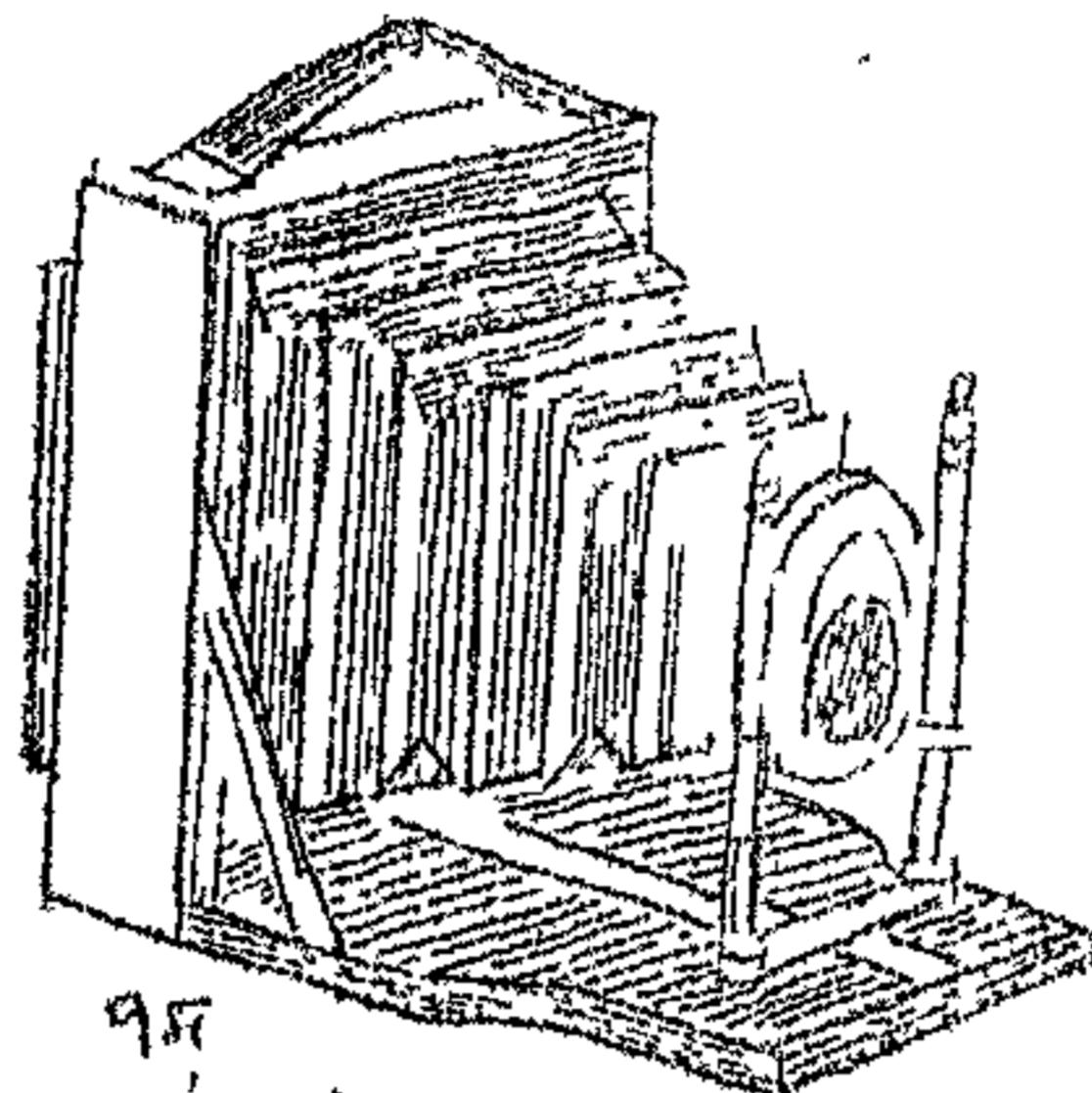
‘ଟୋଟୋକି କାର୍ଯ୍ୟ କତକ ହୁଣି ଯତ୍ରେ ଆବଶ୍ୟକ କି ମକଳ ଧ୍ୟ କୋଥାଯ ପାତ୍ୟ ଯାଏ, ଏବଂ ‘କ’ ନାମ ବର ହେଇଲେ ନବ୍ୟ ଶିଦ୍ଧାର୍ଥିର ଉଠାନୋମ୍ବୀ ହିଂମ୍ବୁ, ଏବଂ ଏହି ଯାଦିବ ମୂଳ୍ୟରେ ବ ବତ ? ଇତ୍ୟାଦି ୨୦୯୮ ଅନେକ ପତ୍ର ମରକୁବ । ହେଇତେ ଲାମା ପଇୟାଛି, ଏକଣେ ମକ୍ଷମ ବାହିନୀଗର ଶୁଣିବା ଯାଏ ଶବ୍ଦ ଏବଂ ଏଗମତେ ବିଶେଷ କବିଯ ଲିଖିନାନ ।

ଟାଲିଙ୍ଗଭାବ ନିଶଲିଖିତ ସ୍ୱର୍ଗତ ବିଗନ୍ଧି ୨ ଟୋଟୋ ବୌନ ଆବଶ୍ୟକୀୟ ଦ୍ୱାରାଦି ବିନ୍ୟାଥ ଯାଇଲା

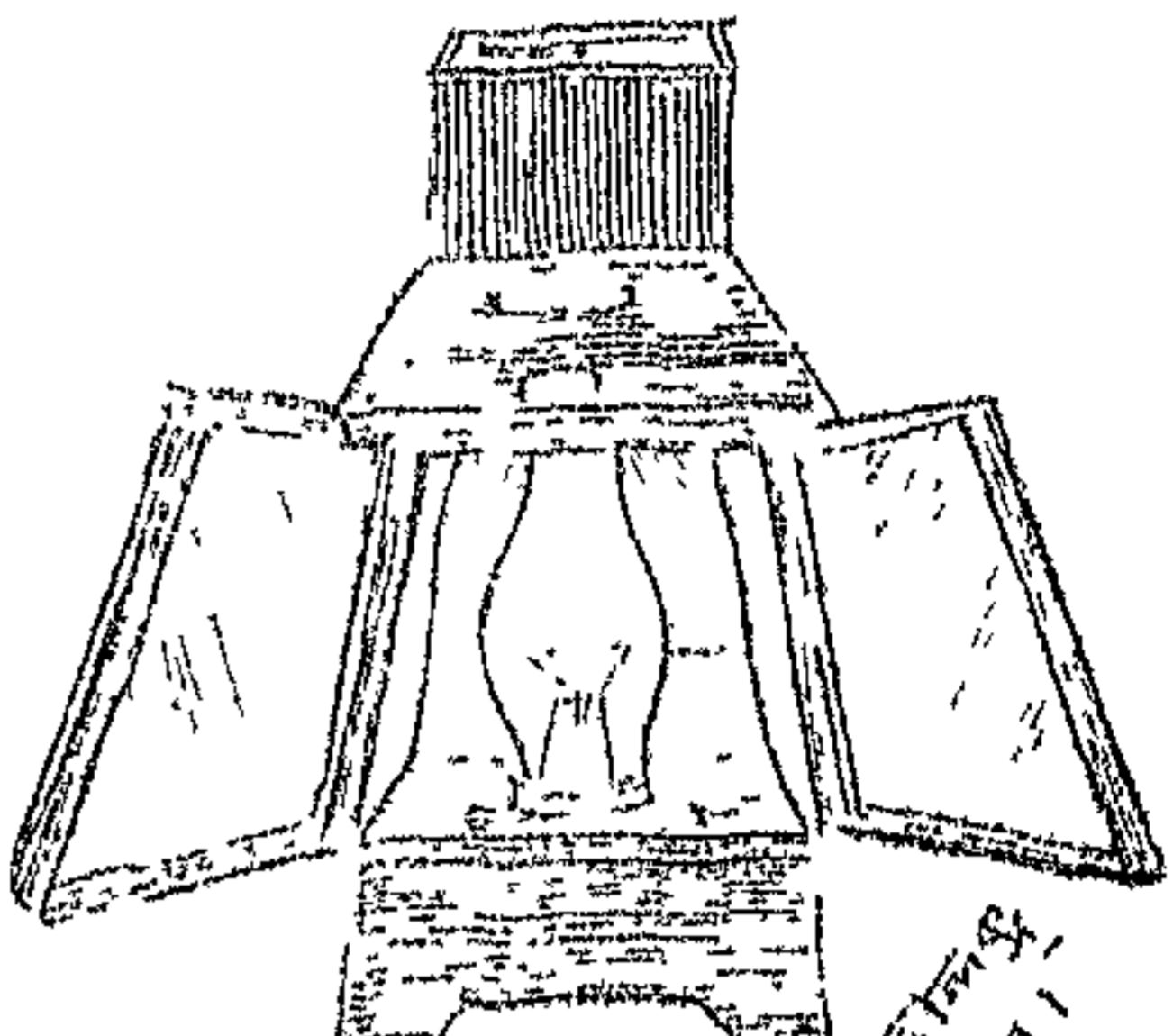
ଫଟୋଟୋ ଛେ ର୍ମ୍ ୨୦୯୯ ମୋଟାକ ୧୦ ମ

ବୁଥଗେଟ୍ ବେଳେ ଓରଡ୍ କେଟ୍ ର୍ମ୍ ୨ ଟୁର ଟ୍ରୈଟ୍

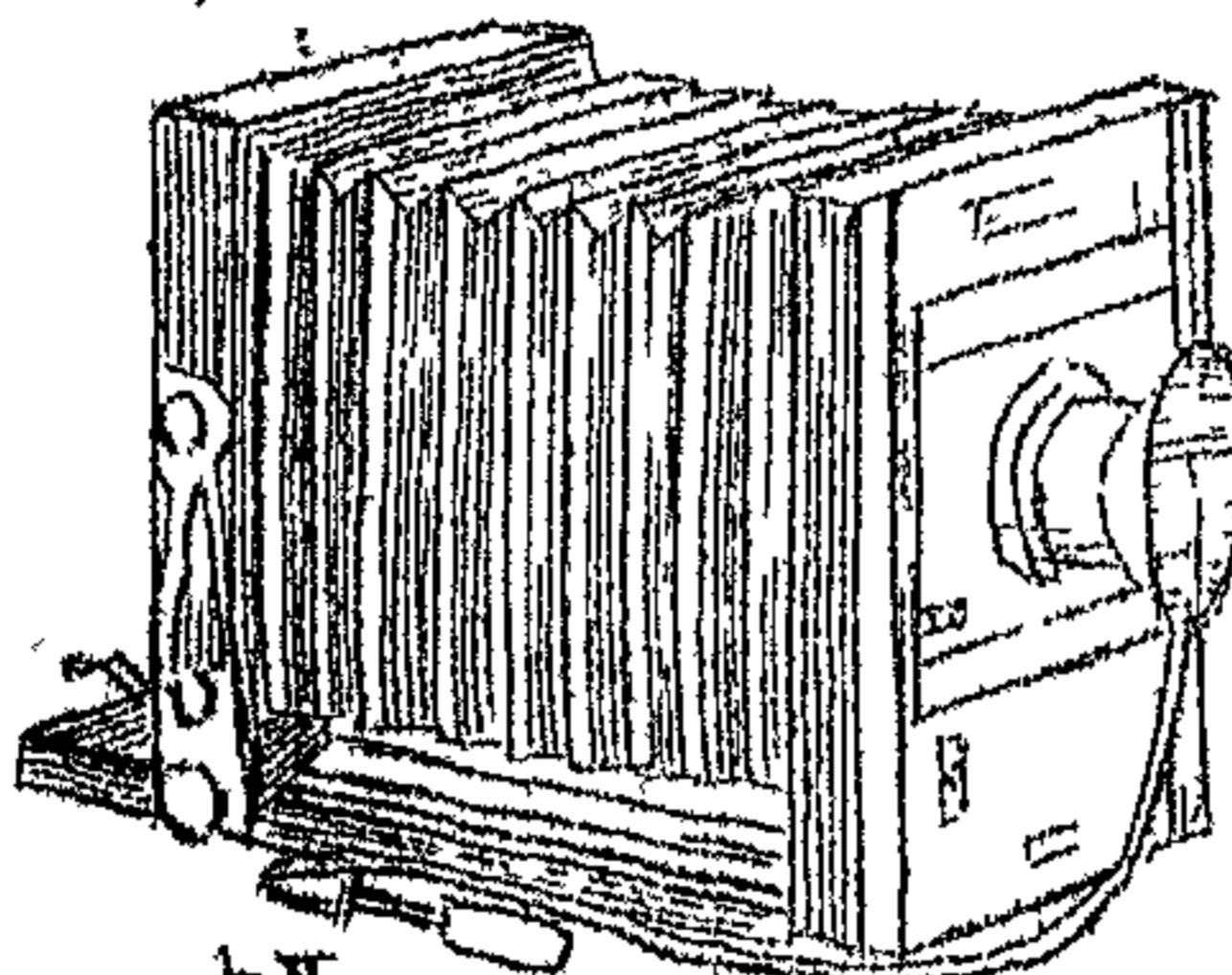
ଜନ ବୌଜ, ଏଲିକାନ୍, ଚୌବନ୍ଦୀ ଟ୍ରୀଟ



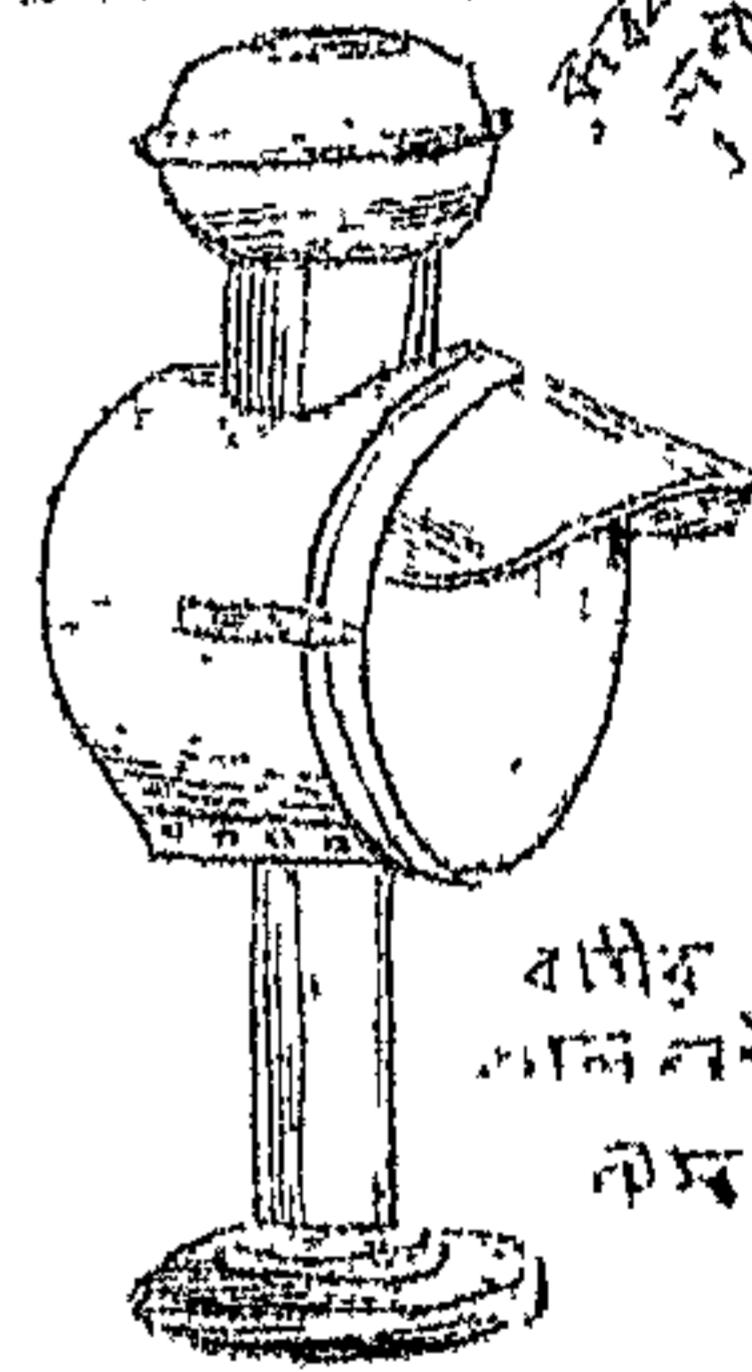
୧୯
ଲି-ମାର୍କିନିଟ୍ସୁ "ଫେମେରୀ



ବିଜ୍ଞାନ୍ୟ,
ପାତ୍ର ।
୧୦୮



୨୩
"କ୍ରିଷ୍ଣାସନ୍ଦନ" ଫେମେରୀ



ବାଣୀ
ପାଳନଶୀଳ ।
କିମ୍ବ

ফটোগ্রাফ নাম অকার মাপের ইইয়া থাকে ছোট ছোট তাসের মত ফটোগ্রাফ অনেকে টি
দেখিয়াছেন, ঐ গুলিকে কার্ট-ডি-ভিজিট সাইজ বলে সওয়া তিন ইঞ্চি \times সওয়া ৮২০০ ইঞ্চি
মাপের কাচের উপর নেগেটিভ ও স্লুট করা হয়, এবং ঐ মাপের কেমেণ্টকে কোষাটাৰ পেট
কেমেরা বলা হয়।

৬ইঞ্চি \times ৪ঙ্গইঞ্চি কাচের উপর যে ফটোগ্রাফ হয়, তাহাকে ক্যাবিনেট অথবা হাফ পেট
কেমেরা নাম দেওয়া হয়। ইহার পর ফুল প্লেট কেমেরা, পৰিমাণ ৬ইঞ্চি \times ৮ইঞ্চি। তাহার
উপর ১২ \times ১০ সাইজ, ১৫ \times ১২ ইত্যাদি আবও অধিকতর বড় বড় কেমের আছে, বিস্তৃত সেই
সকল কেমেরার উল্লেখ এস্তলে নিম্নযোজন শিক্ষার্থির ভাবিয়া দেখা উচিত যে, কেমেনা যতই
বড় আকারের হইবে, সেই কেমেরার ব্যবহাৰোপযোগী ড্রাইপ্লেট প্ৰতি সকল দ্রব্যেবই মূল্য
অধিক হইবে। এজন্য আমৰা ক্যাবিনেট কেমেরা অপেক্ষা বড়, অথবা কোষাটাৰ প্লেট অপেক্ষা
ছোট কেমেরা শিক্ষার্থিকে কিনিতে যিয়ে কৰি।

অধিক বড় কেমেরা লইয়া কোন স্থানে ফটো তুলিতে যাওয়াৰ ও অনুবিধি হয়। বিশেষ বড়
কেমেরা নাড়া চাঢ়া কৰা বড় কষ্ট। এই সকল কাৱণে নব্য শিক্ষার্থিব পক্ষে ছোট যন্ত্ৰই উপযোগী।
আজকাল বাজারে নামা প্ৰকাৰ “হ্যাঙুকেমেরা” দেখিতে পাওয়া যায়। উহার সহিত কোন ও
প্ৰকাৰ পায়া থাকেনা কোনও কোনও দোকানদাৰ আবাৰ ৩ টাকা, ৫ টাকা মূল্যেৰ
কেমেরা ও বিজ্ঞাপন দিয়া বিক্ৰয় কৰিতেছেন। বলা বাহ্যে, ঐ সকল অকম্প্যুট জৰ্যাদি কেই
জইবেন না। উহাদ্বাৰা কিছুই শিক্ষা হয় না, কেবল অৰ্থব্যয় মাজা হইবে।

নব্য শিক্ষার্থিব উপযোগী নামা প্ৰকাৰ কেমেরা আছে, সকল মেকাৰ, ও সকল বেঘোন
বৰ্ণনা কৰা এস্তল সন্তুষ্ট নহে। আমৰা এই পুস্তকে কতক গুলিয়া বৰ্ণনা কৰিলাম, এবং মুল্লাদিব
বিবৰণ ও দিলাম। শিক্ষার্থিৰ অৰ্থ সংজ্ঞতি অনুসৰেই যন্ত্ৰাদি ক্রয় কৰা কৰ্তব্য আমৰা যে
সূকল যন্ত্ৰের উল্লেখ কৰিলাম, ঐ গুলি কম মূল্যেৰ বলিয়া নব্য শিক্ষার্থিব উপযোগী।

৭ম চিত্ৰে “লি মাৰভিনিউজ” কেমেরা দেখান হইয়াছে। ঐ প্ৰকাৰ একটি যন্ত্ৰ আৰু
নিজে ব্যবহাৰ কৰিয় দেখিয়াছি; উহা মূলন শিক্ষাৰ উপযোগী। উহার সহিত একধাৰণা স্লাইচ,
লেন্স, স্টোৱ, এবং পায়া থাকে। সৰ্ব সমেত মূল্য কোষাটাৰ পেট ২১, হাফ প্লেট ৪২, টাকা
উহার নিয়ৰ্মাতা ল্যাক্ষ্মাটাৰ এন্ড সন্স, কলিকাতায় পাওয় যায়।

৮ম চিত্ৰে “ইণ্টাৱনেশনেল” নামক অপৱ এক প্ৰকাৰ কেমেরা দেখান হইয়। ~~ইণ্টাৱনেশনেল~~
বন্িত কেমেরা অপেক্ষা অনেকগুণে শ্ৰেষ্ঠ। সাধাৰণতঃ সকল প্ৰকাৰ ফটোকাৰ্যোৱা জন্য আসা
এই প্ৰকাৰ একটি কেমেরা নিজে ব্যবহাৰ কৰি ইহার গঠনও বেশ মজবুত। এই বেঘোন

পুরোকুল কোম্পানি প্রস্তুত করেন, মূল্য কোণাটার প্রেট ৫০, হাফপ্রেট ১০০, টাকা এই কেমেবার সহিত ও একখানা জ্ঞাইড, লেন্স, স্টার এবং পায় থাকে

এই প্রকাবে ভিন্ন ভিন্ন কেমেবাব বর্ণনা কৰিবা শেষ কৰিতে পারা যায় না। কত প্রকাব, কত ভিন্ন ভিন্ন একাবের যে কেমেবা হইয়াছে, তাহার আব ইয়ত্তা নাই এমনও হইতে পাবে যে, আমরা যে দ্রুইটী কেমেবা নব্য শিক্ষার্থী উপযোগী বলিয়া কিনিতে বলিলাম, হ্যত। সময় মত ঠিক সেই জিনিষটী বাজাবে পাওয়া গেল না। এ প্রকাব হইলে শিক্ষার্থী বড়ই অস্থুবিধি মনে কৰিতে পাবেন। এই জন্ত এইস্থলে যদ্বাদি বিষয়ক একটু বিশদ বর্ণন কৰাও আবশ্যক হই দৃষ্টে পাঠক নিজেই যদ্বাদির ভাল মন্দ বিচাব কৱিয়া কিনিতে পারিবেন।

প্রথমেই বলিয়া দিতেছি যে, ফটোগ্রাফীর যন্ত্র পুরাতন হইলে, তাহা প্রায়ই অকর্মণ্য হয় ; এজন্ত নব্য শিক্ষার্থী পক্ষে পুরাতন যন্ত্র এয় কৱা, কোন মতেই উচিত নহে।

আগরা বাল্যকালে দেখিয়াছি, ফটোগ্রাফীর কেমেবা সকল কাষ্টের দ্বারা প্রস্তুত হইত কিঞ্চ ড্রাইপ্লেটের ব্যবহাব সর্বত্র প্রচলিত হইলে, সৌধিন ফটোগ্রাফারের সংখ্যা অনেক বৃদ্ধি হইল সেই সঙ্গে সঙ্গে ফটো কেমেবা সকল যাহাতে হালকা হয়, বন্দকরিয়া ছোট আকৃতি হয় ; যেখানে সেখানে লাইবার স্থুবিধি হয় ; এই উদ্দেশ্যে কেমেবা সকল প্রস্তুত হইতে লাগিল

ঐ সকল নূতন কেমেবাব মধ্য ভাগটা চম্প' নিম্নিত জাঁতাব ন্যায় ; এজন্ত ঐ সকল কেমেবার নাম হইল “বেলোজ বডি কেমেবা”—আধুনিক ওয়ায় সকল কেমেবা এই প্রকাব বেলোজ দ্বাবা প্রস্তুত হয়। এই চম্পনিম্নিত অংশটুকু মূলকে চর্মধাবা নিম্নিত এবং স্বদৃশ ও ছিদ্র বর্জিত হওয়া আবশ্যক।

কেমেবা বেলোজ দ্রুই প্রকাব এক প্রকাব বেলোজের সমুখের দিকটা অপেক্ষাকৃত ছোট আকাবে, সেই গুলিকে “কণিক্যাল” বেলোজ যুক্ত কেমেবা বলা হয়। যন্ত্র খুব হালকা করিবাব জন্ত এই প্রকাব কণিক্যাল বেলোজ প্রস্তুত কৱা হয়।

আৱ এক প্রকাব বেলোজ আছে, তাহাৰ দ্রুই দিকই সমান ৭ম চিত্ৰে “লি-মাবভিলিউক্স” কণিক্যাল বেলোজ যুক্ত। ৮ম চিত্ৰে “ইণ্টাব নেসনেয়” কেমেবা সমান (Square) বেলোজ যুক্ত। এই দ্রুই প্রকাব বেলোজ মধ্যে “কধাৱ” অৰ্থাৎ সমানাকাবে বেলোজই শ্ৰেষ্ঠ অতএব, শিক্ষার্থী কেমেবা লাইবাৰ সময় স্বয়াৰ বেলোজ যুক্ত কেমেবাই কিনিবেন।

জাস বাড়ও —কেমেবাব যে সকল অংশ কাষ্ট নিম্নিত হয়, সেগুলি প্রায় গেহগুণি অথবা আগ কোনও ভাল মজবুত ও স্বদৃশ্য কাষ্টে প্রস্তুত কৰা হয়। ঐ সকল কাষ্ট প্রায়ই শিবিশেৰ আঠাদিয়া জোড়া থকে আগাদেৰ দেশে বৰ্ণকালে ঐ সকল শিরিশেৰ জোড়া খুলিয়া কেমেবোটি

একবাবে নষ্ট হইয়া যায় যদি কেমেরা ও স্লাইড পিণ্ডলের অথবা এলুমিনিম ধাতুর পাশ ও ইঙ্গু দ্বারা বেশ মজবুত কবিয়া অঁটা হয়, তাহা হইলে বর্ধীকালে তাহা খুঁচি যা যায় না কেমেরা ও স্লাইড ব্রাস বাটও নইতে গেলে, মূল্য কিছু অধিক পড়ে; কিছু অধিক মূল্য দিয়া ব্রাস বাটও কেমেরা লইলে যে পৰে কার্য্যের স্থুবিধা হইবে, তাহার সন্দেহ কি ?

রিভার্সিবল ব্যাক (Reversible Back) কেমেরাব পশ্চাত তাগে একখানি ঘস কাচ দেওয়া থাকে, সেই কাচের উপব সকল ছবির “ফোকস” অর্থাৎ ছায়া ফেলিয়া দেখিতে হয়। সেই কাচের উপব যেমন ছবিটি দেখা যাইবে, তবিধ্যৎ ফটোখানিও সেইরূপ হইয়া থাকে কোনও সময় কাচের লম্বা দিকে, এবং কোন সময় কাচের আড় দিক ছবি তুলিবার আবশ্যক হইয় থাকে কেমেরা পাথার সহিত আবক্ষ রাখিয়া, পশ্চাত তাগের ঘসা কাচ খানিতে ইচ্ছামত আড় দিকে অথবা লম্বাদিকে ছবি তুলিতে পাবা যাইবে, এই প্রকার বন্দোবস্ত থাকিলে, তাহাকে ‘‘বিভার্সিবল ব্যাক’’ বলা যায় কেমেরা ভাল হইলে এই প্রকার হইবেই

স্লইংব্যাক (Swing back) —কেমেরার পশ্চাত তাগের ঘসা কাচ খানি সময়ে সময়ে একটু হেলাইয়া দিলে ছবিখানির অনেক উন্নতি করা যায় এই বিষয়ে পরে বিশদ বর্ণনা করা পিধাচ্ছে, এজন্ত এস্তে কেবল এই বিষয়টির উল্লেখ কবিলাম। কাচখানিকে ইচ্ছামত হেলাইয়া দিয়া ও ছবি উঠাইতে পাবা যায়, একপ কৌশল কেমেরার পশ্চাতে থাকা অতি আবশ্যক এই কৌশলকে ‘‘স্লইংব্যাক’’ নাম দেওয়া হয়

মুভিং ফ্রন্টস (Moving Fronts) —যেদিকে লেন্স আবক্ষ থাকে, কেমেরার সেই দিককে ‘‘কেমেরা ফ্রন্ট’’ বলা হয় কেমেরাব সম্মুখের সেন্ট ও ইচ্ছামত উপর দিকে, ঘোচেন দিকে, অথবা বাম ও দক্ষিঃ পার্শ্বে সবাইবাব উপায় থাকিলে, ছটে ডুণিনাব অনেক স্থুবিধি হয় যে সকল কেমেব ‘‘ক্লাব’’ অর্থাৎ সমানাকারে নির্ধিত হয়, তাহার সম্মুখের দুইখানি কাষ্ঠই সরাইতে পারা যায়, লেন্স সমেত কাষ্ঠ ইচ্ছামত নৌচে, উপবে, অথবা বোন পাশে দাহতে পার যাইবে, এই প্রকার কৌশল থাকিলে, তাহাকে ‘‘মুভিং ফ্রন্টস’’ বলা হয়।

কেমেরা ছোট বড় করিবার জন্ত সাধাবিধতঃ ‘‘র্যাক এণ্ড পিনিয়ন’’ অথবা ‘‘এণ্ডেন্স পু’’ দেওয়া থাকে এক্ষণে দেখা যাইক, এই ছুই প্রকার কৌশলের মধ্যে ভাল কোনটী ?

‘‘র্যাক এণ্ড পিনিয়ন [Rack and Pinion]’’ —কেমেরাব নীচের কাষ্ঠ সংলগ্ন করাতেও আকৃতি ছোট দ্রুই ধূও পিণ্ডল নির্ধিত র্যাক, এবং তাহার উপর একটী লোহ নির্ধিত পিনিয়ন আবক্ষ থাকে পিনিয়ন দুরাইলে কেমেরার আকৃতি ছোট অথবা বড় করিতে ‘‘মু’’ যায় ছোট ছোট কেমেরার পক্ষে এই প্রকার বন্দোবস্ত ভাল বলিয়াই বোধ হয় এই প্রকার র্যাক

দেওয়া কেমেরাব প্রায় সম্মুখ ভাগটাই সবিয়া ছোট বড় হয়। অর্থাৎ লেন্টার্টাই কখন পশ্চাত্ত ভাগের ঘষা কাচ খানিব নিকটবর্তী হয়, কখনো তাহ হইতে দূবে আসে কেমেরার পশ্চাত্ত ভাগটা নড়ে না। আমরা অনেক সময় শ্রেণিয়াছি, লেস ও প্রকাব মড়িলে ইচ্ছামত ফোকস্ করিবার অস্তুবিধা হয় কেমেরার সম্মুখ ভাগটা স্থির রাখিয়া কেমেরাব পশ্চাত্ত ভাগটা সরাইয়া ফোকস্ করিবাব পদ্ধতিই আমরা শ্রেষ্ঠ বলিয়া বিবেচনা কবি

“এঙ্গলেস্কু” [Engles Scow] —কেমেরার নৌচের কাষ্টের মধ্য দিয় একটি মজবুত ক্রু, কেমেরাব পশ্চাত্তদিকে আবদ্ধ, ও তাহা ইচ্ছামত যুবাইবাব জন্য লেন্টাই হে ট হাঙেল দেওয়া থাকিলে, “এঙ্গলেস্কু” নাম দেওয়া হয় ক্রু যুবাইলে, কেমেরার সম্মুখ ভাগ ও লেস ঠিক থাকিয়া, কেমেরাব পশ্চাত্ত ভাগটাই সরে, এবং বেলোজ ছোট ও বড় হয় সকল ভাল কেমেরাতেই এই প্রকাব ক্রু দেওয়া থাকে। আমরা এই প্রকাব কৌশলকেই শ্রেষ্ঠ বলিয় বিবেচনা করি। র্যাক ও পিনিয়ন সহজেই খারাপ হইতে পারে। কিন্তু এই প্রকাব ক্রু হটাই খারাপ হইতে পারে না।

কোনও কোনও কেমেরায় সম্মুখ দিকে “র্যাক এঙ্গ পিনিয়ন,” এবং পশ্চাত্তজাগে “এঙ্গলেস্কু” দেওয়া থাকে। বলা বাহ্যিক, এ প্রকাব হইলে, ভালই হইয়।

কেমেরা সম্পর্কে আমরা যাহা যাহা লিখিলাম, শিক্ষার্থী যত্ন কিনিবার সময় দোকানদারের নিবট গ্রি সকল বিষয় দেখিয়া লইবেন পুনর্বাব এস্তে সংক্ষিপ্ত ভাবে গ্রি কয়টা বিষয়ের উল্লেখ করা আবশ্যক, নিয়ে তাহ লিখিত হইল।

| | | |
|---------------------|-----|--|
| ১. বেলোজ বড়ি | [১] | এই প্রকাব অষ্টবিধ লক্ষণ যে কেমেরায় থাকিবে, শিক্ষার্থী তাহা কিনিতে পারেন সেই কেমেরা দ্বাৰা আবশ্যক যত্ন সকল প্রকাব কার্য্যই হইতে পারিবে। ল্যাঙ্কাস্টার নির্ধিত যে ইণ্টাব নেসনেল নামক কেমেরাব কথা আমরা লিখিয়াছি, গ্রি কেমেব উজ্জ অষ্টলক্ষণ সম্পর্ক উহার অপেক্ষ অল্পমূল্যে গ্রি জাতীয় কেমেবা অপব কোন ব্যবসায়ীব দ্বাৰা প্রস্তুত হয় নাই। রস্ ডালমেথেয়া, ওয়াটসন এঙ্গ সনস্, মিথার এবং এতদেশে জন্ম ব্লৌজ নামক ব্যবসাবিবা যে সকল কেমেরা প্রস্তুত কৱেন, তাহাৰ মূল্য আবশ্য অধিক যাহাৰ অর্থাত্তাৰ নাই, তিনি ইচ্ছামত যে কোনও ভাল খেকাবেৰ কেমেরা লইতে পাবেন, উপবোক্ত অষ্ট বিষয় দেখিয়া লইলে, কেমেরা ভালই হইবে |
| ২. স্থাব বড়ি | [২] | |
| ৩. আস বাটিণ | [৩] | |
| ৪. রিভার্সিবল র্যাক | [৪] | |
| ৫. স্থুইং র্যাক | [৫] | |
| ৬. মুভিং ফ্লেটস | [৬] | |
| ৭. র্যাক ও পিনিয়ন | [৭] | |
| ৮. এঙ্গলেস্কু। | [৮] | |

কেমেরা সম্পর্কে আমরা যে প্রকাব বিষদ ভাবে লিখিলাম, উহার আহুসঙ্গী জ্ঞাইড়, লেস, এবং

~~প্রাপ্তি~~ প্রত্তিব কথা ও শিক্ষার্থিকে সেইৱপ বৃকাইয়া দেওয়া আবশ্যক।

বুক ফর্ম ডবল স্লাইড — [Book Form Double Slide] যে কাঠের উপর ফটোগ্রাফ ভূজি তে হইবে, সেই কাচ পৃষ্ঠক পাওয়া বাবের মধ্যে কনিষ্ঠা দ্রুইতে এ ; যে ২ খাঁচ মধ্যে তাহা কেমেবার বসাইতে পার যায় এবং ছবি উঠাইবা সেই বায়া মধ্যে কেমেব হইতে খুণি । দ্রুইতে পার যায় এই বাঙ্গ শুলিকে “স্লাইড” বলা হয় যে স্লাইড মধ্যে একেবাবে দ্রুই থানি কনিষ্ঠ ড্রাই পেট লাইতে পারা যায়, তাহাকে ডবল স্লাইড বলে স্লাইড শুলি কেমেবার অংশ মাজে, উহা কেমেবার মতই বাট্ট বাট্ট হওয় অতীব অযোজন ঐ স্লাইড সাধারণতঃ দ্রুইপ্রকার হয় ।

যে শুলি কাচ লাইবাব সময় পুস্তকের মত খুলিতে পার যায়, এবং কজা দেওয় থাকে, সেই শুলিই উৎকৃষ্ট এই প্রকার হইলে “বুক ফর্ম” [Book form] নাম দেওয়া হয় কেণ্ট কেমেবার সহিত ছবি থানা, অথবা চাবিথানা, স্লাইড দেওয়া থাকে ; সাধারণতঃ ভাল কেমেবার সহিত দ্রুইথানা স্লাইড থাকে । স্লাইড যত বেশী হয়, ততই শুবিধা ।

লেন্স [Lens]—লেন্স সমস্কে পাবে বিশদ বর্ণনা কবিয়াছি, এছলে এই মাত্র বলিবেই হইবে যে, লেন্সই যন্ত্র মধ্যে সর্বাপেক্ষা শ্রেষ্ঠ বস্তু অনেক পরিশম দ্বাব ভাল লেন্স প্রস্তুত হইয় থাকে । স্মৃতবাঁ অল্প মূল্যে যে সকল লেন্স পাওয়া যায়, অথবা লি-মার্টিলিউবা, ইল্টা-ব মেসনেগ, এ পৃতি স্বল্প মূল্যের যে সকল ফটো সেট বিক্রয় হয়, তাহার সহিত যে লেন্স দেওয় থাকে, তাহ কি প্রকাবে ভাল হইতে পাবে ? তাহা ভাল লেন্স নহে, কিঞ্চ তাহা স্বাবা ফটোগ্রাফী শিক্ষা হইতে পারিবে কতক দূর শিক্ষা হইলে, ভাল লেন্স কিনিয়া ঐ কেমেবায় বসাইয়া নাইসে ও চলে তিনি অথবা হইতেই ভাল লেন্স লাইয় কার্য করিতে চাহেন, তিনি লেন্স বিষয়ে আগ্রাম পাঠ কবিয়া দেখিলেই লেন্সেব ভাল মন্দ সকল জানিতে পারিবেন

কেমেবাব পায় (১৮৮৮) কেমেবাব পায় শুলি মোড়ক কবিয়া লাইবাব শুবিধ হয় ।
উহা বেশ অজুরুত হওয় অযোজন

উপবে যে দ্রুই প্রকাব ফটো যন্ত্র নির্দিত ছইল, ঐ শুলি অল্পমূল্যের, উহাকে ফটো-সেট বলে । উহার অপেক্ষ বহুমূল্য এবং উৎকৃষ্ট আবও নানা প্রকাব ফটো যন্ত্র আছে, কিন্তু নব্য শিক্ষার্থীকে আমরা ঐ সকল বহুমূল্যের যন্ত্র ক্রয় করিতে বলিন । প্রথম শিক্ষার সময় অল্পমূল্যের যন্ত্র উপযুক্ত । বিশেষতঃ কেবল যন্ত্র শুলি হইবেই যে ফটোগ্রাফ শিক্ষাব উপযোগী সকল জন্ম ইইল, তাহা নহে ; ঐ সকল যন্ত্র ছাড়া এখনো বহু দ্রব্যেব আবশ্যক কোন কোন দ্রব্যেল যা ১০০, এবং তাহার মূল্যই বা কত, ঐ সকল বিঃয় অথবা হইতেই শিক্ষার্থীর অবগত হওয় অযোধ্য ।
ফটোগ্রাফীর যন্ত্রাদি কিনিতে যে ব্যয় পড়ে, তাহার উপযোগী অন্তর্ভুক্ত বস্তু কিনিতেও আর্থ অন্তর্ভুক্ত ব্যয় হইবে

অনেকে হয়ত ইহা শুনিয়া বলিবেন, যে কার্য শিক্ষা করিতে এত ব্যয়, তাহা শিখিয়া বি
হইবে ? ইহার উত্তরে আমরা এই গত্তে বলিব যে, এই বৎসরের হিসাব দৃষ্টে আমর দেখিতে
পাইতেছি যে, ত্রিশ সহস্র ব্যক্তি পৃথিবীর সর্বত্র ফটোগ্রাফীর ব্যবস করিয়া জীবিকা নির্বাহ
করিতেছেন। অঙ্গীয় যত্নাদি নির্ণ্যাতা আরও অনেক আছেন। কেবল স্থ করিয় ফটোগ্রাফীর
চৰ্চা করেন, এমন প্রায় দশলক্ষ মূল্যায় আছেন বিলাতের বাবমিংহাম নগরের ফটো যত্ন
নিষ্ঠ'ত' ল্যাফ'স্টার' এও সব তাহাদের নির্ণ্যিত "ইন্সট'ফ্ট'গ্রাফ'" নামক স্ববিধ্যাত কেমেব'ব
একলক্ষ পঞ্চাশ সহস্র সেট বিক্রয় করিযাছেন। বিলাতে বড় বড় দোকান কত শত রহিয়াছে
তাহাদেরই বা বিজয় কত ? এই হিসাবে ভাবিয়া দেখুন, ফটো দ্বারা কত লোকের জীবিকা
নির্বাহ হইতেছে।

পঞ্চম অধ্যায়।

বর্ষাকালে সুর্যের বিগরীত দিকে যেদেব উপব যে ইন্দ্ৰজল দৃষ্ট হয়, তাহাতে সূর্য রশ্মির
সপ্তবিধি বৰ্ণ দেখিতে পাওয়া যায় লোহিত, অরেঞ্জ, পীত, হরিৎ, নৌল, ভায়লেট এবং ইঙ্গো,
এই সপ্তবিধি বৰ্ণের রাসায়নিক ক্রিয যে প্রকাব হয়, তাহা বৈজ্ঞানিকেবা স্থিব করিয়াছেন
তাহারা বলেন, লোহিত বৰ্ণের আলোক দ্বারা ফটোগ্রাফীর প্লেটে উপব কোনও বিবর্তন
বৃক্ষিতে পারা যায় ন এই জন্মই ফটোগ্রাফাবগণ অন্ধকার গৃহমধ্যে লোহিত বৰ্ণের আলোক
আলিয়া সকল কার্য করেন। এই লোহিত বৰ্ণের আলোক দ্বারাই ড্রাই প্লেট নাড়িতে চাঢ়িতে হয়,
ক্রমবিকাশ কালেও এই লোহিত বৰ্ণের আলোকের প্রয়োজন হয়

কেহ কেহ অন্ধকাব গৃহের কোনও দেওয়ালে লোহিত বৰ্ণের এক খণ্কাচ বসাইয়া লয়েন
দিবসে আলোক ক্রু ক'চের মধ্যদিয়া অ'স্টে, গৃহ মধ্যে ল'ল বৰ্ণের আলোক প'ওয়া যায়
বাত্রিকালে ঐ কাচের বাহিবে কোনও প্রকাব আলোক আলিয়া দিলে, বেশ কার্য হইতে পারে।
"য়েহাদের গৃহমধ্যে ঐ প্রকাব লাল বৰ্ণের কাচ বসাইয়া লইবার স্ববিধা হইবে, তাহারা তাহাই
বাববেন।" কিন্তু ইহার স্ববিধা না হইলে, লাল বৰ্ণের একটী লৰ্ণ কিনিতে হইবে
আমাদের দেশে আজকাল ভাল চিনেব মিস্ত্ৰীৱ অভাব নাই অবশ্যক যত ও আপন পছন্দ

মত যিনি দেশী মিস্ট্রীর দ্বারা লাল লণ্ঠন প্রস্তুত করাইয়া গহিতে পারিবেন, তাহার অপেক্ষাকৃত কম মূল্যে তাল লণ্ঠন হইতে পাবে কিন্তু পলিগ্রামের লোকের পক্ষে ফটো কার্যোব উপযোগী “রুবিল্যাম্প (Ruby Lamp) ক্রয় করাই উচিত আমরা ৯ম ও ১০ম চিত্রে দ্রুই একার রুবিল্যাম্প দেখাইলাম

“রুবরালক্স”(Rubralux) নামক লণ্ঠন লাঙ্কাস্টাব এঙ্গ সঙ্গ কর্তৃক নির্মিত হয় উহার মূল্য ৮ টাকা ঐ ল্যাম্পে কেবোসিন তৈল জলে ঐ লণ্ঠন বন্দ কবিলে কেবল লাল বর্ণের অন্তেক ব্যতিবেকে অপর কেবল ও অক্ষর অন্তেক নির্গত হইতে পারেন।

তৈল অপেক্ষা বাতৌব লণ্ঠন শুলি আমরা পসন্দ করি ৯ম চিত্রে ঐ প্রকার বাতৌব একটী আলোক দেখান হইল ঐ প্রকাব একটী ল্যাম্প ১০টাকায় পাওয়া যায়। ইহার অপেক্ষা কথ ও অধিক মূল্যের নানা একার রুবিল্যাম্প পাওয়া যায়, বাতী, কেরোসিন, গ্যাস অথবা বিদ্যুৎ দ্বা বা আলো হয়, এই প্রকাব নানা জাতীয় লণ্ঠন প্রস্তুত হইয়াছে, যাহার যেমন সুবিধ হইবে, তিনি তাহাই পসন্দ করিয় লইবেন।

লণ্ঠন যে প্রকাবই হউক, অস্বকার গৃহ মধ্যে উহা আলিঙে, উহ হইতে লাল বর্ণের অন্তেক ব্যতিরেকে বিদ্যুমাত্রও খেত বর্ণের আলোক বাহির ন হয়; কারণ তাহা হইলে ফটোগ্রাফীর কার্য হইবে না।

ফটোগ্রাফীর কাচ ও কাগজ প্রত্তির তত্ত্ববিকাশ [Development] এবং ধৌত করিবার অন্ত পোবল্লেন অথবা চীনা মাটিব প্রস্তুত নানা একার ডিম্প পাওয়া যায় ঐ একার ডিম্প কাঁচ অথবা ব্বার নির্মিত ও হইতে পারে যিনি যে মাপের কেয়েবা ন হইবেন, তাহাকে সেই মাপের তিনখানি ডিম্প কিনিতে হইবে একখানি পোবল্লেন, একখানি কাচ নির্মিত, এবং একখানি ডিম্প ব্বার নির্মিত হইলে, কার্য্যের সুবিধা হয় ক্যাবিনেট মাপের ঐ ৩০০ বি তিনখ নি ডিম্পের মূল্য প্রায় ৩ ডিম্পটাকা লাগিবে

ইতি পূর্বে যে সকল দ্রব্যাদি ক্রয় করিতে বলিয়াছি, তাহা ছাড়া আব যে সবচে জ্বর্যের প্রয়োজন, নিয়ে তাহার তালিকা প্রদত্ত হইল —শিক্ষার্থী যে মাপের কেয়েবা ন হইবেন, সেই মাপেরই অপবাপব দ্রব্য ক্রয় করা আবশ্যিক; তাহা বলা বাহ্যিক্য।

- (১) এক ডজন সাধারণ [Ordinary] ড্রাইপ্লেট
- (২) ২ফুট × ২ফুট মাপের একখানি কালবর্ণের বস্ত্র [বনানি, মকমল, অথবা ছাড়ার কাপড় দ্রুই পুর কবিয়া সেলাই করিয়া গহিতে হইবে]
- (৩) একটী ৪ আউল মেজার প্লাস

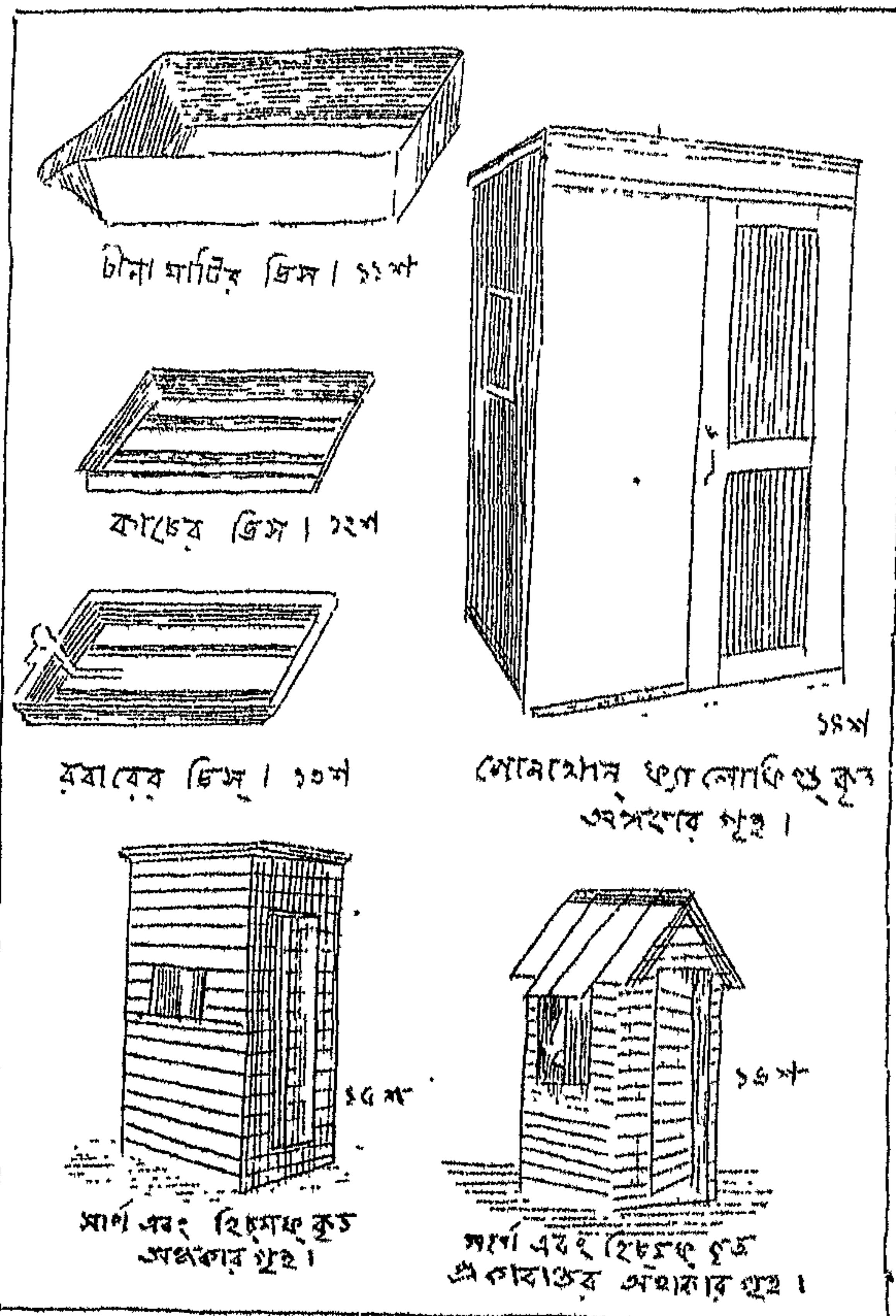
- (୩) ଏକଟି ୨ ଡ୍ରାମ ମେଜୋର ଫୀସ ।
- (୪) ପାଇବେଗ୍ୟାଲିକ ଏସିଡ୍ ଏକ ଆଉଳ୍ଡ ।
- (୫) ସାଇଟ୍ଟିକ ଏସିଡ ଏକ ଡ୍ରାମ ।
- (୬) ଲାଇକାର ଏମୋନିୟା ଏକ ଆଉଳ୍ଡ ।
- (୭) ପଟାସିଯମ୍ ବ୍ରୋମାଇଡ୍ ଦୁଇ ଡ୍ରାମ ।
- (୮) ହାଇପୋ-ସଲଫାଇଟ୍ ଅବ୍ ସୋଡା ଏକ ପାଉଣ୍ଡ ।
- (୯) ନେଗେଟିଭ୍ ଭାନିସ ଏକ ଶିଶି ।
- (୧୦) କେମେରାବ ପରିମାଣେ ଏକ ବା ତତୋଧିକ ପ୍ରିଣ୍ଟିଂଫ୍ଲେମ ।
- (୧୧) ଇଲଫୋର୍ଡ ମାର୍କା ପି, ଓ, ପି, କାଗଜ ଏକ ପ୍ଯାକେଟ୍ ।
- (୧୨) ସାଧାରଣ ଫଟ୍କିରି ଗୁଡ଼ା ୪ ଆଉଳ୍ଡ ।
- (୧୩) ଏମୋନିୟମ୍-ସଲଫୋ-ସାମାନ୍ୟାଇଡ୍ (ବିଷ) ଏକ ଆଉଳ୍ଡ ।
- (୧୪) ସୋଡିୟମ୍ ସଲଫାଇଟ୍ ଏକ ଆଉଳ୍ଡ
- (୧୫) ଗୋଲଡ କ୍ଲୋବାଇଡ୍ ଏକ ଟିଆବ ।
- (୧୬) ଉଷ୍ଣଧାନ୍ଦି ଓଅନ କରିବାର ଜଣ୍ଠ ଛୋଟ ମିକ୍ରି ଓ ଗ୍ରେଣ, ଡ୍ରାମ ପ୍ରଭୃତି ବାଟଖାରା ୧୮ୟେ ।

୧ ହଇତେ ୧୦ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଦ୍ରୟାନ୍ଦି କାଚେର “ନେଗେଟିଭ୍” କରିବାର ଜଣ୍ଠ, ଏବଂ ୧୧ ହଇତେ ୧୬ ମୁଦରେର ଦ୍ରୟାନ୍ଦି ଉକ୍ତ ନେଗେଟିଭ୍ ହଇତେ “ପର୍ଜିଟିଭ୍” କରିବାବ ଜଣ୍ଠ ଆବଶ୍ୟକ ହଇବେ ।

ଯନ୍ତ୍ରାନ୍ଦି ଏବଂ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଦ୍ରୟାନ୍ଦି ସକଳ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ନୂତନ ହେଁଯା ପ୍ରଯୋଜନ । ପୁର୍ବାତନ ଯନ୍ତ୍ରାନ୍ଦି କଥନଙ୍କ କ୍ରୟ କରିବେ ନା କଥନ କଥନ କଲିକାତାର ବାଜାରେ ଭାଲ ଭାଲ ଫଟୋ ଯନ୍ତ୍ର (ଯାହା ଅଧିକ ବ୍ୟବହରିତ ହ୍ୟ ନାହିଁ) ଧୂବ ସନ୍ତାଦରେ ପାଓଯା ଯାଇ ଐ ସକଳ ଯନ୍ତ୍ର ଦେଖିଯା ବୁଝିଯା ଲାଗୁଯା, ମର୍ଯ୍ୟ ଶିକ୍ଷାଧିର ପକ୍ଷେ ଅମ୍ଭବ । ଏକାରଣ ଆମରା ଯନ୍ତ୍ରାନ୍ଦି ନୂତନ କିମିଯା ଶିକ୍ଷା କରିତେ ବଲିଗାମ ।

ସତ୍ତ ଅଧ୍ୟାୟ ।

ଶିକ୍ଷାଧିର ଏକଥେ ଏକଟି ଅନ୍ଧକାର ଗୁହେର ଆବଶ୍ୟକ ଯାହାଦେର ଇଷ୍ଟକ ନିର୍ମିତ ଗୁହେ ବାସ, ତାହାଦେର ପକ୍ଷେ କୋନାଓ ଏକଟି ଛୋଟ ଘର ଫଟୋଗ୍ରାଫୀର ଉପଯୁକ୍ତ କରିଯା ଲାଗୁଯା, କଠିନ କାର୍ଯ୍ୟ ନହେ ।



এক্ষণে দেখা যাউক, এই খবর কোন হওয়া অযোজন ?

দিনের বেলায় কোন গৃহের দ্বার জানাল বন্ধ করিয়া দেখ দেখি, কি প্রকার অক্কার হয় ?
আমাদের দেশের গৃহের দ্বার জানালা সকল বন্ধ করিয়েও কিছু ন মিছু বাহিবেন আলোক গৃহ
মধ্যে প্রবিষ্ট হয় খড় ব'ড়, কন্ট'ট অভ্যন্তর পার্থ দিয়াও অ'পেক আসে

এই প্রকার সামাজিক আলোক আসিলেও ফটোগ্রাফীর কার্য হইতে পারে ন একেবারে
“যুট ঘুটে” অক্কার বলিলে যাহা বুঝায়, ফটো কার্যের ঘব যেই প্রকার হওয়া প্রয়োজন
বিন্দুমাত্রও আলোক আসিলেও চালিবেন। দিনের বেলায় তাহার মধ্যে গেলে বাতিল গথ
অক্কার বোধ হওয়া চাই।

বাতীর মধ্যে যে যুটী সর্বাপেক্ষা ছোট, এবং দ্বার জানালা কম, সেই ঘর হইতে সকল
জৰ্যাদি সবাইয়া দিয়া, প্রথমতঃ সেই ঘরের মেঝে উওমকপে পরিষ্কার করিয়া লাইবে ফটো
কার্যে সর্বদাই বিশুল্ক জন্মের অযোজন, এই কারণ এই গৃহে জল-বাধিবাব একটী জায়গ করিতে
হইবে। জল ফেলিবাব জন্ম নবদামা থাবিলে, সেস্থান দিয়া ব হিবের অ'পোচ আসিতে না
পাবে, সেবিষয়ে সাবধান হইতে হইবে। জল ফেলিবাব জন্ম স্থত্ত্ব একটী গামলা ব ট্যু
বাধিলেও চলে। যিনি গৃহ দেওয়ালে একটী ছোট ভুলেব ট্যু বসাইয়া নাইতে “বিধেন, এবং
সেই ট্যুকের সহিত ব্যাবেব পাইগ শুক্র করিয় জা ফেলিব ব জায়গ বি গুপ্তে এ টু বে জ টু।
বসাইয়া লাইবেন, তাহার কার্যেব বড় স্মৃতিধা হইতে পাবে

ফটোগ্রাফীর কার্য করিবাব জন্য একথানি ছোট টেবিল, একধানি চেয ন, হাত মুছিবাব ও না
তোষালে, সাবান অভ্যন্ত এই ঘবে ব খা উচিত তীক্ষ্ণলে বা ঘবের মধ্যে ১১, এবং
থাকিলে কষ্ট হইতে পাবে, একাবণ এই ঘবে ব মু ১১, ১৩ হইতে প'চো, এ১৮ আৰে। এ ১১
না পাবে, এমন ঘেনি কৌশল বনা উচিত ঘবেন উপনে এ টো ডেন্টিকেট ১১। ১১
পাবিলে ভাল হব এই ভেন্টীকেটবুকি, তাহ বোধ কৰি অনেকে জ ঘেন ন

ঘবেব ছাতেব উপব যদি একটী ছিদ্র থাকে, এবং ঘবেব ন চে যদি বায় প্রবেশ কৰিবাব, থ
থাকে; এবং সেই ছোট ঘবেব মধ্যে যদি একজন কোক বশিয থাকে, তাহাব শাবিয়ান উত্তোল ব'শতঃ
সেই ছোট ঘবেব বায় ক্রমশঃ উত্তোল হইবে, এবং সেই বায় ছ জেব ছিদ্র দিঃ উন্দেন্যাত ১১। ১১,
এবং ঘবেব নীচেব বায় থে বিশুল্ক বায় এবিষ্ট হইয় সেই হে ট ঘবেন মধ্যে বায় কা ত হ'ত
থাকিবে ইহাকেবল কৌশলমাত্র, এত বে গৃহে বায়ুব পথ বাধা একান্ত আবশ্যক বায়ুপথ নথিবে
হইবে, কিন্তু সেস্থান দিয়া আলোক আসিবা চালিবেন ছ তের ছিদ্রেব উপব এ ট মুক্ত। ১০। ১১
বক্র নল বসাইয়া লাইলে আলোক আসি তে পারিবে ন ইহাই এক প্রকার ভেন্টীকেট। হইবে

ক্রমবিকাশ (Development) কবিতাব কাব্যস্থে সকল রাসায়নিক এব্যাপ্তির আবশ্যক, ত হ এই গৃহে বাখা প্রযোজন গৃহের দেওয়ানে যদি সেন্ট্রু থাকে, তাহ হইতে উৎস সন্দেশ তারাতে বাধিব বস্তুবিধি ইথ মচে দেওয়া। গোটাবতক বড পেবে প্রতিয়া ভাঙ্গে উপ ব ধান কয়েক তত্ত্ব বাখিয়াও হে জনেব ত শাব্দে ন হইতে পাবে

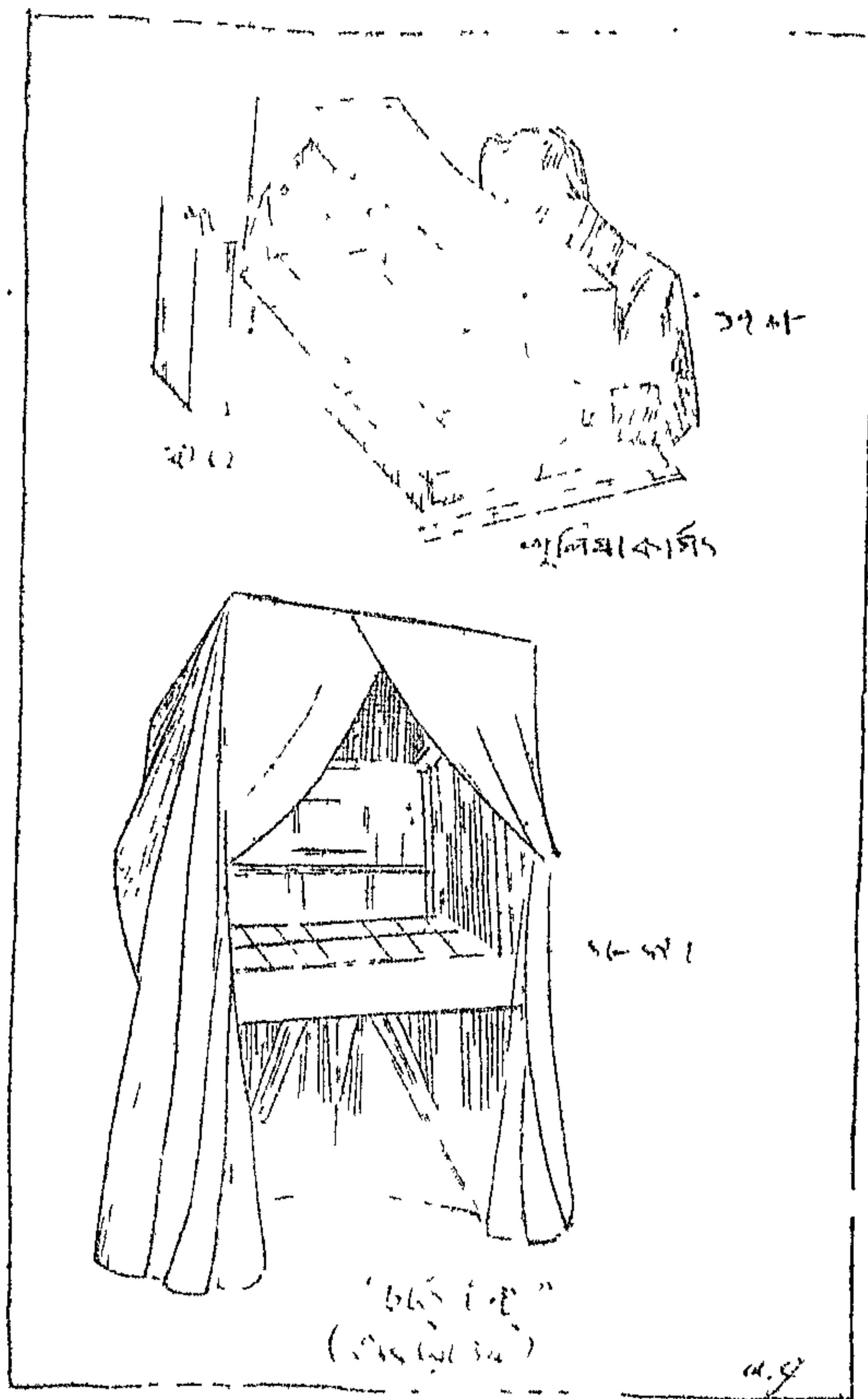
গৃহটী সম্পূর্ণভাবে আবাসিন বিবাস জন্য ন ন অৰ ব র্ত ব ধন ব ল যায এ চৰ্ব বার্ষিক ছাতাব বাস দুই পুণ ব নিয়া গৰ্বা কবিতে অ পোক পথ কদু হইতে লে শম, বস্তুবিধি জানু পত্র ই মাহিন দ প ছিদ জন্য কবিতে গুচ হাতে পত্র পোখ বাস, মেমন ব ন মাহ হউক, কিন্তু এবটী গৃহ চৰ্ব বার্ষিক কাপ ত গো ব এব ত ববিহ হইবেন

উপবে শাব্দ পিণ্ডি ও হইল তাহ ইষ্টক নির্মিত গৃহের উপযোগী বিত্ত ধারাদেব ইষ্টক নির্মিত গৃহ ন হ, তাহাব কি বিলেন ? ইছ থাকিবে সামি ইইতে পাবে এবটী মাটিব দেওয়ান তেওঁ। ছুট যব এই বার্দ্যেব উপযোগী এবিয ও দুত বিত্তে পে ধাবহ ব কি ? এবগুন তেক বসিয মার্য কবিতে পাবে, এই প্রকাৰ এফটি যব ও ত হাতে ও গোব জাযগা, ভেন্টোগেটুন, পর্দ এবং কাষ্ট নির্মিত ছেট একটী দ্বিতীয় বার্দ্যে বোধ ববি ১০ ১৫ টাকাৰ অধিক বা ১৮ মেন মন্দঃস্বৰোব শিক্ষ থিগু স্বাচ্ছান্দে এই প্রবাস ধৰ ববিধ হইতে পাবেন

মেম হইতে পাবে, কোনও বিশেষ বাব বশতঃ ক্রী পো ব পিণ্ডি নির্মিত অন্বেশ গৃহ প্রত প স্মে স্বুবিধ হইবে। উহাব জ্য মুটুন্তুন কৰ্বু পে কয়ে কেবল ডার্বিন' এবং 'ডার্কটেট' বিত্ত হইল ক্রী পো ব এটী বশ (গু) ভৱ এবটী টেক্ট (গুরু) কিন্তে পাবিলো ভাগ পয

১৪শ চিত্রে জোনাথান ফ্যালোডিগড কুক ও প্রত এক প্রকাৰ কাষ্ট নির্মিত ডাব বশ অথৰ্ব কাষ্টা বার্দ্যেব উপযোগী ত কুক ব গৃহ দেখান হইল। উহ এচে ৬০ ফুট, ল কে ৪ ফুট, এবং প্রশ্রে ও ফুট। উহাব এব পাথে লোহিত বণেব বাচ দেওয়ে জোলা আছে, এবং বধ্য বাহু বতিবাৰ ত গু 'ভেন্টোগেটুব' দেওয়া আছে, উহাব মধ্যে বার্দ্য এবিবাৰ উপযোগী পে দেওয়া শিক্ষ (কু কেনিবাৰ পাএ) বেঁক, জল গেলিবাৰ পঞ্চপ হত্যাদি আছে বিশেষতঃ ইহা এমন বৈৰে লে প্ৰস্তুত, যে ইহ খুলিষ লইয এক স্থান হইতে অপৰ স্থানে বসাইতে পাৰা যায, ত র্দ্ব ঘটোৰ মধ্যেই ইহ ধুট বিদ্যা বার্দ্যোপযোগী ববিতে পাৰ যায ইহাব মূল্য ৭ পাউণ্ড ১০ ১৫ লিং

১৫শ চিত্রে অপৰ এক প্রকাৰ কাষ্ট নির্মিত ডার্ককু দেখান হইল। লিভাৰপুৰ পেবেৰ সার্প এবং হিচমফ, নামক বাবস্যাবিবা এই প্রকাৰ গৃহ প্ৰস্তুত কবিধা বিক্ৰয কৰেন। উহাব মধ্যেও পুৰুষক মকল প্রকাৰ বন্দোবস্ত আছে এই গৃহও খুলিয স্থানাঞ্চলে লইতে পাৰা যায,



এবং অঙ্ককলের মধ্যেই পুনর্বার যোজিত করিয়া কার্য করিতে পারা থায়। ইহার মূল্য ২ পাউণ্ড
৪ সিলিং হইতে ৩ পাউণ্ড ৮ সিলিং পর্যন্ত।

১৬শ চিত্রে অপব এক প্রকার অঙ্ককার গৃহ দেখান হইল। ইহাও শার্প এবং হিচখফ মামক
ব্যবসায়ীরা প্রস্তুত করেন। ইহার জানালায় রাতির কালে একটী লাম্প বসাইয়ার বাবস্থা আছে,
এবং উহার ছান্দ চিজান্তুয়ায়ী গডেন্ট ভাবে নির্মিত। ঐ একাব গৃহের মধ্যেও সিক, সেলফ, বেধ,
ইত্যাদি আছে, এবং ইহার আবশ্যক মত খুলিয়া স্থানান্তরিত করিতে পার যায়, এবং আম সময়ের
মধ্যে পুনরায় একত্র করিয়া কার্য করিতে পার যায়। ঐ একাব ডার্ককামের মূল্য ৩ পাউণ্ড ১
সিলিং ৬ পেনি হইতে ৪ পাউণ্ড ১৫ সিলিং পর্যন্ত।

১৭শ চিত্রে যে ডার্কটেক্ট দেখান হইল, ডবলিউ, আর, বেকাল নামক ব্যবসায়ী (৯ মৎ
বেলগ্রেট, বোড, ওয়ালিংটন, ইংলণ্ড) উহা প্রস্তুত করিয়া বিক্রয় করিয়া থাকেন। উহার মধ্যে ইত্য
অবিষ্ট কবিয় যে ভাবে কার্য করিতে হয়, চিত্র দৃষ্টি শিক্ষার্থী তাহ বেশ বুঝিতে পারিবেন, স্মৃতিরাঙ
অধিক বর্ণনা অনাবশ্যক। ঐ প্রকার তাত্ত্ব গোড়াক করিয়া ১২ × ১৩ × ৩ ইঞ্চি ১৫ সিলিং এন্টি
বাল্পে পরিণত হয়, তাহাও চিত্রে দেখান হইয়াছে। ঐ তাত্ত্ব মূল্য ১০ পাউণ্ড ১১ সিলিং ৩ পেনি।

১৮শ চিত্রে প্রকারাত্তর ডার্কটেক্ট দেখান হইল, শিক্ষার্থী এই সকল বিদেশনা পুনঃ অন বি
গৃহ নিজেও ব্রিথ করিতে পারিবেন, ইহা আঁচ্চা আঁচ্চা কর্ম।

আমরা যে সকল অঙ্ককার গৃহের বর্ণনা বিবরণ, ব্যবসায়ী ফটোগ্রাফারদিগের উহ দ্বাৰা
ইহাদেৰ ফটোগ্রাফীৰ ব্যবসা কৰিবাৰ ইচ্ছা নাই, তাহাদেৱ পক্ষে একট স্থায়ী ডার্ককাম কৰিবাল
আবশ্যক নাই। সন্দৰ্ভ পৰে কোনও একটী গৃহেৰ তত্ত্ব তা স বি আৰো বি বি পিতু বিবিঃ
লাগবৰ্ণেৰ লঠিণেৰ আলোক দ্বাৰা ফটোগ্রাফীৰ কার্য হইতেও পাৰে।

সপ্তম ভাগ্যায়।

আমরা এক্ষণে ফটোগ্রাফ ভূলিবাৰ সকল সংজ্ঞাম ঠিক কৰিয়াছি। অন্ধকার শুরু ৪ সেই
গৃহেৰ মধ্যে যাহা অযোজন, তাহাকৰ সকল বন্দোবস্ত কৰা হইয়াছে; এক্ষণে ছবি ভূলিয কি
অকাৰে ?

ଏଥିମ ପ୍ରଥମ କାର୍ଯ୍ୟ ହଇତେହେ ଏହି ସେ, ଯେ କାଚେର ଉପର ଫଟେ ଉଠାଇତେ ହଇବେ, ସେଇ ପ୍ରକାବ ହୁଇ ଥାନି ଡ୍ରାଇ ପ୍ଲେଟେ, ଲାଲ ବର୍ଣ୍ଣର ଆଲୋକ ସ୍ୟତିବେକେ ବୋନ୍‌ଓ ଏବାର ଆଲୋକ ନା ଲାଗେ, ଏହି ତାବେ ଡାକ ମ୍ଲାଇଡ୍ ମଧ୍ୟେ ପୁରିଯା ଲାଇତେ ହିଇବେ ଯାହାଦେର ଡାର୍କର୍କମ ନାହିଁ, ତାହାଦେଇ ପଞ୍ଜେ ରାଜିକାଲେଇ ଏହି କ୍ରିୟା କବିତେ ହଇବେ, କିନ୍ତୁ ଯାହାଦେର ଅନ୍ଧକାର ଗୃହ ସଜ୍ଜିତ ଆଛେ, ତାହାରୀ ଯଥନ ଇଚ୍ଛା ତଥନି ମ୍ଲାଇଡ୍ ମଧ୍ୟେ ପ୍ଲେଟ ଲାଇତେ ପାବେନ

ଡ୍ରାଇ ପ୍ଲେଟେବ ମୋଡ଼କ, ଡାର୍କ ମ୍ଲାଇଡ୍, ଏବଂ ଲାଲ ଆଲୋକ ଲାଇୟା ଅନ୍ଧକାର ଗୃହମଧ୍ୟେ ଯାଉ, ଏବଂ ତୁ ଗୃହର ସବୁର କରିଯା ଦେଖିଯା ଲାଗେ, କୋନ୍‌ଓ ସ୍ଥାନ ହିଇତେ ଆଲୋକ ଆସିତେହେ କିମ୍ବା । ଯଦି ଦେଖ, କୋନ୍‌ଓ ସ୍ଥାନ ହିଇତେ ଆଲୋକ ଆସିତେହେ ନା, ତାହା ହିଲେ ଲାଲ ଲାଠିଗ ଜୋଲିଯା ଟେରିଲେବ ଉପରେ ରାଖ

ଡାର୍କ ମ୍ଲାଇଡ୍, ଥାନି କି ପ୍ରକାବେ ଖୁଲିତେ ହୟ, କେମନ କବିଯା ଉହାର ମଧ୍ୟେ ହୁଇ ଥାନା ପ୍ଲେଟ ଲାଇତେ ହିଇବେ, ତାହା ଦିବସେର ଆଲୋକେ ବେଶ କରିଯା ପୂର୍ବ ହିତେଇ ବୁରିଯା ଲାଇବେ ତୁ ମ୍ଲାଇଡେର ହୁଇ ପାରେ ହୁଇ ଥାନା ଟାନା ଦରଜା ଆଛେ, ତାହା ଖୁଲିଯା ଦେଖିବେ, ଏବଂ ତାହା କି ପ୍ରକାବେ ସନ୍ଧ କବିତେ ହୟ, ତାହା ହୁଇ ଏବ ବାର ଖୁଲିଯା ବନ୍ଦ କବିଲେ, ଏକ ପ୍ରକାର ଅନ୍ୟାସ ହିଯା ଯାଇବେ, ଅନ୍ଧକାରୀ ଗୃହ ମଧ୍ୟେ ଉହା ଖୁଲିବାର ଓ ସନ୍ଧ କରିବାର କୋନ୍‌ଓ ଅନୁବିଧା ହିଇବେ ନା

ଡ୍ରାଇପ୍ଲେଟେ ସେ ମୋଡ଼କକେ ଥାକେ, ତାହାର ଉପରେ ଲେଖା ଥାକେ, “To be opened in Ruby light”—ଅର୍ଥାତ୍ ଲାଲବର୍ଣ୍ଣର ଆଲୋକେଇ ଏହି ମୋଡ଼କ ଖୁଲିବେ, ଅନ୍ତ ଆଲୋକେ ଖୁଲିବେ—ଇହାର କାବଣ ଏହି ସେ, ଉହାର ଭିତରେ ସେ ସକଳ କାଚ ବହିଯାଛେ, ଅନ୍ତ କୋନ୍‌ଓ ପ୍ରକାର ଆଲୋକ ଲାଗିବାଯାତ୍ରିଇ ତାହା ନଷ୍ଟ ହିଯା ଯାଇବେ

ଲାଲ ଆଲୋକେର ନିକଟ ଦେଖିଯା ପ୍ରଥମତଃ ତୁ ମୋଡ଼କକେବ ଉପରେର କାଗଜ ଖୁଲିଯା ଏକ ଟି ମୋଡ଼ା କାଗଜେର ବାଙ୍ଗ ଦେଖିତେ ପାଇବେ ତୁ ବାନ୍ଧ ମଧ୍ୟେ କାଗଜ ଦାବା ମୋଡ଼କ କବା ଡ୍ରାଇପ୍ଲେଟ ଆଛେ କାଗଜେର ମୋଡ଼କ ଖୁଲିଯା ଏକଥାନି ଡ୍ରାଇପ୍ଲେଟ ତୁଲିଯା ଲାଇୟା, ଲାଲ ଆଲୋକେର ନିକଟ ଧେଇଯା ଦେଖ, ଉହାର କୋନ୍ ପୃଷ୍ଠେ ଜେଲେଟିନ୍ ଓ ରୌପ୍ୟର ଲବଣ ମାଧ୍ୟାମେ ଆଛେ ଆଲୋକେ ଧରିଲେ ଦେଖ ଯାଇବେ ସେ, ଉହାର ଏକଦିକେ ଥେତ ସର୍ବେ କିଛି ମାଧ୍ୟାମେ ଆଛେ—ଉହାଇ ଆବୋବେ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଶୀଘ୍ର ଉହାକେ ଆମବା ଛବିର ଦିକ ବଲିବ କାଚେର ଅପବ ପୃଷ୍ଠକେ “କାଚେବ ଦିକ” ବଲିବ ଡ୍ରାଇ ପ୍ଲେଟେ ଏହି ହୁଇ ଦିକ୍ ବେଶକରିଯା ଚିନିଯା ଲାଇବେ

ଡାର୍କ-ମ୍ଲାଇଡେର ମଧ୍ୟେ ହୁଇଥାନି କାଚ ଏମନ ତାବେ ଲାଇବେ ସେ, ହୁଇଥାନି ପ୍ଲେଟେର ଛବିର ଦିକ୍ ମ୍ଲାଇଡେର ହୁଇ ଦରଜାର ଦିକେ ଥାକିବେ । ଅର୍ଥାତ୍ ମ୍ଲାଇଡେର ଦରଜା ଟାନିଯା ଥୁଲିଲେ, ଛବିର ଦିକେ ପ୍ରତିବିଷ୍ଟ ପଡ଼ିବେ ହୁଇଥାନି କାଚେର ମଧ୍ୟେ କାଲ ବର୍ଣ୍ଣ କାଗଜ ଏକଥଣ ଦେଉଯା ଆବଶ୍ୟକ ମଧ୍ୟେ

ଏକଦିକେର ଦସଙ୍ଗ ଖୁଲିଲେ, ହୁଣେ ୧୯୧୫ କି । ଗବାର ସଞ୍ଚାବନା । ଏହି ବିଷୟ ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀ ବେଶ କରିଯା ବୁଝିଯା ଦେଖିଲେ

ଜ୍ଞାଇଡେର ମଧ୍ୟେ ଦୁଇଥାନ ଝାଇଇ । ୧୦୦ ଜ୍ଞାଇଡ୍ ବଜା ଏରିଥା ଲାଗୁ ; ପୋଟ ବାଜେର ମୋଡ଼କଟୀ ଓ ପୂର୍ବେର ମତ ସାଧନାନେ ବନ୍ଧ କାମେ ଲାଗୁ ହେଲା । ଗୋମାବ ଚତୁର୍ବିନ୍ଦିକେ ଏକବାର ଦେଖିଯା ଏବେଳେ, ଆଲୋକ ଲାଗିଯା ନଷ୍ଟ ହିତେ ପାରେ, ଏବଳ କିମ୍ବା ଅନ୍ତରେ ଆଛେ କିମ୍ବା । ସକଳ ପୋଟ ଓ ଜ୍ଞାଇଡ୍ ବନ୍ଧକବା ହିଲେ, ଜ୍ଞାଇଡ୍ ହିଯା ଅନ୍ଧକାର ଗୁହେର ବିହିରେ ଆମିବେ

ଯାହାଦେବ ଡାର୍କକମ ନାହିଁ, ତୋହାର ବାତିକାଲେ ପୋଟ ପୁରିଯ ଲାଇଧା ପବ ଦିବସ ଛବି ତୁଲିତେ ପାରିଯେନ

ଏଥନ କିମେବ ଛବି ତୁଲିବେ ? କେମେବ ଦ୍ୱାବା ସକଳ ବନ୍ଧବହି ଫଟୋ ହିତେ ପାରେ ଚେହାବା ଅପେକ୍ଷା ପ୍ରାକୃତିକ ଦୃଶ୍ୟ ଉଠାଇତେ ଚେଷ୍ଟା କବା ଗ୍ରାଥମତଃ ଉଚିତ କାବଣ ଗ୍ରାଥମ ଗ୍ରାଥମ ଦୁଇ ଚାରିଥାନି ପୋଟ ଧାରାପ୍, ହିବାବହି ସଞ୍ଚାବନା । ଦୁଇ ଚାରିଥାନି ପୋଟ ତୁଲିଯା କ୍ରମବିକାଶ କବିଲେ, ଅନେକଟୀ ବୁଝିତେ ପାବା ଯାଇବେ ବନ୍ଧ ବାନ୍ଧବେର ଚେହାବ ଓ ଥମେ ତୁଲିବାବ ଚେଷ୍ଟ କବିଲେ, ଏଥିରୁ ଉପହାସ ହାତ କବିତେ ହିବେ, ଏକାବଣ ଗ୍ରାଥମତଃ କୋନାବ ସ୍ଵଭାବ ଦୃଶ୍ୟରୁ ତୁଲିବାବ ଜନ୍ମ ଯନ୍ମାନୀତ କବିବେ ।

ସ୍ଵଭାବ ଦୃଶ୍ୟର ଯାହା ତାହା ତୁଲିଲେ ତାଲ ଛବି ହ୍ୟ ନା,—କିମ୍ବ ଏଥନ ପେଇ ଶକଳ ବିଚାବେ ଆବଶ୍ୟକ ନାହିଁ । ଯେମନ ତେମନ ଏକଟ ଦୃଶ୍ୟ ତୁଲିଯା ନେଗେଟିଭ୍ କବା, ଏଥନ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ

ତୁମି ଯେଥାନକାର ଦୃଶ୍ୟଟି ଭାଲ ବଲିଯା ମନେକବ, ସେଇହାନେ କେମେବା, ଲେନ୍ସ, ଷାଓ୍, ଜ୍ଞାଇଡ୍, ଏବଂ ମଞ୍ଚକାହିଁ କରିଯା ଦେଖିବାର ଅନ୍ୟ କାଲୋ ବର୍ଣ୍ଣର କାପଡ଼ଟ ଲାଇଯା ଯାଇବେ

ବେଳା ୯୮ୟ ହିତେ ବେଳା ୩୮ୟ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଫଟୋଗ୍ରାଫ୍ ଉଠାଇବାବ ପଞ୍ଚ ଉପଯୁକ୍ତ ଗ୍ରାଥ

ଯେ ହାମେବ ସ୍ଵଭାବଦୃଶ୍ୟ ତୁଲିବାବ ଇଚ୍ଛା କବିବେ, ସେଇ ହାନେ ଗିଯା ଏଥମତଃ ପେଶେବାଳ ୨୦ୟ ତିନଟି ବସାଇବେ ତିନଟି ପାଯ ଆବଶ୍ୟକ ମତ ତକାତ୍ କବିଯା ଦିବେ, ଏବଂ ଉହାବ ଉପବେ ଲେମେନ ବସାଇବାର ଯେ ବିଂ ଥାକେ, ସେଇଟିବ ଉପର ଏକଟୁ ଭବ ଦିଥା ଚାପିଯା ଦେଖିବେ, ବେଶ ମଞ୍ଜନ୍ତ ହିଯା ପାଯା ତିନଟି ବସିଯାଇଁ କିମ୍ବା, କେମେବାବ ତାର ମହିବେ କିମ୍ବା ପାଯା ତିନଟି ଏକଜ୍ଞ ଅଢାଇଯା ଥାବିଲେ, କେମେବାବ ଗମେତ ପଡ଼ିଯା ଯାଇବାର ଭୟ ଥାକେ

ପାଯା ବସାନ ହିଲେ, ଉହାର ଉପର ଇଞ୍ଜ୍ଞ ଧାରା କେମେବା ଅଟିଯା ଦିବେ, ଏବଂ କେମେବାର ଶର୍କୁରେ ଲେନ୍ସ, ବସାଇବେ ଲେନ୍ସର ମୁଖେ ଯେ ଗଟୋରୁ ଆଛେ, ତାହା ଖୁଲିଯା କ୍ଯାପ୍ ବା ବହାର କରିବାର ଅନ୍ୟ ଟଙ୍କା ନିକଟେ ରାଖିବେ ।

ଏକମେବ କେମେବା କ୍ରମଶଃ ଏକଟୁ ଏକଟୁ କବିଯା ବଡ଼ କବିତେ ଥାକ, ଏବଂ କାଳ ସର୍ବେଳ୍, କାମଟ୍ ଧାରା ଆପନାବ ମଞ୍ଜକ ଓ କେମେବାର ପଶଚାନ୍ତାଗ ଆୟୁତ କରିଯା ଦେଖ ଦେଖି, କେମେବାର ପଶଚାନ୍ତାଗେ ସମା କାଚଧାନିର ଉପର ସ୍ଵଭାବ ଦୃଶ୍ୟର ଛବି ପଡ଼ିଯାଇଁ କିମ୍ବା ।

ছবি অবশ্যই পড়িয়াছে, তবে উহা বেশ স্পষ্ট ও পরিষ্কার হইয়াছে কিনা, তাহাই দেখিবার আবশ্যিক। যে বেঘেবা ব্যাক এঙ্গ পরিষ্কার ধারা ছোট বড় হয়, তাহার সমুখভাগের এক পার্শ্বে একটা ইঞ্জু থাকে, আব এগলেস ইঞ্জু দ্বারা কেঘেবা ছোট বড় করিবার জন্য বেঘেবা পশ্চাত্তাগে একটা ছোট হ্যাণ্ডেল থাকে যেমন ওকাব কেঘেবাই হউক, তাহা ছোট বড় করিবার কৌণ্ডটি পূর্ব হইতেই দেখিয়া, অভ্যাস করিয়া লইতে হয় কেঘেরা ঐ ওকাব ছোট বড় করিবা দেখিতে হইবে যে, দৃশ্যটি বেশ পরিষ্কার হইয়া থমা কাচের উপর পড়িয়াছে বিন

শিক্ষার্থী এই সময় বুবিতে পারিবেন যে, দূরের কোনও বস্তুর ছবি পরিষ্কার করিতে গেলে কেঘেবা ছোট করিতে হয়, এবং নিকটস্থ কোনও পদার্থের ছবি পরিষ্কার করিতে হইলে, বেঘেবা বড় করিতে হয় ; স্বভাব দৃশ্যের সকল বস্তু, অর্ধাং নিকট এবং দূরস্থ সকল বস্তুর ছবি পরিষ্কার করিয়া উঠান, বড়ই কঠিন কর্ত্ত্ব

ঘসা কাচখানিব উপর স্বভাব দৃশ্যের ছবি উচ্চটা হইয়া পড়ে সেই উচ্চটা ছায়া দেখিয়া বুবিতে হইবে, সকল বস্তুর ছবি বেশ স্পষ্ট হইয়াছে কিনা ?—ইহাকে ফোকসিং (focusing) বলে অধিক মূল্যের যে সকল লেন্স প্রস্তুত হয়, তাহার এই একটা প্রধান গুণ দেখিতে পাওয়া যাব যে, তাহার দ্বারা দূর এবং নিকটস্থ সকল বস্তুর ছবি এক সময়ে ঘস কাচের উপর বেশ পরিষ্কার হয় আমরা শিক্ষার্থিকে যে বেঘেরা বিনিতে বর্ণিয়াছি, তাহ বলেন্স অঞ্চল মূল্যের, শুভবাং সেই লেন্স দ্বারা ছবি পরিষ্কার করিয়া ফোকস করিতে হইলে, নির্মাণ পিত উৎসাহ অবশ্য দৃশ্য করা আবশ্যিক

স্বভাব দৃশ্যটীর মধ্যে মাঝামাঝি দূরবের কোনও বস্তুর দ্বৈতস্থ খুণ পরিষ্কার ভাবে কর ; এই অকার করিয়া দেখিবে যে, সর্কারে ক্ষা অধিক দূরের বস্তু এবং সর্কারে নিকটস্থ বস্তুর ছবি অস্পষ্ট রহিয়াছে। বিশেষতঃ ঘসা কাচখানির পার্শ্বে যে সকল পদার্থের ছায়া ও তিবিস্থ প্রিয়াছে, তাহাও স্পষ্ট হয় নাই এই প্রবাব হইলে, কেঘেবা আব ছোট বড় করিবার আবশ্যিক নাই কেঘেরা দ্বারা যতদূর ফোকস পরিষ্কার হইতে পারে, তাহা হইয়াছে এক্ষণ্ণে যে অংশগুলি পরিষ্কার হয় নাই, তাহা অন্য উপায়ে পরিষ্কার হইবে ।

কেঘেবার সমুখে যে লেন্স বসান আছে, ঐ লেন্সের ছিদ্রটি ছোট করিয়া দিলে, কেঘেবার ছবি আরও পরিষ্কার হইতে পারে। লেন্সের ছিদ্র ছোট করিবার অন্য আজকাল ঔয় সকল লেন্সেই “আইরিস ডায়াফ্রাম” দেওয়া থাকে লেন্সের উপরিভাগে একটা রিং থাকে, সেইটি শূরাইলে, লেন্সের অভ্যন্তরে আলোক পথ (aperture) ছোট হয় ; কোনও কোনও লেন্সের ডায়াফ্রাম গুলি পৃথক থাকে ; আবশ্যিক মত ছোট ডায়াফ্রাম লেন্সে প্রয়োজন দিলে, লেন্সের ছিদ্র ছোট হয় ; লেন্সের এই ডায়াফ্রাম যত ছোট হইবে, ফটোগ্রাফ উঠাইতে সেই পরিমাণ

ফটোগ্রাফী শিক্ষা ।

25

অধিক সময় সাগিত্তে পাবো। লেসেব ছিজ যে পরিমাণ ছেটি করিয়া দিলে, কেমেরোর ছবির সর্বাংশ বেশ পরিষ্কার হয়, মেই অকার ডায়াফুল্ম দ্বারা হই ছবি উঠাইতে হইবে।

এই বিষয়টি বেশ করিয় বুবিয়া হইবে অথবা ছবিধারি তুলিবার সময় ডাঢ়াড়ি
করিও না। যাহাতে ফোকস্ খুব পরিষ্কার হয়, তাহা এই সময়ে কণা আবশ্যিক। কেনেরা
ছোট বড় কবিধা বধ্যম দুবদ্দেব * কোনও বন্দুব ফোকস্ বলা হইলে পর, লেখেরে ছিজ কমাইয়া
ফোকস্ যতদূর সন্তুষ্প পরিষ্কাৰ কৰিবে গোপ্যতই কম মূল্যের ইউক না কেন, তাহাৰ ছিজ
কমাইয় দিলেই ফোকস্ পৰিষ্কাৰ হইবেই

পুর্কি বলিয়েছি, মূল্যবাণী লেন্সগুলি একপ ভাবে ৫টিত হয় যে, কেখল কেমেবা দ্বারা ইতাহাব ফোকস্ পি-এব করা যায়। যদিও তাহাব ছিজ ছোট বিবাৰ জন্য ডায়াফুম দেওয়া থাকে, কিন্তু এই বিলেন্সের ছিজ ছোট কৱিবাৰ আবশ্যিক হয় না। যাহা হউক, এই ভাবে কতকটা কেমেব দ্বাৰা, এবং কতকটা লেন্সেব ছিজ কমাইয়া স্বতাৰ মূল্যের ফোকস্ ১০ বিলাব কৱিতে ১০ বিলো ১০ গোলান সকল কু ভৌটিয়া দিবে। পাৰে যেন এই ফোকস্ নড়িয়া না যায়।

যোগ্য করা ঠিক হইলে, লেন্সের ঘূর্ধের ক্ষাপ পর্বাইয়া দেও।

এখন বেংগলুরু পশ্চাত্য দিকের ঘসা কাচখানি [Focus@ p: ৮১ (১)] সবাইয়া নাইয়া, সেই খানে জ্বালা (যাহাতে ড্রাইপ্রেট হইবানা আছে) বসাইতে হইবে। ঝাইডের ছাই পাথে ছাই খানা ড্রা মেট আছে, উপস্থিত তাহার একখানাতে এই দুশ্যের ফটো উঠানো হইবে, কোনু দিকের এটি পানিতে ছবি উঠাইতেছ, তাহা এই সময় মনে করিয়া রাখিবে, ঝাইডের উপর ছোট কাগজ আঠা দাবা নাগাইয়া ১, ২ এই প্রকার চিহ্ন করিয়া নথিতে কোনু মেটে ঢবি উঠান হইতেছে, তাহা মনে করিয়া রাখিব ও জুবিধা হয়।

কেমেরোয় ঝাইড় বসাইবাৰ সময় অধিক জোৱ নাগেনা, সহজেই উহা বসান যায়, এবং
সহজেই উহা হইতে খুণিয়া গওয়া যায় । ঝাইড় বসাইবাৰ সময় পাবধান হইবে, কেৱেল যেন
নড়িয়া ন যায় । কেমেৰো যদি কোনও কাৰণে নড়িয়া যায়, তবে ঝাইড় খুণিয়া আইয়া, পুনৰ্বাৰ
কোকস্ দেখিয়া আইবে । ঝাইড় বসাইবাৰ সময় কেমেৰো নড়িয়া ন যায়, তাহা মনে নাখিবে
এবং বিশেষ পাবধান হইবে ।

জাইড, বসাইয়া, একবাব কেখেরোর সন্মুখ ভাগে আসিয়া দেখ, হেনের মুখে ঢাকনা। (১)
পরান তাছে কিমা ? এই সময় গেলের ক্যাপ, পরাইধা গেলের মুখ এধ কণিখা ঝাঁঠিবে . . .

* Middle distance.

ଏଥିନ ଡାବିଯ ଦେଖ, ସମା କାଚ ଧାନି କେମେରୋବ ଯେହାମେ ଛିଲ, ଠିକ ୧୯ ମାୟାଶ୍ଵ ଫ୍ରାଇପ୍ରେଟେର “ଛବିର ଦିକ” [film side ପଡ଼ି] ହେ ଜୀ ଇହେର ୧୯ ଦିନେର ୧ ସଞ୍ଚ ଟୋନିଗ୍ର ଆପ୍ତେ ଆପ୍ତେ ଖୁଲିଯା ଦାଓ ଏଥିନଙ୍କ ଫ୍ରାଇପ୍ରେଟେର ଟପା ଛବି ୨ ଫେ ନାହିଁ

ଜ୍ଞାଇଡେର ଦ୍ୱାବ ଖୁଲିଯା ଦିଲେଓ ଛବି ୨ ଫେ ନାହିଁ କେନ ? ନିଷ୍ଠାର୍ବି ନିଜେ ନାହିଁ କାବବେଳ ଯେ ଲେନ୍ଦେର ମୁଖେ କ୍ୟାପ ଆଛେ ବଲିଯାଇ ଏଥିନୋ ଫ୍ରାଇପ୍ରେଟେର ୧ ପର ଛବି ୧୬ ୦୧ କ୍ୟାପ ଖୁଲିଯା ନାହିଁ ଛବି ପଡ଼ିବେ

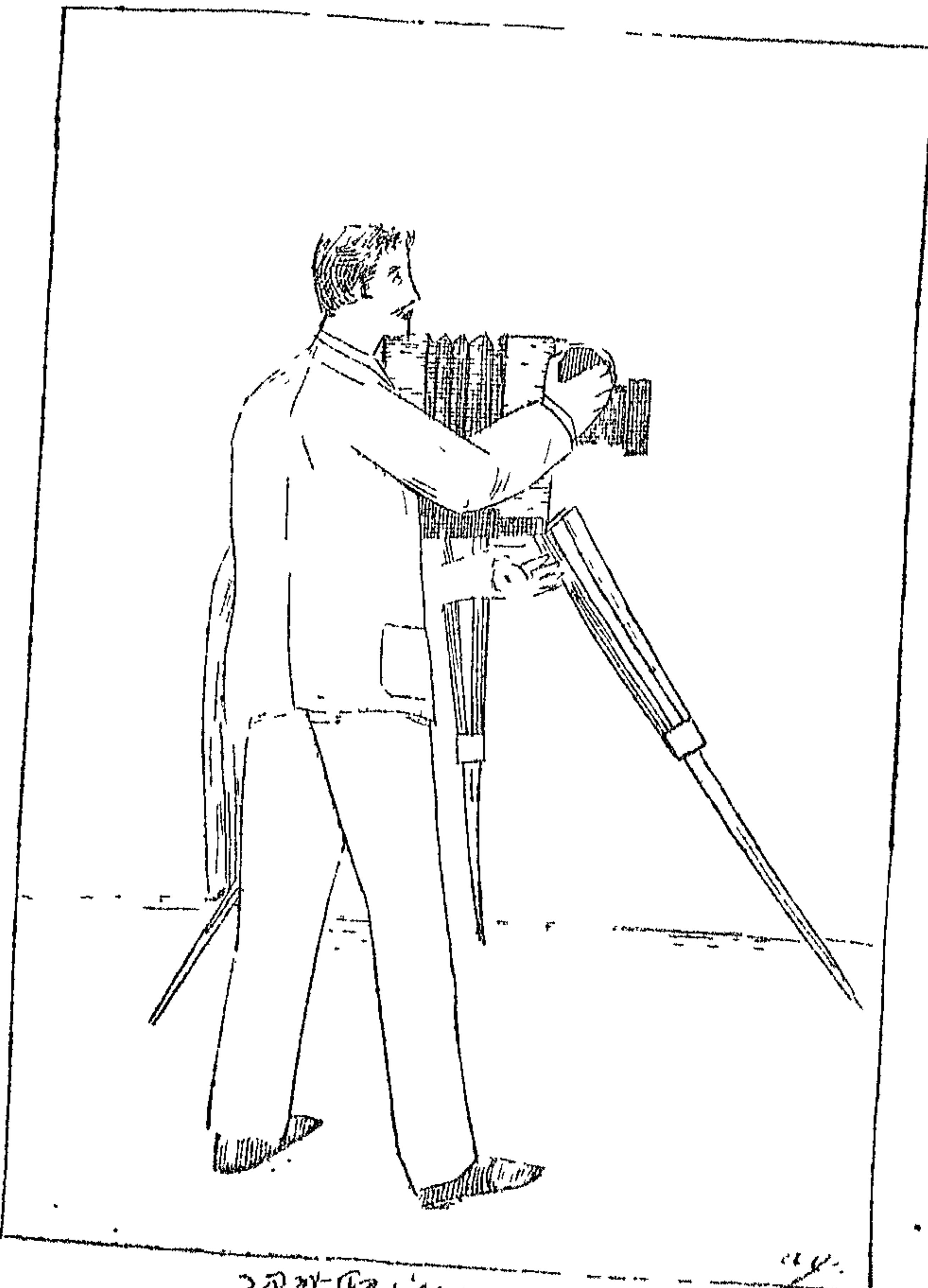
ଲେନ୍ଦେର ମୁଖେବ କ୍ୟାପ ଖୁଲିଯ, କିଛୁ ଶମ୍ଭୁ ପରେ ଆବାସ ଲେଗ ଥିଲେ ୧୫ ପରାଇୟ ୫୫୦ ହ୍ୟ ଏହି କ୍ରିୟାକେ “ଆଲୋକ ଦେଉୟ” [୧୯୦୬୦୦] ଅଥବା “ଏବ୍ସ୍ପୋଜାବ୍ ଦେଉୟ” ୧୯୫ କଣ ସମୟ ଏହି ଏବ୍ସ୍ପୋଜାବ୍ ଦେଉୟ ଆବଶ୍ୟକ, ମେ ବିଷୟ ପରେ ବିଶଦରଦେ ବର୍ଣନା କବ ହିଯାଛେ ଏକମଣେ ଏହିମାତ୍ର ବଲିଯା ଦିତେଛି ଯେ, ଅର୍କ ସେବଣ୍ଟ୍ କ୍ୟାପ ଖୁଲିଯ ୧୫ ମାଇଟେ ପାବେ ଏବ୍ସ୍ ପୋଜାବ ଦିବାବ ପୁର୍ବେ ଲେନ୍ଦେର ଶମ୍ଭୁଶ୍ଵ ବୋକ ଜନ ଅଥବା ସାଂକ୍ଷିକ ବଲିକାନ୍ଦେବ ଶରାଇୟା ଦିବେ; ଆମାଦେର ଦେଶେ ଫଟୋ ତୁଳିଯାର ଶମ୍ଭୁ ଆନେକ ଅକର୍ତ୍ତା ବୋକେ ଇଂ କବିଯ ଦେଖିତେ ଥାକେ, କବେକେ ‘ଛବି ଉଠିଯା ଯାଇବେ’ ଏହି ଆଶ୍ୟାମ ବେମେରୋବ ଶମ୍ଭୁଥେ ଆମିର ଦଙ୍ଗାଯଥାଳ ଥାକେ । ଦି ସକଳ ଦର୍ଶକ ପଣକେ ଗିର୍ଭ କଥାଯ ସବାଇୟ ଦିବେ

ଏକସ୍‌ପୋଜାବ ଦିବାବ ସମୟ କେମେବା ଶପର ଏବି । ଆମାଦେବ ଦେହଭ୍ୟାତ୍ମରେ ଘୋରିତ ସନ୍ଧାନନ ହେତୁ ଆମାଦେର ଦେହ ସରିଦାଇ ଉପର କାମ୍ପାଟ ହିତେ ଥାକେ, ଏହି କେତୁ କେମେବା ଥରିଯା ଥାକିଲେ, ତାହାଓ କମ୍ପିତ ହିଲେ, ଶୁତନାଃ ଫଟୋଥ ନି ଅନ୍ତର୍ଗତ ହିଯା ଯାଇବେ ୧୦୦ ହିତେ କ୍ୟାପ ଖୁଲିବାର ଶମ୍ଭୁ କେମେବ ଶମ୍ଭୁ ଏବଂ କମ୍ପିତ ହିଲେ, ଏକବିନ ଲେନ୍ଦେ ହିତେ ଖୁବ ଧୀରେ ଧୀରେ କ୍ୟାପ ଖୁଲିଯା ଅର୍କ ସେବଣ୍ଟ୍ ଅଥବା ଏକ ସେବଣ୍ଟ୍ କାଳ ଶାତ୍ର ଏକସ୍‌ପୋଜାବ ଦିବ କ୍ୟାପ ବର କବିଯ ଦିବେ ଯେ ଭାବେ କେମେବାବ ଏକସ୍‌ପୋଜାବ ଦିତେ ହିଲେ, ତାହା ୧୯୯ ଚି ୭ ମାର୍ଚ୍ଚ ଦେଇ ନ ହିଲେ

ଏକସ୍‌ପୋଜାବ ଦେଉୟାବ ପବେ କ୍ୟାପ ବର ବରା ହିଲେ, ଜ୍ଞାଇଡେର ଦ୍ୱାବ ଏବଂ କବିଯା ଦାଓ ଏକ ଧାନି ୫୮୭ ଏକସ୍‌ପୋଜ କରା ହିଲେ । ଏଥିନ ବେମେବା ହିତେ ଜ୍ଞାଇଡ୍ ଖୁଲିଯା ଦାଓ, ଏବଂ ଛାତ୍ର କେମେବା, ଅଭ୍ୟାସ ମୁଦ୍ରିଯା ଲାଇୟା ଅନ୍ତ ଥାନେ ଅନ୍ତ ମୁକ୍ତ ତୁଳିବାବ ଜନ୍ମ ଯାଇତେ ପାବ ଜ୍ଞାଇଡେର କୋନ୍ଦିକେ ଛବି ଉଠାଇଯାଇ, ତାହା ବେଶ କବିଯ ମନେ ରାଖିବେ

ଏକ କାଚେବ ଉପର ଛବି କି ପ୍ରକାର ଉଠିଯାଇଁ, ତାହା ଏକମେ ଦେଖିବର ଯେ ନାହିଁ ଅନ୍ଧକାର ଗୁହର ଲାଲ ବର୍ଣ୍ଣବ ଆଲୋକ ବ୍ୟାତିବେକେ ଏକ କାଚ ମାଧ୍ୟମ ଆଲୋକେ ବାହିବ କରିବାବ ଯୋ ନାହିଁ, ଇହା ଶିକ୍ଷାଧିବ ସର୍ବଦା ଶୁରଣ ରାଥା ଉଚିତ ।

ଆମ ଏକଥାନି ମେଟେ କି ଛବି ତୁଳିବେ ୧୦୦୦୦ ମୁକ୍ତ ତୁଳିତେଓ ପାର, ଅଥବା ପୁଲର୍ବାର ଏହି ମୁକ୍ତ



3031-16314401372 "I" 64

তুলিতেও পুরুষের আবির একখনি প্রেটে এই দৃশ্যই উঠাইলে, একস্পোজার বিষয় একটু শিক্ষা হইবে, অর্থাৎ ক্রমবিকাশ করে দৃশ্য দৃশ্যের ছবি তুলনা ব বিয়া বুকিং ব স্লিপ হইতে পারে।

দ্বিতীয়বারে একস্পোজার পূর্ণপেক্ষ। খণ্ডণ সময় দিবে। অর্থাৎ প্রথম পানে ঘৰ্ম কে সেকেন্ড দিয়া দ্বাক, দ্বিতীয় বারে একস্পোজার দুই সেকেন্ড দিবে, অন্তান্য বিষয়ে পুরুষের মতো সহজ কার্য করিতে হইবে।

অষ্টম অধ্যায়।

পূর্ব অধ্যায়ে আমরা দেখাইয়াছি, কেমন করিয়া ফটোগ্রাফ তুলিতে হয় ; দেখান ১১
একস্পোজ করিয়া একশে তাহার ক্রমবিকাশ করিতে হইবে।

একশে অক্কাব গৃহ মধ্যে যাও, এবং ক্রমবিকাশ করিবার উপযোগী উদ্ধৃতি একশে ৩৭৮
করিবার ঘোগাড় করিয়া লও। এই ক্রমবিকাশ ক্রিয়া দ্বাবা নেগেটিভ তুলন হইবে, ৫০
ফটোগ্রাফের ভাল মন্দ এই ক্রমবিকাশ ক্রিয়ার উপরেই নিভর করে।

ক্রমবিকাশ করিবাব জন্য নিয় লিখিত জ্বেয়ের প্রয়োজন হয় ;—

৩ খানি ডিস্

পাইরোগ্যালিক এসিড

ত্রোমাইড-অব-পোটাসিয়ম

লাইকার এমোনিয়া [৮৮০]

গাইট্রিক এসিড

১২ আউজ পরিমাণ কাচের ছিপি দেওয়া শিশি চারিটা।

ঔষধ ওজন করিবার নিষ্ক্রি ও বাটধারা।

মেজাব মাস ২টা

সোডিয়া হাইপোসলফাইট।

পরিষ্কার জল

উপরোক্ত সকল জ্বর্যাদি লইয়া অক্ষকাব গৃহ মধ্যে থাও, এবং নিম্নলিখিত গুণে ডেভেল-
পার প্রস্তুত কর উষধাদি ওজন কৰা, কয়েক প্রকাব মিশ্র উষধ প্রস্তুত কৰা, ইত্যাদি ক্রিয়া
সাধাব আলোকে কবিতে হইবে। ক্রমবিকাশ কবিবার সময় গৃহ অক্ষকাব করিতে হইবে

একটী ১২ আউন্স পরিমিত কাচের শিশি উচ্চম বপে ৭ বিস্তৃত কবিয়া লইয়া তাহাতে ১০
দশ আউন্স জল বাথ, পরে ব্রোগাইড-আব-পেটাসিয়ম ১১০ গ্রে ওজন কবিয়া, ত্রী ও তে জ্ব
কর উহা উচ্চম গ্লাপে দ্রব হইলে, উহাতে ১ এক আউন্স উগ্র লাইকাব এমোনিয়া ২৫যোগ
কৰ লাইকাব এমোনিয়াব আভ্রাণ অতিশয় তীব্র উহা নাসিকাভ্যন্তবে প্রবিষ্ট হইলে, বড
ঝাঁজ লাগে, তাহাতে বিশেষ কষ্ট হইবাব সন্তাননা এই নিমিত্ত ০ হাইকাব এমোনিয়াব শিশি
খুলিয়াব সময় সাবধানে খুলিবে উপরি উচ্চত ভাবে ব্রোগাইড-আব-পেটাসিয়ম এবং লাইকাব
এমোনিয় মিশ্রিত কবিয়া যে শিশি দ্রব প্রস্তুত হইল, উহাব শিশির গাবে “এ” অক্ষব খুক্ত কাগজ
লাগাইয়া বাথ এই অক্ষব বেশ বড় করিয়া লিখিবে, যেন অক্ষকাব গৃহে লাল আলোকেই
গড়িতে পাবা যায়।

আব একটি পরিস্তৃত শিশিতে ১০ আউন্স জল রাখিয়া, তাহাতে এক ড্রাম (৬০ চেণ),
সাইট্রিক এসিড দ্রব কৰ, এবং উহা দ্রব হইলে, উহাতে এব আউন্স পাইরোগালিক এসিড
দ্রব কৰ এই শিশের শিশির গাবে “বি” এই সাক্ষেত্রিক নাম লিখিয়া বাথ

“এ” এবং “বি” এই দুই শিশি কালকপ ছিপি বক্ত কবিয়া রাখিবে, তামাক চিমস কঁর্শের
উপযুক্ত থাকিবে

অপব শিশিতে ৮ আউন্স জল বাথিয়া, তাহাতে ৪ চাবি আউন্স হাইদ্রো সলফাইট গোড়া
দ্রব কবিবে; এবং ইহার নাম “হাইপোড্রব” লিখিয়া বাথিবে

উপরোক্ত তিনটি মিশ্রিত জ্ব, এবং অবশিষ্ট ধালি শিশি, মেজাজ মাস, জল প্রস্তুতি টেবিলে
উপব বাথিয়া, দুর অক্ষকাব কৰ, লাল আলোক জালিয়া টেবিলের উপব উপযুক্ত স্থানে বাথ,
এবং তিন ধানি ডিস ধৌত করিয়া তোমাব সম্মুখে রাখ।

যে দুই ধানি একস্পোজ কৰা হৈ আছে, তাহাব প্রথম ধানি জ্বাইড হইতে খুলিয়া
লইয়া ছবিব দিক উপরে রাখিয়া, একধানি ধৌত ডিসের উপব বাথ

ছেঁট মেজব শসে কবিয় “বি” একড্রাম, “এ” একড্রাম ৪০ কোটা, এবং ২ আউন্স জল
গুশাইলে নেগেটিভ ক্রমবিকাশ কবিবাব ডেভেলপার হইবে

“এই ডেভেলপার লাইয়া ডিসের উপবস্থ প্লেটের উপব চালিয়া সাও। ডেভেলপ এমন
ভাবে চালিতে হইবে যে, সমস্ত মেট ধানি একেবাবে ভিজিয়া যায়, আব যেন জলবিষ না হয়;

সমস্ত প্লেটখানা একেবাবে না ভিজিলে, প্লেটের উপর দাগ হয়, জলবিষ্ণু লাগিয়া থাকিলে ও প্লেটের উপর গোলাকাব দাগ হয়, তাহাতে ছবি খাবাপ হয় ডেভেলপার প্লেটের মাঝাধামে ঢালিয়া, ডিস্থানি নাড়িতে থাকিলেই একেবাবে প্লেটের সকল দিক ভিজিয়া যাইবে আব যত্পি জলবিষ্ণু প্লেটের গায়ে লাগিয়া থাকে, তাহাও একটি কোমল পাণক, অধুর তুলিকা দ্বাবা সরাইয়া দেওয়া আবশ্যক প্লেটের উপর ডেভেলপার ঢালিয়া দিবাব প্রায় ৩০ সেকেণ্ট পদেই দেখিবে যে উহার উপর ছবি ফুটিয়া উঠিতেছে।

এক্সেন স্থির হইয় দেখিতে থাক, এবং ডিস্থান ক্রমাগত নাড়িতে থাক কত সময় এই ডেভেলপার প্লেটের উপর রাখিতে হইবে, একটু বছদর্শিতা না হইলে তাহা ঠিক বুঝিতে পাবা যায় না। মোটা ঘূটি এই বলিতে পাবা যায় যে, যতক্ষণ পর্যন্ত এই প্লেটের উপর ডেভেলপার কার্য করিতে থাকে, ততক্ষণ উহা প্লেট হইতে উঠাইয়া নওয়া উচিত নহে পাঁচ মিনিট হইতে আধ ঘণ্টা মধ্যে ক্রমবিকাশ সমাপ্ত হইতে পাবে।

যখন দেখিবে, প্লেটের প্রায় সকল স্থান বেশ ঘোর হইয়াছে, এবং প্লেটের উৎপন্ন ডেভেলপার আর কার্য করিতেছে না, তখন প্লেটের পার্শ্বে ধরিয়া প্লেট থানি ডিস্থ হইতে উঠাইয়ে পরিষ্কার জলে ধুইয়া লাল আলোকের নিকট দেখ, কিছু বুঝিতে পার কি না ।—যদি নেগেটিভ ডাল হইয়া থাকে, তাহা হইলে, এই সময় উহার ছবি বেশ পরিষ্কার বুঝিতে পারা যাইবে এখনো এই প্লেট সামনা আলোকে বাহিব বিবরণ ঘোষণা নাই, এখনো উহা পূর্ববৎ তাতেকে পরিবর্তন নহিয়াছে।

প্লেট থানি ধোত কবিয় অপর একখানা ধোক্ত ডিসেব উপর বাধিষে, এবং তাহাব উৎপন্ন “হাইপোজেব” ঢালিয়া দিয় নাড়িতে থাবিবে হাইপোজেবে ১৫ মিনিট কাল রাখিলে, প্লেটখানি ‘ফিল্ম’ করা হইবে এই বাব এই প্লেটে আলোক লাগিলে আর থাবাপ হইবে না।

হাইপোজেব হইতে ১৫ মিনিট পথে উঠাইয়া, নেগেটিভ থানা উত্তম জলপে ধোত কবিতে হইবে ধোত করিবার পূর্বে উহা একবাব ফটকিবিরুজলে ভিজাইয়া, ১০ মিনিট পথে পরিষ্কার জলে ধুইবে। ছাইখানি ডিসেব জল বদল কবিয়া বাসন্তার ধুইলে, ছাই ঘণ্টার মধ্যে সোডা সকল পরিষ্কার হইবে হাইপো সোড যদি সামান্য মাত্র ও নেগেটিভে থাকিয়া যায়, তাহা হইলে, অন্নকাল মধ্যে নেগেটিভ নষ্ট হইয়া যায় এই জন্য নেগেটিভ উত্তমরূপে ধোত কবা আবশ্যক।

উত্তমরূপে ধোত করা হইলে, নেগেটিভ থানা কোনও পরিষ্কার স্থানে রাখিয়া শুধাইতে দিবে; ছাই ঘণ্টার মধ্যে উহা আপনিই শুধাইয়া যাইবে।

একখানি নেগেটিভ ক্রমবিকাশ করা হইয়াছে, আর একখানি প্লেট স্লাইড মধ্যে রহিয়াছে। এই বাব সেই থানি ক্রমবিকাশ করিতে হইবে।

শিক্ষার্থীর ইহা শব্দ রাখা উচিত, ফটোগ্রাফী শিল্প সম্যকরূপ আয়ত্ত করিতে কিছু সময় লাগে। প্রথম প্রথম দ্রষ্টব্য নষ্ট হইবাবই সম্ভাবনা ক্রমবিকাশ ব্যাপ্তির ধারা কি, কি প্রকারে অদৃশ্য ছায়ামূর্তির তত্ত্বশং প্রকাশ হয়, তাল নেগেটিভের অঙ্কণ কি ও কৈম, এই সকল বিষয় শিক্ষার্থীর বোধগম্য হইতে একটু বিলম্ব হয় যে নেগেটিভ ধারা ডেভেলপ করিয়া প্রস্তুত হইল, সেইখানি তাল হইল কিন, তাহা দেখা হউক

ভাল নেগেটিভ কি অকাব ? এই প্রশ্ন শিক্ষার্থীর মনে উদয় হইবে আমরাও প্রথম
শিক্ষাব কালে এই ব্যাখ্যা আবিষ্যাচ্ছিলাম। এই বিষয় লিখিয়া শুধু সহজ নহে যাহাহটক,
যতদূর সন্তুষ্ট, আমরা শিক্ষার্থীকে এ বিষয় বুজাইবার চেষ্টা করিব

নেগেটিভ খানি আলোকের নিকট দেখিলে, যদি দেখিতে পাও, ছবিখানি বেশ পরিষ্কার
পরিচ্ছন্ন, দাগ বিবর্জিত, স্বত্ত্বাবে যে সকল বস্তু বেশ আলোকিত ছিল, নেগেটিভে সেই সকল
বস্তুর ছবি ঘোর ক্রফওর্ণ, এবং স্বত্ত্বাবের যে সকল বস্তু ছায়াযুক্ত ছিল, নেগেটিভে সেই সকল
ছায়া যুক্ত স্থানে পরিষ্কার স্বচ্ছ কাচ অথবা অত্যন্তমাত্র ছায়ার আভা, এবং নেগেটিভের সর্বত্রই
ছবি বেশ সূক্ষ্ম ও পরিষ্কার দেখা যাইতেছে, তাহা হইলে নেগেটিভ ভাল হইয়াছে।— কিন্তু একেবারে
প্রথম নেগেটিভ খানি ঐ প্রকার ভাল নেগেটিভ হইবে, শিক্ষার্থী এ প্রকার আশ করিবেন না
উত্তরোত্তর উহা বুঝিবাব চেষ্টা করিতে হইবে প্রথম প্রথম দ্রুই চারিখানি নেগেটিভ, খাবাপ
হইবারই সন্তাবন।

শিক্ষার্থী প্রথম নেগেটিভ খানি ধোত ও শুক্ষ কবিয়া রাখিয়া দিবেন ভালই হউক, আর মন্দই হউক, তাহা রাখিয়া দিলে, সেখনিব কি দোষ হইয়াছে, তাহা বুঝিতে পৰা যাইবে পৰা অধ্যায়ে নেগেটিভের দোষ গুণ বিষয়ে সবিজ্ঞারে নিখিত হইয়াছে, তাই চারিখানি নেগেটিভ প্রস্তুত কবিয়া, সেই অধ্যায় পাঠ কবিলে, নেগেটিভ বিষয়ে শিক্ষার্থীর সম্বৰ্দ্ধ জ্ঞান হইবে

দ্বিতীয় যে প্লেট খানি স্লাইডের মধ্যে আছে, তাহাও ডেভেলপ করা অবশ্যিক শিক্ষার্থীর মনে আছে যে, প্রথম খানির অপেক্ষা দ্বিতীয় খানিতে অধিক একস্পেজার দেওয়া হইয়াছে

অধিক একস্পোজার দেওয়া হইয়াছে বলিয়া, এই নেগেটিভ খানি প্রথম নেগেটিভ অপেক্ষা অল্লসময়ের মধ্যে ডেভেলপ হইবার সন্তাবনা।

যদি একস্পোজাব বেশী দেওয়া হয়, “এ” নামক মিশ্র কিছু কম পরিমাণে ব্যবহাব কৰা উচিত। এবার নিম্ন লিখিত ভাবে ডেভেলপার অন্তর্ভুক্ত করিবে :

| | | | |
|------------|----|----|----------|
| “বি” মিশ্র | .. | .. | একজড়াম |
| “এ” গিশ | . | .. | ৫০ ফোটা। |

জল ২ আউলু।

দ্বিতীয় প্লেটের উপর ডেভেলপ বুলিয়া দিয়া দেখ, ৩০ সেকণ্ড মধ্যে ছবি ফুটে কি না যদি দেখ, ছবি বেশ ধীরে ধীরে অকাশিত হইতেছে, তাহা হইলে ডেভেলপ রে আর “এ” নামক শিশ্রেব আবশ্যক হইবেন। এই ডেভেলপাব দ্বাবাই নেগেটিভ সম্পূর্ণ ধোর বর্ণেব হইতে পাবিবে

কিন্তু এ অকারে ডেভেলপাৰ দিয়া এক মিনিটের মধ্যেও যদি ছবিৰ কোনও চিহ্ন অকাশিত না হয়, তাহা হইলে পোট খানি ডিসে রাখিয়া সমস্ত ডেভেলপাৰ টুকু বড় মেজাৰ জাসে ঢালিয়া দাও, এবং তাহাৰ সহিত “এ” মিশ্র আৱ ১০ ফোটা মিশ্রিত কৱিয়া প্লেটেৰ উপৰ পুনৰ্বাব ঢালিয়া দাও ; সন্তুষ্টঃ এইবাবে ছবি ফুটিতে থাকিবে। যদি পুনৰ্বায় অৰ্ক মিনিট মধ্যেও ছবি না ফুটে, তবে ডেভেলপাৰ জাসে ঢালিয়া তাহাৰ সহিত আৱও ১০ ফোটা “এ” মিশ্র মিশাইয়া, তৃতীয়বাব এই প্লেটে দিয়া ক্ৰমবিকাশ কৱিবে। এই অকারে একটু একটু কৱিয়া “এ” মিশ্র মিশাইয়া শিক্ষার্থী এই ক্ৰমবিকাশ কৰিয়া বুৰুজতে সন্তুষ্ট হইবেন। শেষোক্ত উপায়ে ক্ৰমবিকাশ কৱিতে অনেকে উপদেশ দেন।

একস্পোজাৰ দেওয়া ঠিক হইলে, “এ” এবং “বি” দ্বাই মিশ্র সমান ভাগে মিশাইয়া দেওয়া উচিত একস্পোজাৰ ঠিক হইয়াছে কিনা সে বিষয়ে সন্দিহান হইলে, “এ” মিশ্র গ্ৰামশং একটু একটু কৱিয়া ডেভেলপাৰে মিশান কৰ্তব্য।

দ্বিতীয় নেগেটিভ খানি ডেভেলপ কৱা হইলে, তাহা হাইপোজৰে ১৫ মিনিট কাল ফিয়া কৱিয়া, ফটকিৱিল জলে ১০ মিনিট ভিজাইয়া, জলে উজ্জম ঝঁপ ধৌত কৱিবে, এবং গুৰাইতে দিবে

অবস্থা অধ্যায়।

পূৰ্ব অধ্যায়ে আমৰা নেগেটিভ অস্তুত কৰণ ঔগালীৰ বৰ্ণনা কৰিয়াছি। এই বিষয়ে আবও অনেক কথা আমাদেৱ বুৰাইবাৰ আছে, কিন্তু এস্তলে সেই সকল কথা বলিলে, শিক্ষার্থীৰ তাহা বুৰুজিবাৰ সুবিধা হইবে না। সে সকল কথা বুৰুজতে হইলে, অস্তুতঃ দশ পোনোৰো খানি নেগেটিভ (ভালই হউক, অথবা মন্দই হউক) উঠান আবশ্যক হইথানি মাজ নেগেটিভ তুম্হাৰ ক্ৰমবিকাশ কৱিলেই সে জান জানে না, এই কাৰণ আমৰা শিক্ষার্থীকে আবও দ্বাই চাৰিখানি নেগেটিভ উঠাইতে ও ক্ৰমবিকাশ কৱিতে বলি।

শিক্ষার্থী প্রথমে যে দুইখানি নেগেটিভ তুলিয়াছেন, তাহা খালাপ হইবাবই অধিক সম্ভাবনা, এই নিগিত আমর এক্ষণে নেগেটিভের দোষ সকল বুঝাইয়া দিব। আগরা প্রথম শিক্ষার সময় যে সকল ভূম করিয়াছি, তাহার ফলে নেগেটিভে যে সকল দোষ হইয়াছে, এই অধ্যায়ে কেবল তাহারই আলোচনা করিব শিক্ষার্থী ইহা দৃষ্টে নিজে সতর্ক হইতে পারিবেন আগর আশা করি, এ অধ্যায়টী মনোযোগের সহিত সকলে পাঠ করিবেন

(১) প্লেটের উপর ডেভেলপার চালিয়া দিবার পর ৫৭ মিনিট অতিবাহিত হইয়া গেলেও ছবি ফুটিতেছেনা, যেমন প্লেট তেমনি আছে

এ অবস্থায় বুঝিতে হইবে যে, কোনও কাবণ বশতঃ প্লেটের উপর ছবি পড়ে নাই কোন অবস্থায় ইহা সম্ভব ?— নব্য শিক্ষার্থিগণ ছবি তুলিবার সময় সাধাবণতঃ অত্যন্ত তাড়াতাড়ি করিতে পারেন তাহাতে অনেক সময় ডার্ক স্লাইডে দ্বাব খুঁটিতে শুল হইয়া থাকে। কেমেরোর ফোকস, হইল, স্লাইড পরান হইল, তাহার উপর কাল কাপড় চাপা দেওয় হইল, ক্যাপ, খুলিয়া একস্পোজার দেওয়া হইল, কিন্তু স্লাইডের দ্বাব খুলিতে ভুল হইল এ অবস্থায় প্লেটে কি প্রকাবে ছবি হইবে ?

(২) ডেভেলপার প্লেটে চালিয় দেওয়ার অনেক পরে একটু আধটু ছবি ওকাশিত হইতেছে মাত্র এরপ হইলে বুঝিতে হইবে যে, একস্পোজার অতি অল্প হইয়াছে ইহাকে “অঙ্গার একস্পোজার” [under exposure] বলে এ প্রকার হইলে “এ” নামক মিশ্র একটু একটু করিয়া ডেভেলপারে ঘোগ করিয়া জ্ঞানশঃ ডেভেলপ মেষ্ট করিয়া নেগেটিভ সম্পূর্ণ ঘোর করিবাব চেষ্টা করিবে। একস্পোজার নিতান্ত কম হইলে, “এ” মিশ্র বাবস্থার ঘোগ করিয়াও ভাল নেগেটিভ হইতে পারেনা ; সেই প্লেট খানি একান্ত পক্ষে নষ্ট হইয়াছে, ইহাই মনে করিয়া তাহা ফেলিয়া রাখ অবশ্যিক

(৩) ডেভেলপার প্লেটে চালিবা মাত্রই ছবিখানি ফুটিয় উঠিল বটে, কিন্তু অতি অল্পকাল মধ্যে সমস্ত প্লেট খানি একেবারে কালো বর্ণের হইয়া পড়িল ; ছবি যাহা প্রথমে দেখা গিয়াছিল, তাহাও অস্পষ্ট হইয়া যাইতেছে

এই প্রকার ঘটিলে বুঝিতে হইবে যে, অতিরিক্ত একস্পোজার দেওয়া হইয়াছে ইহাকে “ওভার-একস্পোজার” [over exposure] বলে নব্য শিক্ষার্থির ইহাতো হইতেই পারে, বহুদূর্দী ফটোগ্রাফারেরও এই ভূম হওয়া বিচিত্র নহে ফটো তুলিবার সময় কোন ছবি উঠাইতে কত একস্পোজার লাগিবে, তাহা পূর্ব হইতেই তা বিয়া ঠিক করিতে হয়, এই একস্পোজার বিষয়ে বিশদ ভাবে পৃথক অধ্যায়ে বর্ণিত করা হইয়াছে।

ডেভেলপার চালিয়া, অধিক একস্প্রেজ'র মেওয়া হইয়াছে বুঝিতে পারিলে, ১৯৫৫-৫
ডেভেলপার মেজাৰ মাসে চালিয়া লইবে, এবং প্লেটেৱ উপৱ খানিকটা অল চালিয়া দিবে অথ
দিবাৰ উদ্দেশ্য এই যে, ডেভেলপার আৰ অধিক কাৰ্য্য কৰিতে না পাৰে।

প্লেট খানি জলমধ্যে বাধিয়া, গেলাসস্থিত ডেভেলপারেৱ সহিত দুই হেন ভ্ৰোমাইড-অৰ-
পটাসিয়ম জৰুৰ কৰিয়া লইয়া, পুনৰ্বাৰ এই ভ্ৰোমাইড মিশ্রিত ডেভেলপ'ৰ ঘাৱা ক্ৰমবিকাশ
কৰিবাৰ চেষ্টা কৰ ভ্ৰোমাইড সহযোগে ক্ৰমবিকাশ খুব ধীৰে ধীৰে হইবে তনেক “ওভাৱ-
এক্সপোজাৱ” দেওয়া নেগেটিভ এই ভাৱে ভ্ৰোমাইড সহযোগে ডেভেলপ কৰিলে, উৎকৃষ্ট
নেগেটিভ হইয়া থাকে

(৪) ক্ৰমবিকাশ কৰিয়া নেগেটিভ এক অকাৱ মন্দ হইল না বটে, কিন্তু হাইপোজৰৈ উহা
ফিল্ম কৰিবাৰ পৱ, ছবিটী কাচ হইতে খুলিয়া যাইতেছে। স্থানে স্থানে ফোকা হইয়া ফুলিয়া
উঠিতেছে, অথবা জলে সমস্ত ছবি ধূইয়া যাইতেছে।

ইহা এক ভয়ঙ্কৰ বিপদ ইথাকে “ফ্ৰিলিং” অথাৎ উঠিয়া যাওয়া কৰে এতদেশে যে
সকল ড্রাইপ্লেট কিনিতে পাওয়া যায়, আৰ সে সমস্তই ইংলণ্ডে অস্ত হইয়া থাকে। সে সকল
ড্রাইপ্লেট ইংলণ্ডে দেশেই ব্যবহাৱ কৰিবাৰ উপযোগী কৰিয় অস্তত কৰা হয় ইংলণ্ড দেশে
বায়ুৰ উভাপ সাধাৰণত ৬০ l' অধিক হয় না। আংদেৱ বিশ্বদেশে শীৰ্ষকালো বায়ুৰ উভাপ ১০০
ডিক্রী অথবা ১১০ ডিক্রী আৰাধই হইয়া থাকে ইংলণ্ড দেশেৱ উপযোগী হোট এতদেশেৱ উত্তৰ
অল ঘাৱা ডেভেলপ কৰিলে, ফ্ৰিলিং দোষ হওয়া বিচিত্ৰ নহে

ঐ অকাৱ ফ্ৰিলিং দোষ বুঝিতে পাৰিলে, ব্যবহাৰ্য ডেভেলপ'ৰ, অল প্ৰতি সাধাৰণত ৪৬ল
কৰিয়া ব্যবহাৱ বৰিবে। বৰফ সহযোগে জল ইচ্ছামত শীতল এন্দৰ ধীয়া ৩০৫৩০০০ বা মাদেৱ
দেশে কুপোদক বেশ ৰে তল বোধ হয় যেখানে বৰফ না পাওয়া যাব সেখনে বুল্দেন জল
ব্যবহাৱ কৰিলে এই দোষ ন হইতেও পাৰে। কোন অকাৱে ডেভেলপ দীৰঢ় ০ ইম ফটকৰিবাৰ
জলে খেটি থানা রাখিলে, আৰ এই দোষ হয় না কিন্তু এই সকল চেষ্টা বৰিয়া ও যদি এই দোষ
হইতে থাকে, তাহা হইলে সেই জাতীয় খেটি ০ বিভ্যাগ পূৰ্বৰ অন্ত ভাল মেৰামতে ড্রাই হোট
ব্যবহাৱ কৰিবে। শীৰ্ষকালো এই দোষ আৰ দেখা যায় না।

(৫) ডেভেলপ কৰিয়া নেগেটিভ অস্তত কৰিবাৰ ও ফ্ৰি কৰিবাৰ ০ রে মেখ যাইতেছে
যে, কোন কোন স্থানে ছবি বেশ পৰিষ্কাৰ হইয়াছে, কিন্তু নেগেটিভেৰ কোন কোন স্থানে পুঁজীয়া
অথবা ধৈৰ্য্যৰ মত কি দেখ' ধ'ইতেছে ঐ ঔৰ'ৰ ধৈৰ্য্যৰ মত হ'লে হ'লে হওয়ায় ছবিৰ
সৌন্দৰ্য্য নষ্ট হইয়াছে। ইথাকে “ফগ” বলে নেগেটিভেৰ মধ্যে এই অকাৱ ফগ হইল বি অকাৱে।

স্বত্তাব দৃশ্যে যদি কুয়াগ ধাকে, তাহা হইলে নেগেটিভে কুয়াসার আকৃতি হইতে পাবে তাহাকে দোষ বলা যায় না। কিন্তু স্বত্তাব দৃশ্যে কুংস না থাকিলেও নেগেটিভে যদি শানে শানে ধৈঘার মত, অথবা কুয়াসার মত, তল্লষ্ট দেখায়, তাহাই দোষ খণ্ডিয়া গন্ত হয়, অঙ্ককার গৃহমধ্যে ইচ্ছিগ কোনও স্থান দিয়া সামাজিক আলোক আসিয়া এমবিকাশের সময় নেগেটিভের উপর প্রতিষ্ঠিত হয়; একস্তোজাব দিবাব সময়, স্নাইডেল মধ্যে ড্রাই প্রেট লাইবাব সময় অথবা ফিঙ্গ হইবাব পূর্বে নেচে টিচ কোন প্রকাব সামাজিক আলোক লাগিলেই ঐ প্রকাব ‘ফগ’ হইয়া থাকে। এই প্রকাব দোষ নেগেটিভে দেখিতে পাইলে, এই তৎ অঙ্ককার গৃহের প্রতি লঙ্ঘন কৰা উচিত। জানাল দৰজাব পার্শ্ব দিয়া সামাজিক মাত্র আলোব পথ দেখিতে পাইলে, তাহ মম, বন্ধু খণ্ড, এবং আলকাতবা অথবা কাল কাপড়ের পর্দা কবিয়া একেবাবে আলোকেব পথ বন্ধ করিয়া দিবে কেমেবা, স্নাইড ইত্যাদিও ভাল কবিয় পৰীক্ষা কবিবে সময়ে সময়ে এদেশেব জল বায়ুব প্রভাবে কেমেবা অথবা স্নাইডেব জোড় সকল খুঁঁয়া যাইতে পাবে; এই প্রকাব হইবাগত্র শিবিশ দ্বাৰা তাহা আঁটিয়া কৰিবে। এই সকল বিষয়ে সাবধান হইলে, আলোক লাগাব দক্ষণ ‘ফগ’ হইবাব সন্তোষনা থাকিবে না।

আব এক প্রকাব এই জাতীয় দোষ আছে তাহাকে “ব্রাউন ফগ” অৰ্থাৎ লালবর্ণ কুয়াসা বলে। এমবিকাশ কৱিবাব জন্ম যে “এ” নামক মিশ্র ব্যবহৃত হইয়াছে, ঐ মিশ্রে লাইকাব এমোনিয়া নামক ক্ষাৰ ধৰ্ম বিশিষ্ট তৰল পদাৰ্থ আছে। লাইকাব এমোনিয়া কিছু অধিক মাত্রায় ব্যবহাৰ কৱিয়া সময়ে খুৰ অল্প একস্তোজাব দেওয়া নেগেটিভের ক্রমবিকাশ কৱিতে পাৰ যায়, কিন্তু এইরূপ কৱিলে নেগেটিভে বৰ্ণ কৃকৃট লাল হইতে পাৰে। ঐ প্রকাব ব্রাউন বৰ্ণ ফটকিবি দ্বাৰে কৃকৃটা পাৰিবন্ধন হওয়া সন্তুব ‘ব্রাউন ফগ’ অতিৰিক্ত হইলে, নিয়ন্ত্ৰিত ‘ক্লিয়াবিং সলিউশন’ ব্যবহাৰ কৱিবে।—

| | | | |
|-------------|-----|-----|----------|
| ফটকিবি | ... | ... | ২ আউন্স |
| সাইটিক এগিড | ‘ | ... | ১ আউন্স |
| জল | .. | ... | ১০ আউন্স |

উপৰোক্ত মিশ্র প্ৰস্তুত কৱিয়া একটী শিলিতে বাধিয়া, “নেগেটিভ ক্লিয়াবিং সলিউশন” নাম দিয়ী বাধিবে নেগেটিভ পৰিক্ষাৰ কৱিবাব আবশ্যক হইলে, হাইপো দ্রব হইতে উঠাইয় তাহ বন্ধেকৰাৰ ধৌত কৱিবে, এবং আদ্র-অবস্থাতে একখানি পৱিষ্ঠত ডিসে বাধিয়া উপৰোক্ত ‘ক্লিয়াবিং’ মিশ্র ঢালিয়া দিবে। ইহাতে ছুই তিন মিনিট বাধিবেই, নেগেটিভ পৱিক্ষাৰ হইবে

নিম্নলিখিত ভাবেও কেহ কেহ ক্রিয়াবিং প্রস্তুত করেন —

| | | | |
|---------------------------|-----|-----|-----------|
| ফটকিরির সাচুবেটেড সলিউসন* | ... | ... | ২০ আউন্স। |
| হাইড্রো কেবিক এসিড | ... | ... | ১ আউন্স |

পূর্বাপেক্ষা শেয়োক্ত “ক্রিয়াবিং” সলিউসনে থবচা কথ পড়ে, কার্য্য পূর্বের মতই হয়

৬. নেগেটিভ পাতল হওয়া (Want of density) — নেগেটিভ কতকটা ঘন ন হইলে, তাহা হইতে ছাপিগ ভাল পজিটিভ (P...o...g) কৰা যায় যা “জেনেটন ড্রাইভেট প্রস্তুত কৰ” প্রণালী আজকাল যে অকাব উৎকৃষ্ট হইয়া দাঁড়াইয়াছে, এক্ষণে নেগেটিভ আবশ্যক মত ঘন কৰিতে কোন কষ্টই হয় না। কিন্তু একসপোজাৰ নিতান্ত কথ হইলে, নেগেটিভ আবশ্যক মত ঘন কৰা দুর্ভু হয় ; ডেভেলপাবে জল অধিক হইলেও নেগেটিভ পাতলা হয় ; অধিক একসপোজাৰ দিয়া ধীবে ধীবে ডেভেলপ কৰিতে গেলেও অনেক সময়ে নেগেটিভ পাতল হইয়া পড়ে ; ত্ৰি অকাব পাতলা নেগেটিভ পৱে আবশ্যক মত ঘন কৰিয়া লইতে হয় ; এই ক্ৰিয়াকে “ইন্টেন্সিফিকেশন” বলে ইন্টেন্সিফিকেশন কৱিবাৰ পূৰ্বে নেগেটিভ হইতে হাইপোসোডা একেবাৰে নিঃশেষিত কৰিয়া ধীত কৱা একান্ত আবশ্যক হাইপোসোড যদি সামান্য পৱিসামেও নেগেটিভে থাকে, তাহা হইলে ইন্টেন্সিফিকেশন হয় না। হাইপোসোডা উত্তমকামে ধীত হইলে, পূৰ্বাপেক্ষ ক্রিয়াবিং সলিউসনে নেগেটিভ বাঁধবে, পৱে জল দ্বাৰা দুই তিন ঘণ্টা ভিজাইয়া বাঁধবে, এবং ১৫ মিনিট অন্তৰ জল পৱিবন্তি কৰিয়া দিবে এই অকাবে ধীত কৱিলে, নেগেটিভ ঘন কৱিবাৰ উপযোগী হইবে। নিম্নে কয়েক অকাব ঘনকৰণ মিশ্র ও তাহাদেৱ ব্যবহাৰ লিখিত হইল শিখাৰ্থী একে একে সদা গুলিৰ পৰামৰ্শ কৰিবেন যেটী সুবিধা জনক, ও ভাল মনে হইব, শিখাৰ্থী সেইটী ব্যবহাৰ কৰিতে পাৱেন

(১) মন্তক হোভেন ফুত ইন্টেন্সিফায়াৱ।

| | | | |
|--------------------------------------|-----|-----|-----------|
| (ক) ব্ৰোমাইড-আব-পটাস | ... | ... | ১০ গ্ৰেণ। |
| বাইক্লোবাইড-আব মাৰ্কিন (বিষ সাবধান) | ... | | ১০ গ্ৰেণ। |
| জল | ... | .. | ১ আউন্স |

| | | | |
|---------------------------------------|-----|-----|-----------|
| (খ) বিশুক্ষ পোটাসিয়ম সায়ানাইড (বিষ) | ... | ... | ১০ গ্ৰেণ |
| নাইট্ৰেট-আব- পিলভাৰ | ... | . | ১০ গ্ৰেণ। |

*সাচুবেটেড সলিউসন বিষয়ে পৱিশিষ্ট দেখ।

জল ১ আউল্ল

উত্তমসূচে ধোত নেগেটিভ খানি গ্রথমে “ক” মিশ্রে ডুবাইয়া রাখিবে কিছুকাল এই প্রকার ধাকিলে, নেগেটিভ খানির বর্ণ সাদা হইয়া যাইবে এই প্রকার সাদা হইলে পর তাহা জল দ্বারা ধুইয়া পুনরাবৃত্তি “খ” মিশ্রে ডুবাইবে। এই প্রকার করিলেই নেগেটিভ আবার কালৰণের হইবে, এবং পূর্বাপেক্ষা ধন হইবে

(২) পারদ ও এমোনিয়ার ইনটেন্সিফায়ার

একটী চারি আউল্ল শিশিতে ৩ আউল্ল জল রাখিয়, তাহাতে খানিকটা বাইক্লোরাইড অব-মার্কবি ফেলিয় রাখিবে এই প্রকার রাখিলে উহা মার্কবির “সাচুবেটেড সলিউসন” হইবে

কোনও নেগেটিভ ধন করিবার সময় ঐ সাচুবেটেড সলিউসন খানিকটা ডিসে লাইয়া, নেগেটিভ তাহাতে ডুবাইয়া দিবে এই প্রকারে ছুই তিনি মিনিট রাখিলে, নেগেটিভ খানি সাদা হইয়া যাইবে পরে উহা উষ্টাইয়া ধোত করিবে, এবং নিম্ন লিখিত মিশ্রে ডুবাইয়া দিবে

জল ১০ আউল্ল।

লাইকাব এমোনিয়া ১০ ফোটা।

এই মিশ্রে ডুবাইবা মাত্রই নেগেটিভ খানি আবার কালো হইতে ধাকিবে যদি একটু আধটু ছাকড়া ছাকড়া দাগ হয়, তাহা কিছুকাল পরে সাবিয়া যাইবে নেগেটিভ বেশ ঘোব বর্ণের হইলে, এমোনিয়া হইতে উষ্টাইয় ধোত করিবে

(৩) মার্কবি এবং সলফাইট সোডা।

পূর্বোক্ত সাচুবেটেড সলিউসনে নেগেটিভ খানি সাদা বর্ণের কবিয়া লাইয়া, এমোনিয়ার পরিবর্তে নিম্নলিখিত মিশ্রে ডুবাইলেও কালো বর্ণের হইবে —

সলফাইট-অব-সোডিয়ম এক আউল্ল

জল ৫ আউল্ল।

(৪) ব্রোমাইড-অব-কপার।

নিম্ন লিখিত “ইনটেন্সিফায়ার” আমৰা বড় পছন্দ করি ইহার গুণ এই যে, ইহা একবার প্রস্তুত করিলে, অনেকবার ব্যবহার করা চলে, এবং অনেক দিন রাখিলেও ইহা নষ্ট হইবেনা।

(ক) ব্রোমাইড অব পোটাসিয়ম ১৫০ গ্ৰে

জল ১০ আউল্ল।

| | | | |
|--------------------|-----|-----|------------|
| (খ) সলফেট-অব-কপারু | ... | ... | 2৪০ গ্রেণ। |
| জল | .. | .. | ১০ আউন্স |

“ক” এবং “খ” মিশ্র পৃথক ভাবে প্রস্তুত করিয়া, পরে একটী বড় শিশিরে দুইটী এবং করিবে এই প্রকার কবিলে সলফেট-অব-পটাসিয়ম অমস্ত হইয়া পড়িবে। দুই তিন খণ্টা ইহা স্থিত ভাবে বাখিয় বেশ ধিতাইয়া গেলে উপবের পরিধাব মিশ্রটুকু সাবধানে ঢালিয়া গহিতে হইবে ইহাতে ক্রোনও পাতলা নেগেটিভ ডুবাইলে প্রথমতঃ নেগেটিভ খালি ধেত বর্ণের হইবে; তাহাতে এমোনিয়া দ্রব যোগ দিলে ঘোর কাল বর্ণের হইবে

৭। নেগেটিভ অতিরিক্ত ঘন হওয়া (too great density)।—ক্রমবিকাশ করিবার সময় দৈবাং দেখিতে শুওয়া যায় যে, নেগেটিভ অতিরিক্ত ঘন হইয়াছে। এই ক্ষেত্রে ঘন নেগেটিভ হইতে ছবি ছাপিতে অনেক বিলম্ব হয়। এই প্রকার ঘন নেগেটিভ একটু পাতলা হইলে, পজিটিভ ছাপা কার্য্য ভাল হয় নেগেটিভ পাতলা করিবার অযোজন হইলে, নিম্ন নির্ধিত দ্যবস্থা মত কার্য্য করিবে

পটাসিয়ম ফেবিড-সাধানাইড সাচুরেটেড সলিউশন ... ১ ভাগ।

হাইপো সলফাইট অব সোডা (সলিউশন) ... ১০ ভাগ

উপবি উক্ত দুই প্রকার দ্রব একত্র করিলে “নেগেটিভ-বিজিউসার্” প্রস্তুত হইবে নেগেটিভ ধানা গ্রি মিশ্রণে অল্পকাল তিজাইয়া বাখিলে পাতলা হইবে পরে জল দ্বারা উত্থাপনে ধোও করিবে

৮। নেগেটিভে ছোট ছোট দাগ হওয়া —

যে সময়ে ডার্কলাইডে বেট লওয়া হয়, সেই সময়ে লাইড ফুল ধূলা বাঢ়িয়া গহিতে হয়, একটী কোমল তুলিক অথব পর্যাপ্ত রেশমি রূমাল দ্বারা ড্রাইভেট ফুলিও বাঢ়িতে হয়, তাহা না করিলে, নেগেটিভে ধূলা থাকিতে পারে, ও ধূলাবশতঃ নেগেটিভে ফুল ফুল স্বচ্ছ দাগ হয়; ফুল কার জলবিষ দ্বারাও এই প্রকার দাগ হইতে পারে এই দুই বিষয়ে মনোযোগী হইলে, নেগেটিভে ধূলা বশতঃ গ্রি প্রকার দাগ হইবে ন আর যদি অসোবধানতা বশতঃ দাগ হইয়া গড়ে, তাহা হইলে কাল বর্ণের জলীয় রং এবং সুস্থ তুলিকাদ্বারা গ্রি সকল ফুল দাগ সারিয়া দ্বারা হইতে হইবে এই প্রকারে তুলিকাদ্বারা ফটোগ্রাফের ফুজ ফুজ দাগগুলি মিহাইয়া দেওয়াকে “স্পটিং” (Spotting) বলে

দশম অধ্যায়।

পূর্ব কয়েক অধ্যায়ে গেগেটেন প্রস্তুত করিবাব অনালী যাহা বর্ণিত হইয়াছে, আমরা আশ করি তাহা দ্বারা শিক্ষার্থী নেগেটিভ প্রস্তুত করিতে পারিবেন কিন্তু ঐ সকল বিষয় আরও, ভালুক বোধগম্য না হইলে, শিক্ষার্থী উভবোত্তর উন্নতির পথে অগ্রসর হইতে পারিবেন না। এই জন্য আমরা পুনরায় ঐ সকল বিষয় আবও পরিষ্কার রূপে বুরাইব।

প্রথমতঃ যন্ত্রাদিব কথা বেঘেবা লেন্স, ষ্ট্রাইড, এবং স্লাইড কেমেরা নানা প্রকার আছে। সকল কেমেরাতেই ফোকস্ করিবাব জন্য একখানি ঘসা কাচ (Ground glass) দেওয়া থাকে এই ঘসা কাচের উপর সকল বস্তুর ছায়া ফেলিতে হয় ঐ প্রতিবিম্ব যেমন হইবে, শেষে ছবি ধানিও সেই প্রকার হইবে সুতৰাং যাহাতে এই ফোকস্ কৰা ভাল হয়, সেবিয়ে মনোযোগী হওয়া কর্তব্য।

কেমেরায লেন্স আঁটিয়া কোনও স্বাভাবিক বস্তুর প্রতি লক্ষ্য করিলে, ঘসা কাচের উপর সেই বস্তুর ছায়া অথবা ছবি পড়িয়াছে, এমত বুরা যায়। কিন্তু ঐ ছায়া প্রথমতঃ বড় বিকৃত অথবা অপ্পট দেখায়। ক্রমশঃ লেন্স, এবং ঘসা কাচের মধ্যস্থিত দূরত্বের ড্রাস অথবা বুর্কি করিলে, পূর্ব কথিত ছায়া স্পষ্ট এবং স্বাভাবিক দেখায়। ইহাকেই “ফোকস্” করা বলে এই ক্রিয়া বিশেষ কিছু কঠিন নহে, যে ব্যক্তি কখনো কেবেবা দেখে নাই, সেও একটীবার চেষ্টা করিলে এই প্রকার ফোকস্ করিতে পারে, সন্দেহ নাই।

চিত্রকবগণ যেমন কোনও বস্তুর ছবি করিবার সময় ইচ্ছাগত সকল প্রকার সঙ্গী করিতে পাবেন, ফটোগ্রাফারগণ তাহা পারেন না ফটোগ্রাফীব দ্বারাও নানা উপায়ে যুক্ত চিত্র (Combination Photography) হইতে পাবে, কিন্তু ফটো ভূলিবাব সময় কেবেবা ঘসা কাচ ধানির উপর যে প্রকার ছবি হইবে, ফটোগ্রাফ তাহা ভিন্ন আব কি হইতে পাবে? এই জন্য ফোকস্ করিবাব সময়েই দেখিতে হইবে, যেন চিত্রধানি ভাল হয়।

সুত্তাবদুগ্ধ [Landscape] ভূলিবাব সময় দেখিতে হইবে যে, সেই দৃশ্য যে সবল বেখা আছে, ফটোগ্রাফ ভূলিবাব সময় তাহা যেন বক্র হইয়া না যায় অটোলিকা, ধাগ, কার্ণিস, ল্যাম্পপোষ্ট টেলিগ্রাফের তাব, দেওয়াল, সোজা পথ, অথব জলের উপবিভাগ ইত্যাদিতে নান প্রকার সবল বেখা [Straight lines] দৃষ্ট হয়; ঐ সকল বেখা যদ্যপি বক্রভাবে ফটোগ্রাফে অঙ্গিত হয়, তাহা দইতে তাহা নিতান্ত অস্বাভাবিক হইবে।

অটোলিকা অভ্যন্তর ফটো তুলিবার সময় কেমেবোর শেভল ঠিক করা আবশ্যিক একটা ছোট স্পিরিট লেভল দ্বারা দেখিতে হইবে কেমেবোর ঠিক লেভল হইয়াছে কিনা কেমেবোর লেভল হইলেই দেখিবে যে, ছবির বেথা সকল সমান হইবে

স্পিরিট লেভল ব্যতিবেকে যে কেমেবোর সমান কবিয়া বসান যাব না, এমন নহে এ অবস্থায় ফোকস্ কবিবার সময় চিত্রস্থিতি বেথা সকল দেখিপেই বুবা যাইবে বেথ সকল সমান হইলেই বুবিবে যে কেমেবোর শেভল হইয়াছে ফোকস্ বিবিবার সময় ইহাব বিশেষ আবশ্যিক স্বভাবের কোনু বস্তু ফটোগ্রাফের ঠিক মধ্যে থাকিলে ভাল দেখাব, তাহাও দেখ কর্তব্য এ কথায় কেহ যেন এ ওকার না বুবেন যে, ফটোগ্রাফের ঠিক মধ্যস্থলে কোনও বস্তু যাখিতেই হইবে।

চিত্রকরেবা স্বভাব দৃশ্যের যে সকল চিত্র প্রস্তুত কবেন, আবাই দেখা যাব যে, চিত্রের মধ্যস্থল কি তাহার সন্নিকটে স্বভাবেব কোনও দূরস্থ বস্তুর চিত্র অঙ্গিত হইয়াছে। এ ওকার কবিবাব অভিপ্রায় এই যে, ইহাতে চিত্রেব গভীবতা (Dept.) হয় নব্য শিক্ষার্থী বলিবেন, “চিত্রেব আবাব গভীবতা কি ?” আববা এই কথাটা বুবাইবার চেষ্টা ব রিব

স্বভাবদৃশ্যেব যে সকল চিত্র অথবা অয়েলোগ্রাফ [Oleograph] বাজাৱে পাওয়া যাব, তাহাব একখানি ভাল কবিয়া দেখিলে বুৰিতে পাৰিবে যে, তাহার মধ্যে ফিলাকণ অনুসাৱে দূৰস্থ, সামীপ্য, আলোক, ছায়া, আকাশ, বৌজ, নদী, পৰ্বত অভ্যন্তি নামা অকাৱা পদাৰ্থেব ছবি আছে। ত্ৰি সকল পদাৰ্থের কোনটী দূৱে কোনটী অপেক্ষা কৃত অজ্ঞদুৰ্বে, কোনটী নিকটে বহিযাই, চিত্র দেখিলে, তাহা বোধ হয়। সমান ভূমিন উপৱ দূৰস্থ সামীপ্য বোধ হয় বিদ্যাট শিদাকদা দেখিয়া আগৱা বিশিষ্ট হই চিত্র দেখিয়া এই ভাস্তিজ্ঞান [Vision] হয় বলিবা, ভাস্তু অপেক্ষা চিত্রকরেব বিষ্টা অধিকতম মাত্র হইয়াছে।

মনেকৱ, একখানি চিত্রে বহুলে একটা পৰ্বত দেখা যাইতেছে, পৰ্বতেৰ কোৱে ছেট একটা নদী প্ৰবাহিত, নদীৰ জলেৰ উপৱ দূৰস্থ পৰ্বতেৰ ছায়া পড়িয়াছে, আকাশেৰ ছায়াও নদীৰ জলে প্ৰতিবিধিত হইয়া ছোট ছোট ডৰঙাধাতে ঝিক মিক কৱিতেছে নদীৰ জলেৰ টুকু দুৰেন নৌকাগুলিয় পাল দেখা যাব মাজ, নিকটস্থ নৌকাগুলিৰ সকল বিষয় সুস্পষ্ট অধিত, এজন্তু নৌকাগুলিয় পৱন্পৱেৰ দূৰস্থ ও ভিন্ন বোধ হইতেছে এই ১ কল বিষয় এমন কৌশলে অঙ্গিত এবং সজিজত হইয়াছে যে, দেখিলে মনেৰ মধ্যে একটা ভাস্তিজ্ঞান হয় যদিও জ্ঞান আছে এখনি চিত্র, উহাব মধ্য দিয়া পাঁচজোশ দূৱেৰ পৰ্বত, একক্রোশ দূৱে নদীৰ জলে নৌকা, এবং অপেক্ষা কৃত নিকটে অপৱ একখানি নৌকা, এই অকাৱ যে বোধ হয়, ইহাই ভাস্তিজ্ঞান। এই সকল

আন্তিজ্ঞান যে চিত্রে অধিক থাকে, তাহাই শিল্পবিদ্যা পঙ্গিতগণ কর্তৃক প্রশংসিত হইয়া থাকে।

চিত্রে “গভীরতা” [Depth] কি, পাঠক পাঠিকারা বুঝিতে পারিলেন কি ? চিত্র দেখিয়া যে আন্তিজ্ঞান হয়, সে কথাটোও বুঝিতে পারিলেন কি ?

স্বতাব চিত্রের ফটো তুলিবার সময় দেখিতে হইবে, চিত্রের যেখানটা মধ্যস্থল, ঠিক তাহার নিকটবর্তি কোণও স্থানে “দূরস্থের” ছবি পড়িল কি না। কেমের একটু এদিক ওদিক যুবাইলে অনায়াসেই দূরস্থ কোণ বল্ল ফটোগ্রাফের মধ্যস্থলের নিকটবর্তি কৰা যাইবে তাৰ পৱে ছবিব দুই পার্শ্বে স্বত্বাবের সকলু বস্তুৰ ছায় আপনা হইতেই পড়ে এই সময়ে কেমেরার পচাঃ ভাগের খসা কাচেব [Focus Screen] উপস্থল উন্টা প্রতিবিষ্টের দিক চাহিয়া, কেমেবা একটু এদিক ওদিক স্ববাইয়া দেখিলেই বুবু য'য় যে, সকল অবস্থ'য ছবি সম'ন দেখ'য ন। —২২৩ কোনও একটা জিনিস ছবিতে বাদ দিলে, ছবিধানি ভাল দেখায় ; হয়ত, দৃশ্টি একটু মাত্ৰ উঠাইলে, আকাশ একটু বেশী দেখায়, তাহাতে ছবিধানি ভাল দেখায় এই সময়ে “মুভিংফ্লট,” “মুইংব্যাক” প্রভৃতি কৌশল দ্বাৰা শিল্পকলাত্তিজ্ঞ ফটোগ্রাফাৰ ইচ্ছামত ফটোগ্রাফ খানিৰ অনেক উন্নতি কৱিতে পাবেন। নব্য শিক্ষার্থীৰ প্ৰথম হইতে এবিষয়ে চেষ্টা কৱা কৰ্তব্য।

শিল্পকলা সমস্ত শিক্ষা কৰিয়া পৰে ফটোগ্রাফ যিনি কৱিবেন, তিনি যে এবিষয়ে অধিকতর সফল হইবেন, সে বিষয়ে সন্দেহ কি ? যাহাবা শিল্পকলা আঁদৌ জানেন না, তাহাদেব এজন্ত হতাশ হইবাব প্ৰয়োজন নাই আমৰা এই বিষয় বুবাইবাৰ জন্য একটী উদাহৱণ দিব।

চিত্ৰবিষ্টা এবং সঙ্গীতবিষ্ট উভয়ই প্ৰায় এক প্ৰকাৰ এবটী জ্যোতি বিষয়ক, এবং অপৱটী শব্দ বিষয়ক। একটী চকুৱ গ্ৰাহ, অপৱটী কৰ্ণেৱ গ্ৰাহ

মনে কৱন, একজন গান গাহিতেছে, সেই শব্দ আকশেৰ মধ্যে একটা তুফান (vibrations) তুলিয়া দুইজন শ্ৰোতাৰ কৰ্মধ্যে প্ৰবল্ল হইতেছে দুই জনে সেই গান শুনিতেছে একজন সঙ্গীত শাস্ত্ৰে পঙ্গিত, তিনি সেই গান শুনিয়া, তাহাৰ পূজ্জনুপূজ্জনতাৰে বিচাৰ কৱিতেছেন কোন্ৰাগ অথবা রাগিনী গাহিতেছে, তাহাতে কি স্বৰ লাগিতেছে, তীব্ৰ ও কোমল স্বৰ সকল ঠিক লাগিতেছে কিনা আবোহী এবং অবোহী* প্রভৃতি যথা নিয়ম গাওয়া হইতেছে কিনা, সঙ্গীতজ্ঞ পঙ্গিত তাহা বিচাৰ কৱিয়া বুঝিতে পারিতেছেন। অপৱ ব্যক্তি সঙ্গীত শাস্ত্ৰ কিছুই জুনে না, কিন্তু তাহার কাণে সেই গান ভাল লাগিতেছে সে মনে কৱিতেছে আহা কি চমৎকাৰ গাহিতেছে, এমন তো আব শুনি নাই।

*গানেৱ স্বৰ যথন উঁবে উঠে তথন আৱোহী। যথন স্বৰ ক্ৰমশঃ নাগিয়া নিয় পৰদায় আসে, তখন অবোহী।

অঙ্গীক শাস্ত্রে মুখ্য হইলেও তাহার কানে সেই গানের শব্দ আপি আগিতেছে। চির সময়েও
ক্ষতকটা ও প্রকার দেখা যায়।

তাল একধানি ছবি দেখিয়া চিত্রকলাভিজ্ঞ পঙ্গিত তাহার রচনা কৌশল, (Oomption) আঙোক ও ছায়ার সজ্জা, (Chairoscurve) দৃষ্টি বিজ্ঞান (Perspective) এবং বর্ণবিজ্ঞানের (Colouring) বিচার করিয়া সেই চিত্রের দোষ গুণ বুঝিতে পাবেন।

যিনি চিত্রকলা বিষয়ে কিছুই জানেন না, সে বকম লোকে চির দেখিয়া আসন্নি ত হইয় থাকেন। চক্ষুতে দেখিতে তাল লাগে। সেটা আমাদের চক্ষুবই গুণ তাল শব্দ করে তাল লাগে, তাল দৃশ্য দেখিতে তাল লাগে, জিহ্বা সূর্যধূর বসে তুল হয়, মুগহুৰে নাসিকাব তৃপ্তি, এবং সুখস্পর্শী জ্বেল প্রশংসনুৎ হইবে, ইহাতে বিচির কিছুই নাই। উহা আমাদের জ্ঞানের পথমাত্র।

শিক্ষার্থী এই বিষয়টী যতই চিন্তা করিবেন, এবিষয়ে ততই তিনি ক্রমশঃ বুঝিতে পাবিবেন যাঁহারা সঙ্গীত অথবা চিত্রকলায় পঙ্গিত হইয়াছেন, তাহারা পূর্বে ঐ সকল বহস্য বুঝিতে পাবিতেন না। ক্রমশঃ দেখিতে দেখিতে তাহারা এ বিষয়ে জানী হইয়াছেন।

চিত্রের মধ্যস্থলে যদি দুবছ বেনও পদার্থের ছবি পড়ে, তাহা হইলে দেখা উচিত যে, চিত্রের দুই পার্শ্বে স্বাভাবিক বস্তুর সমাবেশ তুল্য হইল কি না। উৎস্থরণ দিয়া বলিতে গেলে,—
মনে করন, আপনি ফোকস করিয়া দেখিগেন যে, ঘসা কাচের মধ্যস্থলে দুর্বাস্ত বোঁও ও নম্বুন
ছায়া পড়িয়াছে। এক্ষণে আগমার দেখা উচিত, “ফোকস স্কুলের” দুইঁশে কি প্রকার সঙ্গ।
হইয়াছে। উদাহরণ স্থলে মনে করন, একপার্শে একটা আঢ়ালিকা দেখা যাইতেছে। অপর দিকে
তেখন বড় বস্তু কিছুই নাই, সুতৰাং ধালি মাঠ অথবা পর্তিত ভূমি খনিকট চিহ্নে দেখা
যাইতেছে। এ অবস্থায় ফটো জ্বিলে ছবির এক পার্শ্ব শূল্য, বেন কি নাই,—বি হইলো লাগ না,
এই প্রকার একটা অভাব বোধ হইবে। ইহাকে চিত্রকবগণ “সামোর অভাব” [Want of
balance] বলিয়া থাকেন। ইহা চিত্রমাত্রেরই একটা নিম্নাংশ কথা।

নব্য শিক্ষার্থী বলিবেন যে, স্বভাবে মাঠ পড়িয়া বহিযাছে, আগি তাহার কি করিতে পারি?—
ইহার উত্তরে এই বলিতে পারা যায় যে, এমত অবস্থ য সেই স্থান হইতে কেবেরা সরাগ্য, ও ধান
একটু বাগ অথবা দশকগ দিকে পুনর্বার বসাইয়া দেখ, মুগ্নে উঘাতি করিতে পার বি ন
এবিষয়ে একটু অভ্যাস, এবং বহুমুশিক্ষাব আবশ্যক, তাহ তে সনেই নাই।

স্বভাব মৃশ্য তুলিবার সুব্ধ কি প্রকার এব্যের অধমতৎ ফোকস করা উচিত? যিনি বেশ
নিপুণতার সহিত ফোকস করিয়া দেখিবেন, তিনিই বুঝিতে পারিবেন যে, স্বভাব মৃশ্য বেনও
একটা বস্তুর ফোকস করিসে, অত্যন্ত বস্তুর ফোকস হয় না। অর্থাৎ মুরের বস্তুর পরিষ্কার

ଫୋକସ୍ ହିଲେ, ନିକଟଶ୍ଵ ବଞ୍ଚର ଫୋକସ୍ ହୁଁ ନା ; ପେଇ ଯତ, ଯଦି ନିକଟଶ୍ଵ ବଞ୍ଚର ଫୋକସ୍ କରା ଯାଏ, ତାହା ହିଲେ ଦୂରେର ବଞ୍ଚ ଆବାର ଅପ୍ରକଟିତ ହେବା ଯାଏ । ଏ ଅବସ୍ଥାଯ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ କି ?

ସମ କାଚ ଧାନିବ ଉପର ଯାହାକେ ସର୍ବବସ୍ତୁ ବେଶ ପରିଷାବ ହେବା ଫୋକସ୍ ହୁଁ, ଫଟୋଆଫାବେର ତାହାଇ ଚେଷ୍ଟେ କବା ଉଚିତ କେମନ କରିଯା ଦୂରଶ୍ଵ ବଞ୍ଚ ଏବଂ ନିକଟଶ୍ଵ ବଞ୍ଚ ସମାନ ଫୋକସ୍ କରା ଯାଏ, ତାହା ବଲିତେଛି —

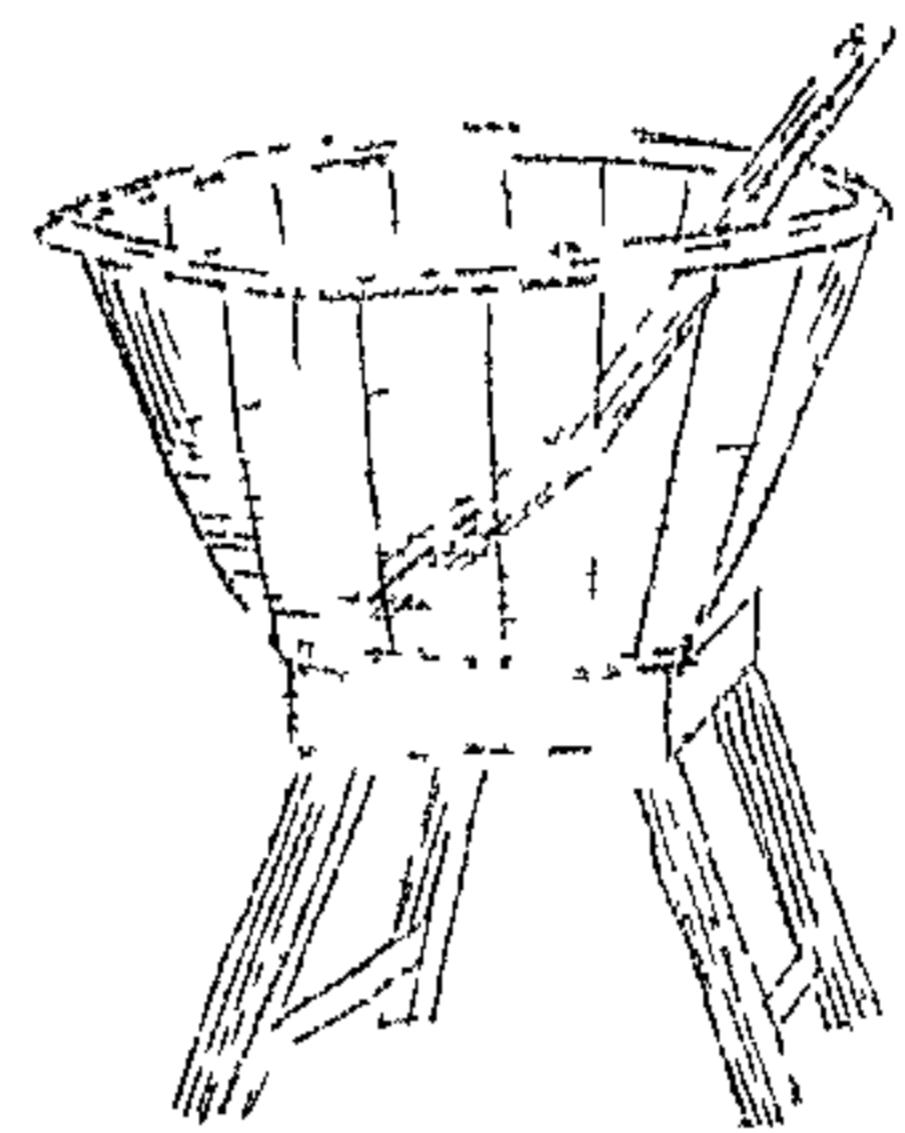
ଅର୍ଥଗତଃ ଯାରୀମା ବି ଦୂରେର କୋନଓ ବଞ୍ଚର ଫୋକସ୍ ଠିକ କରିବେ ଏହି ପ୍ରକାର କବିବାର ସମୟ ଲେନ୍ଦେବ ଛିନ୍ଦ୍ର (Aperture of lens) ସର୍ବାପେକ୍ଷା ବଡ଼ କରିଯା ରାଖିବେ ଏହି ପ୍ରକାର ଫୋକସ୍ କରିଯା ଦେଖିତେ ପାଇବେ ଯେ, ନିକଟ ଏବଂ ସର୍ବାପେକ୍ଷା ଦୂରେର ବଞ୍ଚଗଳ ଅପ୍ରକଟିତ ରହିଯାଇଛି (Out of focus)

ଏଥନ୍ କେମେରା ଆବ ଛୋଟ ବଡ଼ ନା କବିଯା, ଦେଖଦେଖି, ଲେନ୍ଦେବ ଛିନ୍ଦ୍ର କିଛୁ ଛୋଟ କରିଲେ, ସକଳ ବଞ୍ଚର ଫୋକସ୍ ଭାଙ୍ଗ ହୁଁ କି ନା । ଲେନ୍ଦେବ ଛିନ୍ଦ୍ର ଛୋଟ କବିବାର ଜଣ ପୃଥିକ "ଛୁଟି" ପାଇୟା ଯାଏ, ଅଥବା କୋନଓ ଲେନ୍ଦେର ମଧ୍ୟେ "ଆଇରିସ୍ ଡ୍ୱାକ୍ଟ୍ରୁଟ୍" ଥାକେ । ଯେ ଲେନ୍ଦେ ଯେ ପ୍ରକାର ବନ୍ଦୋବନ୍ଦ ଥାକୁକ, ଏହି ସମୟ ତାହାର ବ୍ୟବହାର କରିତେ ହେବେ ଲେନ୍ଦେର ଛିନ୍ଦ୍ର ଏକଟୁ ଛୋଟ କରିଲେ କେମେରାର ମଧ୍ୟେ ଆଲୋକେର ଭାଗ କିଛୁ କମ ହେବେ, ଓ ପେଇ ଦେଖି କେମେରାର ଛବି ଅଧିକତର ସ୍ପଷ୍ଟ ହେବେ

ଲେନ୍ଦେର ଛିନ୍ଦ୍ର ଛୋଟ କରିଯା ଛବି ପରିଷାବ କରିତେ ଗେଲେ, ଆଲୋକେର ପରିମାଣ କରିଯା ଯାଏ ; ଏକାବଣ ଏକମ୍‌ପୋଜାର କିଛୁ ଅଧିକ ଲାଗେ ଲେନ୍ଦେର ଛିନ୍ଦ୍ର ଯତ ବଡ଼ ଗାଢିଯା ଫୋକସ୍ ଠିକ ହୁଁ, ଏକମ୍‌ପୋଜାର ତତ୍ତ୍ଵରେ କମ ଲାଗେ ଏହି କଥାଟୀ ମନେ ବାଖା ଉଚିତ

କେମେରାର ପାଇା — ଛାନ୍ତି ବେଶ ଅଜବୁଦ୍ଧ ହେଯ ଦରକାର ଶକ୍ତାଦ୍ୱାର୍ଯ୍ୟ ଦୁଲିବାର ସମୟ ଏହି କେମେରାର ବାତାସ ଲାଗିଯା କେମେରା କାପିଦା ଯାଇବେ ତୁମି ଯତଇ ସତ୍ତ୍ଵ କରିଯା ଫୋକସ୍ ଏବୋ, କେମେରା ମଡ଼ିଯ ଗେଲେଇ ଫଟୋଆଫ ଅପ୍ରକଟିତ ହେବେ ଆମରା ଶିଳ୍ପାର୍ଥୀଙ୍କେ ଯେ କେମେରା କିନିତେ ବନ୍ଦିଯାଇଛି, ପେଇ କେମେରାର ସମେ ଯେ ଛାନ୍ତି ମେଘ୍ୟ ଥାକେ, ତାହା ପେଇ ଯନ୍ତ୍ରେ ଠିକ ଉପଯୋଗୀ ଛାନ୍ତି ସାଇବାର ସମୟ ଏକଟୀ ପାଇା ଲେନ୍ଦେର ଦିକେ ରାଖିବେ, ଅପର ଦୁଇଟୀ ପାଇା ଦୁଇ ପାଥେ ସାଇବେ । ଏହି ପ୍ରକାରେ ପାଇା ସାଇଲେ, ପାଇା ଅଭାଇଦ୍ୟା କେମେରା ପଡ଼ିଯା ଯାଇବାର ଭାବ ଥାକିବେ ନା, କାର୍ଯ୍ୟର ଓ ଶୁର୍ବିଧା ହେବେ ।

ମ୍ଲାଇଡ — ଏସବଜ୍ଜେ ଅଧିକ ବଲିବାର କିଛୁ ନାହିଁ । ଛବି ତୁଲିବାର ସମୟ ଦେଖିତେ ହେବେ ଯେ, କେମେରାଯ ମ୍ଲାଇଡ୍ ପରାଇତେ ମେନ କେମେରାର ଫୋକସ୍ ମଡ଼ିଯ ନା ଯାଏ ଅଧିକ ସମ୍ଭାବ ପାଇୟା ଥିଲେ, ମ୍ଲାଇଡେର ହାତର ଖୁଲିଯା ଦିଲେ, ଏବଂ ତାହାର ଉପର କାଚ କାହିଁ ଚାପା ଦିଲ୍ଲେ କେମେରାର ସମ୍ମୁଦ୍ରେ ଆସିଯା ଏକମ୍‌ପୋଜାର ଦିଲେ ।



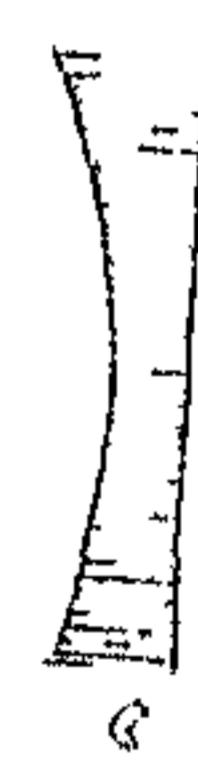
ପିଲା କୁଣ୍ଡଳ ନାମରେ
କାହାର କାହାର



କାହାର କାହାର



କାହାର
କାହାର



କାହାର କାହାର ନାମରେ ।

କାହାର

କାହାର

ଓকাদশ ভাস্তোয়।

পূর্ব অধ্যায়ে আমরা বলিয়াছি যে, লেন্সের ছিজ যত বড় রাখিয়া ছবি উঠান হইবে, একগু-
পোজাৰ ততই কম আবশ্যক হইবে লেন্সের ছিজ যতই ছোট কৱিয়া ফটো উঠান হইবে,
একস্থোজাৰ ততই অধিক আবশ্যক। যে লেন্সের ছিজ বড় রাখিয়া ফটোগ্রাফ পৰিষ্কাৰ হয়, তেই
লেন্সই ভাল, আৰ যাহাৰ ছিজ বিশেষ ক্ষেত্ৰে কমাইয়া না দিলে ফোকস পৰিষ্কাৰ হয় ন, সেই লেন্স
নিকৃষ্ট বলিয়া জানিবে

এই লেন্স নামা প্রকাৰ আছে কোন জাতীয় লেন্স কি প্রকাৰ হৈত, সেই সকল কথা
সবিস্তাৰে এই অধ্যায়ে বলিব এই লেন্স অধ্যায় উন্নম ক্ষেত্ৰে বুৰিতে পাৱিলে, শিক্ষার্থী ফটো
সম্বৰ্ধী অনেক কথা বুৰিতে পাৱিবেন 'আমৰ' এই বিষয়টী সমস্ত ও সুখবেঁধ্য কৰিয়ে
লিখিলাম।

শৰ্চ্ছ বন্ধুৰ মধ্য দিয়া আলোকেৰ বক্রগতি।

কোনও সমচ্ছবত্ত, যেমন, কাচ, জল, বায়ু ইত্যাদিৰ ভিত্তিব দিয়া আলোকেৰ গতি ঈষৎ বক্র
হইয়া থাকে। [২০শ চিত্রে দেখ] একটী কাচেৰ পাত্ৰে অল রাখিয়া, সেই অলেৰ মধ্যে একটী নাচ
দণ্ডাধিমে, কাচ দণ্ডেৰ যে অংশ টুকু অলেৰ মধ্যে ডুবিয়া থাকে, তাহা বক্র দেখায় শিক্ষার্থী
কোনও একটী জলেৰ পাত্ৰমধ্যে ঐ প্রকাৰ একটী দণ্ড রাখিলেই এ কথ বুৰিবেন।

(২১শ চিত্রে দেখ) পক একটী জ্যোতিৰেখা কোনও শৰ্চ্ছ পদাৰ্থে পড়িধাৰে ঈ জ্যোতিৰেখ
সকল পথে গেলে এ বিন্দুৰ নিকট থাকিব। থ বিন্দুৰ নিকট যদি কেহ চক্ষু দিয়া দেখে,
ত'হ' হইতে, গ্রি দ্রে'তি কেখ' দেখিতে "হইবে ন", ত'হ'ই ক'ব' এই যে, উহা 'গ' ও 'ঁ' গুৰু ন
হইয়া, ঐ জ্যোতি নেব এ বিন্দুৰ নিকট আসিয়াছে, এবং ক বিন্দুৰ নিকট হইতে দোঁৰে, দোঁ
দেখা যায় শৰ্চ্ছ বন্ধু মাঝেবই এই একট সাধাৰণ ঘণ্ট

জল সমচ্ছবত্ত, একাৰণ জলেৰ মধ্যে সৱল রেখা বক্র দেখায়। বায়ু সমচ্ছবত্ত, একাৰণ
বায়ুৰ মধ্যদিয়া তাৰোকেৰ গতি ঈষৎ বক্র হইয়া থায়। বাতিকালে আকাশ মণ্ডলে যে কোন
মক্ষিণ ও গ্রহাদি মৃষ্ট হয়, সেই সকল গ্রহ মক্ষিণিও এই কারণে একটু ভিজ থানে দেখা যায়।
জ্যোতিয শাঙ্গে আলোকেৰ এই বক্র গতিৰ নাম "বিফুক্সন" দেখিয়া হইয়াছে

কাচ, স্ফটিক, ইৰকাদি মণি, এবং তৈজাদিয়া মধ্যদিয়া আলোক গেলেও কালোনে ঈ
প্রকাৰ "বিফুক্সন" হয় গেৱ সকল কাচনিৰ্মিত, অজল এই লেন্স মধ্যেও গ্রি ক'ব'ৰ
"বিফুক্সন" হইয়া থাকে আলোকেৰ গতি ইচ্ছামত পৰিবৰ্তন কৰিবাৰ জন্মাই নানাৰিধ
ক্ষেত্ৰে আয়োজন হয়।

আলোকের গতির পরিবর্তন করিবার জন্য সাধারণতঃ হই প্রকার কাচ ও স্ফুর্ত হয়। চশমা সকলেই দেখিয়াছেন কাচ কাটিয়া এই চশমার লেন্স প্রস্তুত হয় বাড়ের কাচ ও সকলে দেখিয়াছেন কাচ ত্রিকোণাকারে কাটিলে, ঐ প্রকার প্রিস্ম (Prism) ইব

২২ চিত্রে প্রিস্ম এবং ২৩ চিত্রে লেন্স দেখান হইয়াছে। ফটোগ্রাফীর কার্যে এই লেন্স জাতীয় যন্ত্রেরই অধিক অয়োজন হয় কোন কোনও বিশেষ কার্যে এই প্রিস্ম জাতীয় যন্ত্রের আবশ্যিক হয়।

একখনও সমান কাচ হইতে ছয় প্রকার লেন্স হইতে পাবে ২৪ চিত্র দ্বাৰা ঐ ছয় প্রকার ৩টিৰ বুৰান হইয়াছে। জ্বোতিৰিজ্ঞানবিদ পণ্ডিতেবা ঐ ছয় প্রকার লেন্সেৰ যে নাম দিয়াছেন, তাহাও শিক্ষা কৰা আবশ্যিক, এজন্য নিয়ে তাহা প্রদত্ত হইল

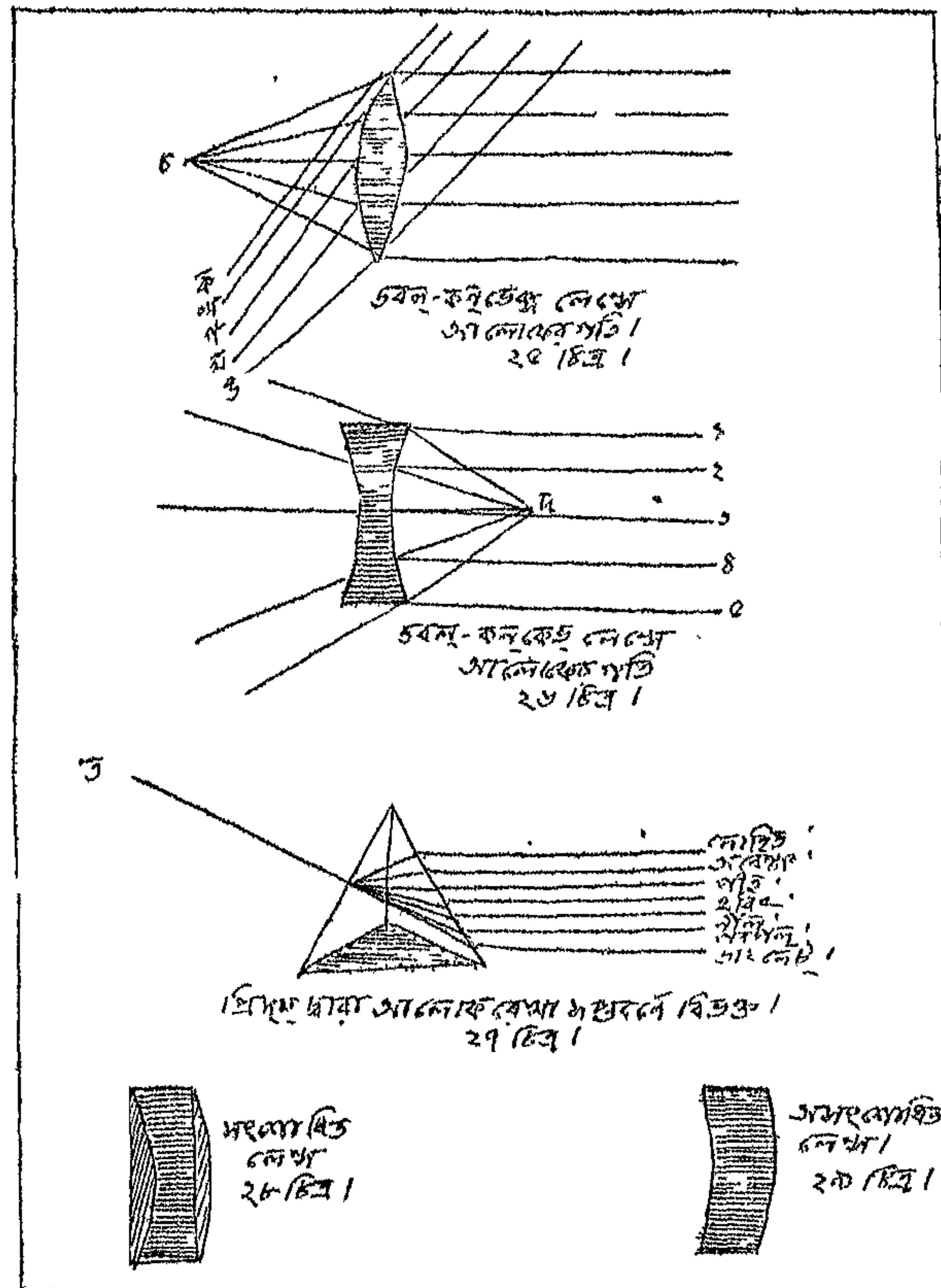
(২৪ চিত্র দেখ) ১ নম্বৰ লেন্সেৰ নাম “ডব্লু-কন্ভেক্স” (Double Convex) ২ নম্বৰ লেন্সেৰ নাম “প্লানো কনভেক্স” (Plano Convex) ৩ নম্বৰ লেন্সেৰ নাম “বনকেভে কনভেক্স” (Concavo Convex) ৪ নম্বৰ লেন্সেৰ নাম “ডব্লু-কনকেভ” (Double Concave) ৫ নম্বৰ লেন্সেৰ নাম “প্লানো-কনকেভ” (Plano Concave) ৬ নম্বৰ লেন্সেৰ নাম “মিনিস্কস” (Meniscus)

কেহ কেহ বলিতে পারেন, ঐ সবল দুৱহ ল্যাটিন ভাষায় নাম শুলি নাহইয়া, বাঙালী ভাষায় ঐ নাম শুলি দেওয়া হয় নাই কেন? ইহার উত্তরে আমাদেৰ ব্যক্তিব্য এই যে, ঐ সকল নাম গ্যালিলিও নামক বৈজ্ঞানিক পথমে ব্যবহাৰ কৰিয়াছিলেন। দুৰবীক্ষণ যন্ত্ৰ তঁহা কঢ়িক আবিষ্কৃত হয়, এবং তিনিই পথমে “চল পৃথিৰ স্থিব ভাতি” অৰ্থাৎ পৃথিবী সূর্যোৰ চতুর্দিকে প্রমে কৰিতেছে এই বৰ্থা জগত্কে বুৰাইয়াছিলেন গেই মহানুভব গ্যালিলিও ঐ ছয় জাতীয় লেন্স প্রস্তুত কৰিয়, ল্যাটিন ভাষায় উহাব নাম কৰণ কৰিয়াছিলেন তঁহাৰ প্রতি সম্মান ধৰণস্থই হউক, অধৰ ইউরোপীয় সকল ভাষায় উহা বোধগম্য হইবে বলিয়াই হউক, ইংৰাজ, ফৰাসী, জাবানী, প্রভৃতি দেশেৰ বৈজ্ঞানিক পণ্ডিতগণ ঐ সকল নামেৰ কোনও বিবৰণ কৰেন নাই

আমাদেৰ পক্ষে এখন ঐ নামেৰ পরিবৰ্তন কৰিয়া, যেমন হউক একটা ধাতুগত অৰ্থ ধাৰা বাঙালী নাম সৃষ্টি কৰাৰ আবশ্যিক মনে কৰিনা ফটোগ্রাফী, এই কথাৰ বাঙালী নাম “জ্যোতিশিত্র” হইতে পাবে। ড্রাই-প্লেট, এই কথাৰ অৰ্থ “শুক্র পত্ৰ” হইতে পাবে।

কলিকাতাৰ বাজাৰে যত দোকান আছে, “শুক্র পত্ৰ” বলিয়া চাহিলে, ফটোগ্রাফীৰ উপযুক্ত ড্রাইপ্লেট পাওয় যাইবে, আমৰা ইহা মনে কৰিনা। এই কাৰণেই আমৰা এই পুস্তকে প্ৰথমা-বধিৰ অনেক ইংৰাজী কথা, এবং ইংৰাজী নাম শিক্ষাৰ্থীকে বুৰাইয়া আসিতেছি এন্ডেখন শেই

$\{$
 $\mathcal{R}_{\text{out}}^{(t)}$



ଅନ୍ୟ ଲେଖେବ ଶ୍ରୀ ସକଳ ନାମିଇ ଦେଓଯା ହିଁମ

ଶ୍ରୀ ସକଳ କଥାର ଏକଟୁ ବ୍ୟାଖ୍ୟାତ ତାବଣ୍ଡକ ଆସନ ବଥା ତିଗାଟି

“କନ୍ତ୍ରିଦ୍ଵୟା”

“କନ୍ତ୍ରକେତୁ”

“ମାନୋ”

ସଂଶୋଳା ତାଥାଯ ବୁଝାଇତେ ଗୋଲେ, କନ୍ତ୍ରକେତୁ ଅର୍ଥେ ଗଭୀରତ, କନ୍ତ୍ରିଦ୍ଵୟା ଅର୍ଥେ ଉଚ୍ଚତ, ଏବଂ “ମାନୋ”
ଅର୍ଥେ ସାମ୍ୟ ବୁଝାଯ

୧ ନନ୍ଦର ଲେଖେର ନାମ “ଡବଲ୍‌କନ୍ତ୍ରିଦ୍ଵୟା” ଅର୍ଥାତ୍ ଉହାର ଛୁଇ ଦିକେଇ ଉଚ୍ଚତ ଆଛେ

୨ ନନ୍ଦର ଲେଖେର ନାମ “ମାନୋ-କନ୍ତ୍ରିଦ୍ଵୟା” ଅର୍ଥାତ୍ ଉହାର ଏକଦିକ ଶମାନ, ଏବଂ ଏକଦିକ ଉଚ୍ଚ

୩ ନନ୍ଦର ଲେଖେର ନାମ “କନ୍ତ୍ରକେତୋ କନ୍ତ୍ରିଦ୍ଵୟା” ଅର୍ଥାତ୍ ଉହାବ ଏକଦିକ ଗଭୀର ଏବଂ ଏକଦିନ
ଉଚ୍ଚ

୪ ନନ୍ଦର ଲେଖେର ନାମ “ଡବଲ୍ କନ୍ତ୍ରକେତୁ” ଅର୍ଥାତ୍ ଛୁଇ ପାରେଇ ଗଭୀରତ ଆଛେ ।

୫ ନନ୍ଦର ଗୋପେନ ନାମ “ମାନୋ-କନ୍ତ୍ରକେତୁ” ଅର୍ଥାତ୍ ଏକଦିକ ଶମାନ, ଏବଂ ଦିକେ ଗଭୀରତ ।

୬ ନନ୍ଦର ଗୋପେନ ନାମ “ମିନିମ୍-କେତୁ” । ଏହି ଲେଖେବ ଆକୃତି, ଏବଂ ତ ନନ୍ଦର ୧୦୮୦୧୫-
କନ୍ତ୍ରିଦ୍ଵୟା”-ଜାତୀୟ ଲେଖ ତୁଳନା କରିଲେ ଅନେକଟୀ ମାତୃଭୂତ ଅନ୍ତିମ ହିଁମେ, ତନ୍ତ୍ରର ଗୋପେନ ମାତ୍ର
(ଧାର) ଦ୍ୱାରା, ବୁଝିବାର ପାଇଁ କାହେର ଦାନ ପୁଣ୍ୟ । ଏହି ଜନ୍ୟ ଏହି ଜାତୀୟ ଲେଖକେ ମଧ୍ୟାମ୍ଭିତ୍ତ
ଧଳା ହୁଏ ।

ଶ୍ରୀ ହୃଦୟ ପ୍ରକାଶ ଲେଖ ଥାରା ଆମ୍ବାକେବ ଗତିର କି ପରିବର୍ତ୍ତନ ହୁଏ, ତାହା ଓ ମୁଁ ୧୦୮୦୧୫
ହିଁମେ, ଏହି ମନ୍ଦିର କିମ୍ବା ମୁଁ ବିନାର କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା
ଜାଗ, କୌଣ ବେଳେ ମୁହଁବାନ୍ ତାହା ପୁଣ୍ୟ । ହିଁମେ, ଏବଂ କୌଣ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା
ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀ ନିଜେଇ ତାହା ହିଁମ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

୨୫ ଚିତ୍ରେ “ଡବଲ୍ କନ୍ତ୍ରିଦ୍ଵୟା” ଲେଖମଧ୍ୟେ ଆମୋକେର ଗତି ଦେଖାନ ହିଁମ । ଚିତ୍ରେ ବାମ ଦିକେବ
ଚିତ୍ରିତ ଆମୋକ ଲେଖ ଶ୍ରୀ ଲେଖେବ ଭିନ୍ନ ଭିନ୍ନ ଶାନ୍ତି ପରିବର୍ତ୍ତନ ହିଁମେ, ବିନାର ବିନାର
ପରିବର୍ତ୍ତନ ହିଁମେ ଲେଖେବ ଆମର ପାଇଁ କେମନ ମରଳ ଓ ମମାଞ୍ଚର ହିଁମେ ଯାଏ, ତାହା ଦେଖ ନ ହଇପାଇଁ ।
ଥିବା ଆମୋକ ଶ୍ରୀ ଲେଖେବ ଏକ ପାର୍ଶ୍ଵ ପଢ଼େ, ତାହା ହିଁମେର ଶ୍ରୀ ସକଳ ରେଖା ଲେଖେବ ଅମନ ପାଇଁ
ଥିବା ଯାଏ, କ, ଖ, ଗ, ଘ, ଙ ନାମର ଲେଖା ଦ୍ୱାରା ତାହା ଦେଖାନ ହିଁମେରେ । ଏହି ଚିତ୍ରେ କୌଣ
ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀ ବୁଝିତେ ପାଇବେ ଯେ, ଯେ ସକଳ ଜ୍ୟୋତିରେଧୀ ଲେଖେବ ମଧ୍ୟ ଶାନ୍ତି ଦିଯା ଯାଏ, ତାହାରେ
ଏହି ଅଧିକ ବିବରଣ୍ୟ ହିଁମ ହୁଏ ନା; ଯେ ସକଳ ଜ୍ୟୋତି ରେଖା ଲେଖେବ ଧାରେ ପଢ଼େ, ହେଠାତେ ମନ୍ଦ ଦେଖାଇ

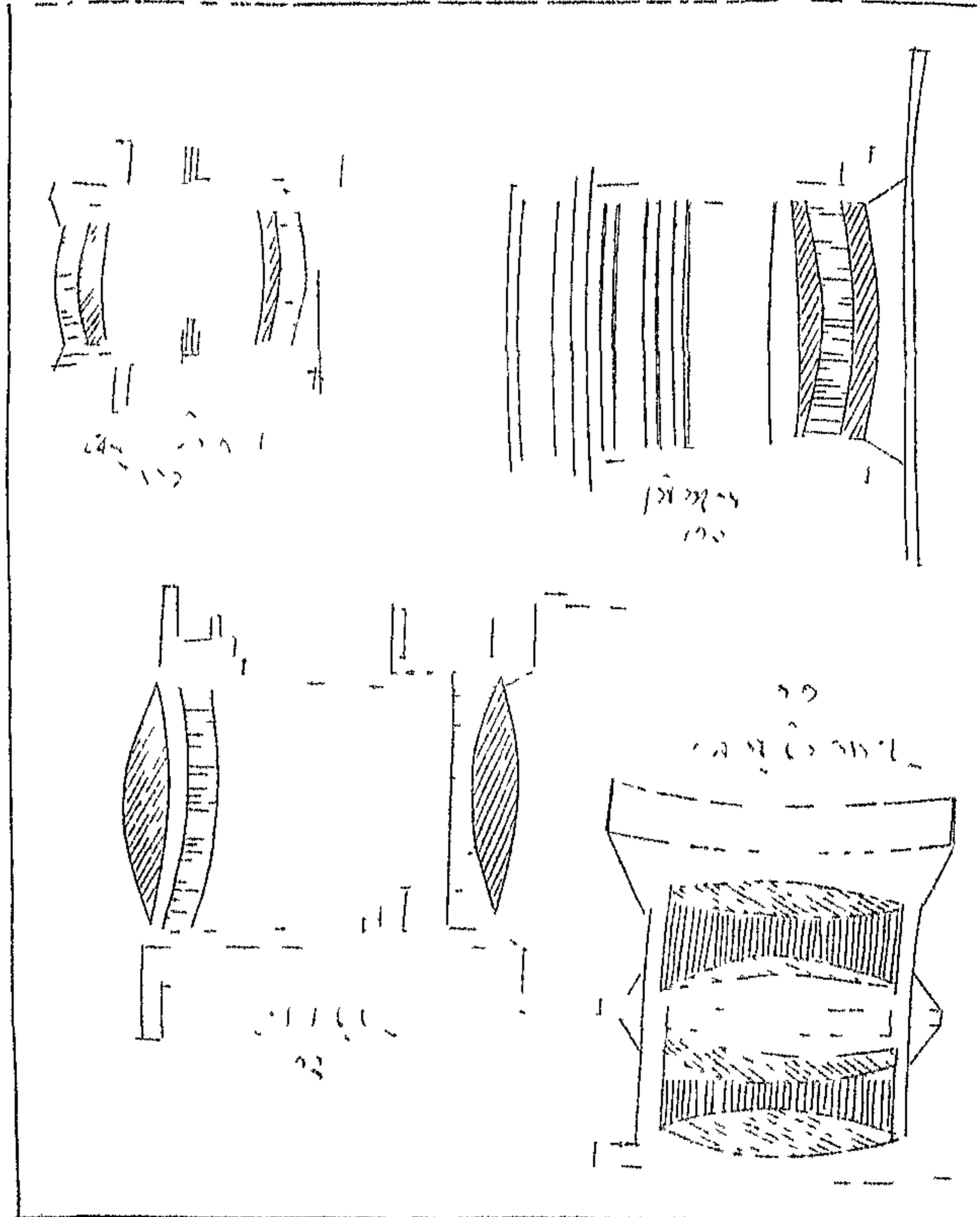
অধিক পরিবর্তিত হইয়া থাকে ফটোগ্রাফীর লেন্সের ছিদ্র ছোট করিয়া দেকিম্ করিতে হয় কেন, সে কথা শিক্ষার্থী এতক্ষণে সম্যক মুখিতে পাবিলেন

এই অন্তর্ভুক্ত ফটোগ্রাফীর লেন্সের গতি ডায়াফ্রাম ব্যবহার করিতে হয় ডায়াফ্রাম দ্বারা লেন্সের ছিদ্র ছোট করিবার তৎপর্য এই যে, লেন্সের মধ্য স্থান দিয়া যে টুকু জ্যোতিঃ প্রবিষ্ট হয় তাহা দ্বারাই ফটো উঠান হইবে

২৬ চিত্রে “ডবল কলেক্ট” জাতীয় লেন্স দ্বারা আলোকের পরিবর্তিত গতি দেখান হইল ১, ২, ৩, ৪, ৫ সংখ্যা দ্বারা আলোকের সরল গতি দেখান হইয়াছে ঐ সকল আলোক বেধা লেন্স মধ্য হইতে পরিবর্তিত গতি প্রাপ্ত হইয়া দ বিন্দুর নিকট একজ হয়; পুনবপি ঐ দ বিন্দু হইতে প্রসারিত হইয়া যে ভাবে লেন্সের অপব দিকে যায়, চিত্র দৃষ্টে শিক্ষার্থী তাহা মুখিবেন এই জাতীয় লেন্সের ও মধ্যস্থলের রেখার বিশেষ পরিবর্তন হয় না এই দুই প্রকার লেন্সে ব ক্রিয়া দেখিয়া শিক্ষার্থী উহাব মিশ্র ক্রিয়াবও অনুভব করিতে পাবিবেন

২৭ চিত্র দ্বারা প্রিসম হইতে আলোকের পরিবর্তন দেখান হইয়াছে প্রিস্ম ত্রিকোণকাব কাচ খঙ্গ উহাব ভিতবে আলোক বেধ প্রবিষ্ট হইলে, আলোকের সম্পূর্ণবর্ণ পৃথক হইয়া পড়ে ত বিন্দু হইতে আলোক বেধ প্রিসমের এক পার্শ্বে পড়িয়, লোহিত, অবেঞ্চ, পীত, হরিত, নীল, পদপ্ল এবং ভায়নেট বর্ণে বিভক্ত হইয়া প্রিস্মের অপব পার্শ্বে দৃষ্ট হয় ছেলেবেলা ঘাড়ের ভাঙ্গ কাচ লইয়া অনেকেই এই প্রকার বর্ণ দেখিয়াছেন, প্রিস্ম দ্বারা আলোকের বর্ণ সকল যেমন ভাবে বিভক্ত হয়, লেন্স দ্বারাও বর্ণ রেখাও সেই প্রকাবে কিঞ্চিৎ বিকৃত হইয়া থাকে

ফটোগ্রাফীর উচ্চ যে সকল লেন্স প্রস্তুত কব হয়, এই বর্ণ বিভাগ মাঝতে ন' হয়, অর্থাৎ স্বাভাবিক চক্রবর্তীরা আগবা যেমন দেখি, লেন্সের মধ্য দিয়াও যাহাতে সেই প্রকায দেখা যায়, লেন্সের প্রতিবিশে এই বর্ণগুলি বিভক্ত না হয়, সে বিয়ে লেন্স নির্মাতাগণ বিশেষ চেষ্টা কবেন জ্বাল, এবং ফ্লিট নামক দুই জাতীয় গ্লাস একজ করিয়া, এই দোয়ের কতকটা পরিহাব করা যায় এই প্রকার সংশোধিত হইলে তে সকলে “এন্যোটিক” (enomatic) নাম দেওয়া হয় কখন তিন ধানা গ্লাস একজ জুড়িয়া এই প্রকাব সংশোধিত লেন্স কবা হয় ২৮ চিত্রে তিনধানা গ্লাস দ্বারা প্রস্তুত একটি সংশোধিত লেন্স (minisous) দেখান হইল ২৯ চিত্রে ঐ প্রকাব মিস্মস লেন্স অসংশোধিত দেখান হইয়াছে যে সকল লেন্স নিতান্ত অল্প মুন্দেব, তাহাতে ঐ প্রকার সংশোধন করা হয় নাই ঐ সকল অসংশোধিত লেন্স দ্বারা ফটো উঠাইলে, ফটোগ্রাফ বেশ স্পষ্ট হয় না তাহার কারণ এই যে, অসংশোধিত লেন্সে আলোক রেখা প্রিসমের মত বিভক্ত হইয়া পড়িবেই একটী রেখাব স্থলে সাতটী বর্ণের ছায়া পড়িবে;



সুতরাং সুস্মা ভাবে ফোকস্ কবিলেও বর্ণের বিষ্টার হেতু ফটোগ্রাফ অস্পষ্ট হইয়া যাইয়ে।

২৮ চিত্রে যে সংশোধিত মিনিস্কস্ জাতীয় লেন্স দেখান হইল, উহাতে তিনখানা পৃথক লেন্স একজ জুড়িয়া দেওয়া হইয়াছে উহাব মধ্য স্থলে একখানা ফ্রিট গ্লাসের মিনিস্কস্ লেন্স, এবং দুই পাশে দুই খানা ক্রাউন গ্লাসের “কনকেভো কনভেক্স” আছে ইহাকে “সিঙ্গল-এক্রোমেটিক” অথবা আবও সংক্ষেপে “সিঙ্গল লেন্স” বলা হয়।

ল্যাঙ্কাস্টার নির্ণিত যে দুই প্রকাব ফটো সেট আঘণা বর্ণনা করিয়াছি, ঐ সকল সেটের সহিত ঐ প্রকাব সিঙ্গল লেন্স দেওয়া থাকে ঐ লেন্স এক্রোমেটিক, একারণ উহার ফোকস্ বেশ পরিষ্কার হয়। কিন্তু ঐ লেন্সের পাশবেধা সকল বক্র হয় বলিয়া, ঐ লেন্সের অনেকটা ডায়াফুর্ম দ্বারা আবৃত কবিধা দেওয়া হয়।

ঐ প্রকাব এক্রোমেটিক সিঙ্গল লেন্স দ্বারা স্বাভাবিক দৃশ্যের ফটোগ্রাফ ভাল হয় উহাব কার্যও বেশ ক্রত হয় কিন্তু উহাদ্বারা অট্টালিকা প্রত্তিব রেখা সকল সমান হয় না। ঐ প্রকাব অট্টালিকা ছবিব মধ্যস্থলে থাকিলে, বেধা সকলের বক্রতা অধিক দৃষ্ট হয় না, কিন্তু পাশে থাকিলে, বেধা সকল অধিকতর বক্র বোধ হয় এই লেন্স অন্তর্ভুক্ত লেন্স অপেক্ষা অল্পমূল্য, একারণ নব্য শিক্ষার্থীব পক্ষে ইহা উপযোগী এক ১০ হইতে এক ১৬ পর্যন্ত এই লেন্সের নামাঙ্ক হয় লেন্সের এই নামাঙ্ক কি, ও তাহার ব্যবহার কি, তাহা পর অধ্যায়ে বর্ণনা করা হইয়াছে ৩০ সংখ্যক চিত্রে ঐ প্রকাব সিঙ্গল লেন্সের গঠন দেখান হইল।

বেক্টিলিনিয়ার লেন্স —৩১ সংখ্যক চিত্রে এই জাতীয় লেন্স দেখান হইয়াছে সিঙ্গল লেন্স হইতে এই জাতীয় লেন্সের ওভেদ এই যে, ইহাতে দুই পাশে দুইধানা এক্রোমেটিক লেন্স থাকে সেই অন্ত এই লেন্সকে “ডব্লু” অথবা “ডব্লিউট” নামও দেওয়া হয়।

ইহাব দুই পাশে দুই খানা লেন্স থাকায় ইহা দ্বারা ফটোগ্রাফ উঠাইলে, ফটোমধ্যস্থিত ক্ষেত্র বেধা বক্র দেখায় না। অট্টালিকা প্রত্তিব ফটো গইতে হইলে, এই বেক্টিলিনিয়ার লেন্স দ্বাবা উঠাইলে ভাল হয় এই লেন্সের আরও বিশেষ শুণ এই যে, ইহার পাশ পর্যন্ত ও ফোকস্ অবিষ্কার হইয়া থাকে সুতরাং ইহাতে অধিক ছোট ছুপ ব্যবহাব কবিধা আবঙ্গক হয় না। এই লেন্স সিঙ্গল লেন্স অপেক্ষা প্রায় চতুর্শৰ্থ ক্রত

এই লেন্স দ্বারা সকল প্রকাব কার্য হইতে পাবে জগের তবজ, গোক সমারোহ, গতিশীল শকটাদি, উড়ৌয়মান পক্ষী, ঘোড় দোড়, গতিশীল রেল গাড়ী এমন কি বিহ্বাং প্রত্তিব ফটোও এই লেন্স দ্বাবা করিতে পাবা যায় যে সময়ে শিক্ষার্থী সিঙ্গল লেন্স ব্যবহাব কবিয়া ভাল নেগেটিভ করিতে সমর্থ হইবেন, সেই সময়ে যদি এই প্রকাব একটি বেক্টিলিনিয়ার

লেন্স দ্বায় করেন, তাহা হইলে টাঁছীর কেমেরাতে ইস্থাগত উভয় লেন্সই ধ্যামহার করিতে পারিবেন এবং ৮ ইইতে এফ. ৬ মাঝাঙ্ক অঙ্গুসারে এই চেম্ব প্রস্তুত করা যায়।

এই জাতীয় লেন্স নানা অকাব নামে বিক্রয় হয় যেখন পুরাণ জ্বরের ওধধে কুইনাইন, আষবণ ইত্যাদি ঔষধ থাকে, একথা অনেকেই জাত আছেন, কিন্তু ব্যবসায়ী চিকিৎসক ও ঔষধ বিক্রেতাগণ আপনাপন ব্যবসায়ের জন্য “অমৃত সিঙ্গু” “মল্লিকুন্ধা” “ম্যালেবিথা কুঠার” অথবা আরও কিছুতে কিমাকার নাম দিয়া পেটেন্ট ঔষধ বিক্রি করিয়া থাকেন, সেই অকাব এই এক বেকটিলিনিয়ার নামক লেন্সকে কোন নির্ণাত। “বেকটিওফ্” কেহ “সিমেট্ ক্যাল” কেহ “ডব্লেট” কেহ ‘ইউবিস্কোপ্’ কেহবা ইহাকে ‘ইউনিভাসেল’ লেন্স বলিয়া বিক্রয় করেন।

ইংলণ্ডের “রস্লিমিটেড,” “ডালমায়ার্,” সুইজারলণ্ড দেশের ‘ভইগটাওলাৰ,’ এবং জার্মান দেশের “জিস্” নামক লেন্স নিম্নীতাগণ বর্তমান কালে সর্বাপেক্ষা শ্রেষ্ঠ

রস্লিমিটেড কুন্ত “হমোসেন্ট্ কু” লেন্স

[৩৪ চিত্র দেখ]

ইতিপূর্বে যে বেকটিলিনিয়ার লেন্সের কথা বলা হইল, এ অবাব লেন্স একেন্দ্রে সমধিক উন্নত করিয়া ‘হমোসেন্ট্ কু’ নামক লেন্স প্রস্তুত হইয়াছে।

বেকটিলিনিয়ার লেন্সের হুইদিকে হুইখানি যুক্ত লেন্স [এক্রোমেটিক] আছে যুক্ত লেন্স একথামি খিনিমকস্ এবং একথামি কনকেতে-কনকেতে আছে তাহা হইলে বেকটিলিনিয়ার প্রস্তুত করিতে হুইখানি খিনিমকস্, এবং হুইখানি কনকেতে কনকেতে লেন্স আবশ্যক।

শিক্ষার্থী চিত্র দৃষ্টে ব্যবিধি পারিবেন যে, হমোসেন্ট্ কু লেন্স বিভিন্ন আকারের চারিখানি খিনিমকস্ লেন্স পৃথক ভাবে বসান হইয়াছে। ইহাকে উচ্চদ্রেব বেকটিলিনিয়ার বগা যাইতে পাবে এফ. ৫ ইহার নামক সাধাৰণ বেকটিলিনিয়ার অপেক্ষা ইহা প্রায় দ্বিগুণ প্রস্তুত।

রস্লিমিটেড নামক লেন্স নিম্নীতাগণ আরও এক অকাব উৎকৃষ্ট সিমেট্ ক্যাল [বেকটিলিনিয়ার] প্রস্তুত করিয়াছেন। এই লেন্সের আবিষ্কৰ্তা জেনা মগরবাসী জ্যোতির্বিদ মহানুভব জিস্। রস্ল নামক ব্যবসায়ী এই লেন্স প্রস্তুত করিবার জন্য জিসের নিকট অঙ্গুমতি প্রাপ্ত হইয়াছেন।

ত্রিটি সামুজের্জ রস্লিমিটেড, ত্রিটি এই লেন্স আৰ কেহ প্রস্তুত করিতে পারিবেন না।
ঐ লেন্সের নাম—

“জিসের এমাস্টিগী ম্যাট্” (৩৩ চিত্র)

(୩୩ ଟିକ୍)

বলাধারণ্য, ইহাও বেকটিলিনিয়ার অতীয় লেন্স কিন্তু ইহাতে চারিখানিং পরিষৎে
চাষ খানি লেন্স সন্মিলিত হইয়াছে। একখানি মিনিস্কস্ এবং এক খানি যুক্ত-মিনিস্কস্,
(ডবল কল্ডেন্ড, ও ডবল কলকেন্ড, যুক্ত) এই তিম খানি লেন্স এক দিকে; অপর দিকেও এই
প্রকার আৱ তিন খানি আছে। এই লেন্সেৱ ঘত দ্রুত লেন্স বোধ কৰি আৰ হয় নাছি।

এই লেন্স দ্বারা সকল প্রকার গতিবিশিষ্ট বস্তুর ফটোগ্রাফ উঠাইতে পারা যায়। সিনিমেটে-
গ্রাফ, বায়স্কোপ, প্রভৃতি যন্ত্রে যে সকল চিত্র দেখান হইয়া থাকে, তাহা এই প্রকার তৈসেই
উঠান হয়। এই লেন্স এতই চমৎকার হইয়াছে যে, ইহাতে ডায়াফ্রাম বা ষ্ট্রিপ ব্যবহার করিবা
আবশ্যিক হয় না। এফ ৩ নামাকানুসারে ইহা অঙ্গত করা যাইতে পারে।

ଲେଖ ପ୍ରେସର୍ କ୍ରମେ ଏହିଥିଲେ ଆବତ୍ତ ଏକଟି କଥା ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀଙ୍କେ ବଳା ନିତାନ୍ତ ଆବଶ୍ୟକ ।

আমরা যখন কোনও দৃশ্য দেখি, তখন আমরা স্বতাবে অতি অল্প অংশই দেখিতে পাই উভয় দিক হইতে পূর্বদিক পর্যন্ত অঙ্ক শান্তালুসারে ১০° নববহু ডিগ্রী অথবা অংশ বিশ্বা কথিত হয়। এই প্রকাবে পূর্ব হইতে দক্ষিণ পর্যন্ত ১০° দক্ষিণ হইতে পশ্চিম ১০° এবং পশ্চিম হইতে উত্তর ১০° অংশ চারিদিকে ঘূরিয় দেখিলে, চারিদিকে আমরা ৩৬০° ডিগ্রী দেখিতে পাই অঙ্ক শান্তালুসাবে ব্লতের (trole) পরিমাণ ও ৩৬০° ডিগ্রী। অঙ্গাবেগে এই ৩৬০° ডিগ্রীর মধ্যে একেবাবে আমরা কতটুকু দেখি ?

বিশ্ব নিয়ন্তা আমাদের চঙ্গ যে তাৰে প্ৰস্তুত কৰিয়াছেন, তাহিতে আমৰা এক সময়ে ৬০
অংশৰ অধিক দেখিতে পাইনা। ইহার অধিব দেখিবাৰ পৰিশোক হইলো, আমাদেৱ মুখ
ফিরাইয়া দেখিতে হয়

ଫଟୋଏଫ୍କିର ଗେମଙ୍କଣି କି ଯେବେ ହେବା । ୭୮୩ ଦିଆମାତ୍ରେ ୧୮୪୪ ମତରେ ଏକାଳୀ ଶେର
ପରିମାଣ ୬୦ ଡିଗି ହଜାର ଉଚ୍ଚତ କିମ୍ବା ।

এসবয়ে নানাতরেন নানা গতি কেই কেহ বলেন যে, চক্রবৰ্জ আমন যথম অভাবের
এক ঘটাইশ (৬০°) মাত্র দেখি, ফটোগ্রাফের লেন্স পালা ওপরের উপর আবিষ্ট হইলো, সেই
ফটোগ্রাফ ধার অভাবের বিকৃত ভাব দেখাইবে বিশেষত্ব দূরবিদ্যুৎ বিশালস অভিভূত
এবং প্রধান চিন্কণগতে বড় গতি এই যে, কোণও ১৮০° অংশের অংশ দেখান
উচিত নহে। পূর্ব বণ্টত যে সকল গোল দেখা হইল হে, পোদের পরিম ০.৬ ০.৫ ০.৪ ০.৩
নহে কিন্তু শেষাঞ্চল “এন স্ট্রিম্প” নামক ০.৩ ০.২ ০.১ অভাবের ০.৮ ০.৬ ০.৪ ০.২ ০.১
করা যাইতে পারে।

বিদ্যুল ১মে এই প্রথম সহজেই হইতে পাবেন আমি ৩০ অংশের অধিক মধ্যে
দেখিবেন ন হ'ল, এবং প্রধান চির বগণে ও মত এই খে, ৬০° ডিগ্রীর অধিক কোণও
বেগে ১০০° হয়ে উচিত ন'হ, কৈবল্য আবাব ৬০° ডিগ্রী আপন অধিক বিস্তারের লেন্সে
ক্ষয়েজন কি? এই কথা আমন দৃষ্ট ও দার শক্তার্থীগণকে বুঝাইব।

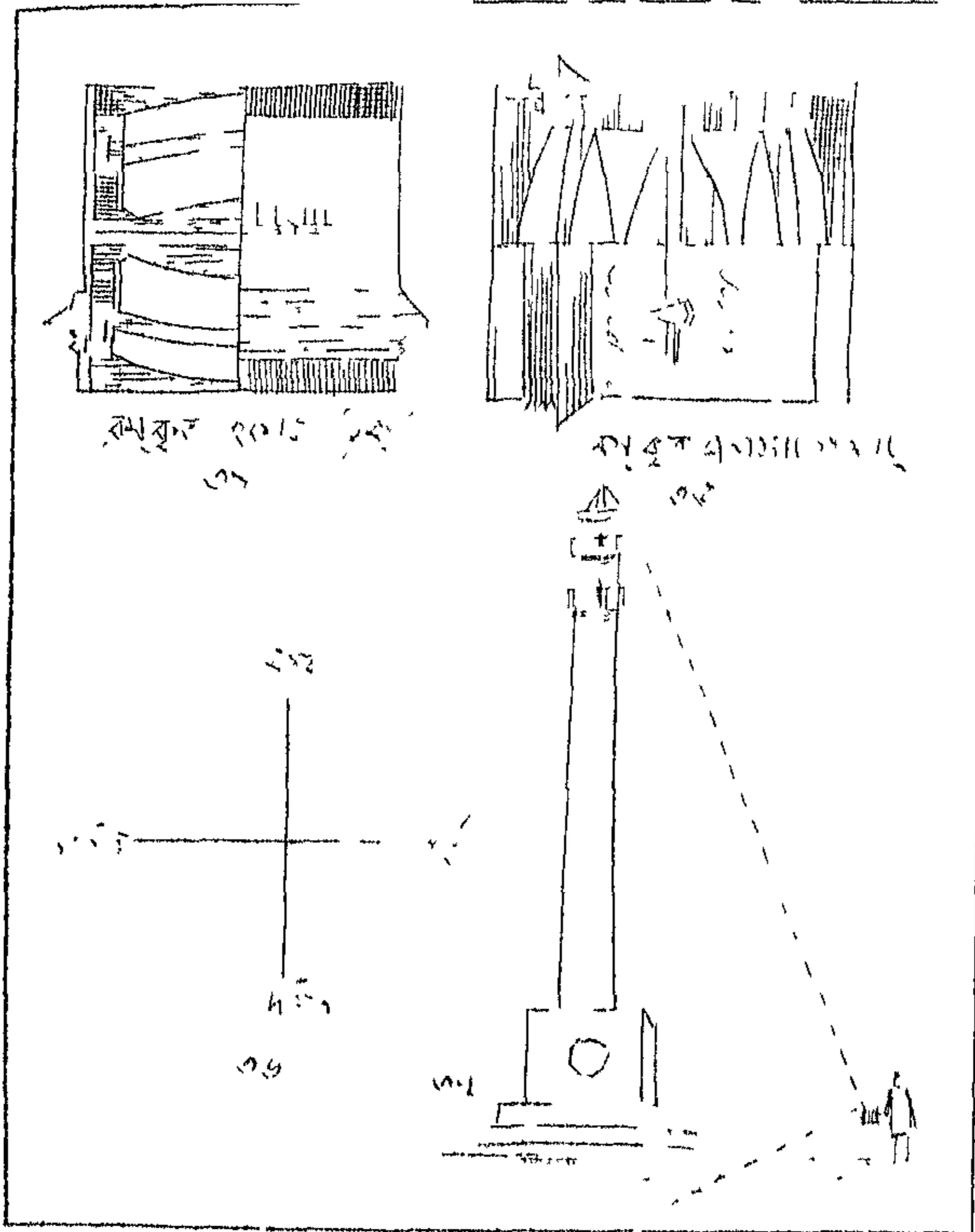
কণিকাতার গড়ের মাঠে যে মন্ত্রমেষ্ট (Ocularency monument) আছে, ঐ মন্ত্রমেষ্টের
নিকট হইতে ঘজন ফটোগ্রাফ তুলিতে হয়, তাহা হইলে শক্তার্থী দেখিবেন যে, সিঙ্গল লেন্স
অথবা বেকটীলিনিয়াব লেন্স দ্বারা ঐ বার্জ অসম্ভব মন্ত্রমেষ্ট হইতে দূরে ১ গেলে, কোনও
মতেই নি সবল লেন্স দ্বারা ঐ মন্ত্রমেষ্টের ফটোগ্রাফ হইবে ন। বহুব হইতে ঐ ফটোগ্রাফ
কৃতিতে, এক প্রকার হইতে পাবে, কিন্তু ঐ ফটোগ্রাফ মন্ত্রমেষ্টের নিকট হইতে তুলিতে পাবিলে,
অপেক্ষাকৃত ভাল হইবে, সন্দেহ নাই।

মন্ত্রমেষ্টের ফটোগ্রাফ দূরে হইতে থাহাহটক এক প্রকার হইতে পাবে, কিন্তু মনে করন,
বালীধাটের কালীমন্দিরের ফটো, যদ্যপি কালীবাড়ীর প্রান্তে হইতে লইবাব তাৰিশ্বৰ হয়, তাহা
হইলে ঐ ছবি সিঙ্গল অথবা বেকটীলিনিয়াব লেন্স দ্বারা কোনও মতেই হইতে পাবে ন। এই
অন্ত আৱাও এক প্রকার লেন্স প্রস্তুত হইয়াছে—তাহার নাম “ওয়াইড-এঙ্গল লেন্স” “ওয়াইড-
এঙ্গল” (Wide angle) অথে বড় কোনু; অর্থাৎ ঐ কোণেৰ বিস্তার ৯০° অংশ অপেক্ষাও বেশী।
ঐ প্রকাব ওয়াইড-এঙ্গল লেন্সদ্বাৰা যে ভাবে মন্ত্রমেষ্টের ফটো হইতে পাবে, তাৰে, ৩১ সংখ্যক চিত্ৰবাব
তাহা দেখান হইয়াছে।

ওয়াইড-এঙ্গল লেন্স গুলি সিঙ্গল এবং ডবল দুই প্রকাৰই আছে সিঙ্গল ওয়াইড-এঙ্গল-
লেন্স গুলিতে বেধা সকল অত্যন্ত বক্র হয় ; বুব ছোট টপ্পন দিলে, তাহাৰ ফটোগ্রাফ অভি কদৰ্য
দেখায় এই কাৰণ ওয়াইড-এঙ্গল লেন্স আবশ্যক হইলে, ওয়াইড-এঙ্গল বেকটীলিনিয়াব, অথবা
ওয়াইড-এঙ্গল সিমেট্ৰি কালী লেন্স ত য বৰ উচিত

দ্বাদশ অধ্যায়।

ফটোগ্রাফ উঠাইতে কত সময় লাগে, তাহা লিখিয়া বুঝান বড় সহজ নহে। অথবে
ডাগারোটাইপ উঠাইতে দুই তিন ঘণ্টাকাল একস্পোজাৰ দেওয়াৰ আবশ্যক হইত কলোডিয়ন



ফটো পদ্ধতিতে এক মিনিট হইতে পাঁচ মিনিট বাল একস্পোজাৰ দিবাৰ আবশ্যক হৈক কিন্তু জেলেটিন ড্রাইপেট হইয়া এক সেকণ্ড অথবা অর্ক সেকণ্ড কাল মধ্যে গ্ৰাঘই ফটো উঠান হয় । এমন কি, এক সেকণ্ডৰ ভজাংশ যান সময়ে ও ফটোগ্ৰাফ উঠান, এখন সহজ কৰা।

কোনু গ্ৰাকাৰ ছবি তুলিতে কত সময় লাগে, তাহা অগ্ৰে হইতে স্থিৰ না কৰিণ, ছবি ভাল হওয়া বড়ই চূঁট হইয়া পড়ে। অতএব, কত সময় একস্পোজাৰ দিতে হইবে, তাহা ছবি তুলিবাৰ পূৰ্বেই স্থিৰ কৰা উচিত।

একস্পোজাৰ যদি ঠিক হয়, তাহা হইলে ডেভেলপ কৰিবাৰ কালো প্ৰেটেৰ উপৰ ডেভেলপাৰ চালিয়া দিবাৰ দশ বারো সেকেণ্ডৰ মধ্যে ছবি বেশ ধীৰে ধীৰে প্ৰকাশ হইতে থাকে, এবং আবশ্যক মত নেগেটিভ ঘন কৰিতে পাৰা যায় ; স্বতন্ত্ৰ “ইন্টেন্সিফিকেশন” আৰ আবশ্যক হৰি।

ডেভেলপাৰ চালিয়া দিবামাত্ৰই যদি সমস্ত প্ৰেট একেবাৰে কালো হইবাৰ উপক্ৰম হয়, তাহা হইলে বুৰুজতে হইবে যে, অধিক সময় একস্পোজাৰ দেওয়া হইয়াছে, এবং প্ৰেটখানি আলোক লাগিয়া নষ্ট হইয়াছে।

অঙ্গ একস্পোজাৰ দেওয়া হইলে, ক্ৰমবিকাশ কালো অনেক বিলম্বে অঞ্চ অঞ্চ ধৰি গ্ৰাকাৰ হইতে থাকে ; সকল অংশ ভালুকপ সৃষ্টিয়া উঠেনা, এবং আবশ্যক যত নেগেটিভ ঘন কৰিতে পাৰা যায় না।

পূৰ্ব অধ্যায়ে আমৱা বলিয়াছি যে, গেনেৰে ছিজ (Aperture) যত বড় হইবে, একস্পোজাৰ ততই অঞ্চ আবশ্যক সিঞ্চন-লেন্স অপেক্ষা নেকটিভনিয়াৰ কেণ প্ৰায় চড়ুকৰণ সূচী, এবং বেকটিভনিয়াৰ অপেক্ষা এনাস্ট্ৰিগ্ৰাম্যাটিক প্ৰায় তো বেশ চড়ুকৰণ সূচী। গেনেৰে মহা দিয়া যতই অধিক আলোক বেমোৰণ মধ্যে পৰিষ্কৃত হইবে, যেন্তো প্ৰায় ৩৩২ × ৭ টিম্বে ৭০ দিয়া যদুপৰি এনাস্ট্ৰিগ্ৰাম্যাটিক প্ৰেনে ১৮৩ হেটি বৰ হয়, তাহা ১৫০০ে ভাবাতেও রূপ উঠাইতে বিলম্ব হইবে।

| | | | |
|-----|-----|-----|-----|
| এস. | এস. | এস. | এস. |
| ১৬, | ৩২, | ৪৫, | ৬৫, |

উপৰোক্ত নামাক অনুসৰণ কৰি হইত ধৰিকাশ শিফ্ল প্ৰেন প্ৰস্তুত হইয় আসে । এ গ্ৰাকাৰ প্ৰেনই হটক, প্ৰথমত ভাবান নামাক অবগত হওয়া উচিত । আজকাল প্ৰায় সপ্তাশ প্ৰেনেৰ উপবিভাগে নামাক ধোৰিত অঞ্চলে লেখা থাবে । কিন্তু মৌনও মৌন লেখা প্ৰাপ্তি • মুক্তি লেখা থাকেনা, ডায়াফ্ৰাম অনুসৰণে কৰ্তৃক একস্পোজাৰ আবশ্যক, ভাবাই ধোৰিত থাকে । শিক্ষাধীন এসব বিষয় তত্ত্বাবলন এবিয়া দেখা উচিত । নামাক প্ৰেনে লেখা থাকুক

অথবা ন থাকুক, $\text{শির্ষ}^{\text{১০}}$ নিজেই লেন্সের নামাঙ্ক অবগত হইবার চেষ্টা করিবেন তেমের
নামাঙ্ক অবগত হইতে পাবলে, একস্পোজার্স স্থিব করিবার পক্ষে বড় সহায়তা করে

বিশেষ স্থানসমূহ তাবে নামাঙ্ক নির্ণয় করিতে হইলে, স্তৰাদিব আবশ্যক হয় আমরা
এই স্থলে যে পদ্ধতি গিখিশামি, সে প্রকাবে নামাঙ্ক নির্ণয় করিলেও ফটোগ্রাফাবের কাবশ্যব
সকল কার্য্যাই চলিতে পাবে সে পদ্ধতি এই —

কেমেনা সজ্জিত করিব এক গ্রেশ অথবা দ্রুই ক্রোশ দূরস্থিত কোমও আটালিকাদিঃ
ফোকস্টিক করিবে নামাঙ্ক অবগত হইবাব অল্প দূরস্থিত বস্তুবই ফোকস্ট কৰা আবশ্যক
এই কার্য্যে বোনও ষষ্ঠ দিয়া লেন্সের ছিদ্র কম করিও ন লেন্সের সর্বাপেক্ষা বড় ছিদ্রই
বাখিবে দূরস্থিত কোমও বস্তুব ফোকস্ট করিয়া কেমেনা করিবে কত বড় করিতে হয়, তাহাব পরিমাণ
এবং লেন্সের ছিদ্রেব পরিমাণ পাইলেই লেন্সের নামাঙ্ক স্থিব কৰা যায় উদাহৰণ স্থলে বলিতে
গেলে, মনেকর, একটি সিঙ্গল তেমের ছিদ্র (আলোক পথ) অর্ক ইঞ্জি তাহাতে কোনও ষষ্ঠ ন
দিয়া, কোনও দূবেব বস্তুব ফোকস্ট কৰাব, লেন্সের কাচ হইতে ৩২ ইঞ্জি দূবে ঘৰা কাঁচ খানিব
উপব ছবি পরিষ্কার হইয়া পড়িল

৩২ কে ২ দিয় ভাগ করিলে ৬৪ অঙ্ক পাওয়া যাব ; এই কাঁচ ঐ সিঙ্গল লেন্সের নামাঙ্ক
এক ৬৪ এই প্রকাৰ বলা হয়

ঐ নিয়ম সর্ব ও কান দেন্তেই ব্যবহাৰ করিতে হইবে উদাহৰণ লেন্সের ছিদ্র ১ ইঞ্জি
ফোকসেব দূব ৪ ইঞ্জি ১ দি হয়, তাহ হইলে তাহাব নামাঙ্ক ঐ ১০০% সুসাবে —

৪ : ১ - ৪ এ০০% নামাঙ্ক

বেক্টিগ্রাফিয়াব, তেন্ত শুলি ঐ নিবমগত দেখিলে দেখ যাৰবে যে, তাহাব \cdot মাফ এফ.৮
গোবচেট অপন ইমোমেম্টিক তেন্তেব নামাঙ্ক ৫০.৪ হইতে এফ.৬, ওব হ৬. এফ.৮
লেড টিলিজিভ লেস এফ. এক ১৬ জ মা \cdot মতে গৰ্তিত যথ

শিমায়ো হইতে অবশ্যই যুবিতে পাবিতেছেন বে, লেন্স ১৫৮০০০ সাবেই নামাঙ্ক ১০০% কৰ
হৰ্যা পাবে এ০৪ নামাঙ্কেব কোম গোৱে ছিদ্র তাৰাকৃতি দাব \cdot মাহিব দিবে, ক র্যাতৰ সেই
লেন্স আব এগ ৪ বহিব না ; লেন্সেৱ ছিদ্র যে ৭ বিমান বগ কা হইবে, নামাঙ্ক ও সেই ৭ বিমান
আধিক সংখ্যাক হইবে

উদাহৰণ স্থলে মনে কৰ যাউক, একটি লেন্সে পৃথক পৃথক দুব থানি ডায়াফ যি আছে
সর্বাপেক্ষ বড় ছিদ্রেব মাপ ১ ইঞ্জি, বিভীষণ ষষ্ঠ পৃথক ইঞ্জি, ২, ৩, ৪, ৫, ৬ ইঞ্জি, চৰুৰ্ব ; ইঞ্জি, পৃথক
৭ ইঞ্জি, এবং সকলেৱ ছেটি ছিদ্রটিৱ পরিমাণ ১২ ইঞ্জি ৭৫% দেখা যাউক, ঐ লেন্সে একে

ଏକେ ଏହି ଥାନି ଡାଯାଫ୍କ୍ ମି ପରାଇଥା, କୋନ ଡାଯାଫ୍କ୍ ମେ କତ ନାମାକ ପାଓଯା ଥାଯ
ପୂର୍ବ କଥିତ ନିଯମାନୁସାରେ ଲେଖେର କୋକାଶେବ ଦୂର୍ବଳ ପାଓଯା ଗେଲ ୧୦ ଇଞ୍ଚି

$$\left. \begin{array}{l} ୧ ଇଞ୍ଚି ଟପ ଦିଲେ ୧୦ \div ୧ = ୧୦ = \frac{\text{ଏକ}}{୧୦} \\ ୨ , " , " , ୧୦ \div \frac{1}{2} = ୨୦ = \frac{\text{ଏକ}}{୨୦} \\ ୩ , " , " , ୧୦ \div \frac{1}{3} = ୩୦ = \frac{\text{ଏକ}}{୩୦} \\ ୪ , " , " , ୧୦ \div \frac{1}{4} = ୪୦ = \frac{\text{ଏକ}}{୪୦} \\ ୫ , " , " , ୧୦ \div \frac{1}{5} = ୫୦ = \frac{\text{ଏକ}}{୫୦} \\ ୬ , " , " , ୧୦ \div \frac{1}{6} = ୬୦ = \frac{\text{ଏକ}}{୬୦} \\ ୭ , " , " , ୧୦ \div \frac{1}{7} = ୭୦ = \frac{\text{ଏକ}}{୭୦} \end{array} \right\}$$

ଇହା ଦେଖିଥା ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀ ଅବଶ୍ୟକ ବୁଝିବେ
ପାରିବେନ ଯେ, ଟପ ଅର୍ଥାରେହ ନାମାକ
ନିର୍ଣ୍ଣୟ ହାଇବେ

ନାମାକ ନିର୍ଣ୍ଣୟ ହାଇଲେ ଏକମୋଡ଼ାବ
ଦିବାର ବୁଝିବା ହୁଏ ; ତାହା ଅନ୍ତର୍ଭିତ
ହାଇତେହେ

^{ଏକ} ୧୬ ନାମାକେବ କୋନାର ଲେଖେ ଏକଟୀ ଫଟୋ ତୁଳିତେ ୪୦ ମେକଣ ଲାଗିଯାଇଛେ ଏହି ଛବି
ଲେଖେ ତୁଳିତେ କତ ସମୟ ଲାଗିବେ ?

ଏହା ପ୍ରକାବ ଅଶ୍ଵେବ ଉତ୍ତବ ଦିଲେ ହାଇଲେ ନିଯମିତି ନିଯମେ ନିର୍ଣ୍ଣୟ କବିତେ ହାଇବେ, ଏବେ
ନାମାକକେ ବିତୌୟ ନାମାକ ଦ୍ୱାରା ଡାଗ କରିଯା ଯାହା ଡାଗଫଳ ପାଇବେ, ମେହି ଡାଗଫଳରେ ଦ୍ୱାରା
ଶୁଣ କରିଯା ଗୋପେବ ଦୃଢ଼କ ପାଓଯା ଥାଇବେ । ଯଥା ୧—୨ = ୨ ; ୨ \times ୨ = ୪ ; ଅଗ୍ରାଂ ପୁଣେ ଏହି
^{ଏକ} ନାମକ ଗୋପ ଅପେକ୍ଷା ^{ଏକ} ନାମକ ଗୋପ ଚତୁର୍ଭାବ ଦୃଢ଼ । ଅର୍ଥମୋଡ଼ ଲେଖେ ଯେ ଛବି ଉଠାଇବେ
୪୦ ମେକଣ ଲାଗିଯାଇଛେ, ଶେଷୋଙ୍କ ଗୋପ ମେହି ଛବି ଉଠାଇବେ ୧୦ ମେକଣ ଯାଏ କାହିଁଗଲେ ।

^{ଏକ} ନାମାକେବ ଗୋପ କୋନାର ତୁଳିତେ ୧୦ ମେକଣ ଲାଗିଯାଇଛେ ; ଏ ଛବି ^{ଦ୍ୱାରା} ନାମାକେବ
ଲେଖେ ତୁଳିତେ କତ ସମୟ ଲାଗିବେ ?

$$8 \div 2 = ୪ ; ୪ \times ୪ = ୧୬ \text{ ଦୃଢ଼ }$$

୧୦ ମେକଣେର ୧୬ ଡାଗେବ ଏକ ଡାଗ ମାତ୍ରେ ଅଗ୍ରାଂ ପୁଣେ ଏହି ଛବି ଦ୍ୱାରା ।
ଏକମୋଡ଼ାବ ହିନ୍ଦି କବା ବିଜୁଇ କରିବାରେ ଉତ୍ସାହ ଅମନ ହାଇବେ । ଆମେହେ, ୧୮୮୧ ର ମାର୍ଚ୍ଚି
ଏକପ ଅକ୍ଷ କମା ଓ ଅମ୍ବଳ ହୈବା ସାଧାରଣତଃ ମତେ ବାହିଲେନ ମେ, ମିଶନ କେବଳ ଏକମୋଡ଼ାବ
ବେକଟିଲିମିଯାବ ଲେନ ଚତୁର୍ଭାବ ଫ୍ରାଙ୍କ, ଏବଂ କୋମୋଡ଼ ଲେନ ଅପେକ୍ଷା ଏନାମୁଦ୍ରିତ ଟିକ୍ କେବଳ ଚତୁର୍ଭାବ ଫ୍ରାଙ୍କ ।

ফটোগ্রাফী শিক্ষা।

আকাশ মণ্ডলে মেঘাদিয় সঞ্চাব বশতঃ, এবং প্রাতঃধ্যাহু সায়াহু কাল ভেদে আলোকের তাবতম্য হইয়া থাকে প্রাতঃকালু অপেক্ষা মধ্যাহু কালে সূর্যের আলোক অধিক হয়, যতই অপবাহু হইতে থাকে, সূর্যের আলোকের প্রথবত কমিয়া যায়, এবং মধ্যাহু কালীন নৌল আকাশের পরিবর্ত্তে সাধারণ কালের পীত, অরেঞ্জ লোহিত বর্ণের প্রকাশ হওয়ায় সূর্যবশির বাসায়নিক শক্তির দাম হইতে থাকে এই সময়ে ফটোগ্রাফ উঠাইলে, একস্পোজার অধিক দেওয়ার প্রয়োজন হয় বর্ধাকালে আকাশ মেঘাছন্ন থাকিলে, অথবা শীতকালে কুয়াসা হইলে, কিছু অধিক সময় একস্পোজার দেওয়া উচিত

কোন বর্ণ ফটোগ্রাফিতে কি প্রকাব কার্য্য করে, তাহা এছলে এলা আবশ্যক ইন্দুরে যে সপ্তবর্ষ * দেখা যায়, তাহার মধ্যে লোহিত, তবেঙ্গ, এবং পীত এই তিনি বর্ণের রাসায়নিক শক্তি অতি সামান্য, আর হরিৎ (সবুজ) নৌল, ভায়লেট, অথবা বেঞ্জিয়া বর্ণের রাসায়নিক শক্তি অধিক।

| লোহিত | অরেঞ্জ | পীত | হরিৎ | নৌল | পুরুপলু | ভায়লেট |
|---------------------|--------|-----|------|-----|---------|----------------------|
| বাসায়নিক শক্তি কম। | | | | | | রাসায়নিক শক্তি অধিক |

উপরে সপ্তবিধ বর্ণযে তাবে সজিত কবিয়া দেওয়া হইল, ঐ প্রকারেই প্রিস্ম দ্বারা আলোক বিভক্ত হইয়া থাকে বিজ্ঞানবিদ্য পত্রিতগণ স্থিব কবিধাচেন যে, সূর্যের আলোক যাহা আমরা দেখি, তাহা ঐ সপ্তবিধ বর্ণের একজ সমাবেশ ঐ সপ্তবিধ বর্ণ একত্র কবিলেই সাদা বর্ণের আলোক উৎপন্ন হয়

সাধাবণ ড্রাইপ্লেটে প্রথগোক্ত তিনবর্ণের আলোক লাগিলে বিশেষ ক্ষতি হয় না, কিন্তু তৎপরতার্তি চাবিবর্ণের কোন প্রকাব আলোক লাগিলেই উহাব পরিবর্তন হয় শিক্ষার্থীর ঐ সপ্তবিধ বর্ণ ভালুক জানা আবশ্যক

জবা ও গোলাপ ফুল উভয়ই লাল বর্ণেব, কিন্তু জবাব বর্ণেব বাসায়নিক শক্তি নাটি বলিলেও চলে; আব গোলাপ ফুলের বর্ণ যদিও লাল বটে, তথাপি উহাতে কিছু পরিমাণ নৌলের আভা আছে বলিয়া উহাব রাসায়নিক শক্তি জবাপেক্ষা অধিক শিক্ষার্থীর আপনা আপনি এ সকল সুবিধা দেখা উচিত

ধ্রু, সময়, এবং আকাশ মণ্ডলে মেঘাদিয় তাবতম্যে কোন সময়ে কোন বর্ণের অধিক

* স্পেকট্ৰোস্কোপ (Spectroscope) নামক যন্ত্ৰেও ঐ প্ৰকাৰ সপ্তবিধ বর্ণ দেখা যায়

ବିକାଶ ହୁଏ, ତାହାର ଗ୍ରାତି ବିଶେଷ ଲକ୍ଷ୍ୟ ରାଖା ଉଚିତ ପ୍ରଥମୋତ୍ତ ତିନ ବର୍ଣ୍ଣର ଆଧିକ୍ୟ ଥାକିବେ, ଏକଟୁ ଅଧିକ ସମୟ ଏକସ୍‌ପ୍ରୋଜାବ ଦେଉଥା ଆବଶ୍ୟକ

ଗୃହମଧ୍ୟ ଅପେକ୍ଷା ବାହିବେର ଆଲୋକ ଅଧିକ, ପରିମାବ ଖୋଲା ଯାଯଗା ଅପେକ୍ଷା ବୃକ୍ଷାଦି ପୂର୍ଣ୍ଣହାନେ ଆଲୋକ କମ

ଏପର୍ଯ୍ୟାନ୍ତ ଆମରା ଏକସ୍‌ପ୍ରୋଜାବ ସମସ୍ତରେ ଯେ କମେକଟି ବିଶେଷ ଉତ୍ସେଧ କବିତାମ, ସେଇ ଏଣି ଆବାର ଏହିଲେ ପୁନରଜ୍ଞେତ୍ବ କରା ଆବଶ୍ୟକ

- (୧) ଲେନ୍ଦେବ ଛିନ୍ଦ ଅନ୍ତ୍ରସାରେ ସମୟେର ତାରତମ୍ୟ ହୁଏ
- (୨) ଶୁର୍ଯ୍ୟେବ ଆଲୋକେର ପରିମାନାନ୍ତ୍ରସାବେ, ଏବଂ ଆକାଶେବ ବର୍ଣ୍ଣାନ୍ତ୍ରସାରେ ସମୟେବ ବିଭିନ୍ନତା ହୁଏ
- (୩) ଗୃହମଧ୍ୟ ଆଲୋକ ଆଲ୍ଲ ବଜିଯା ଅଧିକ ସମୟ ଆବଶ୍ୟକ ହୁଏ, ଏବଂ ଅମାବସ୍ତ୍ର ହାନେ ଆଲୋକରେ ଆଧିକ୍ୟ ବଶତଃ ଅଳ୍ପ ସମୟେ ବାର୍ଯ୍ୟ ହିଁଯା ଥାକେ ।

ଆରା ଏକଟୀ କଥା ଅବଶିଷ୍ଟ ଆଛେ । ସେଇଟି ବୁଝିଲେଇ ଏକସ୍‌ପ୍ରୋଜାବ ସମ୍ବନ୍ଧେ ସକଳ କଥା ହାତେ ପ୍ରାସ ଶେଯ ହିଁବେ ।

ଜେଲୋଟିନ ଡ୍ରାଇଙ୍ଗେଟ ନାନା ପ୍ରାକାବ, ସେ ଶୁଳି ସାଧାରଣତଃ ତିନ ଶ୍ରେଣୀତେ ଗଣ୍ୟ ହିଁଯା ଥାକେ ସାଧାରଣ, ଜ୍ଞାତ, ଏବଂ ଅତିଜ୍ଞାତ* ସକଳ ମେକାରେର ଡ୍ରାଇଙ୍ଗେଟେ ଉତ୍ତ ତିନ ଶ୍ରେଣୀ ଆଛେ

ସାଧାରଣ ଗ୍ରେଟେ ଛବି ଭୁଲିତେ ସମୟ ଅଧିକ ଲାଗେ ପ୍ରଭାବଦୂଶ୍ୟ, ଅଟ୍ରାଲିଫା, ଆକାଶ, ମେଘ, ଅଥବା ସମୁଦ୍ରେବ ଦୂଶ୍ୟ ସକଳ ଏହି ଗ୍ରେଟେ ଉଠାଇବାର ଉପଯୋଗୀ । ଛବିର ଫଟୋଗ୍ରାଫ୍ ଏହି ଗ୍ରେଟେ ଉତ୍ସର୍ଜିତ ହିଁଯା ଥାକେ ଯେ ସକଳ ଫଟୋଗ୍ରାଫ ଭୁଲିତେ ଏକଟୁ ଅଧିକ ସମ୍ବନ୍ଧ ଦିଲେ ହାନି ନାହିଁ, ତାହାରେ ହାତେ ସମ୍ବନ୍ଧ ହେବାର କବିତା ନାହିଁ ।

ଦତ ଗ୍ରେଟେ ଫଟେ ତୁମ୍ଭ ତେ ଆନେକ କମ ମୟ ଲାଗେ ।* ଅତିମୁଣ୍ଡି ଉଠାଇବାର ଅହ ଏହି ହେବାର ବ୍ୟବହାର କରି ଉଚିତ ଯତ ଶେଷ ଚେହାରା ଭୁଲିତେ ପାରିବ ଯାଏ, ଫଟୋଗ୍ରାଫ ତତ୍ତ୍ଵ ପ୍ରାତିବିକ ହିଁବାର ସନ୍ତ୍ରାବନା । ଅଧିକ ସମୟ ଧବିଧା ଏକସ୍‌ପ୍ରୋଜାବ ଦିଲେ, ମୁଖ ନିର୍ଜିଯା ଚେହାର ମାତ୍ର ହିଁବାନ କୁଣ୍ଡ ଥାକେ ବାଲକ ବାଲିଙ୍କାଦେବ ତୋ କଥାଇ ନାହିଁ କେବଳ ଚେହାରା ଉଠାଇବାର ପକ୍ଷେଇ ଏହି ଜ୍ଞାନୀୟ ହେବାର ବ୍ୟବହାର କବିତା, କାର୍ଯ୍ୟ ଭାଲ ହୁଏ

ଗତିଶୀଳ ପଦାର୍ଥେ ଛବି ଅତିକ୍ରମ ଗ୍ରେଟେ ଭୁଲିତେ ହୁଏ ଲୋକ ସମାଜେହ, ହାତୁଗତି ବିଶିଷ୍ଟ ବେଳେତ୍ୟେ ଟ୍ରେନ, ଅବେଳ ତରମ, ଧାନମାନ ଅଶ ଓ ଶକ୍ତାଦି ଅଥବା ନିର୍ମାଣ ହୋଇ ବାଲକ ବାଲିଙ୍କାଦେବ ଛବି, ଲୋକ ସମାଜେହ ବିଶିଷ୍ଟ ରାଜପଥାଦିବ ଫଟୋଗ୍ରାଫ । ଏହି ଜ୍ଞାନୀୟ ଗ୍ରେଟେ ଭୁଲିଯାର ଉପଯୋଗ ।

*Ordinary, Rapid, and Instantaneous.

এই জাতীয় মত প্রের হইসা গতিবিধি পদ্ধতের ছবি তুলিবার বড়ই সুবিধা হইয়াছে এক্ষণে পাঠক আবশ্যই বুঝিতে পারিতেছেন যে, ড্রাইপ্লেটের জাতি অনুসারেও একস্পোজারের তাবতম্য কবিতে হয়।

পূর্বোক্ত সকল কথা বিবেচনা করিয়া একস্পোজার দেওয়া উচিত এবিধয়ে আবশ্যিক ক্ষেত্রে উদাহরণ দিয়া শিক্ষার্থীকে বুকাইব
অথবা উদাহরণ;—

সাধারণ প্লেট,
লেন্স $\frac{\text{এফ}}{16}$,
অন্তর্ভুক্ত স্থান
চেহারা তুলিতে

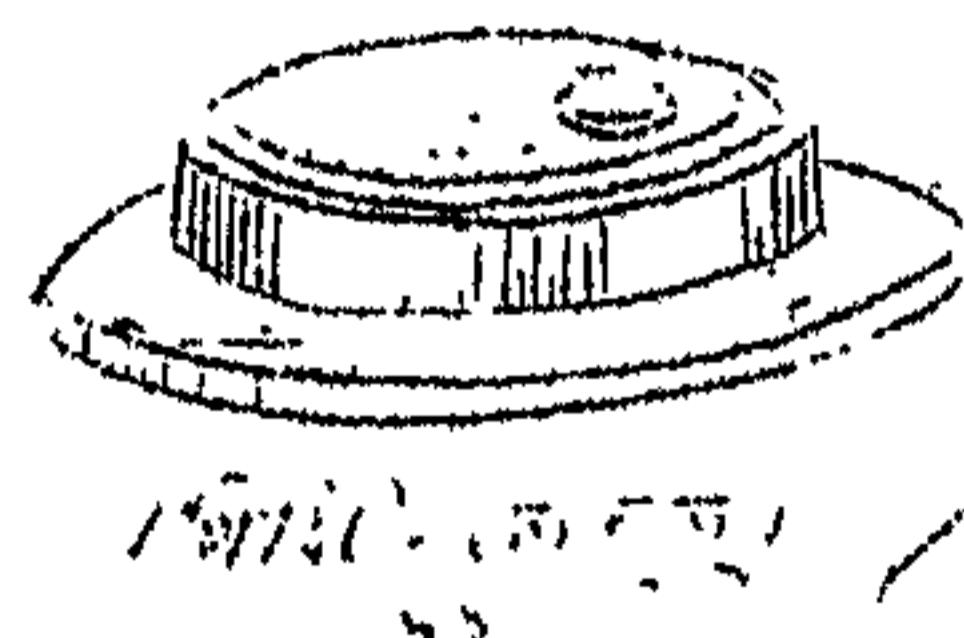
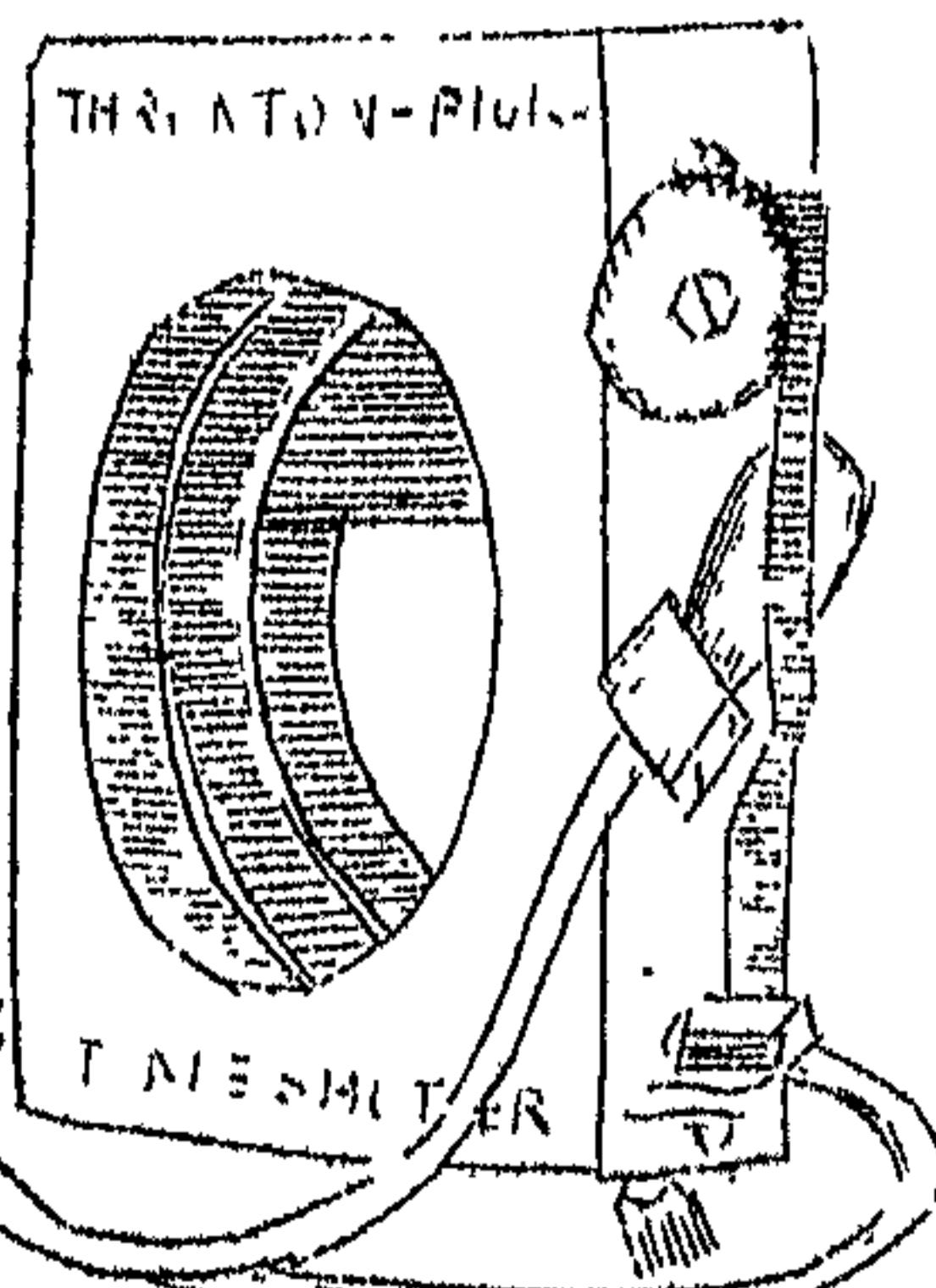
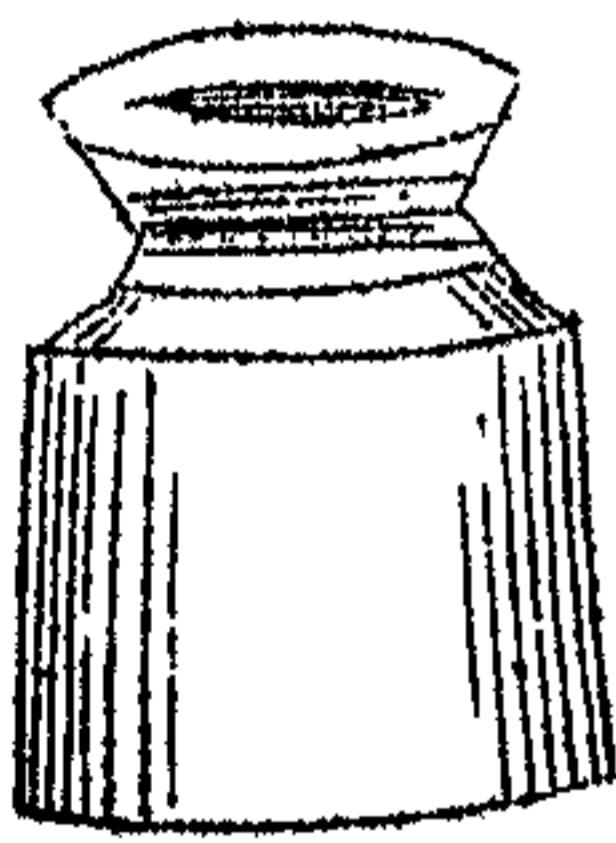
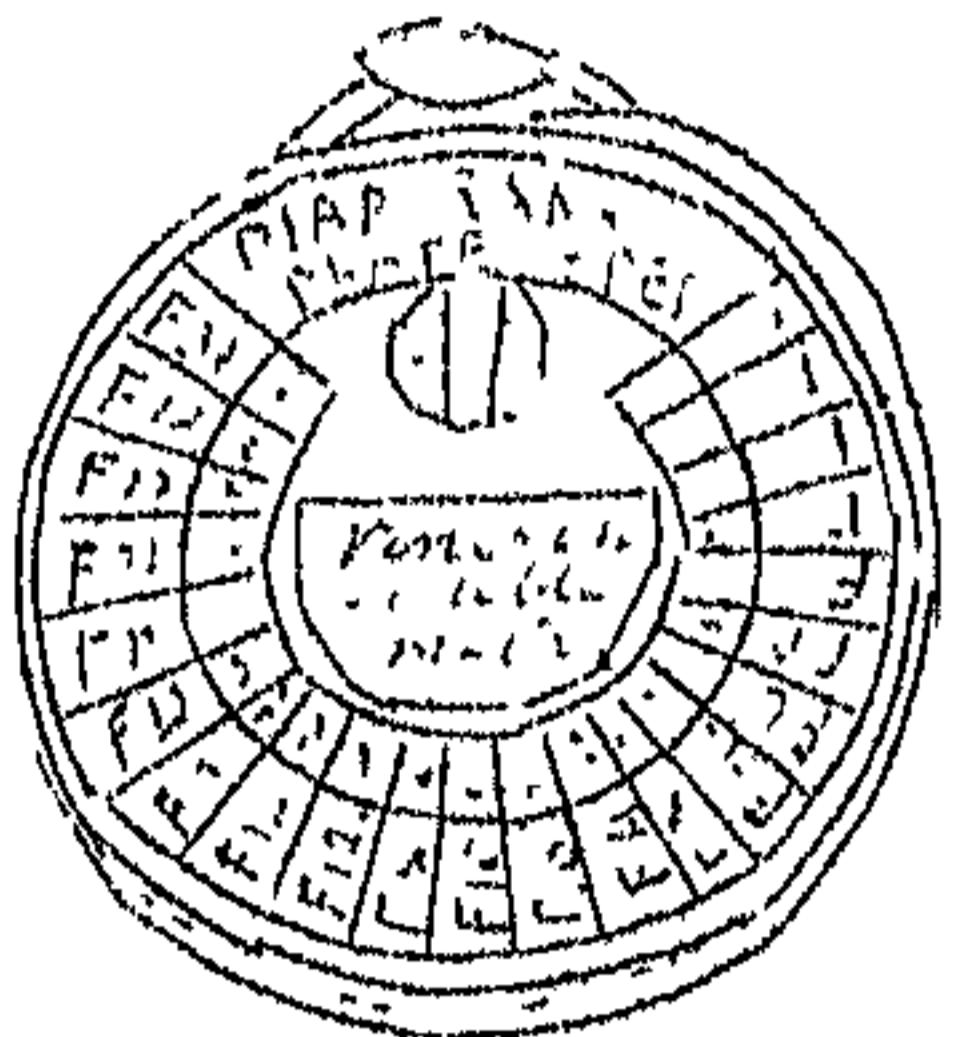
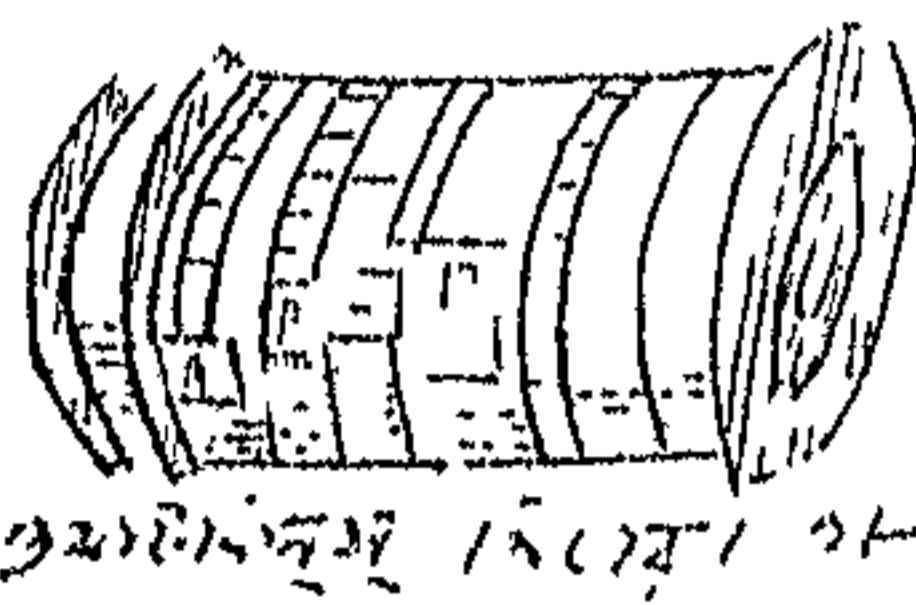
১০ সেকেন্ড সময় লাগে।

ক্রত প্লেট হইলে এই আবস্থায় ১/১০ সেকেন্ড, এবং অতিক্রম প্লেটে ১/১০ সেকেন্ডেও ছবি হইতে পারে। শিক্ষার্থী ইহা স্মরণ রাখিবেন যে, ক্রত প্লেটে ছবি তুলিতে সাধারণ প্লেটের পঞ্চমাংশ মাত্র সময় লাগে, এবং অতিক্রম প্লেটে সাধারণ প্লেটের পঞ্চমাংশ মাত্র সময়ের আবশ্যক হয়।

অতিক্রম প্লেটে ছবি তুলিতে হইলে “সাটার” (Sauter) নামক যন্ত্র ব্যবহার করিতে হয়। ছবি তুলিবার সময় লেন্সের মুখের ক্যাপ খুলিয়া দাইতে হয়, এবং আবশ্যিক মত সময় একস্পোজার দেওয়া হইলে, পুনর্বার লেন্সের মুখ বন্ধ করিতে হয় —যদি ক্রি একস্পোজার অতি অল্প সময় দিতে হয়, —এক সেকেন্ডের শত ভাগের এক ভাগ,—এমত অবস্থায় এই অল্প সময়ের মধ্যে হাতে করিয়া লেন্সের মুখ খুলিয়া আরো বন্ধ করা, বড়ই অসম্ভব হইয়া পড়ে। একারণ ক্রি প্রকার ক্রত একস্পোজার যন্ত্র দ্বারা করিতে হয় ক্রি যন্ত্র খলিকে “সাটার” বলে সাটার নাম। প্রকার হইয়াছে অতি ক্রত প্লেট আয়োজন করিয়া উঠাইতে হয়।

লেন্স বর্ণনাকালে আমরা বলিয়াছি যে, লেন্সের ছিদ্র অনুসারেই উহার কার্য শীঘ্ৰ অথবা বিলম্বে হয়। ফটোগ্রাফ তুলিবার সময় কি প্রকাৰ উপৰ্যুক্ত ব্যবহার কৰা হইয়াছে, এবং ক্রি প্রকাৰ উপৰ্যুক্ত ব্যবহার কৰিয়া কত নামাক হইল, তাহা স্থিৰ কৰা উচিত। লেন্সের নামাক স্থিৰ হইলেই নিম্নলিখিত তালিকা দৃষ্টি একস্পোজার দেওয়া সহজ বোধ হইবে।

সাধারণ প্লেট, লেন্স এফ১৮, সময় পূর্বাঙ্ক ১০টা হইতে অপৰ হুল ৩টা পর্যন্ত।
আকাশ ও সমুদ্র উপ সেকেন্ড।



"3202332-1567251 04 15/82

t'

s
I^y/t

e

y

| | | | | | |
|-------------------------------|-----|-----|-----|-----|-----------|
| ପରିକାର ସ୍ତର ମୁଖ୍ୟ | ... | ... | ... | ... | ୧୫ ସେକ୍ଷୁ |
| ସ୍ଵର୍ଗ ଲତା ପୂର୍ଣ୍ଣ ମୁଖ୍ୟ | ... | ... | ... | ... | ୩ ସେକ୍ଷୁ |
| ଶୁଙ୍କତଳେ ଛାଯାଯୁକ୍ତ ହୃଦୟ | ... | ... | ... | ... | ୧ ମିନିଟ । |
| ଶୁରୁମଧ୍ୟ (ଉତ୍ତମ ଆଲୋକ ଥାକିଲେ) | ... | ... | ... | ... | ୧ „ |
| ଶୁରୁ ମଧ୍ୟ (ଆଜ୍ଞା ଆଲୋକ ଥାକିଲେ) | ... | ... | ... | ... | ୨୦ „ |
| ଅନାହୃତ ହୃଦୟ ଚେହାରା ତୁଳିଲେ | ... | ... | ... | ... | ୨ ସେକ୍ଷୁ |
| ଶୁରୁ ମଧ୍ୟ ଚେହାବା ତୁଳିଲେ | ... | ... | ... | ... | ୨୦ ସେକ୍ଷୁ |

ଏହି ତାଲିକାରୁ ଏକ ସ୍ପେଜାର ଦିଲେ ଆଯ ଭୁଲ ହେବେ ନା । କିନ୍ତୁ ଲେନ୍, ନାମାକ, ଡ୍ରାଇଟ୍,
ଅଥବା ଆଲୋକର ବିଭିନ୍ନତା ଥାକିଲେ । ତଦରୂସାରେ ସମୟର ଓ ବିଭିନ୍ନତ କରିବେ ହେବେ ଆମରା
କରେକଟି ଉଦ୍ଦାହରଣ ଦିଯା ଦେଖାଇଲାମ । ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀ ନିଜେଇ ତ୍ରୀ ଏପ ହିନ୍ଦ କରିଯା ନାହିଁ ।

ପ୍ରଥମ ଉଦ୍ଦାହରଣ ।

ଲେନ୍ ନାମାକ $\frac{\text{ଏକ}}{୧୬}$, ବେଳ ଅପେକ୍ଷା ୫୮୮ ଟୋ, ଅତିକ୍ରମ ପ୍ରେଟ, ଅନାହୃତ ହୃଦୟ ଚେହାରା ତୁଳିଲେ ବେଳ
ସମୟ ଲାଗିବେ ।

ଉପରୋକ୍ତ ତାଲିକାଯ $\frac{\text{ଏକ}}{୮}$ -ଆଛେ, କିନ୍ତୁ ଉପରୁତ୍ତି ଆମାଦେବ ଛବି ତୁଳିଲେ ହେବେ $\frac{\text{ଏକ}}{୧୬}$ ଲେନ୍ ।

ଅର୍ଥମତଃ ଦେଖା ଯାଇକ, $\frac{\text{ଏକ}}{୮}$ ଲେନ୍ ଅପେକ୍ଷା $\frac{\text{ଏକ}}{୧୬}$ ଲେନ୍ କରି ଅଧିକ ସମୟ ଲାଗିବେ ।

$16 \div 8 = 2$; $2 \times 2 = 4$; ଅତରେ $\frac{\text{ଏକ}}{୧୬}$ ଅପେକ୍ଷା $\frac{\text{ଏକ}}{୮}$ ନାମାକ ଯୁକ୍ତ ଲେନ୍ଦେର ଏତେ ଚାନ୍ଦିଗଣ ।

ପ୍ରତିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଏକ ଅଗୋଦ୍ଧା ଚାନ୍ଦିଗଣ ସମୟର ପ୍ରମେଜନ ତାରିଖକଣ୍ଠେ $\frac{\text{ଏକ}}{୮}$ ଲେନ୍ ଅନାହୃତ ହୃଦୟ ଚେହାରା
ତୁଳିଲେ ୨ ସେକ୍ଷୁ ଦେଉଥାରେ ଆଛେ ; ଉତ୍ତମ ଚାନ୍ଦିଗଣ ଅର୍ଥାତ୍ ୮ ମେନ ଓ ହିନ୍ଦ । ଏହିକେ ବେଳ ଅପେକ୍ଷା
ହେଉଥାଯ ଆରା ୨ ସେକ୍ଷୁ, ଏକୁଳେ ୧୦ ସେକ୍ଷୁ । ଏହି ମଧ୍ୟ ସେକ୍ଷୁ ଏକ ସ୍ପେଜାର ମାଧ୍ୟମରେ ୫୮୮୮ ଟୋ
ଉପରୋକ୍ତ କିନ୍ତୁ ଉପରୁତ୍ତି ଉଦ୍ଦାହରଣେ “ଅତିକ୍ରମ ପ୍ରେଟ” ଆଛେ, ଅତରେ ୧୦ ସେବତେର ମଧ୍ୟମାଧ୍ୟ
ଅର୍ଥାତ୍ ୧ ସେକ୍ଷୁ ଲାଗିବେ ।

ସ୍ଥିତିରେ ଉଦ୍ଦାହରଣ ।

ଲେନ୍ ନାମାକ $\frac{\text{ଏକ}}{୪}$, ବେଳ ୨ ଅର୍ଥବର, ଅତିକ୍ରମ ପ୍ରେଟ; ଶୁରୁମଧ୍ୟ ଆଲୋକ ଆଜ୍ଞା; ଚେହାରା ତୁଳିଲେ
କରି ସମୟ ଲାଗିବେ ।

ତାଲିକା ଅନୁସାରେ $\frac{\text{ଏକ}}{୮}$ ଲେନ୍, ମାଧ୍ୟମରେ ୫୮୮୮ ଟୋ ୨୦ ମିନିଟ ବାବେ $\frac{\text{ଏକ}}{୮}$ -ଅପେକ୍ଷା $\frac{\text{ଏକ}}{୪}$ ଲେନ୍
ଚର୍କୁଣ୍ଡର ଜାତ, ପ୍ରତିବାର କେବଳ ଲେନ୍ଦେର ଅନ୍ତରେ ୨୦ ମିନିଟେର ଚର୍କୁଣ୍ଡର ଅର୍ଥାତ୍ ୫ ମିନିଟ; ତାର ଏବଂ

সাধারণ প্লেট অপেক্ষা অতি দ্রুত প্লেট দশগুণ দ্রুত। সুতরাং প্লেটের জন্য ও একস্প্রোজার ৫ মিনিটের দশমাংশ অর্থাৎ $\frac{1}{2}$ অর্ধ মিনিট লাগিবে।

তৃতীয় উদাহরণ।—

লেন্স নামাঙ্ক $\frac{\text{এফ}}{৩২}$; দ্রুত প্লেট, বেলা ১টা; স্বত্ত্বাবদৃশ্য ও সমূজ একজনে তুলিতে কত সময় লাগিবে ?

$32 \div 8 = 4$; $8 \times 4 = 16$ অর্থাৎ $\frac{\text{এফ}}{8}$ অপেক্ষা $\frac{\text{এফ}}{32}$ লেন্সে ১৬ গুণ সময় লাগিবে $\frac{1}{2} \times 16 = 8$ সেকেন্ড ; দ্রুত প্লেট বলিয়া উহার পঞ্চমাংশ $= \frac{1}{5}$ সেকেন্ড। অর্থাৎ এক সেকেন্ডের প্রায় তৃতীয়াংশ।

চতুর্থ উদাহরণ —

লেন্স $\frac{\text{এফ}}{৬৪}$; অতিদ্রুত প্লেট, উভয় আলোক যুক্ত গৃহমধ্যে চেহাবা তুলিতে কত সময় লাগিবে ?

$$\begin{array}{r} 64 \div 8 = 8; \\ \hline \text{এফ } \frac{8}{64} \text{ অপেক্ষা } \frac{\text{এফ}}{64} \text{ লেন্সে } 64 \text{ গুণ সময় লাগিবে } \end{array}$$

তালিকা দৃষ্টে $\frac{\text{এফ}}{8}$ -লেন্সে ২০ সেকেন্ড আছে $20 \times 64 = 1280$ সেকেন্ড ; অতিদ্রুত প্লেট বলিয়া উহার দশমাংশ ১২৮ সেকেন্ড ; অর্থাৎ ২ মিনিট ৮ সেকেন্ড

পঞ্চম উদাহরণ —

পরিকার আলোক পূর্ণ পথ ও লোক সমারোহ ; লেন্স $\frac{\text{এফ}}{৩}$; অতিদ্রুত প্লেট ; বেলা ৪টা ; ফটো তুলিতে কত সময় লাগিবে ?

$$8 \div 3 = ২\frac{২}{৩}; \quad ২\frac{২}{৩} \times ৩ = ৮\frac{২}{৩} = ৭.১$$

অর্থাৎ $\frac{\text{এফ}}{8}$ লেন্স অপেক্ষা $\frac{\text{এফ}}{৩}$ লেন্স ৭ গুণ দ্রুত

তালিকায় আছে “পরিকার স্বত্ত্বাব দৃশ্য” $\frac{১}{১০}$ সেকেন্ড

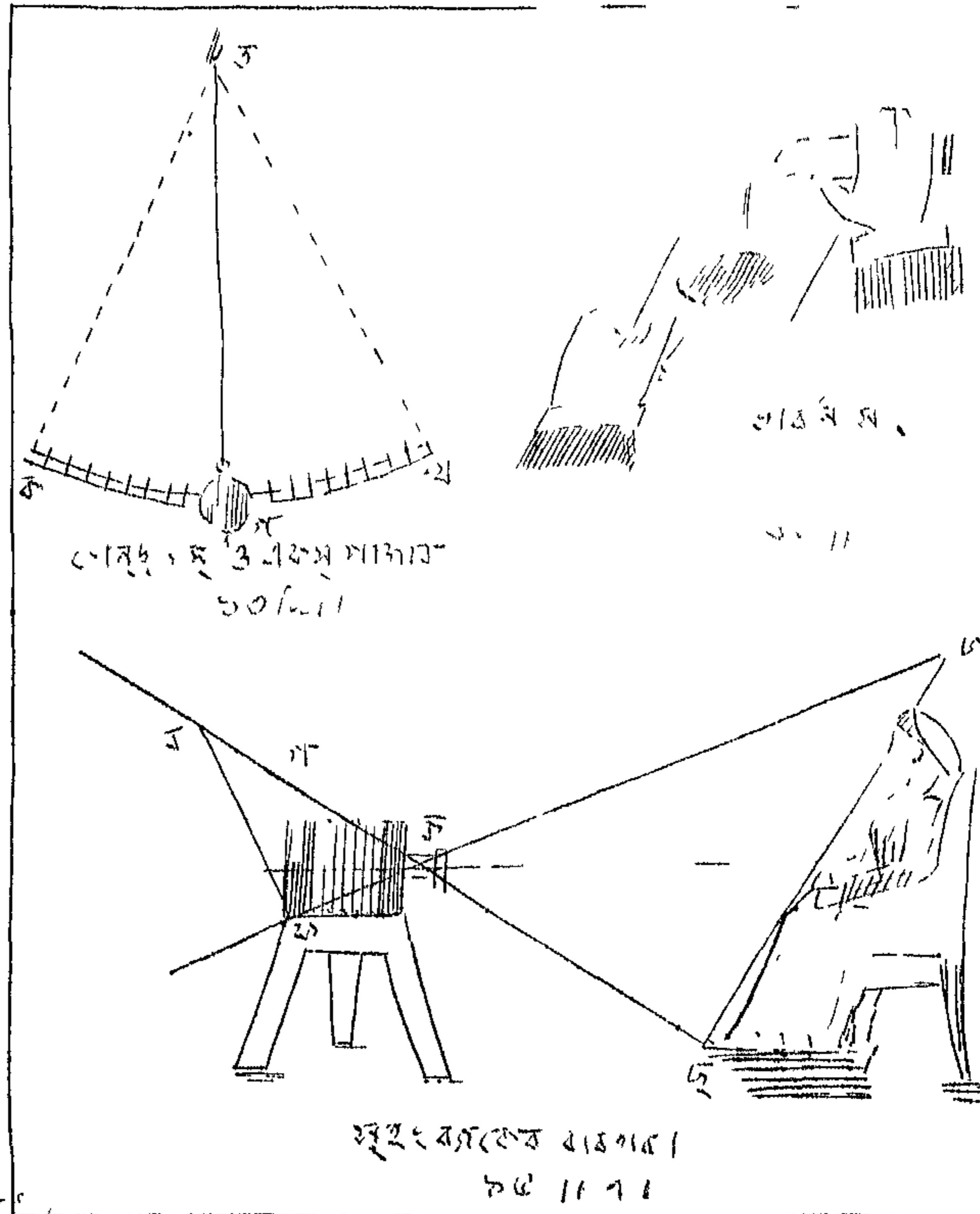
$\frac{১}{১০} \div ১ = ০.১$ সেকেন্ড ; অতিদ্রুত প্লেট বলিয়া উহাকে ও ১০ দ্বারা ভাগ করিতে হইবে,
 $০.১ \div ১০ = ০.০১$ সেকেন্ড।

এক সেকেন্ডের আটশত চালিশ ভাগের এক ভাগ মাত্র

শিক্ষার্থী মনে করিতে পাবেন, গ্রীষ্মকার দ্রুত একস্প্রোজার দেওয়া কি সম্ভব ? গ্রীষ্মকার দ্রুত একস্প্রোজার দিয়াই বা হয় কি ? একসেকেন্ড মধ্যে ৮৪০ ধানা ফটোগ্রাফের একস্প্রোজার !

ধানারা বায়কোপ দেখিয়াছেন, তাহারাই এই বিষয় বুঝিতে পারিবেন কিন্তু ধানারা তাহা দেখিন নাই, তাহাদের পক্ষে এ কথা বুঝিবার কষ্ট হইবে, একারণ আমরা তাহাদিগকে অন্য প্রকারে বুঝাইব

1
2
3



সাধারণ ক্লক ঘড়ীর দোহুল্যমান পেন্ডুলাম অনেকেই দেখিয়াছেন। ঐ অকার পেন্ডুলাম ৩৯ ইঞ্জি লস্বা হইলে, ঠিক এক সেকেন্ডে উহা একবাব ছলিবে এমন কি, ৩৯ ইঞ্জি টষ্ট একটী রজ্জু দ্বারা আবক্ষ কোনও ভাব দোলাইয়া দিলে, তাহা ঠিক একসেকেন্ডে এবংবাব ছলিতে থাকে।

৪৩ সংখ্যক চিত্র দ্বারা এই অকার ৩৯ ইঞ্জি রজ্জুতে আবক্ষ একটী পেন্ডুলাম দেখান হইয়াছে। ক থ নামক বক্র রেখা দ্বয় দ্বারা ঐ পেন্ডুলামের পথ দেখান হইয়াছে ঐ অকার একটী ৩০ ইঞ্জি পেন্ডুলাম প্রস্তুত কবিয়া, উহাব পথটায় এক সহস্র সুস্মৃতি ভাগ করিয়া, পেন্ডুলাম দোলাইয়া দাও, এবং অতিক্রম প্রেট দ্বারা ঐ পেন্ডুলামেব (দোহুল্যমান অবস্থায়) সটাব দ্বাবা একস্পোজার দিয়া একখানা ফটোগ্রাফ লইলে, পেন্ডুলামের ফটোদ্বারা কত সময় একস্পোজাব, তাহা বুঝিতে পারিবে।

এক সেকেন্ডের সহস্র ভাগের যত অংশ একস্পোজার হইবে, পেন্ডুলামের রজ্জু ফটোগ্রাফে ততচূর্ণ কম্পিত দেখা যাইবে নানা অকার সটাব পরীক্ষা করিবাব সময় আমরা ঐ প্রকাৰ পেন্ডুলাম কবিয়া সটাবেব বেগ পরীক্ষা করিতাম ঐ উপায় অতি সুন্দৱ, সহজ এবং নিভুল সটাব ব্যতিৱেকে কেবল হস্তদ্বাৰা একস্পোজাব দিয়া আমরা দেখিয ছি, অৰ্ক সেকেন্ডে একস্পোজাব বেশ সহজেই দিতে পাৰা যায় একটু চেষ্ট কবিলে, সিকি সেকেন্ডে একস্পোজাৰ ও হাতে দেওয়া অসম্ভব নহে কিন্তু তদপেক্ষা স্বত ফটোগ্রাফ তুলিতে হইলে, সটাব নামক ঘন্ষ ব্যবহাৰ কৰিতে হইবে।

ত্ৰয়োদশ অধ্যায়।

পূৰ্ববৰ্ত্তি কয়েক অধ্যায়ে আমৱা যাহা বুঝাইলাম, শিক্ষার্থী ঐ সমস্ত পাঠ বলিতে কৰিতে ফটো মেগেটিভ তুলিতেছেন এবং ঐ সকল নেগেটিভের দোষ গুণ বুবাবেও পাৰিতেছেন, ইহত দ্বাই চাবি থানি বেশ ভাল নেগেটিভ ও প্রস্তুত কৰিয়াছেন, এক্ষণে ঐ সকল নেগেটিভ হইতে কি প্ৰকাৰে পজিটিভ দৃবি কৰায়াইবে, তাহা শিক্ষার্থীৰ জানিবাৰ ইচ্ছা হইতে পাৰে। বিশ আমৱা ইতি পূৰ্বে ডেভেলপ কৰিবাৰ যে পক্ষতি লিখিয়াছি, তাহা মিডিয়ান সংশ্লি পু ; এই অধ্যায়ে মেগেটিভ ডেভেলপ মেন্ট সম্বন্ধে সকল কথা বিশদ ভাবে লিখিব। লেন্স এবং একস্পোজার অধ্যায় হইতি

যে প্রকার বিশদ ভাবে পিধিয়াছি, ডেভেলপ কর্মসূর প্রণালী সেই প্রকার বিশদ ভাবে না গিখিলে, শিক্ষার্থীর সম্যক জ্ঞান হইবে না ; বিশেষতঃ এই ডেভেলপ ক্রিয়ার উপরই ফটোগ্রাফের উৎকর্ষ নির্ভর করে ।

ইতিপূর্বে আমরা যে ডেভেলপাবলাইয়া নেগেটিভ প্রস্তুত করিতে বলিয়াছি, উহাকে “পাইবো এমোনিয়া” ডেভেলপাবল বলা হয় । তাহার কারণ এই যে, পাইবোগ্যালিক এসিড এবং লাইকার এমোনিয়া গ্রি ডেভেলপাবলের প্রধান উপকরণ ।

এক্ষণে নামা প্রকার ডেভেলপাবল আবিষ্কৃত হইয়াছে, তন্মধ্যে কয়েকটি ডেভেলপ “পাইবো এমোনিয়া” অপেক্ষা ও আমরা ভাল বিদেশনা করি পাইবো এমোনিয়া ডেভেলপাবটি উত্তম-ক্লপে অভ্যস্থ হইলে, অন্তাত্ত ডেভেলপ্যামেন্ট পদ্ধতি সহজেই শিক্ষার্থী বুঝিতে পারিবেন বিশেষতঃ নৃতন শিক্ষাব কালো সাত রকম পদ্ধতি লাইয়া গোল না বলিয়, একটা পদ্ধতিই তাঙ্গ করিয়া শিক্ষ করা উচিত । এক একাব ডেভেলপ্যামেন্ট উত্তমক্লপে বুঝিতে পারিলে, অন্তাত্ত উপর সহজেই বুঝিতে পারা যাইবে প্রতিদিন নৃতন নৃতন ডেভেলপ প্যার প্রস্তুত করিতে ব্যব ও অধিক হয় ; সেই অন্তাত্ত আমরা শিক্ষার্থীকে প্রথমতঃ একটা ডেভেলপ্যামেন্ট পদ্ধতি আয়ত্ত করিতে বলিয়াছি “পাইবো-এমোনিয়া” ছাড়া অন্তাত্ত কয়েকটি ডেভেলপ্যামেন্ট পদ্ধতি ও দেওয়া হইল, শিক্ষার্থী ক্রমশঃ সেগুলি ও অভ্যাস করিবেন ।

এক্ষণে কেখানে থাট্টক, কেখেন্তে শাধ্যে ড্রাইপ্রেটের যে একপোজার দেওয়া হয়, তাহাতে ড্রাইপ্রেটের কি পরিবর্তন হয় ?—এই কথা উত্তমক্লপে বুঝিতে পেলে, ড্রাইপ্রেট কোন্ কোন্ জ্বর্য দ্বারা প্রস্তুত হয়, তাহাত প্রথমে জ্ঞান আবশ্যক

ক্লোরিন, ব্রোমিন, এবং আইডিন, এই তিনি প্রকার পদার্থের সহিত রৌপ্য ধাতু মিশ্রিত হইলে, ক্রমান্বয়ে তিনি প্রকাব যৌগিক ধারণ প্রস্তুত হইয়া থাকে

- (১) রৌপ্য এবং ক্লোরিন-সিলভার-ক্লোরাইড,
- (২) রৌপ্য এবং ব্রোমিন-সিলভার ব্রোমাইড,
- (৩) রৌপ্য এবং আইডিন-সিলভার-আইডাইড।

উপরোক্ত তিনটি লক্ষণই আলোকে পরিবর্তনীয় হই জন্ম গ্রি তিনটি জ্বর্যাই ফটোগ্রাফীতে ব্যবহৃত হইয়া থাকে

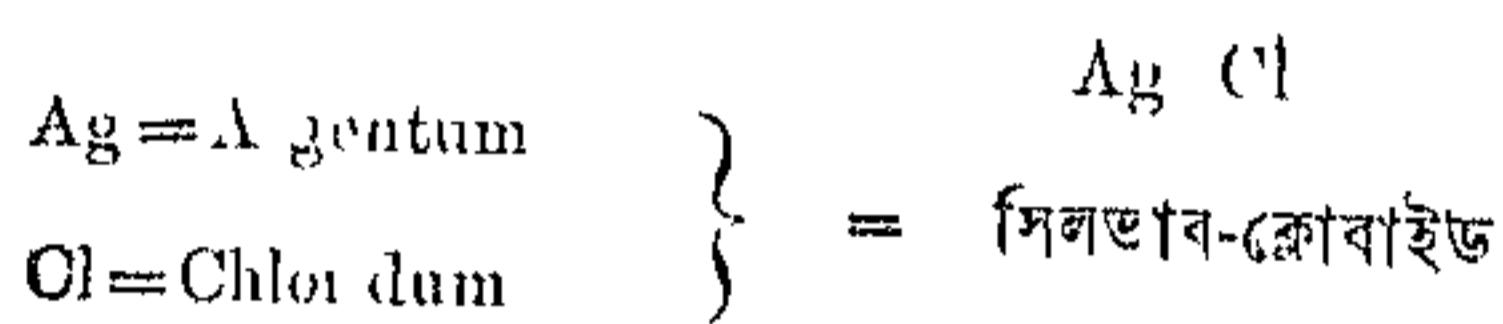
* জেলেটিন ড্রাইপ্রেট সকল সিলভার ব্রোমাইড, এবং সিলভার আইডাইড দ্বারা প্রস্তুত হয়, এজন্য গ্রি মিশ্রণদার্থকে কেহ কেহ “ব্রোমো-আইডাইড-অব-সিলভার” বলেন। জেলেটিন এক প্রকার জান্তব আঠা, কাচের সহিত রৌপ্যের লবণ গুলি লাগাইয়া রাখিতে একটা স্বচ্ছ

ଏହାର ଓରୋଜନ ପୂର୍ବେ ଏହି ଜଣ ଏଲ୍‌ବୁମେନ୍ (ଡିସ୍ଟଗଲା) ଏବଂ କଟୋଡିଯମ ବ୍ୟବହର ହାତରେ
ଜେଲୋଟିନ ଦାରୀ ଆଠା କବିଯା, ତାହାର ସହିତ ଶିଳଭାବ ବ୍ରୋଗାଇଡ୍, ଏବଂ ଆଇଓଡାଇଡ୍, ମିଶ୍ରିତ
କବିଦା ଥେ ଯିଏ ଆଠ ପ୍ରକ୍ରିୟା ହୁଏ, ତାହାକେଇ “ଜେଲୋଟିନ ଇମ୍ବୁମନ” ବଲେ ଉହା କାହିଁ ମାଧ୍ୟାଇୟ
ଶୁଣ ହାତେଇ ଡ୍ରାଇପ୍ଲେଟ ହୁଏ

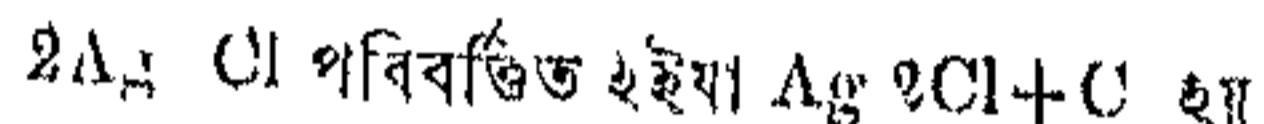
ଆଲୋକ ଲାଗିଲେ, ବୌପ୍ରେସ ଉଚ୍ଚ ତିମ ପ୍ରକାର ଲ୍ୟାଇସ ପରିବର୍ତ୍ତନ ହେଇୟା ଥାକେ ସେଇ
ପରିବର୍ତ୍ତନ କି ପ୍ରକାର ?

ଏହ ପୁଷ୍ଟକେବ ପ୍ରଥମେ ଆମରା ଯେ କାଷ୍ଟକୌବ ଜଳ ମାଧ୍ୟମ ଦ୍ୱାରା କଥା ବଲିଯାଛି, ତାହା ରୌଦ୍ର
ମାଧ୍ୟମେ କ୍ରମଶଃ କାଗେ ବର୍ଣ୍ଣବ ହାତେ ଥାକେ, ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀ ତାହାତ ଦେଖିଯାଛେ ଉହା ଶିଳଭାବ
କ୍ଲୋରାଇଡେର ପରିବର୍ତ୍ତନ

ଏକଭାଗ ବୌପ୍ରେସ ଏବଂ ଏକଭାଗ କ୍ଲୋରିଙ୍ ମିଶିଲେ, ଶିଳଭାବ କ୍ଲୋରାଇଡ୍, ପ୍ରକ୍ରିୟା ହୁଏ
ପଦାର୍ଥେ ରାସାୟନିକ ନାମ



କେହ ବେହ ବଲେନ, ଏହ ପଦାର୍ଥ ଆଲୋକ ଲାଗିଲେ, ଉହାର ଯୌଗିକ କ୍ଲୋରିମ ନାମକ ପଦାର୍ଥ ବିଶ୍ୱାସ
ପ୍ରଥମ ହୁଏ ; ଅର୍ଥାତ୍ ଶିଳଭାବ-କ୍ଲୋରାଇଡେ ଯତଇ ଆଲୋକ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବେ ଥାକେ, ଉହାର
ଯୌଗିକ କ୍ଲୋରିମ ଟୁକୁର ଧିତୁ ପଦାର୍ଥ ତତହି ବିଯୁକ୍ତ ହାତେ ଥାକେ । ଶିଳଭାବ-କ୍ଲୋରାଇଡେ ଆବୋଦ
ଲାଗିଲେ, କୋଣିମ ନାମକ ପଦାର୍ଥ ର ଗଞ୍ଜ ନିର୍ଣ୍ଣତ ହାତେ ଥାକେ, ଇହାଇ ଏହ ପରିବର୍ତ୍ତନେବ ପଦାର୍ଥ ଅନୁପ
ଗଣ୍ୟ କରା ହୁଏ



ଏହ ପରିବର୍ତ୍ତନ ପଦାର୍ଥ ର ମାତ୍ର “ଶିଳଭାବ-ମ୍ବୁ-କ୍ଲୋରାଇଡ୍” ଅର୍ଥାତ୍ ଉହାତେ କିନ୍ତୁ ପରିମାଣ
କ୍ଲୋରି ବିଯୁକ୍ତ ହାତେ କଟକଟ ଧାତଯ ରୌପ୍ୟ ପରିବର୍ତ୍ତନ ହେଉଥା ମନ୍ତ୍ରବ, ଏହି ଏକ ବ ଅନୁମାନ ବବା ହୁଏ
ଏହ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଅବଶ୍ୟ ପରିମାଣୁର ଉପର, ଅଥବା ପରମାଣୁ ଶମ୍ଖିର [molecules] ଉପରହ ହାତେ ଥାକେ
ଶିଳଭାବ-କ୍ଲୋରାଇଡେବ ଏହି ପରିବର୍ତ୍ତନ ଚକ୍ରବାରାଇ ବୋଧ ହୁଏ, କାନ୍ଦ ଉହାର ବର୍ଣ୍ଣ ପରିବର୍ତ୍ତନ ହାତେ
କ୍ରମବର୍ଣ୍ଣ ଧାରଣ କରେ କିନ୍ତୁ ଶିଳଭାବ-କ୍ଲୋରାଇଡେର ଏହି ପ୍ରକାର ପରିବର୍ତ୍ତନ ଅବଶ୍ୟ ତୁଟିଗୋଟିବ ହୁଏ
ଲା । ଏହି ଜନ୍ମାଇ ଏକଶ୍ରେଣ୍ଯ କର ଡ୍ରାଇପ୍ଲେଟ ଡେଭେଲପ କରିବାର ପୂର୍ବେ ପରିବର୍ତ୍ତନ ବୋଧ ହୁଏ ନା,
ଏବଂ ଉହାତେ କୋଣିମ ଛବି ପଡ଼ିଯାଛେ କିନା, ତାହା ଦେଖା ଧାର୍ଯ୍ୟ ନା ଡେଭେଲପନ ଦିବା ମାତ୍ରାଇ ଏହ
ପରିବର୍ତ୍ତନ ଉପରକ୍ଷି କରିବେ ପାରା ଧାର୍ଯ୍ୟ ।

পক্ষে জান দ্বাৰা যে সকল অংশ “সিলভাৰ-সব-ৰোমাইড” কপে পৰিবৰ্ত্তিত হইয় থাবে। ডেভেলপার দ্বাৰা সেহ অংশগুলি ধাতব রৌপ্যে পৰিণত হয়, আৱ যে সকল অংশে আলোক লাগে নাই, তাহাব কোনও কপ পৰিবৰ্ত্তন এই ডেভেলপমেণ্ট দ্বাৰা হয় ন দেই সকল অংশ পৃষ্ঠাৰ “সিলভাৰ-ৰোমাইড” রূপে অবস্থিত কৰে

হাইপোসোডা দ্বাৰা ফিল্ম কৰিবাৰ পূৰ্বে ড্রাইভে কি অবস্থা, তাহা এক্ষণে শিক্ষার্থী অবগুহী বুঝিতে পারিবাবেছেন; অৰ্থাৎ উহাৰ কতক অংশ বিশুদ্ধ বোঝা, এবং কতকু অংশ ‘সিলভাৰ-ৰোমাইড’ রূপে অবস্থিত কৰে

হাইপোসোডা দ্বাৰা বিশুদ্ধ বৌপ্য দ্রবীভূত হয় না, কিন্তু ৰোমাইড গুলি একেবাৰে পৰিষ্কাৰ হইয়া যাব ইহাই ডেভেলপমেণ্ট

এক্ষণে দেখা যাউক, ডেভেলপার প্ৰস্তুত কৰিবাৰ যে “বি”, নামক গিশি ব্যবহাৰ কৰিবলৈ গিয়াছে, [অষ্টম অধ্যায়, ৩২ পৃ] তাহাতে তিনটি বস্তু আছে

অল, সাইট্রিক এসিড, এবং পাইরোগ্যালিক এসিড

জলেৰ সহিত পাইবোগ্যালিক এসিড, দ্রব হইলে, তাহা কিছু কাল পৰেই “অক্সিডেসন” ক্ৰিয়া বশতঃ পৰিবৰ্ত্তিত হইতে থাকে ঐ দ্রবেৰ সহিত “সিলভাৰ সব-ৰোমাইড” সংযুক্ত হইবামাত্ৰ তাহা ধাতব বৌপ্যে পৰিণত হয় ইহাকে বাসাযনিক বিজ্ঞান মতে ‘প্ৰেসিপিটেসন’ বলে ৰোমাইড-অব সিলভাৰ ও এই প্ৰকাৰে ধাতব বৌপ্যে পৰিণত হইতে পাৰে, কিন্তু প্ৰথমতঃ ‘সব ৰোমাইড’ অব সিলভাৰ গুলিব উৱই এই বাসাযনিক ক্ৰিয়া আৱস্থা হয়

সাইট্রিক এসিড মিশ্ৰিত কৰিবা ‘‘বি’’ মিশ্ৰকে অক্সিডেসন ক্ৰিয়া হইতে বৃক্ষা কৰা হয় পাইবোগ্যালিক এসিড ঘতকণ পৰ্যন্ত অম্ব ধৰ্মাকাস্ত [টক] থাকে, ততক্ষণ ইহাৰ অক্সিডেসন অধিক হয় না যেই উহাৰ অম্বজ বিনষ্ট হইয়া উহা ক্ষাৰ ধৰ্মে পৰিণত হইবে, তখনি উহাৰ ‘অক্সিডেসন’ ক্ৰিয়া আৱস্থা হয় অবিডেসন আৱস্থা হইলেই সঙ্গে সঙ্গে বৌপ্যেৰ ৰোমাইড গুণ ও ‘প্ৰেসিপিটেসন’ হইতে গাকে

লাইকাৰ এমোনিয়া প্ৰযোগ কৰিয়া পাইৱো দ্রবেৰ অন্নধৰ্মীৰ বিনাশ কৰিবলৈ হয় ; অৰ্থাৎ এমোনিয়া প্ৰযোগ কৰিবাৰ পূৰ্বে ডেভেলপার অম্ব ধৰ্মাকাস্ত কৰিবা থাখা হয়। উহাতে এমোনিয়া, প্ৰযোগ ন কৱিলে, উহা ড্রাইভেটে কাৰ্য্য কৰিবলৈ পাৱে না

ষিম এজিনেৰ যেমন পুন ষিম হইয়াছে, অথচ চলিতেছে না, কাৰণ উহাৰ ষিম কক্ষ (Steam Cock) বন্ধ বহিয়াছে ; সেই প্ৰকাৰ, পাইবোগ্যালিক এসিডেৰ অন্নধৰ্মী কৰিবা উহাৰ ক্ৰিয়া শক্তিকে আৱস্থা বাখা হইয়াছে । এজিনেৰ ষিমকক্ষ যেমন খুলিয়া দেওয়া ভাগনি বামাৰাম চলিতে

ବିଷ୍ଣୁ, ଏତେ ତେମନି, ଯେମନ ଏମୋନିଆ ପ୍ରୟୋଗ କରିଯା ଉହାକେ ଶାର ଧର୍ମୀୟକ କରା, ଅମ ନ ଉହାବ କାର୍ଯ୍ୟ ଆବଶ୍ୟ

পাইবোগ্যালিক এসিড, জল, সাইট্রিক এসিড, এবং লাইকাৰ এমোনিয়াৰ আবশ্যক কি, তাৰা বুৰাহিলাম, শিক্ষার্থী একজনে জিজ্ঞাসা কৰিতে পাৰেন, “ডেম্বাইড-অব ‘টাস্’ বলিবা ধৈ গপন একটী দ্রব্য এমোনিয়াৰ সহিত মিশ্রিত কৰিয় “এ” নামক মিশ্ৰ হয়, এই মিশ্ৰণে ডেম্বাইড, অব, পটাসিয়ম নিবাৰ আবশ্যক কি ?

এইবাব তাহা বলিতেছি পাহিবোগ্যালিক এসিড্‌স্বাবা যে সময়ে “সব-রোমাইড্‌গুলি
“প্রেসিপিটেন্স” হইতে থাকে, সেই সময় (যদ্যপি একসূপোজ্জার অধিক হইয়া থাকে) রোমাইড্‌
তাৰ সিলভাৰ গুলি ও সব রোমাইড ; এবং পৱল্পৰিত ক্ৰিয় প্ৰতাৰে তাৰ এই সব-রোমাইড
গুলি ও বিশুদ্ধ রৌপ্যে পৱলিণত হইলেও পাৰে এই প্ৰকাৰ হইলেই ‘ফগ’ হওয়াৰ সন্দৰ্ভনা
এই সময় যদ্যপি ডেভেলপাৰে একটু অধিক পৰিমাণে রোমিন থাকে, তাহা রোমাইড গুলিকে
বক্ষা কৰে ; অথৰ্ব কেমেবাৰ একসূপোজ্জাৰ বশতঃ যে টুকু “সব-রোমাইড” হইয়াছে, তাহা হি
ৰৌপ্য হইবে যাত্ৰ, ডেভেলপ কৱিবাৰ সময় নৃতন আৰাৰ এক মল “সব রোমাইড” প্ৰস্তুত হইবে
ন। এই জন্ত “রোমাইড-অৰ-পোটাসিয়ম” ক্ৰমবিকাশ ক্ৰিয়াৰ বোধক (Rest aimer)

আমরা সংক্ষেপতঃ আধাৰ শিথিলাম —পাইৰোগ্যালিক এসিড দ্বাৰা অক্সিডেসন হয় ,
এজন্ত ইহাকে “অক্সিডাইজাৰ” বলে সাইটু ক এসিড পাইৰোগ্যালিক এসিডেৰ শক্তি (Funtion)
’ বক্ষা। কৰে এজন্ত উহাকে “প্ৰিজাৱডেটিভ” (Preservative) বলা হয় এমোনিয়া দ্বাৰা
পাইৰোগ্যালিকেৰ শক্তিৰ বিকাশ হয় ; এজন্ত উহাকে “অক্সিলাইটেব” (Accelerant); আৰ
ৰোমাইড-অৰ পেটাসিম দ্বাৰা ‘অমিডেসন’ ক্ৰিয়া ধীৰে ধীৰে হ’ বলিয়া উহাকে “বেচ্ট্ৰেনাৰ”
(Restainer) ।

| | | |
|--------------------|-----|---------------|
| (১) প্রাচীন এসিড | ... | অর্দ্ধ-ডাইজাৰ |
| (২) এসিড | .. | প্ৰিজাৰভেটিভ |
| (৩) মোনিথা | ... | একমিলাৰেটোৰ |
| (৪) অ-পটাশ | .. | বেস্ট্ৰেনাৰ |

গাইরো ১০১৮ ১৯৭৫ সন্মতে আশাদের যাহা বিনিয়োগ সমস্ত এলা হইল। আশাকণ্ঠ
শিক্ষার্থী এইবা ১৪০ । ৩১২ উভয়কপে বুঝিয়াছেন এখনে অন্যান্য ডেভেলপমেন্ট পদ্ধতি
বুকাইবার পক্ষে কাঁ খাল। শিক্ষার্থীর পক্ষেও তাহা বুঝিবার সুবিধা হইল।

চতুর্দশ অধ্যায়।

এই অধ্যায়ে আমরা আরও কয়েক প্রকার ডেভেলপার বিষয়ে শিক্ষার্থীকে শুরুইয়ে, বিবি পাঁচ প্রকার পদ্ধতি জানা থাকিলে, কার্য্যের সূবিধা হয়, বিশেষতঃ কোন পদ্ধতি ভাল, কোন উপায়ে কার্য্য ভাল হয়, শিক্ষার্থী নিজেও তাহা স্থির করিতে পারিবেন।

ইতিপূর্বে আমরা যে তাবে ডেভেলপার প্রস্তুত করিতে বলিয়াছি, উহু বেটেন এবং ওয়েন রাইট নামক ব্যবসায়ীদের ব্যবস্থ মত এল হইয়াছে। ঐ ডেভেলপারকে “পাইবো এমোনিয়” ডেভেলপার বলে।

“পাইরো-সোড” নামক অপর একপ্রকার ডেভেলপার প্রস্তুত করা যায়; অনেকে উহা পছন্দ করেন। এই ডেভেলপারের বিশেষ গুণ এই যে, ইহাতে নেগেটিভ ওলিব সুন্দর ‘ব্লুজ্যান’ বর্ণ হয়। ইলফোর্ড মার্কী যে সকল ড্রাইপ্রেট কলিকাতায় বিক্রয় হয়, তাহাতেও নিয়লিধিত ব্যবস্থা দেওয়া থাকে।—

ষষ্ঠক সলিউশন —

| | | | | |
|----|-----|-----|-----|-----------|
| জল | ... | ... | ... | ৫৫ আউন্স। |
|----|-----|-----|-----|-----------|

| | | | |
|-------------------------|--|--|----------|
| পটাসিয়ম মিটা-বাইসলফাইট | | | ১০ গ্রেণ |
|-------------------------|--|--|----------|

| | | | |
|-------------------|-----|-----|----------|
| পাইবোগ্যালিক এসিড | ... | ... | ১ আউন্স। |
|-------------------|-----|-----|----------|

(উপরোক্ত মিশ্র ৫ ৭ মাস থাকিলেও নষ্ট হয় ন

ডেভেলপ করিবার সময় নিয়লিধিত তাবে ডেভেলপার প্রস্তুত করিবে।—

| | | |
|-----------------------------|---|----------------|
| নং১। উপরোক্ত “ষষ্ঠক সলিউশন” | . | ১ হইতে ২ আউন্স |
|-----------------------------|---|----------------|

| | | | | |
|----|-----|-----|-----|-----------|
| জল | ... | ... | ... | ২০ আউন্স। |
|----|-----|-----|-----|-----------|

| | | | |
|-----------------------------------|-----|-----|----------|
| নং২। সোডিয়ম কার্বনেট (ক্রিষ্টাল) | ... | ... | ২ আউন্স। |
|-----------------------------------|-----|-----|----------|

(বাইকারবনেট নহে)

| | | | |
|----------------|----|----|----------|
| সোডিয়ম-সলফাইট | .. | .. | ২ আউন্স। |
|----------------|----|----|----------|

| | | | |
|------------------|----|----|-----------|
| পোটাসিয়ম বোমাইড | .. | .. | ২০ গ্রেণ। |
|------------------|----|----|-----------|

| | | | |
|----|-----|-----|-----------|
| জল | ... | ... | ২০ আউন্স। |
|----|-----|-----|-----------|

| | | | |
|---------------|----|----|---|
| যত্পিএ এন্সার | ১০ | ১০ | ইলে নং১ এবং নং২ মিশ্র সমান ভাষ্টে লইয়া |
|---------------|----|----|---|

ডেভেলপার প্রস্তুত

একসপোজাৰ কম হইয়াছে (অগ্রাম-গৱেষণার) এবং একাকাৰ বোধ হয়, তাহা হইলে মৎস্য কিছু অধিক পৰিমাণে ব্যবহাৰ কৰিব। আবাস যদি বৃক্ষক একসপোজাৰ দেওয়া হইয়া থাবে, তাহা হইলে মৎস্য কিছু অধিক মাত্ৰায় হ'ব।

একসপোজাৰ ঠিক হইয়াছে কিনা, তাৰ ধীম নিশ্চয়ত না থাকে, তবে মৎস্য মিশ্রেৰ পৰিমাণ মাত্ৰায় মৎস্য লাইয়া ডেভেলপ তিনি অৱৰ্দ্দন কৰে, পৰে আবশ্যক হয়, এমে ক্ষমে মৎস্য মিশ্র যোগ কৰিবে

ইলফোর্ড মার্কী খেটেৱ ডেভেলপমেন্ট। বিবাৰ সময় ফটকিন্সিৰ জনে নেগেটিভ আবশ্যক ভিজাইবে নচেৎ ক্লিলিং হইতে পাৰে

উপরোক্ত ডেভেলপাবে—

| | | |
|--------------------------|-----|---------------|
| পাইৰোগ্যালিক এসিড | ... | অবি ডাইজাৰ। |
| মিটা-বাই-সল্ফাইট-অব-পটাস | ... | প্রিজাৰডেটিভ |
| সোডিয়ম কাব'নেটও | .. | এক্সিলারেটৰ। |
| সোডিয়ম সলফাইট | .. | পটাস ব্রোমাইড |

“পাইবো-এমোনিয়া” এবং “পাইৰে-সোডা” এই দুই প্ৰকাৰ ডেভেলপার দেওয়া হইল।
পাইবোগ্যালিক এসিডেৰ এই দুই প্ৰকাৰ ডেভেলপার অনেকে ব্যবহাৰ কৰেন বেহ মেহ
পাইবোগ্যালিক অপেক্ষা “মেটোল-হাইড্ৰোকিনোন” নামক ডেভেলপার অধিক পছন্দ কৰেন
ইহাৰ প্ৰধান কাৰণ এই যে, এই দুই পদাৰ্থৰ দ্বাৰা যে ডেভেলপাব অস্ত হয়, তাহাতে মেঘ বাবে
অনেকগুলি নেগেটিভ অস্ত হইতে পাৰে, আৱ ক্ৰি ডেভেলপার দ্বাৰা নেগেটিভে বৰ্ণণ ভাল
হয়; অধিকস্ত “পাইবো-এমোনিয়” ডেভেলপাব দ্বাৰা হাতে যে প্ৰকাৰ অড়ম দাগ হয়,
হাইড্ৰোকিনোন-মেটোল ডেভেলপার ব্যবহাৰ কৰিবা হাতে সে প্ৰকাৰ দাগ হয় না। ব্ৰোমাইড
পোপাবেৰ পক্ষে আজকাল অনেকেই মেটোল হাইড্ৰোকিনোন ডেভেলপ মেন্ট পচাস বৰ্ষে

“মেটোল-হাইড্ৰোকিনোন”

[নং১]

| | | | | | |
|----------------|-----|-----|-----|-----|-----------|
| মেটোল | ... | ... | ... | ... | ৪০ গ্ৰাম |
| হাইড্ৰোকিনোন | ... | ... | ... | ... | ১০ গ্ৰাম। |
| সলফাইট অব সোডা | ... | ... | . | ... | ১২০ গ্ৰাম |

ফটোগ্রাফী শিক্ষা।

| | | | | | |
|------------------|-----|-----|-----|-----|-----------|
| ব্রোগাইড অব পটাস | ... | ... | ... | ... | ১৫ গ্রেণ |
| পরিষ্কৃত গবম জল | ... | ... | ... | .. | ২০ আউন্স। |

[০১২]

| | | |
|--|---|-----------|
| কষ্টিক পটাস (, ১৯৮৮ potash) | .. | ১৮০ গ্রেণ |
| গবম জল (পরিষ্কৃত) | .. | ২০ আউন্স |
| উপাদান ছাইটি মিশ্র শীতল হইলে ব্যবহার্য | ডেভেলপ কবিবাব সময় নং১ ও নং২ সমান ৩১গে লাইবে | |

“একোনোজেন”

১৮৯০ খীঁতকে এই পদাৰ্থ ড্রাইপ্লেটেৰ ডেভেলপাৰ কুপে নিৰ্দিষ্ট হইয়াছে অতি অল্প সময় একস্পেজাৰ দেওয়া হইলেও, ইহাৰ দ্বাৰা উৎকৃষ্ট নেগেটিভ কৱিতে পাবা যায় এমনকি, এক সেকেণ্ডে সহস্র ভাগেৰ একত্রিশ সময় একস্পেজাৰ দেওয়া হইলেও, এই পদাৰ্থ দ্বাৰা নেগেটিভ কুপা দান বলিয়া, একোনোজেন ডেভেলপাৰ অনেকে পছন্দ কৰিব। ১৮৯০ অন্দৰ হাটিস জুলালু চট্টগ্ৰে আমৰ নিয়মিতিত ব্যবহৃত উক্ত কবিলাম

নং১

| | | | | |
|--------------------------|-----|-----|-----|-----------|
| সণকাইট অব সোডা [জিষ্টাল] | ... | ... | ... | ৬৫৬ গ্রেণ |
| একোনোজেন | .. | .. | .. | ১২ গ্রেণ |
| পরিষ্কৃত জল [গবম] | ... | ... | ... | ১৮ আউন্স। |

নং২।

| | | | | |
|--|---|----|-----|-----------|
| কাৰ্বনেট-অব-পটাস | . | .. | ... | ৯৮৪ গ্রেণ |
| পরিষ্কৃত গবম জল | . | .. | .. | ১৮ আউন্স |
| উভয় মিশ্র পৃথক বাখিবে, এবং শীতল হইলে, সমভাগে লাঈয়া ডেভেলপাৰ প্ৰস্তুত কৱিবে যদি উপবোক্ত নং২ তালিকায় কাৰ্বনেট-অব-পটাসেৰ পৰিবৰ্ত্তে ক্ৰি পৰিমাণে কাৰ্বনেট- অব সোডা ব্যবহাৰ কৰ হয়, তাহা হইলে, একসেকেণ্ডে ৫০ ভাগেৰ এক ভাগ সময় এবস্পোজাৰ বৈত্তিত ড্রাইপ্লেটেৰ ক্ৰমবিকাশ হইবে | | | | |

১৯১, সেকণ্ড মাত্ৰ একস্পেজাৰ দেওয়া ড্রাইপ্লেট নিয়মিতিত একোনোজেন ডেভেলপাৰ
দ্বাৰা ক্ৰমবিকাশ কৱিবে —

সল্ফাইট অব সোডিয়ম ৫ভাগ, কার্বনেট অব পটাসিয়ম ২ভাগ এবং একোনোজেন ১ভাগ একটি এনামেল পাত্রে বাথিয়, তাহাতে ৩০ গ্রামজন দিবে, পরে উহা কাচ দণ্ড দ্বারা নাড়িতে হইবে, এবং উহাতে উভাপ দিতে হইবে । এই প্রয়াব কবিলে ১মস্ত পদার্থ জলে দ্রব হইয় যাইবে । উহা শীতল হইলে কাচের ছিপিযুক্ত মিশিতে কবিয়া বাথিবে । এই মিশাইয়া ১১২ কগ শাত্ৰ একস্পোজাৰ দেওয়া ডুইপ্লেটেৰ ও । মুকিকাশ হইবে ।

বিসাধন বিজ্ঞানেৰ ষতই দিন দিন উন্নতি হইতেছে ফটোগ্রাফীৰ কাৰ্য্য উপযোগী ততই শুভন নৃতন ডেভেলপার সকল আবিস্কৃত হইতেছে । তথাধ্য নিম্নতালিকাৰ লিখিত পদার্থ গুলি উচ্চে ঘোগ্য ।

- ১ বডিন্যাল
- ২ ইয়োজেন সল্ফাইট
- ৩ এমিডল
- ৪ আরটিল

বডিন্যাল জাম্বোনি দেশৰ স্বৰিধ্যাত A. G. I. A "এগ্ফা" নামক কোম্পানি এই ডেভেলপার প্রস্তুত কৰিয়াছেন ; বি সাধানণ নেগেটিভ, কি ব্রোমাইড-পেপার, কি পজিটিভ, যে একাৰ ফটোগ্রাফ হউক, বডিন্যাল দ্বাৰা সকল প্রকাৰ বাৰ্য্য হইতে পাৰে উহাতে একোনও বাঞ্ছাট নাই, পাঁচট দুব্য মিশাইতে থথ না, একমিলানেটেৱ, বেস্ট্রেনার, ইত্যাদি কইয়াও ভাবিতে হয় না, ক'বল ৫.৮১৮ একটু পাতলা কৰিয়া লাইভেই চলে "এগ্ফা" নামক বাবস্থায় ইহা বিক্ৰয় কৰেন ।

তিনি আউল্স, আৰ্ট আউল্স, এবং শোল ৬৮৮ মিশিতে জ্বব অৰঙ্গায় ইহা বিক্ৰয় হয়, মাহাৰা ফটো সম্বন্ধীয় দৰ্ব্যাদি বিক্ৰয় কৰেন, তাহাদেৱ নিকট ইহা পাওয়া যায় । ইহাৰ ব্যৱহাৰ প্ৰণালী এই প্ৰকাৰ —

বডিন্যাল ১ ভাগ, এবং অৰা ২০ ভাগ মিশাইলে ডেভেলপার হইল । যদি একস্পোজাৰ ঠিক হইয়া থাকে, তাতা ১৫০, ইতো দ্বাৰা ই ১৫৫ মেগেটিভ হইবে ।

যদ্যপি নিশ্চয় বোধ কৰি যে যে বেশ এৰু প্ৰোজাৰ দেওয়া হইয়াছে, তাহ হইলে, ১ভাগ বডিন্যাল ২০ ভাগ জলে মিশিত কৰিয়া ভাগাতে ১০ খাটো পিছু ২গ্ৰেণ ব্রোমাইড-জাৰ-পটাম, ৫ মেগেটিভ কৰিলে, সেই মিশি ডেভেলপার দ্বাৰা উজ্জ্বল নেগেটিভ হইতে পাৰিবে ।

একস্পোজাৰ কম ১৫০, এনড্রাণ বডিন্যাল, ৩০ ভাগ হইতে ৪০ ভাগ জল মিশাইয়া ডেভেলপার প্ৰস্তুত বাবিলো । এই ডেভেলপার উজ্জ্বল চমৎকাৰ যে, যাহাত ইহা একমাত্ৰ মাস্কে ।

করিয়াছেন, তাহাৰা আৰ কোমও ডেভেলপার পছন্দ কৱেন না । নব্য শিক্ষার্থীৰ ও ইহ তাল বোধ হইবে, সমেহ নাই

নব্য শিক্ষার্থী যদাপি বড়িত্বাল লাইয়া কাৰ্য্য কৱেন, তাহা হইলে তিনি অন্তৰ্গত ডেভেলপমেণ্ট পদ্ধতিব কিছুই বুবিলেন না ; তিনি ফটোগ্রাফ কৰিবেন বটে, কিন্তু উহার ডেভেলপমেণ্ট বিষয়ে তিনি অন্ধকাৰেই বহিলেন । এই জন্ম বলিতেছি, বড়িত্বাল ধাৰা কাৰ্য্য কৱিতে ইচ্ছ হয়, পথে কৰিও, কিন্তু মিজেব আবশ্যক ডেভেলপার প্ৰস্তুত কৱিতে অগ্ৰে শিক্ষা কৱিয়া, তবে বড়িন্যাল ব্যবহাৰ কৰিও

বৃক্ষ কাৰ্য্যে পাৰদৰ্শী হইয়া যে ব্যক্তি হোটেলে থাইবে, তাহাৰ তত্ত্বে ভাবনা নাই, কেননা তাহাৰ ইচ্ছামত সে আপনিও রাঁধিয়া থাইতে পাৱিবে । যাহাৰ বাঁধিবাৰ ক্ষমতা নাই, হোটেল ব্যতিবেকে তাহাকে উপবাস কৱিতে হয় । এই বড়িন্যাল নামৰ ডেভেলপাৰ যাহাদেৰ নিজে প্ৰস্তুত কৱিয়া ব্যবহাৰ কৱিতে ইচ্ছা হইবে, তাহাদেৰ জন্মই নিয়ে উহার প্ৰস্তুত কৱণ অণালী দেওয়া হইল —

বড়িন্যাল প্ৰস্তুত কৱিতে হইলে, প্ৰথমতঃ [caustic soda] কষ্টিক সোডা নামক ক্ষাৰেৰ “সাচুবেটেড-সলিউসন” কৱিতে হইবে । যাহাৰা বসায়ন বিষ্যাব অনভিজ্ঞ, তাহাদেৱ পথে “সাচুবেটেড-সলিউসন” কি, তাহা ভাবনাৱ বিষয় হইবে । অতএব প্ৰথমতঃ “সাচুবেটেড-সলিউসন” কি, তাহা বলিতেছি —

জলে জ্বল দ্রব হইয়া অনুশ্য হয় । চিনিও ত্ৰি প্ৰকাৰ হথ একটি এড় মেজাৰ প্ৰামেু এক আউন্ড জল রাখিয়া তাহাতে একটু একটু কৱিয়া লবণ অথবা চিনি জ্বল কৱিতে থাক । থানিকটা লবণ অথবা চিনি এই জলে জ্বল দেখিবে যে, ত্ৰি জলে তাৰ একবিন্দু লবণ ও জ্বল হইবে না । জলে ঘধ্যে কতক পৰিমাণ লবণ থাকিবাৰই স্থান আছে, সেই স্থান পূৰ্ণ হইলেই আৰ কিছু যাত্র লবণ সেই জলে জ্বল হইবে না । ইহাকেই “সাচুবেটেড-সলিউসন” বলে

কষ্টিক সোডা ভয়কৰ ক্ষাৰ উহা চৰ্পে লাগিলে স্পোটক হইতে পাৱে । একাৰণ কাচ নিৰ্ধিত চামচ দ্বাৰা, অথবা তদভাৱে কাগজ দ্বাৰা উহা নাড়া চাড়া কৱিবে

একটী শিশিতে থানিকটা জল রাখিয়া অন্ন অন্ন কৱিয়া তাহাতে কষ্টিক সোড জ্বল কৱিতে থাক । যখন দেখিবে, জলে আৱ সোড জ্বল হয় না, সেই সময় উহাতে আৱও অন্ন পৰিমাণে কষ্টিক সোডা দিয়া ছিপি বন্ধ কৱিয়া রাখিবে ; এবং উহার শিশিৰ গায়ে “কষ্টিক সোড-সাচুবেটেড-সলিউসন” লিখিয়া রাখিবে । ২৪ ধন্তা থাকিলে, ইহা পৰিকার হইবে । একগে নিম্নলিখিত দ্রব্যাদি মিশ্রিত কৱণ —

| | | | |
|------------------------|-----|-----|----------|
| পটাসিয়ম-গিটাবাইসলফাইট | ... | .. | ৬ ড্রাম |
| ডিসটিল করা জল | .. | .. | ২১ আউন্স |
| প্রাবামিডোফেনোল | ... | ... | ২ ড্রাম। |

জলে উক্ত দ্রুই পদার্থ দ্রব হইলে পৰ উহাতে ১০ ফে'ট। ২০ ফে'ট। কবিয়া কষ্টিক সোডাব উক্ত সাচুবেটেড সলিউশন দিতে থাক, এবং একটা কাচদণ্ড দ্বাবা উহা নাড়িতে থাক এই গ্রকার্ব করিলে দেখিবে যে, প্রথম তৎ গ্র জলে কতকটা “প্রেসিপিটেড” *হইবে এই গ্রকাব হইলে পৰও উহা ক্রমাগত নাড়িতে থাকিবে, এবং উহাতে অল্প অল্প কবিয় উক্ত কষ্টিক সোডা সলিউশন দিতে থাক অল্প পবেই দেখিবে যে, উক্ত “প্রেসিপিটেড” আবাব অদৃশ্য হইতেছে সমস্ত প্রেসিপিটেড দ্রব হইলে আব কষ্টিক সোডা প্রযোগ কবিবেন এই মিশ্র দ্রব্যই “রডিন্যাল নাম্বে বিক্রয হয

ইমোজেন সল্ফাইট —এই পদার্থও “এগ্ফা” নামক জার্মান ব্যবসায়ী প্রস্তুত কবিয়াছেন। ইহার গুণ এই যে, এই ডেভেলপার প্রস্তুত কৰণ প্রণালী অতি সহজ

নং১।

| | | | |
|----------------|---|-----|----------|
| ইমোজেন সল্ফাইট | . | ... | ১ আউন্স |
| জল | . | . | ১১ আউন্স |

নং২

সোডা কাবনেটেব সাচুবেটেড সলিউশন

একস্পোজার ঠিক হইলে, নং১ দ্রুইভাগ, এবং নং২ একভাগ লাইয়া ডেভেলপাব প্রস্তুত করিবে।

একস্পোজার বেশী দেওয়া হইলে, ইহাব সহিত ব্রোমাইড-আব-পোটাসিয়ম দ্রব কিছু পরিমাণ মিশ্রাইয ডেভেলপ কবিতে হয।

| | | | |
|-----------------------|-----|-----|-------|
| ব্রোমাইড-আব-পোটাসিয়ম | ... | ... | একভাগ |
| জল | .. | ... | দশভাগ |

* কোনও গাস-যন্ত্রিক দ্রব হইতে ঝুঁটীয এক পৃথক হইব অবগতিত হইলে, তাহাকে প্রেসিপিটেড বলে

এই দলের ৯২ ফোটো ও ৩ আবির্ধ ডেভেলপারে বিশাইলে অধিক এবং সুবেজাব দেওয়া
হৈত ধীবে ধীবে ডেভেলপ কৰ যাইবে

এমিডল এই পদার্থও টুকু জাত্মান কোম্পানি ওস্ত বিবিধাছেন নিম্নোক্ত ভাবে
উহাব ডেভেলপাব প্রস্তুত হইবে

| | | |
|----------------|-----|-----------|
| এমিডল | ... | ৮০ ট্ৰেণ |
| সোজিধু সল্ফাইট | . | ৮০০ ট্ৰেণ |
| জল | | ৮ আউন্স |

ডেভেলপ কৱিবাৰ সহ্য টুকু খিশেৰ ১ আউন্স লাইপ্স তাহাব মতিত ও আটুস ওজ মিশাইবে,
এবং প্ৰত্যেক আউন্সে ১ হেণ কবিধ ব্ৰোমাইড অব পেটাসিয়ম দ্বাৰা কৱিয়া দাইবে

অবটল এই পদার্থেৰ দ্বাৰা ডেভেলপ কৱিবো, নেগেটিভ কতকটা পাইবে -ডেভেলপ মেন্টেৱ
সত দেখায় ; অধিকস্ত ইহাব বিশেষ গুণ এই যে, একবাৰ ডেভেলপাব ওস্ত কৱিলে, তাৰাদ্বাৰা
অনেক গুণি নেগেটিভ বৱিতে পাৰা যায় নিম্ন তালিকা মতে এই ডেভেলপাব ওস্ত কৱিবে

নং ১।

| | | | | |
|-----------------------|----|----|----------|----------|
| *শোগুনজল | .. | .. | .. | ১০ আউন্স |
| মিটাৰাইসলফাইট অব-পটাস | | .. | ৩৫ ট্ৰেণ | |
| অবটল | | | ৭০ ট্ৰেণ | |

নং ২

| | | |
|--|---------|-------------|
| জল | ... | ১০ আউন্স |
| কাৰ্বনেট অব সোড (ফ্ৰিটাল) | .. | ১২ আউন্স |
| সল্ফাইট অব সোডা (ফ্ৰিটাল) | .. | ১৫ আউন্স। |
| ব্ৰোমাইড-অব পটাস | . | ৫—১০ ট্ৰেণ। |
| হাইপে-সলিউশন ১০ [এক ভাগ হাইপে, ২০ ভাগজল] | ৫০ ফোটা | |

শীতকালে নং২ মিশে ব্ৰোমাইড অব-পটাস না দিলেও চলে ডেভেলপ মেন্ট যদ্যপি শীত
শীঘ্ৰ কৱিবাৰ আবশ্যক হয়, তাহা হইলে নং১ একভাগ, ও নং২ একভাগ লাইৱে যদ্যপি ধীবে
ধীৱে ডেভেলপ কৱিবাৰ প্ৰয়োজন হয়, তবে নং১ একভাগ, নং২ একভাগ, এবং জনা একভাগ
হইবে।

পঞ্চদশ অধ্যায় ।

পূর্বে কথেক অধ্যায়ে তাৰা ড্রাইভেট নেগেটিভ ওস্তত কৰিবাৰ ১৯৫৮ বৰ্ষাব বৰ্ণনা কৰিয়াছি, এক্ষণে তাৰা নেগেটিভ হইতে কি প্ৰকাৰে পজিটিভ হইবে, তাৰা বলিতে ওস্তত হইবাব ।

নেগেটিভ হইতে "জিটিভ কৰিবাৰ পূৰ্বে নেগেটিভ খালি ভাৰ্ণিস বিবিতে হয় ; ভাৰ্ণিস কৰিবাৰ ১১ খণ্ড নেগেটিভ খালি দ্বিতীয় উত্তৰ কৰিবে আমাৰদেশ দেশে অন্ন সমষ্টিৰ বৌজে বাখিলেও হয়, অথবা একটি ছোট কেবোমিন ল্যাপ্সেৰ চিমনিব উপৰ ও অন্ন তলা বিয়া উত্তৰ কৰিতে পাৰা যায় যখন দেখিবে, বেশ গৰম হইয়াছে, তখন উহাৰ এককোণ ধৰিয় ৪৪ সংখ্যক চিত্ৰালুয়াখাৰি উহাৰ এক পাখে ভাৰ্ণিস ঢালিয়া দিবে, ক্ৰমেক্ৰমে সকল দিকে গড়াইয় লইয়া অতিবিক্ষ ভাৰ্ণিস টুকু পুনৰ্বায় শিশিতে ঢালিয়া গাইবে, এবং যে পৰ্যন্ত ঘোটেৰ উপৰ ভাৰ্ণিস শুক না হয়, তাৰ কাল ঘোট খালি একপ ভাৰ্ণ বাখিতে হইবে যে, হইবাৰ কোনও স্থানে ভাৰ্ণিস গড়াইয়া পুক না হইতে পায় ভাৰ্ণিস বসিতে ২৩ ঘণ্টিট লাগে ঘোটেৰ উপৰ ভাৰ্ণিস বসিয়া গেলে পুনৰ্বায় নেগেটিভ খালি উত্তৰ কৰিবে। এবাৰ প্ৰথমবাৰ অপোক্ষাত অধিক উভাপ দেওয়া প্ৰযোজন। এই প্ৰকাৰ কৰিলেই নেগেটিভে উপৰ ভাৰ্ণিস বেশ স্বচ্ছ ও চৰ্কচকে হইয়া যাইবে নেগেটিভ ভাৰ্ণিস নানা প্ৰকাৰ কিনিতে পাওয়া যায় ।

ভাৰ্ণিস কৰ হইলেই নেগেটিভ হইতে ছাপা হইতে পাৰে এই কাৰ্য্যে যে যে বস্তুৰ আবশ্যক, তাৰা পঞ্চম অধ্যায়ে বলা হইয়াছে এক্ষণে পুনৰ্বায় লিখিলাম —

প্ৰিণ্টিংফ্ৰেম — যে মাপেৰ নেগেটিভ, প্ৰিণ্টিংফ্ৰেম শুলি সেই মাপেৰ হওয়া উচিত। একখালি নেগেটিভ ও একখালি কাগজ একত্ৰ কৰিয়া স্থৰীং দ্বাৰা চাপ দিয়া বৌজে অথবা আলোকে বাখিবাৰ জন্মই প্ৰিণ্টিংফ্ৰেমেৰ প্ৰযোজন ইহা নানা প্ৰকাৰ আছে

"পি, ও, পি" কাগজ — 'প্ৰিণ্টিং-আউট-পেপাৰ'— এই তিনি কথাৱ সাক্ষেতিক কপে তিনটি অক্ষৰ ব্যৱহৃত হয় আমৰা যে সময়ে কটোৱাকী শিখিয়াছিলাম, তখন এই জাতীয় কাগজ বাজাৱে বিক্ৰয় হইত না, এলুমিনাইজ কৱা কাগজ লাইয়া আপনাবাই ছাপিবাৰ কাগজ অস্তত কৱিতাম। এক্ষণে জেলেটিন এবং সিলভাৰ-ক্লোবাইড, একত্ৰ কৰিয়া এই পি, ও, পি কাগজ অস্তত হয় ইহাৰ দ্বাৰা কাৰ্য্য ভাল হয় বটে, কিন্তু এই কাগজ অধিক দিন থাকিবলৈ, 'থাৰ্ম্প হইয়া যাব', একানন বিক্ৰেতাগন একেৰাৰে জাধিক পৰিমাণ কাগজ মজুত বাখিতে পাৱেন না যাহাহটক, এই কাগজ ক্ৰয় কৱিবাৰ কালে "টাটকা" কাগজ কিনা, তাৰা জিজাসা কৰিয়া ক্ৰয় কৱাই আবশ্যক। কাগজ টাটক হইলে কাৰ্য্য ভাল হইবে

ইলফোর্ড, বার্নেট, কোডাক, এবং ওয়োল্টন মার্কা কাগজ ডস্তুর ঐ গুলির মধ্যে কলিকাতার সকল দোকানে ইলফোর্ড মার্কা কাগজ সকল সময় পাওয়া যায়। একাবণ এই পুস্তকে লক্ফোর্ডের ব্যবস্থাই দেওয়া হইল।

প্রিটিংফ্রেম, এবং পি, পি, পি, কাগজ ছাড়া নিম্নলিখিত বস্তুর প্রয়োজন ফটকিরি শুঁড়।

এমোনিয়ম-সলফে-সায়ানাইড,

সোডিয়ম-সলফাইট

গোল্ড-ক্লোবাইড

হাইপো সোডা

ঐসকল বস্তু হইলেই প্রিটিং আবশ্য করা যাইতে পাবে

একখানা প্রিটিংফ্রেমের পশ্চাত্তাগে খুলিয়া ফ্রেমখানা তোমার সঙ্গুরে রাখ, এবং একখানা নেগেটিভ বেশ কবিয় ঘাড়িয়া লও, ছবিব দিক উপরে বাখিয়া ফ্রেমের উপর বসাও; ঐ নেগেটিভের ছবিবদিকে একখানি পি, পি, পি কাগজের চৰ্চকে দিক বাখ, এবং স্তোঁ হইটা ধাবা ফ্রেম বক্স কবিয়া আলোকে দাও

এই ছাপা কার্য বিশেষ কঠিন নহে; নেগেটিভ ভাল হইলেই ছবি ভাল হইবে, সন্দেহ নাই; আলোকে ছাপিতে দিয়া, সময় কত, ঘড়ী দেখিয়া লিখিয়া রাখ

পাঁচ মিনিট পরে ফ্রেমখানি লইয়া গৃহমধ্যে যাও, এবং যেখানে প্রবল আলোক নাই, এমত স্থানে ঐ ফ্রেমের অক্ষ অংশ খুলিয়া দেখিদেখি, কেমন ছবি হইতেছে একেবারে সমস্ত ছবি খুলিয়া দেখিও না, কারণ তাহা হইলে ছবিখানি শান্তিষ্ঠ হইয়া যাইবে, আব পূর্বের মত বসান যাইবেন। যদি দেখ যে ছবি এখনো বেশ পবিষ্কাব হয় নাই, তাহা হইলে কাগজ খানি ঘড়িয়া না যায়, এই ভাবে ফ্রেম খানা আবাব বথ করিয়া পূর্ববৎ আলোকে দাও

পুনর্বায় কিছুকাল পরে ফ্রেমখানি গৃহমধ্যে লইয়া দেখ, এবং তোমাব মনেব মত যতক্ষণ না হয, ততক্ষণ ঐ ভাবে উহাতে আলোক দিতে থাক নেগেটিভে বৰ্ণ এবং ঘণ্টা অনুস রে সময়ের তাব তথ্য হইবে, তথাপি স্থুলতঃ এই বলা যায় যে, ৩ মিনিট হইতে ৩০ মিনিটের মধ্যে ফটো প্রিণ্ট আবশ্যক মত ঘোব বর্গের হইতে পারে এই প্রকারে দেখিতে দেখিতে যথম ক্ষেমার মনে হইবে যে, ছবি ভাল হইয়াছে, তখন পুনর্বায় ঘড়ী দেখিয়া স্থির, কব, ছাপা হইতে কত সময় লাগিব। উদাহৰণ স্থলে মনেকব যাউক, ১৫ মিনিট মধ্যে বেশ ৭৫% হইয়াছে এক্ষণে পুনর্বাব ঐ ফ্রেম বন্ধকব, এবং ঘড়ীধিবিয়া ঠিক আব ১৫মিনিট পূর্ববৎ আলোকে রাখিয়া দাও

যে সময়ে মধ্যে ভালুক ছাপা হয়, তাহাৰ দ্বিতীয় সময় আলোক দেওয়াৱ কাৰণ এই যে, কাগজেৰ ছবি পৱে ধোত কৱিতে হইবে, এবং টোনিং, ফিল্ম, ইত্যাদি কাৰ্যো উহাব বণ অনেকটা পাতলা হইয়া যাইবে যদিপি এই ছাপাৰ সময় শুব ঘোৰ কৱিয়া ছাপা না হয়, তাহ হইলে শেষকালে উহা নিতান্ত পাতল দেখা হইবে

সাধাৰণতঃ এই বলিতে পাৱা যায যে, প্রিণ্টিংফ্রেনে একখানা ছবি মতঙ্গণ বাখিলে ভাৎ দেখায, সেই ছবিটা আবও তত সময় ক্ষেত্ৰে বাখিয়া আলোক দিলে যে প্ৰকাৰ ঘোৰ বণে হইবে, প্রিণ্টিং ক্ষেত্ৰে হইতে সেই প্ৰকাৰ ঘোৰ বণেৰ কৱিয়া লইতে হইবে। এই প্ৰকাৰ একখানি ছাপা হইলে, আবাৰ একখানা কাগজ সেই নেগেটিভে দিয়া পূৰ্বৰ্বৎ ছাপা হইবে যে খানি ছাপা হইল, তাহা একটী কাগজেৰ বাঞ্ছে কৱিয়া বাখিবে, তাহাতে আলোক লাগিতে দিবে না।

যাহাবা ফটোগ্ৰাফীৰ ব্যবসা কৰেন, তাহাবা সপ্তাহে একদিন, অথবা দুইদিন এই প্রিণ্টিং কাৰ্য্য কৱিয়া থাকেন ইহাব কাৰণ এই যে, একেবাৰে কতক শুলি ছবি হইলে, টোনিং এবং ফিল্ম প্ৰভৃতি একেবাৰে হয়, তাহাতে কাৰ্যোৰ ও স্বীকৃতি, এবং খবচেৰ ও জায়ব হইব শিক্ষার্থী ও ঐ নিয়ম প্ৰতিপালন কৱিবেন

বেলা ৩ টা পৰ্যন্ত এই প্ৰকাৰে ছাপ কাৰ্য্য কৱিয়া যতোলি ছবি হইল, তাহ একত্ৰ কৱিয়া প্ৰথমতঃ ধোত কৱিতে হইবে

প্ৰিণ্ট ধোত কৱিয়াৰ প্ৰণালী

ছহিথানা ডিস খডিদ্বাৰা মাজিয়াউত্তম ঝলে পাৰকাৰ কৱিয়া লইবে। প্ৰিণ্টিং কাৰ্যোৰ জৰু আৰু ছহিথানা পোৰম্ভেন ডিস বাখিলেই ভাল তথ নেগেটিভ প্ৰস্তুত কৱিতে যে সকল দ্ৰব্যাৰ্থ (পাইৱ, সোডা, এমোনিয়া) ব্যবহৃত হয়, তাহাৰ বিলুপ্তাৰে এই কগজে লাগিলে দাগ হইবাব সম্ভাৱনা ; যদি দ্বত্তৰ নৃত্য ডিসেৰ বন্দোবস্ত কৱিতে পাৰা যায তাহা হইলে তো কথাই নাহ, যদি মৰা শিক্ষার্থী তাহা না পাৰেন, অগত্যা ডিস ছহিথানি বিশেষ কৱিয়া মাজিয়া ধূইয়া লইবেন

ডিস ছহিথানি পৱিকাৰ কৰা হইলে, ছহিথানিতেই পৱিকাৰ জল রাখ। পনে ছাপ ছবিশুলি এক এক খানি লাইয়া, ছবিব দিক নৌচু কৱিয়া একটি ডিসেৰ জলে ডুবাইয়া দাও একখানি প্ৰিণ্ট অলে ডুবাইয়া দেওধা হইলে, আৱ একখানি, তাৰ পনে আব একখানি, এই ভাৰে পনে পনে পনে পনে সমস্ত প্ৰিণ্টগুলি ঐ ডিসেৰ অলে ডুবাইয়া দাও। সমস্ত ছবিশুলি জলে ডুবান হইলে, আবাৰ ঐ ডিস হইতে পূৰ্বৰ্বৎ এক এক খানি কৱিয়া দ্বিতীয় ডিসে ডুবাইয়া দাও। প্ৰথম ডিসেৰ সকল ছবি দ্বিতীয় ডিসে উঠান হইলে প্ৰথম ডিসেৰ জল ফেলিয়া দিয়া, তাহাতে নৃত্য জল বাখ।

দ্বিতীয় ডিস হইতে পূৰ্বৰ্বৎ এক এক খানি কৱিয়া তুলিয়া লাইয়া আবাৰ প্ৰথম ডিসেৰ জলে

জুবাই'বে, এই অকাবে জল পরিবর্তন কবিয়া ধোতি পুলিনাব ক'বে দেখিবে যে, ছবি খোলা
জল সাদা হইয়া ঘোলা হইতেছে যতক্ষণ এই অকাবে সাদাৰ্বণ নিৰ্গত হইবে, ততক্ষণ ছবিগুলি
এ ডিম ও ডিম কবিয়া ধোতি কৱিবে যখন দেখিবে আল ঘোলা জল নিৰ্গত হয় না যখন টুকু
গাঁৱ ধূইতে হইবে না একখালি ডিমের জল মধ্যে সকল প্রিণ্টগুলি নাথিয়া নিয়াঃ বিশু
মালিঙ্গন প্রস্তুত কৱিবে —

| | |
|---------------|------------|
| ଶ୍ରୀ କଟିବି ବି | ୧ ଆଉଗ୍ସ୍ଟ |
| ସାଧାରଣ ଲବণ | ୨ ଆଉଗ୍ସ୍ଟ |
| ଜଳ | ୨୦ ଆଉଗ୍ସ୍ଟ |

উহাকে ‘‘হার্ডেনিং সিগিউরিসন’’ বলে উহ অস্ত হইলো, এক ধানা ডিমে উহ রাখিবে এবং
দেত কৰা প্রিট গুলি উহাতে একে একে নির্মজ্জিত কাৰণ দিবে সমস্ত প্ৰিণ্ট ভাল এহ ‘হার্ডেনিং
সিগিউরিসনে নিৰ্মজ্জিত কৰ হইলে, সকলেৰ নোচেৰ ছবিথানি ধৈৰ্যে ধৰে টাৰ্নিথ সহ উপৰে
শান্তি দিবে এবং তাৰাধ পৰেৰ খাৰ্বি ও আয়োজ সকল পিটি এ এহ প্ৰাপ্তি উপৰে আনি
সহ এহ প্ৰকাৰ কৰিবাৰ উদ্দেশ্য এই যে, ঐ সিগিউরিসন ধন্দে সকল পিট গুলি একটু নাড়া
চাই কৰা; ঐ প্ৰকাৰ কৰিলে সবগ স্থানেই ঐ সিগিউরিসন লাগিয় প্ৰিণ্ট গুলিৰ ঘণেৰ পৰ্যাবৰ্তন
হওব। সমস্ত প্ৰিণ্ট গুলি এই প্ৰকাৰ নোচে হইতে উপৰে আনিব আৰিনভে দেখিবে যে, উহাদেৱ
ৰ্ষ পোড়া যাচীৰ ন্যাথ ঘেটে ঘেটে লাল হইযাছে সমস্ত চৰ'ৰ খণ্ডৰ ১০ এণ্ঠেৰ বেশৰ কথা,
পৰিষ্কাৰ জলে পঁচসাত বাৰ পূৰ্বৰ্বৎ ধৈত কৰিবে এই সবগ নৰ্বা মোহন শঙ্কু মৃছ আৰে লৈ
চৰ্যা আৰিণ্যক অবল আলোকে এই সকল তিথা নৰিলে ফটো প্ৰিণ্ট মুছ হওবে ।

५०८

ফটোবিবি এবং শব্দ মিশ্রিত জগে ফটো'র খুচির ১৯৭২। টিপ মত যে বর্ণ হয়, টোনিঃ
ক্রিয়াবাবা মেই বর্ণদূব হইবা, প্রিণ্ট ওলাৰ সুন্দৰ গৱেছ (বেজিন)। বৰ্ণ ইহুৰে ধৌত
ছবিগুলি পূর্ববৎ ডিসেৱ জলে রাখ, এবং নিম্নলিখিত তিনটী পুনক সার্কেলসন প্রস্তুত কৰিব। তিনটি
পুনিকার শিশিতে বাঁধ, এবং ১, ২, ৩, নথৰ দাও —

| | | | | |
|----|-------------------------|---|----|-----------|
| ৮১ | এমোনিয়ম্ সলফো সাথানাইড | . | .. | ১০০ গেণ |
| | জল | . | .. | ১০ আউন্স |
| ৮২ | সোডিয়ম-সলফাইট | . | .. | ১০ গেণ। |
| | জল | . | .. | ১০ আউন্স। |

| | | | |
|-------|----------------|-----|-----------|
| ৮৫ ৩। | গোল্ড-ফ্লোরাইড | . | ১৫ খেণ। |
| | জল | ... | ১৫ আউন্স। |

গোল্ড কোরাইড হই দিক এক কাঁচের নলের মধ্যে থাকে নমস্ক প্রথমতঃ নলের উৎপন্ন বিস্তৃতি ভিজাইয়া উঠাইয়া দেলিবে, এবং কাঁচের নলটি পরিষ্কার শিশির মধ্যে ফেলিয়, ছোট বেনও কাঁচের অথবা হাতের দণ্ড দ্বারা ঠুক ঠুক করিয় আঘাত দিয়া ভাসিয় দিবে পরে উপরে ১৫ আউন্স জল ঢালিয় দিবে ভাঙ্গা কাচ থেক নীচে পড়িয় থাকিলেও ক্ষতি নাই উপরোক্ত ক্রিটো সলিউসন পূর্ণ হইতেই প্রস্তুত করিয়া বাখিবে, উহা পানাপ হইবে না।

টোন কার্বোবাল সমব পুরোজু হুইথানা ডিসের প্রযোজন একটিতে ধৌত ছবি গুলি আছে অপব ডিসে “টে নিংবাথ” প্রস্তুত করিবে

অধিমে নং১ সলিউসন ২আউন্স দাও; তার পর নং২ সলিউসন ২আউন্স দাইয়া উভাতে মিশাও, শব্দশেষে নং৩, ২আউন্স লাইয়া উভাব সহিত মিশিত কর সর্বশেষে ১৪ আউন্স পরিষ্কার জল উচ্চ ব সহিত মিশিত করিয় সর্ব সম্যেত ২০ আউন্স “টোনিং বাথ” প্রস্তুত কর।

পুরোজু নিং মানুসাবে ৩ স্পন্ত করিয় যে ২০ আউন্স টোনিং বাথ প্রস্তুত হইল উভাতে ২৪ থানা ক্যারিনেট অথবা ৪৮ থান কোণাটোব সাইজের কটো প্রিট উভয় কুপ টোন কর হইবে

টোন প্রাব সিরিমন বি'শ ইঁইয়া পরিষ্কার জলের মত হইলেই উচ্চ কার্বোব তপয়ো হইবে

পুরোজু বানায়াছি, টোনিং বাথে কিছুনা কটো প্রিট উলি ডুবাইয়া বাখিলে, উহাৱ পোড়া সাটিৰ মত বৰ্ণেব প্ৰিষ্কার্তন হইয়া, উহাৰ মুদ্দৰ পন্থপত্ৰ বৰ্ণ হয়

এক এক থানি কটো জল হইতে ডুণিয়া টোনিং বাথে ভিজাইয়া দাও। নূতন শিক্ষার্থী একেবাবে আট দশ থানাৰ বেশী প্রিট একত্ৰে টোন কৰিবেন না, কাবণ এই বে, টোনিং বাথে যতক্ষণ প্রিট গুলি থাকিবে ততক্ষণ ক্রমাগত নীচে হইতে এক এক থানি প্রিট ধৌৱে ধৌৱে টানিয়া লাইয়া উপবে আনিয়া দিতে হয় তিটুগুলি টোনিং বাথে ক্রি প্ৰকাৰে ঘুৱাইলে উহা ক্রমাগত নাড়া পায়, এবং টোনিংবাথ গুতো কল স্থানে সমান ভাৱে কাৰ্য্য কৰিতে থাকে এই সময়ে যদি প্রিট গুলি এক ব হইয়া ছিল তাৰ থাকে, তাহা হইলে উহাৰ টোনিং (বৰ্ণেব পৰিষ্কার্তন) সৰ্ব স্থানে এক প্ৰক ব হয় না। স্থানে স্থানে পোড়ামাটিৰ বৰ্ণ রহিয়া থায়

১০। ১২ খানার বেশী প্রিণ্ট একেবারে তিজাইলে ঐ প্রকার নিয়ম যত প্রিণ্টগুলি পূর্বাইবাব
অস্থুবিধি হইবে, বিশেষতঃ নীচে হইতে এক এক খানি উপরে আনিবাব সময় ছবিগুলি চি'ড়িয়া
যাইবার ও ভয় থাকে

টোনিং বাথে এক এক খানি কবিয়া দশ খানা প্রিণ্ট ভিজান হইলে, প্রথম খানি নাচে তত্ত্বে
টানিয়া লইয়া উপরে আও, পরে দ্বিতীয় খানি নীচে হইতে আনিয় প্রথমটীব উপরে পবে তৃতীয়
খ. মি. এই প্রকারে দশখানা ছবি একবাব পূর্বাইশেই দেখিতে পাইবে যে, ছবি ওলিব বর্ণেব
পরিবর্তন হইতেছে

পোড়ামাটিৰ যত লালবর্ণ দূৰ হইয়া একটু পীতবর্ণ হয়, পবে ক্ৰমশঃ প্রিণ্ট, গুলিব শুল্বৰ
পুৰুপলুবৰ্ণ হইবে এই সময়েট ছবি গুলিয়া লইতে হয় অধিক সময় এই টোনিং
বাথে রাখিলে, পুৰুপলুবৰ্ণ আবাব পৰিবৰ্ত্তিত হইয়া একপ্রকাৰ গো বৰ্ণেব হইবা থাকে, তাহা
দেখিতে ভাল হয় ন টোনিং বাথে কক্ষণ বাখিলো ফটোগ্রাফেব বৰ্ণ ভাল হয়, তাহা প্রথমত
ছিব কৰা, নব্য শিক্ষার্থীব পক্ষে কঠিন বোধ হইবে; একাৰণ এই টোনু কৰিবাব সময় কোন ও ভাল
একখানা ফটোগ্রাফ সম্মুখে বাখিয়া টোনু কৰিলে, বৰ্ণটী ঠিক হইয়াছে কি না, বুৰাতে পাৰা ধাগ।

এক একখানি ছবিব টোনিং যেমন সমাপ্ত হইবে, তখনি তাহা টোনিং বাথ হইতে তুলিয়
লইয়া, অন্ত ডিসেব পৰিষ্কাৰ জনে ডুৰ্বাইয়া দিবে এই প্রকাৰে দশ খানা প্রিণ্ট, টেন কৰ
হইলে, আবাব দশ খানা ছবি লইয়া পূৰ্ববৎ টোনু কৰিতে হইবে সকল ছবিগুলি ব টোনিং
সমাপ্ত হইলে আবশিষ্ট টোনিং বাথ ফেলিয় দিবে

প্রিণ্টগুলি টোনু কৰা হইলে, উহাৰ জনে পৰিবৰ্তন কৰিয় (পুঁচ ব ছয় ব এ) ধৈত কৌশিক
এই প্রকাৰে ধৈত কৰা হইলে উহা কিম্বা (lly) কৰিতে হইবে

| | | | |
|-------------|----|----|-----------|
| হাইপো-মোড়া | .. | .. | ৩ আউন্স |
| জম | .. | .. | ২০ আউন্স। |

উপৰিউক্ত হাইপো মোড়া সলিউসনে ১০ মিনিট প্রিণ্ট গুলি ডুৰ্বাইয়া রাখিবে, এবং মধ্যে
মধ্যে ছবিগুলি পূৰ্বাইবে

দশ মিনিট হাইপো বাথে বাখিলে পৰ বোধহইবে যে, টোনিং ক্ৰিয়া দ্বাৰা ফটোগ্রাফ গুণাব
শুল্বৰ বৰ্ণ হইয়াছিল, তাহাৰ পৰিবৰ্তন হইয়া ময়লা পীত বৰ্ণেব হইয়াছে। উহা হাইপো মোড়াৱ
ৰক্ষা। এই প্রিণ্টগুলি ধৈত হইয়া শুক হইলে, টোনিং জনিত পুৰুপলুবৰ্ণ অনেকটা পাৰ্শ্ব
প্ৰকালিত হইবে, সন্দেহ মাই

ଫିଲ୍ କବିଦାର ପର ଛବିଗୁଣି ଖୁବ ଭାଲ କବିଯା ଦୌତକବ ନିତାନ୍ତ ଆବଶ୍ୱକ ଯାଦି ତାଳ କବିଧ ଦୌତ କବ ନ ହ୍ୟ, ତାହା ହଇଲେ ଐ ସକଳ ଫଟୋଗ୍ରାଫେ ହାଇପୋ ମୋଡ଼ା ଅତି ଅନ୍ୟ ମାଜ୍ଞାଯ ଥାକେ ଉହା ଅତି ମାନ୍ୟ ମାଜ୍ଞାଯ ଥାକିଲେ ଓ ଅର୍ତ୍ତ ଶୀଘ୍ର ଐ ମକଳ ଫଟୋଗ୍ରାଫ ନଷ୍ଟ ହଇଥା ଯାଏ । ଏହି ଏକ ବ ହଇଲେ ବାବସାୟୀ ଫଟୋଗ୍ରାଫ ବେବ ହୃଣୀମ ହ୍ୟ, ଅତ୍ରଏବ ଏତ ପରିଶ୍ରମ ଓ ଅର୍ଥବ୍ୟବ ବବିଧ ଯାହା ପ୍ରକ୍ରିତ ହୈବା, ମେହି ଛବିଦୌତ କବିତା କେ ନ ଓ ମତେଇ ଅବହେଳା କବ ଉଚିତ ନହେ ଛବିଗୁଣି ଉତ୍ସମ ବପେ ଧୌତ ହଇଲେ ଟେବିଶେବ ଡଲବ ପରିଷାବ କାର୍ଡ ବିଛାଇଥା, ତାହାର ଉପର ଛବିଗୁଣି ପ୍ରଥକ କବିଧ ବାର୍ଧିବେ ଏହିପରିକାବେ ବାର୍ଧିବ ଦିନେ, ଶୀଘ୍ରଇ ଉଥାନ ଜଳ ଶୁକାଇଯ ଯାଇବେ

ଧୋଡ଼ଶ ଆଂଶ୍ୟ ।

ପୃଷ୍ଠ ଅଧ୍ୟାମେ ବର୍ଣ୍ଣିତ ଯେ ମନଙ୍କ ଛବି ଓତ୍ତତ କବ କାହିଁଲ, ଏହାରେ ତାହାରେ ନିଯନ୍ତ୍ରିତ କଥାଟ କାର୍ଯ୍ୟ ଆବଶ୍ୱକ —

- (୧) ଟ୍ରିମିୟ
- (୨) ମାର୍କ୍‌ପଟିଂ
- (୩) ବେ ନିଃ ଅର୍ଥବ ବ୍ୟନିମିୟ
- (୪) ସ୍ପଟିଂ

ଉପରୋକ୍ତ ଚାରିଟି କାର୍ଯ୍ୟ କବିଗେହେ ଫଟୋଗ୍ରାଫ ମଧ୍ୟରେ ହିଲେ ଶିକ୍ଷାରୀ ଅବଶ୍ୱ କାର୍ଡ ସାଇଜେବ ଅର୍ଥବ କ୍ୟାବିଲେଟ ସାଇଜେନ ଫଟୋଗ୍ରାଫ ଦେଖିବ ଛେନ, ଐ ମକଳ ଫଟୋଗ୍ରାମେର କାଗଜେବ ଧାବଗୁଣି କେମନ ପରିଷାବ, ତାହ ଦେଖିଯ ଶିକ୍ଷାରୀ ବୁବିତେ ପାବିବେଳ ଯେ, ଉହାବ ଧାବ ଓଲି ତୌଳୁ କୋଣତେ ଅନ୍ତର ଧାବା ପରିଷାବ କବିଯା କାଟି ହଇଥାହେ

ଆଜି ଟେଲିନିଂ, ଟୋନିଂ, ଇତ୍ୟାଦି କାର୍ଯ୍ୟେ ବାଗଜେବ ଧାବଗୁଣ ଅର୍ବିଷ୍ଟାବ ହତ୍ୟାବ ସଙ୍ଗାବନା, ଏହି ଜଣ୍ଠ ଛବିଗୁଣି ଶୁକ୍ଳ ହଇଗେ, ଉହାବ ଧାବ ମକଳ ପରିଷାବ କବିଧ ଏଟିତେ ହ୍ୟ; କେବ ହ୍ୟତ ଘନେ କବିତେ ପାବେନ, ଧାବ କଟିଯ ଫଟୋଗ୍ରାଫି ଛାଟ ବ ନିବାବ ଆବଶ୍ୱକ କି ?

ଇହାବ ଉପରେ ଆସାଦେବ ବଜ୍ରବ୍ୟ ଏହି ଯେ, ଏକଥାନ ଫଟୋଗ୍ରାଫ ଲାଇୟ ଚାବିଧାବ ବେଶ ପିଙ୍କଳ୍ପିତା କବିଧ କଟିଯ ଦେଖ, ଉହ ୬୦ ଦେଖିବ କିମ ଯ ଛବି ଖାତେଇ ଧରିତେ ୬୦ ଦେଖିଯ, ତାହ କବା ଆବଶ୍ୱକ

১৯৮৪ সা. ১০ মে মধ্যে কাঠিনে হব, এই ফটোগ্রাফ মডেল র জন্ম প্রেরণ
(পুরুষ চে) নামও ‘কাটিসেস’। কৃত ফটোগ্রাফ এবং বন শিখাৰ্থী উৎসংজ্ঞো এক
খান, ১৯৮৮ ব্যাবহোৱা সমিতিৰ একখান কাটিসেস যৰ কৰিবলৈ কাটিবাব পথ লি। এই
প্রকৰ ব টোবলে উৎসব এবং খান বড়আৰাম হৈ পেটু স বাখিবে, ত হাৰ উপৰ এনখনি হিৰণ্ত
(আদুল হৈ) ব বিধি, ত হাৰ উৎসব কটিসেস বস্তুও, এবং ফটো মধ্যে দে সকল সবল বেখ
তাছে, তাহ কটিসেসে হিত বেশ মুদৃশ্য অৰ্থাৎ সমান্বয় ইইল কিন তাহ এই বেশ
দেখিয লভ কটিসেস, ঠিক বসান ইইলো, এন্টো ভোক্তৃ ধাৰ বিশিষ্ট ছুবিক ব অপ্রতীক্ষা
স্বাবা প্ৰিপ্টৰ চাৰিধ ব ত মেছেৰ মাদে ক টী ফেল এই প্ৰকাৰে এক এবখনি ছুবি
‘টুম’ ব নিতো হইবে আনেক ছুবি ক টিয ছুবিকাৰ ধাৰ মেট হইলো, পুনৰ্বাৰ ধাৰ কৰিব
বাইচে হয

ফটোছ ফ ‘টুম’ কৰিবাৰ জন্ম নানাপ্ৰকাৰ যন্ত্ৰ পত্ৰিয়া থাব উহাকে টুমাৰ বলে গ্ৰী
সকল যন্ত্ৰাব প্ৰথম প্ৰথম কাৰ্য্য বেশ হয, কিৰি অতি অল্পদিন পৰে উহাদেৱ ধাৰ পত্ৰিয় গেলে,
এ দেশে গ্ৰী সকল যন্ত্ৰ পুনৰ্বাৰ ধাৰ দেওয় সুকঠিন এইজন্ম আমৰ এই কাৰ্য্যেৰ জন্ম একখানা
ভাল পেল নাইফ, সৰ্বোৎকৃষ্ট মনে কৰি উহাব ধাৰ খাৱাপ হইলো, সহজেই এব কৰিবলৈ
পাৰ হয

মার্টিন্টি

টুম কৰ ফটোগ্রাফ আঠাদিব স ইজ মত কাৰ্ডেন উৎস নসাইতে হয এই বাঁছেৰ
নিমিত আঠ বিশেখ বিশিষ্ট হৃতন আৰণ্যক

কোনু জাত ব আঠ দ্বাৰ ফটো ভাটিতে হইবে? এইজন্ম নানাপ্ৰকাৰ আঠ বাজাবে বিক্ৰয়
হয টোভাকে “ফটো মুটেচ্যাট” বলে? দৃঢ় কৰ লিব তো তো অমু অদো পছন্দ কলি
না ইউনেস্কো অন ব মু এক কাৰ, এবং আ মাদেৱ দেশেৰ জু বায়ু এব কোন ইউৰোপে
থাহ বাঁধৈ পঞ্চাংগী, এ দেশ আনেক সময়ে তাহ অকৰ্ণ্য হইয় পৰে বিশেষত এ দেশে
একটা পৰি বায কৰিব যাহ প্ৰস্তুত হয, তাহাৰ জন্ম অনৰ্থক এক টাক খৱচ কৰা উচিত নহে

উৎকৃষ্ট দেশী এৰাকুটি অন্ন বিমাণ হয জন্ম মিশ্রিত কৰিবে জৰুট দেখিতে পাৰল
ছুধেৰ মত হইলো তাৰ গৰ একট এনামেল অথবা পাবিকাৰ ধাতু পাৰে বৰিবা অধিতে ১০ ১২
মিনিট আল দিলেই উৎকৃষ্ট স্বচ্ছ আঠা প্ৰস্তুত হইবে এই আঠাবদ্বাৰা ফটোগ্রাফ সকল আঠিতে
হয এই আঠ সৰ্বদাই প্ৰস্তুত কৱিয়া ব্যবহাৰ কৱিবে দশৰাৰ ধণ্ট থাকিলৈই ইহ টকু হইয়া

୨୯୮ ତଥା ହିଁରେ ଆବ ଫଟୋଗ୍ରାଫ୍ ଡାଟ ହହବେ ନା । ତ ମାଦେବ ଦେଶେ ଏବୋକିଲ୍ ବଳ ମଶଣ୍‌ବ
ଦୋବାନେଇ ପାଞ୍ଚାଯ ଥାଏ । ସୁତବାଂ ଏହି ଆଠା ଅ ବଣ୍ଣବ ମତିଇ ପ୍ରକ୍ରିତ କବିବେ

ଫଟୋଗ୍ରାଫ୍ ବସାଇବାବ କାବ୍ ନାନାପ୍ରକାବ କାର୍ଡ ମାର୍ଟିଟ ପାଞ୍ଚାଯ ଥାଏ ଯେ ମନ୍ଦ ମାର୍ଟିଟେବ ପାଞ୍ଚେ
ମୋନାଗୌ ହବ କବ , ମେଇଓଣି ଦେଖିତେ ଉତ୍ତମ ବାବସାୟି ଫଟୋଗ୍ରାଫାନଣ୍ଟ କାର୍ଡେବ । ତେ ନିଃବେ
ନାମଓ ମୋନାବ ଅନ୍ଧବେ ଲିଖିଥ (ଛାପିଥ) ଦେବ । ଇହ ତେ ବ୍ୟବସାବ ସୁବିଧ (ତେ ଥର୍ମ, ତେ ଛାଡ
ଦେଖିତେ ଓ ଥର୍ମ ଦେଖାଯ ଯାହାବ ନିଷ୍ଠେ ନାମ କାର୍ଡେବ ଉତ୍ସବ ମୋନ ନୀ ଅନ୍ଧବେ ବସନ୍ତେ ଚହେ,
ତ୍ବାବ କାନାକାତ ମୁଜାଫୁଲ ଦୟବି ପ ଥ ତ୍ରୀ ବିଧବେ ଚେଷ୍ଟ କବିବେନ

ମୋନାଗୌ ହବ କବା କାର୍ଡେ ନାମ ଲିଖିଥ ଫଟୋ ବମ ନ, ଇହ ବ୍ୟବସାବ ଫଟୋଗ୍ରାଫ କାନେନ ଅ ବଣ୍ଣକ,
ଯାହାରା ସଥ କବିଯ ଫଟୋ କବିବେନ, ତ୍ବାବଦେର ଓ ତ୍ରୀ ପ୍ରକାବ ନାମ ବସନ୍ତେ ସଥ ହିଁତେଓ ପାବେ,
କିନ୍ତୁ ଯଦୁଗ୍ରୀ ଫଟୋଥାନା ତାଲ ହୟ, ତବେଇ ତାହା କାର୍ଡେ ବସନ୍ତ ଟୁଚିତ, ତାହ ନ ହିଁଲେ ଏକଥାନ
ଥାତ କବିଯା ତ୍ରୀ ଟିଯ ବାଖିବେ

ପି, ଓ, ଫି, ବାଗଜ ଶୁକ୍ର ଅବହ୍ଲାୟ ବଢ ଥୁଟୋହିୟ ଥାଏ ଏ କାର୍ବ ଉହ କାର୍ବ ଥାର୍ଟବ ବ ପୂର୍ବେ
ପୁନର୍କାବ ଉହ ଜଳେ ଭିଜାହତେ ହିଁବେ ଜଳେ ଭିଜିଲେଇ ଉହ ସମାନ ହିଁବେ ବଢ ବଢ ବାବସାୟି
ଫଟୋଗ୍ରାଫାବଗଣ ଯେ ଭାବେ ଫଟୋଗ୍ରାଫ୍ ମାର୍ଟିଟ କବେନ, ତାହ ନିଯେ ପ୍ରଦିତ ହିଁବେ

ଯେ କଥାନି ଫଟୋଗ୍ରାଫ୍ କାର୍ଡେବ ଉପର ବସନ୍ତେ ହିଁବେ, ତାହାବ ମଧ୍ୟେ ବାବଥାନି ଫଟେ ଲଇଯ
ଜଳେ ଏକ ଏକଟି କରିଯା ଭିଜାଇୟ ଦାଓ ଭିଜିଯା ସମାନ ହିଁଲେ, ତାହାବ ଉପର ଏକଥାନ ଦିବିକାବ
ପାତଳ କାଗଜ ଓ ଭିଜାଇୟ ଦାଓ

ଏକଥାନି ସାଧାବନ୍ କାଚ (ଫଟୋ ଅନ୍ଧେ ବ୍ୟକ୍ତିହ୍ୟ) ବେଶ ଧୋତ କବ, ଏବ ତାହାବ ଉପର
ପରିବାବ କାଗଜ ତାଙ୍କ ଅବହ୍ଲାୟ ବସନ୍ତ କାଗଜ ଥାନ ଯେନ କୋଣ ଥ ବଣ୍ଣାଯ ଝଟାହିୟ ନ ଥାକେ
କ୍ରୀ ବାଗଜେବ ଉପର ଏକଥାନ ଫଟୋପଟ୍ଟ ଉପର ସମେତ ତୁଳିଯ, ଛବିର ଦିକ ବାଗଜେବ ଉପର
ଉପୁତ୍ତ କବିଯା ବାଖ ଏବଂ ତାହାବ ଉପର ଆବ ଏକଥାନ ଫଟୋଗ୍ରାଫ୍ ଉପୁତ୍ତ କବିବ ବାଖ, ଏହି
ଭାବେ ପର ପର ବାବଥାନି ଥିଣ୍ଟ, ଜଳ ସମେତ ତୁଳିଯ ଲାଗେ, ଏବଂ କାଚଥାନି ମୋଜା କବିଯା ଜଳ
କତକଟା ଘରାଇୟା ଲାଗେ ଛାଇ ଏକ ପିନିଟ ଏହି ଭାବେ ବାଖିଲେ, ପିଣିଟ ହିଁତେ ଅତିବିଜ୍ଞାନ ଜଳ
ଘରିଯା ପଢ଼ିବେ

ପରେ ତ୍ରୀ କାଚଥାନି (ଫଟୋସମେତ) ଏକଟି ଟେବିଲେବ ଉପର ବାଖିଯା, ଝୁଲି ଦ୍ଵାବା ଉପରେବ ଛବିର
ପିଟେ ଆଠା ମାଥାଓ ଏହି ସମୟ ଦେଖିବେ ଯେ, ଧୂଳ , ବାଲୀ, ଅଥବ ତୁଳିବ ଘୋମ ଯେନ ଆଠାର ସହିତ ନା
ଥିଲେ ଆଠା ମାଥାନ ହିଁଲେ, ଛୁବୀକାବ ଅଗ୍ରଭାଗଦାବ କ୍ରୀ ଛବିବ ପାର୍ଶ୍ଵ ଉପର ତୁଳିଯା, ପିଟଥାନି ଦର୍ଶକଣ
ହଞ୍ଜେର ଚାବିଟି ଅସ୍ମୁଲୀର ଉପର ତୁଳିଯା ଲାଇବେ, ଏବଂ ଅନୁଷ୍ଠ କ୍ରୀ ଛବିର ଉପବିଭାବେ ଅନ୍ନ ଟୁଇଯା ଥାକିବେ

বাম গঙ্গের বন্দ এবং খানি কাঠ ইন ছবিখানি থোলে দেখে কাঠের ৩০ ন বুঁ হয় দিবে এই সব দেখিতে হয়ে যে, মাঝে গুণ মাঝে হইল বিন, আব ও দেখিবে যে, ২'টি এবং বাবে মধ্যে বন্দু, ধূপ, একত্রি বদ হইব ন পাকে, এসকল এই সময়েই দেখ উচিত শতকের উৎপন্ন প্রিণ্ট ক্ষেত্র সমন র্যায বুঁ ইবাব জন্ম আর্দ্ধপ্রজ্ঞ, অথবা আব বন্দ খণ্ড বাবের ন দিবে নে নে শুন চাপ্য বমাহবাব ক্ষেত্রে জন হইলে, আজ প্রজ্ঞাই উৎকৃষ্ট এবং এই সময় এ বিচিত্র দেখ ক্ষেত্র গুড়বীবাবি গুড়বী দেখ দলি বাবশুব্দ মুকু ক্ষেত্রে সবাহু দিম, পণ্ডায, চৰি নম মুঁ 'দৰ, এবং ছুঁ'ন 'উপবিশুগ আব প্রজ্ঞান মুকুভূ দিবে এবং নি দাব বদান হইল এবং পেকাবে আব তান প্রজ্ঞান বস হবে

বাবখানি সমস্ত মার্টিন্ট ক্ষেত্র হইতে পৰ, যদি ১১৪৭১, ১২১৫, ১২১৬ বুঁ ও ভজক্ষিয পুরু বর্ণিত প্রথ অগুমাবে আঠা মাথাহুয কাঠে বসাহুবে বাবব দিল ক্ষেত্র প্রিণ্ট এবেবাবে জন্মে অথব কাঠের উপব নহৈবে না যদি এবখানি মজ প্রিন্ট কাঠে বসাইতে হয়, তাহা হইলেও এই প্রকাবে কাঠ উচিত

বোলিং (Burnishing.)

পূর্বী বার্গত ছুইটি ক্ষিয যেমন সতজ এবং অন্ন যামসাধা, দুঃখের বিধয বোলিং অথবা বৰ্ণিসিং সেওবাব নহে এহ কাঠো 'বর্ণিমাব' ন ক ধান্দৰ আবশ্যক

কাটোক্ষিফ সকল কাঠে বসাইয শুক হইলে নব, সেওল এক কু বক্ত কাঠ উচিতে বর্ণিমাব দ্বাৰা তাঁ সেজ হয, অধিকস্ত কাঠের দেখ উপা দেবট চমৎকাৰ পাঁচাম হয কু পাঁচামেৰ তন্মুছি বিকেশ কো কু কু হাতো কাটোক্ষিফ বাবমান কৰিবাব ইছ কোনো, তোহান আবশ্যক একট কু কু পাঁচাম ন দেখ কৰিবেন

বর্ণিমাব ধান্দৰ দ্বাৰা কাটাগ ক্ষেত্র উপা সহিত চাপ দেওয হয এই ঘনেৰ নৌচে একটী প্রিলিট - প্রিলি আৰ্পণ দেওয হয, এবং তল বুঁ ঘনেৰ মোট ও বোগাৰ উপস্ত হয খেট এবং বোগাৰ মধ্যে অন্ন ফোক আছে, উহাব মধ্য ফটোখানি বাইয গেলে, ফটোৰ উপব পালিম হয ইহা এক প্রকাব ইশ্তিৰি এই প্রকাব বৰ্ণিসু কৰিতে হইলে, নিঃলিখিত এই বয়েকটি ত্রিধায আবশ্যক হয —

- (১) বোগাৰ এবং ৮'টি উপস্ত কৰা
- (২) ফটোক্ষিফেৰ উপব সোপ-সলিউশন মাথামো
- (৩) ফটোক্ষিফ পুরু কৰা

- (୪) ଫଟୋଗ୍ରାଫ୍‌ଡଲି ଶୁକ୍ଳ ହଇଲେ ଭୁଲାଦାର ଘୁଛିଥ ଫେଲ
- (୫) ଏକଥାନା ଖାରାପ ଫଟେ ବୋଲୁ କବିଯ ସାତ୍ରର ଉଡ଼ାଗ ପଦୀଙ୍କ
- (୬) ସମେବ ଉଡ଼ାଗ ପଦୀଙ୍କ ହଇଲେ, ଫଟୋଗ୍ରାଫ ବୋଲୁକବା

ଉପବୋକ୍ତ ହୃଦୟ ବିଷୟରେ କୋନଟାବେ ଅମନୋଯୋଗୀ ହହନେ, ଏହ ସମୟ ଫଟୋଗ୍ରାଫ ଫଞ୍ଚିଲିନ୍ଟ୍ ହଇତେ ପାରେ ଏହି କାବ୍ ଆମର କ୍ରି ସକଳ ତ୍ରିମ ବିଶ୍ଵଦ ତବେ ଶିଥିରେଇ

ଆମର ଯେ ମନୋ ଫଟୋହର ଶିକ୍ଷ କବି, ଆମର ବୈଶିଷ୍ଟ ଗ୍ର ପୁଷ୍ଟକାଦି ଦେଖିଥ ଶିକ୍ଷ କବିଯିଛି ମି ପୁଷ୍ଟକ ଦେଖିନ ଫଟୋହାକ ପ୍ରମୁଖ କବିତେ ଶିଖିଲାମ କିନ୍ତୁ ଫଟୋଗାଫେବ ଉପବ କି ଅକାବେ ପ ନିମ ହେ, ମେଇ ବିଷୟରେ ବିଶ୍ଵଦ ଉପଦେଶ ବୋଲେ ପୁଷ୍ଟକେ ପାଇଲାମ ନା ତାହାର ମଧ୍ୟ କବିଯ ଫଟୋଗାଫୀ ଶିକ୍ଷ କବେନ, ତାହାର ପ୍ରାୟଇ ବସନ୍ତିମିଶ୍ର ମରାବ କୋନେ ମନୋଯୋଗ କବେନ ନ୍ତି

ବ୍ୟବସାୟୀ ଫଟୋଗାଫାର ମାତ୍ରେଇ ବସନ୍ତିମିଶ୍ର କବିଯ ଥାକେନ ହହ ଦାବ ଫଟୋଗାଫେବ ମୌନଦ୍ୟ ବୁନ୍ଦି ହେ, ମେ ବିଷୟେ, କୋନେ ମରାବ ନାହିଁ ଏ କାବ୍ ଆମର ସକଳାକହି ହହା ଶିଳ୍ପା କବିତେ ବଲି

ବର୍ଣ୍ଣିମାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଉତ୍ସତ୍ତ୍ଵ କରା ।— ହାତେର ସମେତ ବୋଲାବ ଉଠାଇୟ ଦେଖ, ପୋଟର ଉପବ କୋନପ୍ରକ ବ ମରିଚ, ମୂଳ, ଅଥବ ଅଗ୍ନ କିଛୁ ଆଜେ କି ନ ବଦିଥାକେ, ତବେ ତାହ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣତାବେ ପବିକ୍ଷାର କବିଯ ନାହିଁ, ଏବଂ ବେଳାବ ପୁନର୍ବାବ ଯଥାହାନେ ବସାହୟ ପିଲିବିଟ୍ ଲାଲ୍ପ ଜ୍ଞାନିଧୀ ଦାଓ; ଧର୍ମଟା ଉତ୍ସତ୍ତ୍ଵ ହଇତେ ଥାରୁକ, ଏହିକେ ଭୂମି ଫଟୋହାଫ ଫଞ୍ଚିଲିବ ଉପବ “କ ଟିଲ-ମୋପ-ସଲିଉମନ” ମାଥା ଓ ଏକ ଭାଗ କାଷିଲ ମେପ, ଏବଂ ୧୦ ଭାଗ ପିଲିବିଟ୍ ମିଶ ଇଲେ ମୋପ-ସଲିଉମନ ହହବେ

ଏହୁ ମିଶ ଅନ୍ତର ପବିମାନ ଏକଟା ଚୌନାମାଟୀର ବେକାବେ (Succo) ଢାଣିବ ନାହିଁ ଏକଟୁ ପବିମାନ ଭୁଲାନ ଲେତି କବିଯ ଫଟେ ବ ଉପବ ମାଥ ଓ ଏହ ସାବାନ ମାନିଉମନ୍ ଫଟୋଗ ଫେବ ମରାବ ଲାଗା ଆବଶ୍ୟକ ଧଦି ଏଥ ଏଥିରେ କୋନେ ମୁଣ୍ଡ ନେ ସାବାନ ମ ଥାନେ ନା ହେ, ତାହା ହଇଲେ ବୋଲୁ କବିଦାବ ସମୟ ତାହା ଛିନ୍ଦିମା ପୁଣିଯ ସ ଇତେ ପାରେ ଏବ ଏକଥାନି ଫଟୋଗାଫକେ ସାବାନ ମାଥାମୋ ହଇଲେ, ତାହା ଶୁଖାଇବାର ଜଣ୍ଠ କୋନେ ଟେବିଲେବ ଉପବ ଅଥବା ପ୍ରବହମାନ ବାଯୁ ଲାଗିତେ ପାଏ, ଏମନ ଥାନେ ରାଧିମା ଦାଓ ଅନୁମାନ ଅର୍କିଷଟାର ମାଧ୍ୟ ସାବାନ-ମାନିଉମନ ଶୁକ୍ଳ ହଇତେ ପାରେ ବର୍ଷାକାଳେ ଶୁକ୍ଳ ହଇତେ କିଛୁ ଅଧିକ ବିଲମ୍ବ ହଇତେ ପାରେ ସତ୍ତଵଲି ଫଟୋଗାଫ ବୋଲ କବିତେ ହଇବେ, ମକଳଙ୍ଗି ମୋପ ଦେଉଥା ହଇଲେ ଏକତ୍ରେ ଶୁଖାଇତେ ଦାଓ

ସଥନ ବୋଧ ହଇବେ ବେଶ ଶୁକ୍ଳ ହଇଯାଛେ, ତଥନ ଏହ ଫଟୋଗାଫ ଏକଥାନା ହାତେ କବିବା, ଦେଖିଲେ, ଦେଖ ଘାହିବେ ଯେ, ତଥାତେ ସାବାନ ମାଥାଇବାର ଦାଗ ପରିଧାଇଛେ ପବିମାନ ପେଞ୍ଜ ଭୁଲାବ ଆବା ଏକଟୁ ଜୋବେ ଯୁଛିଲେଇ ଏକ ମକଳ ଦାଗ ଉଠିଯା ଯାଇବେ ଫଟୋଗାଫେବ ଧାବେ ଧାବେ ମୋପ

সলিউমন ক্ষেত্র হইয় থাকে, তাহ এই সময় মেল করিয় মুছি প্রক্রিয়া এই প্রক্রিয়া প্রতেক ফটোগ ক তুল ব ধৰ পৰিকার কৰ ইইগেহ তাহ বো কৰিব ন উপযুক্ত হইবে

একখানি সোপ দেওয় ফটোগ ক নাই ছবির দিক নীচে থাকে, এইভাবে বোলাবের মধ্যে দিয় অপন দিকে বাহির কৰ বেলাবেব হাতেন ধূর হইবে ছবি অপন হইতেই অপন দিকে অস্বীকৰে এই বোন বলিব ন সময় হাতেন ধেন থামিয় ন যব, কবেণ তাহ হইতেই ফটোগাফে দাগ পড়ে; সমাবে কটোগ ফথানি এদিক হইতে ওচিক যাওয়া আবশ্যক অপব দিকে বাহির হইবেই দেখিবে যে, উহাক উপব চমৎকাৰ পালিম হইবাছে এই প্রকাবে একখানা ফটোগ্রাফ তিন চাবিবাব বোল করিলেই ফটোগ্রাম্বলি সোজ হইবে, এবং ছবির উপা ট্ৰ টো প মিস হইবে যদি এই প্রকাৰ বোল কবিবাব সময় ছাব পেটে আটকাহ্য যাব, অথব ছিঁড়িয যাব, তাহ হইলে বুৰাবে যে, সোপ সলিউমন এখনো সম্যক প্রকাৰে শুক হয় নাই; অতএব, সোপ-সলিউমন শুক হইবাব জন্ম উক্ত ফটোগ্রাফগুলিতে একটু উজ্জাপ দিবে ঈবৎ গুৰু কৰিয়া বোল কৰিলে, আন ছিঁড়িয যাইবেন বোল কৰা ফটোগ যতগুলি আবশ্যক তাহাব আপেক্ষ হই চাবিথ নি বেশি প্ৰিণ্ট কৰিয়া রাখা উচিত বোল কবিবাব কালে হই একখানা ফটোগ্রাফ নষ্ট হওয়া অসম্ভাবিত নহে।

স্পটিং (spotting)

বোল কৰা ফটোগ্রাফ একখান লইয বেশ কৰিয দেখ দেখি, তাহাতে কোনও একাৰ ক্ষুদ্র ক্ষুজ সাদা অথবা কাল বৰ্ণেৰ দাগ দৃষ্ট হয কিমা? এই প্রকাৰ দাগ থাকাৱহী থুব সঞ্চাবন যতই সামধান হইবা কাৰ্য্য কৰ যাউক, শেখকোলে ঐক্যপ একটু আদটু দাগ ফটো মাত্ৰেই হওয সত্ত্ব ঈ সব দাগ স্বৰ্গ তুলিক হাব হাতে সাবিয লইতে হয

প্ৰিসিয়ান ব্লু (Prussian Blue)

ক্ৰিম্বল লেক (Crimson Lake)

ভ্যান্ডাইক ব্ৰাউন (Vandyke Brown)

উক্ত তিন প্রকাৰ জনেৰ বৰ্ণেৰ মিশ্রণে সৰ্বপ্ৰকাৰ পি, ও, পি, কাগাজৰ ফটোগ্রাফেৰ অচুক্ষণ বৰ্ণ প্ৰস্তুত হইতে পাৰে

একখণ্ড কাচেৰ উপব প্ৰথমতঃ ভ্যান্ডাইক ব্ৰাউন মাধ্যক বৰ্ণ একটু কল সহকাৰে ঘৰ্য্য কৰিবে। এই প্রকাৰ কৰিলে কাচেৰ উপৰ বং বাহিৰ হইবে ঈ বৰ্ণেৰ মহিত একটু প্ৰিসিয়ান

মূল এবং লেক ঘর্ষণ করিলেই ঠিক ফটোগ্রাফের মত পৰ্বত বর্ণ হইবে এই প্রকার হইলে আবরং না স্বিয়া কাচখানি শুধুইতে দিবে।

ঐ কাচের উপবিষ্ট বংশ শুক হইলে, একটি সূক্ষ্ম প্রটোপ্রস্ম (Prototyping Biolla) । ইয়া জলে ভিজাও, এবং ঐ কাচের উপবিষ্ট বর্ণ তার্দ তুলিকাব অঙ্গভাগে তুলিয়া লও, ফটোগ্রাফখানি বাম হস্তে ধরিয়া, বেশ ধীরভাবে ঐ সূক্ষ্ম সূক্ষ্ম দাগগুলি তুলিকাব অঙ্গভাগ দ্বারা সরিয়া নও এক একখনি কটোগ্রাফ প্রটিং করিতে হই তথ্ব তিনি মিনিট সময় লাগে ধেও বর্ণের দাগগুলি এইভাবে শিলাইয় নাইতে হয়, বালবর্ণের দাগ হইলে, তাহা ধারালে ছুবিকার অঙ্গভাগ দ্বারা তুলিতে হয়

সন্তুষ্টি অধ্যায় ।

ফটোগ্রাফীর দ্বাব স্বভাব দৃশ্য উঠান, এবং তাহাব নেগেটিভ প্রস্তুত কৰা হইতে বোলিং প্রভৃতি সমাপ্ত করিয় যে তাবে কার্য করিতে হইবে, আমের সে বিষয়ে সকল কথাই পরিকল্পনা ভাবে বুবাইতে চেষ্টা করিয়াছি, আশ করি, তাহাদ্বাৰ শিক্ষার্থীগণ ফটোগ্রাফ তুলিতে সক্ষম হইবেন স্বভাব দৃশ্য উঠাইতে, সকল সময়ে ইচ্ছা থাকে ন, বধু, বান্ধব ও আজীব স্বজনের ছবি ও শিক্ষার্থীর তুলিতে ইচ্ছা হইবে আব যাহার ফটোগ্রাফীয় ব্যবস করিবেন, তাহ দেব বেশীব ভাগ চেহাবাই উঠাইতে হইবে। এজনে দেখ য উক, চেহাবা উঠাইতে হইলে কি কশিতে হইবে

লেন্স।—চেহাব উঠাইবাব পক্ষে (?) বটেট (এক) অথবা এনাস্টিগ্মেটিক লেন্স (এক) উৎকৃষ্ট তদভাবে বেকটিলিনিয়াব লেন্স দ্বাৰা চেহাব উঠাইলে ভাল হয় মিজন দেন্তে চেহাব উঠাইলে স্ফুত প্রেট ব্যবহাৰ কৰা আবশ্যক সাধাৰণ খোল যায়গায় চেহাবা ভাল হয় না চেহাবা তুলিবাব জন্য ব্যবসায়ী ফটোগ্রাফাবগণ এবট কাচেৰ ঘৰ প্রস্তুত কৰিবেন ঐ প্রকাৰ কাচেৰ ঘৰ যিনি প্রস্তুত কৰিয়া ব্যবস কৰিতে চাহেন, তাহার নিমিত্ত আমৰা নিম্নগ্ৰাহিত বিবৰণ দিলাম

গৃহেৰ ছাতটাৰ অক্ষীক কাচেৰ হওয় আবশ্যক। একটা পার্শ্বও কাচেৰ হওয়া প্ৰয়োজন। সাধাৰণতে সাধাৰণ পৃষ্ঠাৰ মত দেওয়াল থাকিলে ক্ষতি নাই গৃহেৰ তত্ত্বাবলৈ একপ স্থান হওয়া আবশ্যক যেকেহ দণ্ডায়মান হইলে, কেঘেবায তাহাব সমস্ত দেহেৰ ফোকগ হইতে পাৰে

ফটোগ্রাফি শিক্ষ

আবশ্যক মত নানাপ্রক এ বাক্সাউন্ডে, এবং উপযুক্ত সুন্দর টৈকো, এবং ক্রিয় দেওয়াল, অস্ত্রবর্ণণ, বেড়া, টবে কালিয ন নাপ্রে বি স্মৃশোভন বৃক্ষ, ইত্যাদি বা ক্ষেত্রে ভাল হয়। এই প্রকার গজ লইয খিং ফটো গ ফের বাবস বি বিবেন, তাহাব একে এবং থানি বু আকাবের দর্পণ ও ব থ প্রযোগে দর্পণ থানিতে পুর মাঝুমে আকৃতি দেখিতে পাওয যাব, এই প্রকার হইনে ভাল হয়।

কচ নিখিল এই প্রকার হবে কাহাকে বসাইয কেকস বিলে দেখিবে যে, মাথাব উপব হইতে আলোক আসায, মানব মুখেই সর্ব পক্ষে বৌ আলোক পাওত হয, দেহের দ্বারা অংশে মথের অপেক্ষ আলোক ব থ থাকে। এই অবস্থায ফটোগ্রাফ লইলে মুখ প্র দখায, তাহাতে কাহাবও মত ভেদ নাই। বিশেষতঃ পশ্চাত্ত ভাগে ইচ্ছামত বাকগাউণ্ডে প্রি ত্ব ও আবশ্যক মত পরিষর্কন কৰিতে পাব যাব, সেও একট স্মৃবিধ মুখের যে দিকে ছা ডে, সেহ দিকে আবসি দ্বাব আলোক ফেলিলে, সেহ দিকেব ছায অনেকটা কমাহযা দেওয যায সম্মুখ ভাগে ক্রিয দেওয়ান, প্রস্তুন, বেড়া, প্রস্তু ইত্যাদি সাজাইযা নাপ্রকার ফটো হইতে পাবে। যাহাদেব এই প্রকার কাচেব ঘব (Studio) আছে, তাহাদেব ক্রত ফটো গ্রাফ যেমন ভাল দেখায, স ধাবণ সৌখ্যেন ফটোগ্রাফার মেকপ ফটোগ্রাফ তুলিতে পাবেন ন তাহা না হউক যদি ফটোগ্রাফ ভাল হয, বেশ চিনিতে পাব যায, এবং অগ্ন বিষয়ে কোনও অবহেলা ন কব হয, তাহ হইতেও চেহাব উঠন কৃত অস্ত্রব নহে। কাচেব ঘবে ফটো উঠাইলে মুখের উপব আলোক এবং ছাযাব যেমন সজ্জা হয, খোলা যাযগা হইতে চেহাব উঠাইলে, পে কোন আব্যাসের স্বল্প ইন ন, কিন্তু এত্যু অনিয়ানের অসম্ভুষ্ট ইন্সুন ফটোগ্রাফ ভাল হইলে, এবং চেহাব বেশ চিনিতে পাবিলে, সকলেই আদৰ কবিতা সেই ফটো প্রিবেন।

সাধাৰণ মূহায়ন্ত্ৰ হইতেও বেশ চেহাব হইতে পাবে যেমন কবিয়াই হউক, আলোকেৰ সজ্জা কবিত প বিলেই হইল হোগ্ন, অথব দৱমাৰ চাচেব দ্বাব ও কাৰ্যা উপ যোগ (Studio) ষ্টুডিও কৰা যাইতে পাবে, তিন চৰিধান বাকগাউণ্ড থাকিলেই চলে আমৰা জানি, কলিকাতাৰ একজন বিখ্যাত ফটোগ্রাফাৰ কোনও বিশেষ কাৰণ বশতঃ তাহাব কাচেব ঘব ছাড়িয যাইতে বাধ্য হযেন। সেই ব্যক্তি অনেক দিন পৰ্যান্ত দৱমাৰ ঘব কবিয ছবি তুলিতেন। কে সকল ফটোগ্রাফ পূৰ্বেৰ মতই স্মৃদৰ হইত।

আসল কথ এই যে, আলোক হইয যিনি ইচ্ছামত সাজাইতে পাবেন, তাৰ দৱমাৰ ঘৰই কি, আব কাচেব ঘবই কি, তিনি সমান ভাবেই কাৰ্য্য কবিতে পাবেন।

ଚେହାରା ତୁଳିବାର ସମୟ ବ୍ୟବସାୟୀ ଫଟୋଗ୍ରାଫାରଗଣ “ହେଡ୍-ରେଷ୍ଟ” ନାମକ ଘରେର ବ୍ୟବସାୟ କବେନ । ଇହାର ଦ୍ୱାରା ମନ୍ତ୍ରକ ଧବିଯା ବାଖା ହ୍ୟ, ଏକାରଣ ଏକସ୍ପୋଜାର ଦିବାର ସମୟ ମୁଖ ମର୍ଜିତେ ପାଇ ନା ।

ହୃଦୟ, ପଦ, ଏବଂ ମୁଖ ସମାନ ଭାବେ ଫୋକ୍ସ କବିତେ ସମୟେ ସମୟେ ବଡ଼ ଅଞ୍ଚଲିଧି ଥିଲା
ହଇବେ ତାହାର କାବ୍ୟ ନିଯେ ଅନୁର୍ଧିତ ହଇତେଛେ ।

୪୫ ସଂଖ୍ୟକ ଚିତ୍ରଦ୍ୱାରା ଏହି ବିଷୟ ଦେଖାନ ହଇଯାଛେ ଚେବାରେ କେହ ଉପରିଷିଟ ହଇଲେ, ତାହାର
ହୃଦୟ ପଦାଦି ଅପେକ୍ଷା ମୁଖ ଲେଙ୍ଗେର କିଛୁ ଦୂଲେ ଥାକିବେଇ । ଚିତ୍ରେ ଚ ଛ ନାମକ ରେଖା ମୃତ୍ତି କରିଲେଇ
ଏକଥାବେ ବେଶ ବୁଝା ଯାଯା କ ନାମକ ଲେଙ୍ଗ ମଧ୍ୟେ ଦିଯା ଏଇ ଚ ଛ ବେଥା ପକ୍ଷ ନାମକ କୋକ୍ସ ଶ୍ରୀନେରୁ
ଉପର ଡାକ୍କର ଫେକ୍ସ ହଇତେ “ବେ ନ” ଏଇ ଶ୍ରୀନେରୁଙ୍କି ଫବ ଭାବେ ହେଲାଇସ ଦିତେ ପାବିଲେଇ
ଠିକ ଫୋକ୍ସ ହଇତେ ପାରେ ଏହି ଜଣଇ କେମେରାବ “ଶୁଇଂବ୍ୟାକ” ଦେଓଯା ଥାକେ । ଚେହାର ଉଠାଇ-
ବାର ସମୟ ଫଟୋଗ୍ରାଫାର ଏହି ବିଷୟଟ ମନେ ବାଖିବେନ ।

ଶୀହାର ଚେହାରା ତୁଳିତେ ହଇବେ, ତାହାର ମୁଖେର ଭାବ ବେଶ ଶାନ୍ତ ଓ ଅକୁଳ ହେଉଥା ଉଚିତ ।
ଏକସ୍ପୋଜାର ଦିବାର ସମୟ ମୁଖେର ଦିବେ ଓ ଗଞ୍ଜ୍ୟ ବାଖା ଆବଶ୍ୟକ

ବାଲକ ବାଲିକାଦେବ ଛବି ତୁଣିତେ ହଇଲେ, ଅତିଧିତ ପ୍ଲେଟେ ‘ସଟାବ’ ଦ୍ୱାରା ଉଠାଇତେ ହଇବେ ।

ସଟାବ ଅନେକ ବୁକମେର ପାଓଯା ଯାଯା ଏକସ୍ପୋଜାର ଦିବାର କାଳେ କେମେବୀ ମର୍ଜିଯା ନା-
ଯାଯା, ସଟାବ ଏହିଥାବ ହେଉଥା ଉଚିତ ଆମର ଦେଖିଯାଇଁ, ଖୁବ ହାଲ୍କା ବୁକମେର ସଟାବ ଦ୍ୱାରା କାର୍ଯ୍ୟ
ଭାଲ ହଇଗ ଥାକେ । ୪୨ ସଂଖ୍ୟକ ଚିତ୍ରେ ଥବନ୍ତିନ୍ ପିକାର୍ଡ କ୍ରତ୍ୟ ସଟାବ ଦେଖାନ ହଇଯାଛେ ।

ଅନେକ ଲୋକେର ଚେହାରା ଏକଜେ ଉଠାଇଲେ, ତାହାକେ “ହ୍ପ-ଫଟୋ ବଲେ ।” ଶୁଣି
ତୁଳିବାର ସମୟ ବାହିବେ କୋନ୍ତ ପବିଦ୍ୟାବ ଯାଯଗାୟ ସକଳକେ ସାଜାଇୟ ବସାନ ଉଚିତ । ପ୍ରଥମ ଏକ
ଶାରି ମାଟିତେ ଘାସେବ ଉପର ଅଥବ ତହାପରି ଶୁବିଧ ମତ ସତରଙ୍ଗି ବା କାର୍ପେଟ ପାତିଯା ବମାଇଲେଟ୍
ମନ୍ଦ ହ୍ୟ ନା । ଏକଶ୍ରେଣୀ ଚେବାର ଅଥବା ବେକ୍ଷେବ ଉପଳ, ଏବଂ ଏକଶ୍ରେଣୀ ପଶ୍ଚାଂଭାଗେ ଦଙ୍ଗାଯମାନ
ବାର୍ଧିଲେ, ସକଳେରି ମୁଖ ଦେଖ ଯାଇବେ । ଏହି ଭାବେ ଛବି ତୁଳିବାର ସମୟ “ଶୁଇଂ-ବ୍ୟାକ”, “କ୍ରତ୍ୟ ପ୍ଲେଟ”
ଏବଂ ଏମାସ୍ଟିଗ୍-ମ୍ୟାଟ୍ ଲେଙ୍ଗ ବ୍ୟବହାର କରା ଉଚିତ । ଏକସ୍ପୋଜାର ଦେଓଯାର ପଦ ଏହି ମେଗେଟିକ
ସମ୍ବେଦନ ଡେଭେଲପ କରାଓ ଆବଶ୍ୟକ ଡେଭେଲପ କବିଯା ଯତ୍ତପି ଭାଲ ମେଗେଟିକ ହ୍ୟ, ତାହା ହଇଲେ
ଆବ କୋନ୍ତ ଚିନ୍ତ ଥାକେ ନ । ନଚେଁ ଏହି ଲୋକ ସମାରୋହ ଥାକିତେ ଥାକିତେ ଆବ ଏକଥାନା
ପ୍ଲେଟ ଏକସ୍ପୋଜାର ଦିବେ । ଏହି ପ୍ରକାବ ଶୁଣି ଫଟୋ ଉଠାଇତେ କିଛୁ ବହୁର୍ଦ୍ଦର୍ଶିତାର ପ୍ରାୟୋଜିନ୍ ।

